Volume-VI
Year
2025

अपराजिता

ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE BIRSINGHPUR

NAAC Accredited with 'B++' Grade
Recognized by NCTE, Bhubaneswar
Recognized by University Grants Commission, New Delhi u/s 2(f) & 12 (B)
(Affiliated with LNMU Darbhanga & Bihar School Examination Board Patna)

Editor
Dr. Roli Dwivedi

world Earth day
Save Earth save life
GPS Map Camera
Gopalpur, Bihar, India
Wqw7+37q, Gopalpur, Bihar 848302, India
Lat 25.945269° Long 85.762906°
22/04/2025 11:39 AM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
Bankipur, Bihar, India
0.5 Km From Birshinghpur Chowk, Bankipur, Bihar 848302, India
Lat 25.929697° Long 85.753882°
21/02/2025 12:31 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
Kalyanpur, Bihar, India
Xq4g+5gh, Kalyanpur, Phulahra, Bihar 848302, India
Lat 25.955463° Long 85.776549°
08/01/25 02:37 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
Bankipur, Bihar, India
0.5 Km From Birshinghpur Chowk, Bankipur, Bihar 848302, India
Lat 25.929683° Long 85.753837°
20/02/2025 11:29 AM GMT +05:30
Google

BLOOD. SAVE LIVES.
Indian Red Cross Society
IFRC
GPS Map Camera
Bankipur, Bihar, India
0.5 Km From Birshinghpur Chowk, Bankipur, Bihar 848302, India
Lat 25.92939° Long 85.75393°
11/01/25 01:02 PM GMT +05:30
Google

TERTIARY SECTOR

GPS Map Camera
Bankipur, Bihar, India
0.5 Km From Birshinghpur Chowk, Bankipur, Bihar 848302, India
Lat 25.92984° Long 85.753981°
22/02/2025 02:02 PM GMT +05:30
Google

संपादक मंडल

प्रिय सुधि पाठकों,

भगवान मनकामनेश्वर की अहैतुकी कृपा से हमारे संत पाल टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, बीरसिंहपुर- समस्तीपुर की वार्षिक पत्रिका 'अपराजिता' का यह छठा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हम सभी को अपार हर्ष और गर्व का अनुभव हो रहा है। अपराजिता, जो न केवल अडिगता और सशक्तिकरण का प्रतीक है, बल्कि शिक्षा के उस आलोक का भी द्योतक है जो अज्ञानता के अंधकार को चीरकर ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। यह पत्रिका हमारे प्रशिक्षुओ, प्राध्यापको और कर्मचारियों के समर्पण, रचनात्मकता और आयुष की तरह दीर्घकालिक उत्साह का अमिट हस्ताक्षर है। हमें इस बात का भी हर्ष है कि हम अपने संस्थापक स्वर्गीय पी.पी.एन. सिंह के दिखाए मार्ग का अक्षरसः अनुकरण कर रहे हैं।

शिक्षा वह आशीष है, जो समाज को संबल प्रदान करता है और भावी पीढ़ियों के लिए प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है। हमारा SPTTC इस दर्शन को हृदयंगम करते हुए भावी शिक्षकों को न केवल शैक्षिक ज्ञान और कौशल से सुसज्जित करता है, बल्कि उनमें नैतिकता, संवेदनशीलता और नेतृत्व की वह आलोकीय चेतना भी जागृत करता है, जो अपराजिता की भांति कभी पराजित नहीं होती। इस अंक में संकलित लेख और अनुभव हमारे विद्यार्थियों के विचारों, सपनों और उनकी शैक्षिक यात्रा के विविध रंगों को उजागर करते हैं, जो गोविंद की तरह जीवनदायी और प्रेरणादायक हैं।

आज का युग तकनीकी नवाचारों और वैश्विक चुनौतियों का युग है। ऐसे में प्रशिक्षु शिक्षकों की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। हमें ऐसे शिक्षक तैयार करने हैं जो न केवल पाठ्यपुस्तकों का ज्ञान दें, बल्कि विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और सामाजिक जिम्मेदारी का वह आयुषमय उत्साह भी जागृत करें। अपराजिता का यह अंक इस दिशा में हमारे प्रयासों का एक छोटा सा, किंतु सशक्त चित्रण है।

हम अपने विद्यार्थियों और शिक्षकों को उनके अमूल्य योगदान के लिए हार्दिक धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने इस पत्रिका को आलोकमय और जीवंत बनाया। साथ ही, हम पाठकों से अपेक्षा करते हैं कि आप इन रचनाओं को पढ़कर न केवल प्रेरणा ग्रहण करेंगे, बल्कि अपने विचारों और सुझावों से हमें और सशक्त करने के लिए प्रोत्साहित भी करेंगे।

अंत में, आइए हम सब मिलकर शिक्षा के इस पवित्र ज्ञान के विमर्श को प्रेरणादायक, जीवनदायी बनाएँ, ताकि हम एक ऐसे भविष्य का निर्माण कर सकें जो ज्ञान, करुणा और समानता के रवि से जगमगाए और हम एक विकसित भारत के निर्माण में अपनी आहुति समर्पित कर सकें।

संपादक मंडल

अपराजिता

संत पॉल टीचर्स ट्रेंनिंग कॉलेज बीरसिंहपुर समस्तीपुर बिहार

APRAJITA

Editorial Team

S.M. Tahseen Alam Quadri
Asst. Professor
SPTTC Birsinghpur

Dr. Amit Kumar Pandey
Asst. Professor
SPTTC Birsinghpur

Mr. Surendra Prasad Chaudhary
Asst. Professor
SPTTC Birsinghpur

Mr. Nitish Kumar Singh
Asst. Professor
SPTTC Birsinghpur

Mrs. Arpana Kumari
Asst. Professor
SPTTC Birsinghpur

Mr. Chandan Kumar
Asst. Professor
SPTTC Birsinghpur

Technical Support

Mr. Suraj Kumar

SPTTC Birsinghpur

क्र0 सं0	विवरण		पृष्ठ
1	भारत का स्वर्णिम अतीत :प्राचीन भारत की प्रमुख बौद्ध कालीन शिक्षण संस्थान	डॉ रोली द्विवेदी	1
2	शिक्षा की वर्तमान समस्याए	मनोज कुमार	10
3	Assessing the Efficacy of Bilingual Education Programs in Multicultural Classrooms	Prof. M. Afaque Hashmi	13
4	वैश्वीकरण का महिला शिक्षा पर पड़ने वाला प्रभाव	डॉ मोहम्मद निजामुद्दीन	21
5	समय प्रबंधनरू सफलता की कुंजी	नन्देश कुमार ठाकुर	23
6	Analysing the Effectiveness of Peer Tutoring in Improving Academic Performance in Inclusive Classrooms	Dr. Md. Sabihur Rahman	25
7	Project-Based Learning: A Pathway to Deeper Understanding in Secondary Schools	Dr.Sabiha Parween	32
8	The Impact of Social-Emotional Learning (SEL) Programs on Academic Achievement: A Mixed-Methods Study from Samastipur District	Syed Md Tahseen Alam Quadri	36
9	शिक्षण प्रक्रिया के अनिवार्य घटक के रूप में परीक्षा	श्याम किशोर सिंह	49
10	ज्ञान, संदेह और प्रमाणः कार्तेशियन और भारतीय दृष्टिकोण	अर्पणा कुमारी	52
11	Emerging Trends in Education	डॉ0 प्रतिभा राय	56
12	2047 का भारत और युवाशक्ति : हम करें राष्ट्र आराधन	डॉ अमित कुमार पाण्डेय	58
13	नई शिक्षा नीति चुनौतियॉ एवं सम्भावनाए	मिथिलेष कुमार	64
14	डिजिटल युग में भारतीय भाषाओं का भविष्य	चन्दन कुमार	67
15	गणित का आधार	उदय कुमार राय	72
16	बाल अपराध	डॉ0 सुलेखा रानी	75
17	शिक्षा और बेरोज़गारी	Dr. Pawan kumar	78
18	मैथिली साहित्य का अध्ययन: एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत	सुरेन्द्र प्रसाद चौधरी	80
19	Teaching and Learning Process: E-Books	Nitish Kumar Singh	82
20	The Future of Secondary Education: Trends and Innovations for 21st Century Learners	Anupam Kumari	89
21	भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence - AI) का योगदान	Suraj Kumar	93
22	इलेक्ट्रॉनिक शिक्षा	Nitu Kumari	95
23	IF I WERE A TEACHER, MY DREAM EDUCATION SYSTEM WOULD BE	Sadhna Kumari	97
24	continuous professional development: why teachers must learning	Neha Kumari	100
25	Understanding The Types of Learning Challenges and Their Characteristics	Amit Kumar	103
26	समाजीकरण के आवश्यक तत्व के रूप में स्वतंत्रता, समानता और न्याय की वर्तमान में स्थिति	आयुष मणि	107
27	Innovative Teaching Methods: Shaping the Future of Education	RAVI KUMAR	111
28	पर्सनालिटी डिसऑर्डर	अभिषेक राज "सत्या"	113
29	ट्रोलिंग– एक समसामयिक मुद्दा	आशिष रंजन	115
30	Establishing Peace and Coordination Globally	Govind Kumar Singh	117
31	Casteism in the context of India and Bihar	Ajay Kumar	119
32	Our Teenagers are Struggling with Dilemma and Identity Crisis	Minu Pandey	122
33	The Present Stage of Mathematics: Current Trends and Future Directions	Alok Raj	125

भारत का स्वर्णिम अतीत :प्राचीन भारत की प्रमुख बौद्ध कालीन शिक्षण संस्थान

डॉ रोली द्विवेदी
प्राचार्या

भूमिका

बौद्ध भिक्षु संघ का संगठन आश्रमव्यवस्था के आदर्शों पर किया गया था अतः बौद्ध विहार शिक्षा के केंद्र बन गये। भिक्षु जीवन में ब्रह्मचर्याश्रम, वानप्रस्थाश्रम तथा सन्यासाश्रम का समन्वय होने के कारण विहारों में शिक्षण कार्य को प्रमुखता मिली। ब्राह्मणों के गुरूकुलों के साथ–साथ अब बौद्ध विहारों में भी अध्ययन की सुविधाएँ उपलब्ध होने से शिक्षा का व्यापक प्रसार हुआ। इन विहारों के छात्रों के आदर्शों, गुरू–शिष्य संबंधों तथा अनुशासन के नियम आदि पर बौद्ध संघ के प्रसंग में विचार किया गया। बुद्ध–काल में राजगृह, वैशाली, श्रावस्ती तथा कपिलवस्तु आदि नगरों में कई प्रसिद्ध विहारों का निर्माण हुआ जो बौद्ध

शिक्षा के प्रमुख केंद्र बन गये। आगे कुछ प्रमुख बौद्ध शिक्षा केंद्र (बौद्ध विहारो) के विषय पर प्रकाश डाला गया है।

तक्षशिला विश्वविद्यालय

तक्षशिला विश्वविद्यालय वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिडी से 18 मील उत्तर की ओर स्थित था। जिस नगर में यह विश्वविद्यालय था उसके बारे में कहा जाता है कि श्री राम के भाई भरत के पुत्र तक्ष ने उस नगर की स्थापना की थी। यह विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय था। जब की विश्व का दूसरा विश्वविद्यालय नालंदा विश्वविद्यालय हैं। जो कि मगध में वर्तमान बिहार राज्य के नालंदा जिला में स्थित हैं। तक्षशिला की स्थापना सातवीं ईसापूर्व में की गई थी। तक्षशिला विश्वविद्यालय में,पूरे विश्व के 10,500 से अधिक छात्र अध्ययन करते थे। यहां 60 से भी अधिक विषयों को पढ़ाया जाता था। 326 ईस्वी पूर्व में विदेशी आक्रमणकारी सिकन्दर के आक्रमण के समय यह संसार का सबसे प्रसिद्ध विश्वविद्यालय ही नहीं था, अपितु उस समय के चिकित्सा शास्त्र का एकमात्र सर्वोपरि केन्द्र था। तक्षशिला विश्वविद्यालय का विकास विभिन्न रूपों में हुआ था। इसका कोई एक केन्द्रीय स्थान नहीं था, अपितु यह विस्तृत भू भाग में फैला हुआ था। विविध विद्याओं के विद्वान आचार्यो ने यहां अपने विद्यालय तथा आश्रम बना रखे थे। छात्र रुचिनुसार अध्ययन हेतु विभिन्न आचार्यों के पास जाते थे। महत्वपूर्ण पाठयक्रमों में यहां वेद–वेदान्त, अष्टादश विद्याएं, दर्शन, व्याकरण, अर्थशास्त्र, राजनीति, युद्धविद्या, शस्त्र–संचालन, ज्योतिष, आयुर्वेद, ललित कला, हस्त विद्या, अश्व–विद्या, मन्त्र–विद्या, विविद्य भाषाएं, शिल्प आदि की शिक्षा विद्यार्थी प्राप्त करते थे। प्राचीन भारतीय साहित्य के अनुसार पाणिनी, कौटिल्य, चन्द्रगुप्त, जीवक, कौशलराज, प्रसेनजित आदि महापुरुषों ने इसी विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की। तक्षशिला विश्वविद्यालय में वेतनभोगी शिक्षक नहीं थे और न ही कोई निर्दिष्ट पाठयक्रम था। आज कल की तरह पाठयक्रम की अवधि भी निर्धारित नहीं थी और न कोई विशिष्ट प्रमाणपत्र या उपाधि दी जाती थी। शिष्य की योग्यता और रुचि देखकर आचार्य उनके लिए अध्ययन की अवधि स्वयं निश्चित करते थे। परंतु कहीं–कहीं कुछ पाठयक्रमों की समय सीमा निर्धारित थी। चिकित्सा के कुछ पाठयक्रम सात वर्ष के थे तथा पढ़ाई पूरी हो जाने के बाद प्रत्येक छात्र को छरू माह का शोध कार्य करना पड़ता था। इस शोध कार्य में वह कोई औषधि की जड़ी–बूटी पता लगाता तब जाकर उसे डिग्री मिलती थी।

अनेक शोधों से यह अनुमान लगाया गया है कि यहां बारह वर्ष तक अध्ययन के पश्चात दीक्षा मिलती थी। 500 ई. पू. जब संसार में चिकित्सा शास्त्र की परंपरा भी नहीं थी तब तक्षशिला आयुर्वेद विज्ञान का सबसे बड़ा केन्द्र था। जातक कथाओं एवं विदेशी पर्यटकों के लेख से पता चलता है कि यहां के स्नातक मस्तिष्क के भीतर तथा अंतडियों तक का आपरेशन बड़ी सुगमता से कर लेते थे। अनेक असाध्य रोगों के उपचार सरल एवं सुलभ जड़ी बूटियों से करते थे। इसके अतिरिक्त अनेक दुर्लभ जड़ी–बूटियों का भी उन्हें ज्ञान था। शिष्य आचार्य के आश्रम में रहकर विद्याध्ययन करते थे। एक आचार्य के पास अनेक विद्यार्थी रहते थे। इनकी संख्या प्रायरू सौ से अधिक होती थी और अनेक बार 500 तक पहुंच जाती थी। अध्ययन में क्रियात्मक कार्य को बहुत महत्व दिया जाता था। छात्रों को देशाटन भी कराया जाता था। शिक्षा पूर्ण होने पर परीक्षा ली जाती थी। तक्षशिला विश्वविद्यालय से स्नातक होना उस समय अत्यंत गौरवपूर्ण माना जाता था। यहां धनी तथा निर्धन दोनों तरह के छात्रों के अध्ययन की व्यवस्था थी। धनी छात्रा आचार्य को भोजन, निवास और अध्ययन का शुल्क देते थे तथा निर्धन छात्र अध्ययन करते हुए आश्रम के कार्य करते थे। शिक्षा पूरी होने पर वे शुल्क देने की प्रतिज्ञा करते थे। प्राचीन साहित्य से विदित होता है कि तक्षशिला विश्वविद्यालय में पढने वाले उच्च वर्ण के ही छात्र होते थे। सुप्रसिद्ध विद्वान, चिंतक, कूटनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री चाणक्य ने भी अपनी शिक्षा यहीं पूर्ण की थी। उसके बाद यहीं शिक्षण कार्य करने लगे। यहीं उन्होंने अपने अनेक ग्रंथों की रचना की। इस विश्वविद्यालय की स्थिति ऐसे स्थान पर थी, जहां पूर्व और पश्चिम से आने वाले मार्ग मिलते थे। चतुर्थ शताब्दी ई. पू. से ही इस मार्ग से भारत वर्ष पर विदेशी आक्रमण होने लगे। विदेशी आक्रांताओं (हुडों) ने इस विश्वविद्यालय को काफी क्षति पहुंचाई। अंततः छठवीं शताब्दी में यह इस्लामिक आक्रमणकारियों द्वारा पूरी तरह नष्ट कर दिया गया ।

नालंदा विश्वविद्यालय

नालंदा विश्वविद्यालय शिक्षा का प्रमुख केंद्र था. यहाँ अनेक विहारों का निर्माण किया गया था. नालंदा विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के इच्छुक विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार पर एक परीक्षा में उतीर्ण होना आवश्यक था. चीन, कोरिया, तिब्बत, जापान, बर्मा आदि अनेक देशों से विद्यार्थी यहाँ रहकर अध्ययन करते थे.

इस विश्वविद्यालय में लगभग 10 हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे. तथा अध्यापकों की संख्या 1510 थी. ह्वेंसाग के समय इस विश्वविद्यालय का कुलपति शीलभद्र था. इस विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को आवास, भोजन, वस्त्र, चिकित्सा आदि की व्यवस्था निशुल्क होती थी. राजा और धनी लोग विश्वविद्यालय की आर्थिक सहायता देते थे.

नालंदा विश्वविद्यालय में बौद्ध धर्म की शिक्षा के अतिरिक्त व्याकरण, तर्कशास्त्र, चिकित्सा, दर्शन, भाषा विज्ञान, यंत्र शास्त्र, योग, शिल्प, रसायन आदि विषय पढ़ाए जाते थे. यह विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र था. नालंदा विश्वविद्यालय में धर्मज्ञ नामक विशाल पुस्तकालय था.

धर्मपाल, चन्द्रपाल, गुनमति, स्थिरमति, प्रभामित्र, जिनमित्र, आर्यदेव, दिङ्नाग, ज्ञानचन्द्र आदि यहाँ के उच्चकोटि के आचार्य थे. ह्वेनसांग तथा इतिसंग के अतिरिक्त अन्य अनेक विदेशी विद्वान् नालंदा में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए आए थेद्य

ह्ह्वेन त्सांग के अनुसार ये "अपने आकार और ऊंचाई में भव्य थे, बड़े पैमाने पर सजे हुए टावर, परी जैसे बुर्ज और सुबह की धुंध में खोई हुई वेधशालाएँ थीं। बादलों के ऊपर की ओर ऊपरी कमरे और ऊंची गुफाओं से सूर्यास्त की भव्यता और चांदनी की महिमा देखी जा सकती थी। मैदान को गहरे पारभासी तालाबों से सजाया गया था, जिसमें गहरे लाल रंग के कनक फूलों के साथ नीले कमल मिले हुए थे और बीच–बीच में आम के बगीचे उनकी छाया में फैले हुए थे।

पूरे विश्वविद्यालय क्षेत्र को एक बड़ी और मजबूत दीवार से चिह्नित किया गया था जिसमें केवल एक प्रवेश द्वार था। गेट पर एक शिक्षक रहते थे जो विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए परीक्षा के प्रभारी थे, जिनका नाम द्वार पंडित था। सेंट्रल कॉलेज में सात से आठ बड़े हॉल थे जहां छात्रों को सामूहिक रूप से संबोधित किया जाता था। इसके अलावा, वहाँ तीन सौ अध्ययन कक्ष थे। डॉ. स्पूनर ने इसे ईंट के काम के रूप में देखा है। ये इमारतें ''हाल के वर्षों में मेरे द्वारा देखे गए किसी भी आधुनिक कार्य से कहीं बेहतर थीं।''

इमारतों के डिजाइन और उस काल की अनूठी मूर्तिकला और वास्तुकला को नालंदा के विहारों में स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित किया गया था। संपूर्ण इमारतों का निर्माण सुव्यवस्थित योजना के अनुसार किया गया था और आज भी नालंदा के खंडहर इंजीनियरिंग की कला का एक स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

ह्वेन–त्सांग के जाने के बाद एक अन्य चीनी विद्वान, आई–त्सांग भारत आए और दस साल तक नालंदा में रहे। आई–त्सांग ने दस से अधिक जल–टैंकों का विवरण दिया जहां छात्रों ने अपने जलीय करतब प्रदर्शित किए। इसके अलावा, पुस्तकालय के लिए एक बड़ी नौ मंजिला इमारत थी। इस पुस्तकालय में तीन विभाग थे जिन्हें 'रतन सागर', 'रत्नादौधि' और 'रतन रंजका' के नाम से जाना जाता था। समग्र रूप से पुस्तकालय को 'धर्मगंज' (धर्म का निवास) कहा जाता था। पुस्तकालय में विभिन्न धर्मों, कला, विज्ञान और शिल्प के बारे में पुस्तकों का दुर्लभ संग्रह था।

हालाँकि नालन्दा केवल उच्च शिक्षा की संस्था थी फिर भी वहाँ माध्यमिक और प्राथमिक शिक्षा का प्रावधान था। उच्च शिक्षा के केंद्र के रूप में नालंदा की प्रसिद्धि ने विदेशों से विद्वानों को आकर्षित किया। 7 वीं शताब्दी के मध्य तक विश्वविद्यालय के कैदियों की संख्या 10,000 थी। इनमें से लगभग 1510 शिक्षक थे। संस्था में प्रवेश कठिन था। ह्वेन–त्सांग बताते हैं कि इनमें से केवल बीस प्रतिशत जो विश्वविद्यालय के पोर्टल पर पहुंचे, धार्मिक विवादों के विशेषज्ञ द्वार पंडित द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर सके।त्सांग के अनुसार ये "अपने आकार और ऊंचाई में भव्य थे, बड़े पैमाने पर सजे हुए टावर, परी जैसे बुर्ज और सुबह की धुंध में खोई हुई वेधशालाएँ थीं। बादलों के ऊपर की ओर ऊपरी कमरे और ऊंची गुफाओं से सूर्यास्त की भव्यता और चांदनी की महिमा देखी जा सकती थी। मैदान को गहरे पारभासी तालाबों से सजाया गया था, जिसमें गहरे लाल रंग के कनक फूलों के साथ नीले कमल मिले हुए थे और बीच–बीच में आम के बगीचे उनकी छाया में फैले हुए थे।

पूरे विश्वविद्यालय क्षेत्र को एक बड़ी और मजबूत दीवार से चिह्नित किया गया था जिसमें केवल एक प्रवेश द्वार था। गेट पर एक शिक्षक रहते थे जो विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए परीक्षा के प्रभारी थे, जिनका नाम द्वार पंडित था। सेंट्रल कॉलेज में सात से आठ बड़े हॉल थे जहां छात्रों को सामूहिक रूप से संबोधित किया जाता था। इसके अलावा, वहाँ तीन सौ अध्ययन कक्ष थे। डॉ. स्पूनर ने इसे ईंट के काम के रूप में देखा है। ये इमारतें ''हाल के वर्षों में मेरे द्वारा देखे गए किसी भी आधुनिक कार्य से कहीं बेहतर थीं।''

इमारतों के डिजाइन और उस काल की अनूठी मूर्तिकला और वास्तुकला को नालंदा के विहारों में स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित किया गया था। संपूर्ण इमारतों का निर्माण सुव्यवस्थित योजना के अनुसार किया गया था और आज भी नालंदा के खंडहर इंजीनियरिंग की कला का एक स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं ।ह्वेन–त्सांग के जाने के बाद एक अन्य चीनी विद्वान, आई–त्सांग भारत आए और दस साल तक नालंदा में रहे। आई–त्सांग ने दस से अधिक जल–टैंकों का विवरण दिया जहां छात्रों ने अपने जलीय करतब प्रदर्शित किए। इसके अलावा, पुस्तकालय के लिए एक बड़ी नौ मंजिला इमारत थी। इस पुस्तकालय में तीन विभाग थे जिन्हें 'रतन सागर', 'रत्नादौधि' और 'रतन रंजका' के नाम से जाना जाता था। समग्र रूप से पुस्तकालय को 'धर्मगंज' (धर्म का निवास) कहा जाता था। पुस्तकालय में विभिन्न धर्मों, कला, विज्ञान और शिल्प के बारे में पुस्तकों का दुर्लभ संग्रह था।

हालाँकि नालन्दा केवल उच्च शिक्षा की संस्था थी फिर भी वहाँ माध्यमिक और प्राथमिक शिक्षा का प्रावधान था। उच्च शिक्षा के केंद्र के रूप में नालंदा की प्रसिद्धि ने विदेशों से विद्वानों को आकर्षित किया। 7 वीं शताब्दी के मध्य तक विश्वविद्यालय के कैदियों की संख्या 10,000 थी। इनमें से लगभग 1510 शिक्षक थे। संस्था में प्रवेश कठिन था। ह्वेन–त्सांग बताते हैं कि इनमें से केवल बीस प्रतिशत जो विश्वविद्यालय के पोर्टल पर पहुंचे, धार्मिक विवादों के विशेषज्ञ द्वार पंडित द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर सके।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय

विक्रमशिला भारत का एक प्रसिद्ध शिक्षा–केन्द्र (विश्वविद्यालय) था। नालन्दा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला दोनों पाल राजवंश के राज्यकाल में शिक्षा के लिए जगत्प्रसिद्ध थे। वर्तमान समय में बिहार के भागलपुर जिले का अन्तिचक गाँव वहीं है जहाँ विक्रमशिला थी। इसकी स्थापना ८वीं शताब्दी में पाल राजा धर्मपाल ने की थी। प्रसिद्ध पण्डित अतीश दीपंकर यहीं शिक्षण करते थे।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय के ध्वंसाशेषअतीश दीपंकर यहाँ पर लगभग 160 विहार थे, जिनमें अनेक विशाल प्रकोष्ठ बने हुए थे। विद्यालय में सौ शिक्षकों की व्यवस्था थी। नालन्दा की भाँति विक्रमशिला विश्वविद्यालय भी बौद्ध संसार में सर्वत्र सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। इस महाविद्यालय के अनेक सुप्रसिद्ध विद्वानों में अतिश दीपांकर श्रीज्ञान प्रमुख थे। ये ओदन्तपुरी के विद्यालय के छात्र थे और विक्रमशिला के आचार्य। 11वीं शती में तिब्बत के राजा के निमंत्रण पर ये वहाँ पर गए थे। तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार में इनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण समझा जाता है।

मान्यता है कि बख्तियार खिलजी नामक मुस्लिम आक्रमणकारी ने सन ११६३ के आसपास इसे नष्ट कर दिया था।

इस विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के तुरन्त बाद ही अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व प्राप्त कर लिया था। विक्रमशिला विश्वविद्यालय के प्रख्यात विद्वानों की एक लम्बी सूची है। तिब्बत के साथ इस शिक्षा केन्द्र का प्रारम्भ से ही विशेष सम्बंध रहा है। विक्रमशिला विश्वविद्यालय में विद्याध्ययन के लिए आने वाले तिब्बत के विद्वानों के लिए अलग से एक अतिथिशाला थी। विक्रमशिला से अनेक विद्वान तिब्बत गए थे तथा वहाँ उन्होंने कई ग्रन्थों का तिब्बती भाषा में अनुवाद किया। इन विद्वानों में सबसे अधिक प्रसिद्ध दीपंकर श्रीज्ञान थे जो उपाध्याय अतीश के नाम से विख्यात हैं। विक्रमशिला का पुस्तकालय बहुत समृद्ध था। विक्रमशिला विश्वविद्यालय में बारहवीं शताब्दी में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संख्या ३००० थी। विश्वविद्यालय के कुलपति ६ भिक्षुओं के एक मण्डल की सहायता से प्रबंध तथा व्यवस्था करते थे। कुलपति के अधीन ४ विद्वान द्वार–पण्डितों की एक परिषद प्रवेश लेने हेतु आये विद्यार्थियों की परीक्षा लेती थी।

इस विश्वविद्यालय में व्याकरण, न्याय, दर्शन और तंत्र के अध्ययन की विशेष व्यवस्था थी। इस विश्वविद्यालय की व्यवस्था अत्यधिक सुसंगठित थी। बंगाल के शासक शिक्षा की समाप्ति पर विद्यार्थियों को उपाधि देते थे। सन १२०३ ई० में बख्तियार खिलजी ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया।

यहाँ बौद्ध धर्म और दर्शन के अतिरिक्त न्याय, तत्त्वज्ञान, व्याकरण आदि की भी शिक्षा दी जाती थी। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पुस्तकें उपलब्ध कराई जाती थीं तथा उनकी जिज्ञासाओं का समाधान विद्वान आचार्यों द्वारा किया जाता था। यहाँ देश से ही नहीं विदेशों से भी विद्याध्ययन के लिए छात्र आते थे। शिक्षा समाप्ति के बाद विद्यार्थी को उपाधि प्राप्त होती थी जो उसके विषय की दक्षता का प्रमाण मानी जाती थी। पूर्व मध्ययुग में विक्रमशिला विश्वविद्यालय के अतिरिक्त कोई शिक्षा केन्द्र इतना महत्त्वपूर्ण नहीं था कि सुदूर प्रान्तों के विद्यार्थी जहाँ विद्या अध्ययन के लिए जाएँ। इसीलिए यहाँ छात्रों की संख्या बहुत अधिक थी। यहाँ के अध्यापकों की संख्या ही ३००० के लगभग थी अतः विद्यार्थियों का उनसे तीन गुना होना तो सर्वथा स्वाभाविक ही था। इस विश्वविद्यालय के अनेकानेक विद्वानों ने विभिन्न ग्रंथों की रचना की, जिनका बौद्ध साहित्य और इतिहास में नाम है। इन विद्वानों में कुछ प्रसिद्ध नाम हैं– रक्षित, विरोचन, ज्ञानपाद, बुद्ध, जेतारि रत्नाकर शान्ति, ज्ञानश्री मिश्र, रत्नवज्र और अभयंकर। दीपंकर नामक विद्वान ने लगभग २०० ग्रंथों की रचना की थी। वह इस शिक्षाकेन्द्र के महान प्रतिभाशाली विद्वानों में से एक थे। अब इस विश्वविद्यालय के केवल खण्डहर ही अवशेष हैं।

ओदन्तपुरी विश्वविद्यालय

ओदन्तपुर प्राचीन काल का प्रमुख ऐतिहासिक स्थान। इसके पर्याय 'उदंतपुर' अथवा 'उदंडपुर' भी हैं। यह बिहार में नालन्दा से १० किमी की दूरी पर स्थित है। पालनरेश गोपाल,, ने यहीं एक अत्यंत भव्य विहार का निर्माण कराया था।

तिब्बती परंपरा के अनुसार इस ओदंतीपुरी विहार की रचना या तो गोपाल ने अथवा देवपाल ने करवाई। धर्मपाल के ओदंतपुरी विहार की रचना की कथा देवपाल द्वारा बनवाए विहार की कथा से मिलती जुलती है। बिहार के राजशाही जिले में पहाड़पुर की खुदाई में जिस विहार का संकेत मिलता है (मेम्वायर्स ऑव दि आर्के. सर्वे ऑव इंडिया, नं. ५५) वह संभवतः यही ओदंतपुर विहार है। इस स्थान तथा समीपवर्ती गाँव का नाम ओमपुर है। बल्लालसेन ने अपने युग के सर्वाधिक धनी श्रेष्ठी बल्लभानंद से ओदंतपुर (उदंतपुर) नरेश को पराजित कर सकने के लिए एक करोड़ रुपए लिए थे। (बल्लालचरित, अध्याय २)।

ओदन्तपुरी विश्वविद्यालय ६ उदंतपुरी विश्वविद्यालय ६ उदंडपुरी विश्वविद्यालय भी नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय की तरह विख्यात था, परन्तु उदन्तपुरी विश्वविद्यालय का उत्खनन कार्य नहीं होने के कारण यह आज भी धरती के गर्भ में दबा है, जिसके कारण बहुत ही कम लोग इस विश्वविद्यालय के इतिहास से परिचित हैं। अरब लेखकों ने इसकी चर्चा 'अदबंद' के नाम से की है, वहीं 'लामा तारानाथ' ने इस 'उदंतपुरी महाविहार' को 'ओडयंतपुरी महाविद्यालय' कहा है। ऐसा कहा जाता है कि नालन्दा विश्वविद्यालय जब अपने पतन की ओर अग्रसर हो रहा था, उसी समय इस विश्वविद्यालय की स्थापना

की गई थी। इसकी स्थापना प्रथम पाल नरेश गोपाल ने सातवीं शताब्दी में की थी। खि़लजी का आक्रमण तिब्बती पांडुलिपियों से ऐसा ज्ञात होता है कि इस महाविहार के संचालन का भार 'भिक्षुसंघ' के हाथ में था, किसी राजा के हाथ नहीं। सम्भवतः उदंतपुरी महाविहार की स्थापना में नालंदा महाविहार और विक्रमशिला महाविहार के बौद्ध संघों का मतैक्य नहीं था।संभवतया इस उदंतपुरी की ख्याति नालंदा और विक्रमशिला की अपेक्षा कुछ अधिक बढ़ गई थी। तभी तो मुहम्मद बिन बखि़्तयार खि़लजी का ध्यान इस महाविहार की ओर हुआ और उसने सर्वप्रथम इसी को अपने आक्रमण का पहला निशाना बनाया। खि़लजी 1197 ई. में सर्वप्रथम इसी की ओर आकृष्ट हुआ और अपन आक्रमण का पहला निशाना बनाया। उसने इस विश्वविद्यालय को चारों ओर से घेर लिया, जिससे भिक्षुगण काफी क्षुब्ध हुए और कोई उपाय न देखकर वे स्वयं ही संघर्ष के लिए आगे आ गए, जिसमें अधिकांश तो मौत के घाट उतार दिए गए, तो कुछ भिक्षु बंगाल तथा उड़ीसा की ओर भाग गएऔर अंत में इस विहार में आग लगवा दी। इस तरह विद्या का यह मंदिर सदा–सदा के लिए समाप्त हो गया ।

सोमपुरा विश्वविद्यालय

शिक्षा हमारे देश की प्रमुख विशेषताओं में से एक रही है। यह विशेषता प्राचीन काल से अब तक बनी हुई है। सदियों पहले भी भारत में शिक्षा के कई केंद्र थे, जहां पर देश ही नहीं बल्कि विदेशों से भी विद्यार्थी पढ़ने के लिए आते थे। प्राचीन शिक्षा केंद्रों में एक प्रमुख नाम रहा है सोमपुरा विश्वविद्यालय का। यह उच्च स्तर की शिक्षा के लिए पहचाना जाता था।

सोमपुरा विश्वविद्यालय की स्थापना पाल वंश के राजाओं ने की थी। आठवीं से बारहवीं शताब्दी के बीच 400 साल तक यह विश्वविद्यालय प्रसिद्ध रहा है। काफी भव्यता के साथ इस विश्वविद्यालय का परिसर लगभग 27 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ था। उस समय पूरे विश्व में ये सबसे अच्छा शिक्षा केंद्र था। प्राचीन समय में सोमपुरा विश्वविद्यालय छठे नंबर का था। प्राचीन बंगाल और मगध में पाल राजाओं के वक्त सन् 810 से 850 के बीच चले विजय अभियान के बाद इस विश्वविद्यालय को बनाया गया था। इसके धर्मपाल और देवापला उत्तराधिकारी थे।

एक अन्य शिलालेख पर सन् 850 से 854 के बीच अजयागर्भा के नाम के साथ–साथ महेंद्रपाला का नाम उत्तराधिकारी के रूप में लिखा है। अन्य प्रमाणों के मुताबिक सन् 995 से 1043 के बीच महिपाला के शासनकाल के दौरान विश्वविद्यालय भवन की मरम्मत की गई थी। हालांकि सोमपुरा विश्वविद्यालय के अवशेष वर्तमान के बांगलादेश में है। इसके संबंध में सम्राट अशोक के स्तूपों और शिलालेखों में भी जानकारियां मिलती हैं।

इस विश्वविद्यालय में तर्क शास्त्र, कानून, इंजीनियरिंग, चिकित्सा विज्ञान सहित कई विषय पढ़ाए जाते थे। इस विश्वविद्यालय में शिक्षा नैतिक मूल्यों के आधार पर दी जाती थी। अन्य विश्वविद्यालय की तरह यहां भी पढ़ाई का कोई शुल्क नहीं लिया जाता था। इसके परिसर में ही लगभग 8500 छात्रों के रहने की सुविधा थी। इस शिक्षा केंद्र के माध्यम से पाल राजाओं ने अन्य राजाओं के साथ मिलकर एक नेटवर्क तैयार किया था। इससे विश्वविद्यालय के संचालन में सहायता मिलती थी। शिक्षा के ये प्राचीन केंद्र आज भी प्राचीन भारत की गाथा सुनाते हैं और प्रेरणा देते हैं।

इस विश्वविद्यालय की स्थापना भी पाल शासक धर्मपाल ने ७ वीं शताब्दी में किया था. यह अब बांग्लादेश में है. सेन वंशी शासकों की राजधानी नवद्वीप पर आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी द्वारा अधिकार करने के बाद इस विश्वविद्यालय के शिक्षक और छात्र जान बचाने केलिए विश्वविद्यालय छोड़कर भाग गये जिससे यह वीरान और अनारक्षित हो गया जिसे बाद में मुसलमानों द्वारा लूट लिया गया और धीरे धीरे यह नष्ट हो गया द्य

तेल्हारा शिक्षा केन्द्र

तेल्हारा विश्वविद्यालय भारत को ज्ञान का केंद्र बिंदु सिद्ध करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विश्वविद्यालय नालंदा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला से लगभग 300 से 400 वर्ष पुराना है। इसके अवशेष 2014 में बिहार के नालंदा जिले में एकंगर सराय उपखंड के तेल्हारा ग्राम में उत्खनन के दौरान प्राप्त हुए हैं ।इसकी पुष्टि यहां से प्राप्त तीन प्रकार की ईंटों से की जाती है ।सबसे बड़े आकार की ईंटें कुषाण कालीन है जिनका आकार बहुत बड़ा है ,जो विहार के सबसे नीचे में लगी हैं। इससे ऊपर गुप्तकालिन ईट हैं जिनका जाकर थोड़ा छोटा है ,सबसे नीचे पाल कालीन है जिनका आकार गुप्त काल की ईट से भी छोटा है। अतः नालंदा विश्वविद्यालय गुप्तकालीन(चौथी शताब्दी)है और विक्रमशिला विश्वविद्यालय (सातवीं शताब्दी)पाल शासको की देन है।

कॉल क्रम की दृष्टि से देखें तो तेलंगाना महाविहार नालंदा और विक्रमशिला से प्राचीन सिद्ध होता है। तेलहड़ा विश्वविद्यालय अपनी स्थापना (प्रथम शताब्दी)के कुछ वर्षों बाद ही प्रसिद्ध को प्राप्त करने लगा था। चीन यात्री ह्वेनसांग तथा इतशिंग ने भी अपने वृतांतों में इस महा विहार का उल्लेख किया है । ह्वेनसंग और इत्सिंग ने तिलधक नाम से उल्लेख किया है । ह्वेनसांग और इत्सिंग के अनुसार यह महा विहार अपने समय का उच्च कोटि का सुंदर विशिष्ट और श्रेष्ठ महाविहार था । महा विहार में तीन मंजिला मंडप के साथ–साथ तीन मंदिरों और अनेक तोरण द्वार मीनार और घंटियां होती थी । ह्वेनसांग के वृतांत के अनुसार सातवीं शताब्दी तक तेलहदा महाविद्यालय में 7 मठ तथा शिक्षकों के लिए अलग–अलग कक्ष इस महा विहार में थे ,लगभग 1000 बौद्ध भिक्षु महायान संप्रदाय के शिक्षा ग्रहण करते थे । ह्वेनसांग और इत्सिंग के वृतांतों से सिद्ध होता है कि यह महाविहार बौद्ध शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र था।

कभी–कभी किसी स्थान की समृद्धि उसके पतन का कारण बनती है ।ऐसा ही भारत और इसके ज्ञान विज्ञान के साथ हुआ तेलहाढ़ा के उत्खनन में महाविहार की दीवारों पर अग्नि के साक्ष्य और राख की एक फीट मोटी परत मिली है। इसी के आधार पर विशेषज्ञों का मानना है कि 1192 में तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने उदंत पुरी की विजय के दौरान मनेर से दक्षिण की ओर प्रस्थान किया था। उसने नालंदा विहार की तरह यहां भी बहुत आतंक मचाया और यहां के शिक्षकों और शिक्षार्थियों को बध कर महाविहार में आग लगा दी जिसके कारण इस महा बिहार का पतन हो गया।

वल्लभी शिक्षा केंद्र

वल्लभी शिक्षा केंद्र गुजरात के सौराष्ट्र में स्थित था। इसको भारत के पश्चिमी भाग में नालंदा जैसे गौरवशाली रूप में पाया गया है। यह विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र नीति शास्त्र और चिकित्सा के लिए बहुत प्रसिद्ध था । वल्लभी को वल्लभीपूरा के नाम से भी जाना जाता है । यह प्राचीन मैत्रक वंश की राजधानी थी। वल्लभी विश्वविद्यालय की स्थापना माना जाता है कि 470 ईस्वी में मैत्रक वंश के संस्थापक सेनापति भुट्टारक ने की थी ।यह वह काल था जब गुप्त साम्राज्य का विखंडन हो रहा था । वल्लभी कई बौद्ध मठों के साथ शिक्षा का एक प्रसिद्ध केंद्र था।

सातवीं शताब्दी के मध्य में चीनी यात्री हीनशांग और इत्सिंग ने इसका दौरा किया था ।

गुप्त काल में स्थापित इस विश्वविद्यालय को मैत्रक वंशी शासको का उदारता पूर्वक दान मिलता रहा ।गुजरात सदैव विदेशी व्यापारिक गतिविधियों के कारण समृद्धि क्षेत्र रहा है। और यहां के व्यापारिक वर्ग से वल्लभी विश्वविद्यालय को पर्याप्त दान मिलता रहा है ।

जैन धर्म की तृतीय परिषद् (सभा या संगति)का आयोजन वल्लभी में 453 ईस्वी में हुआ था ।इस सभा की अध्यक्षता देवऋद्धिगण (क्षमा श्रवण) द्वारा की गई थी। इस सभा द्वारा निर्धारित जैन धर्म का स्वरूप आज तक यथावत है।

चीनी यात्री ह्वेनसांग ने वल्लभी विश्वविद्यालय के बारे में उल्लेख किया है यहां एक 100 बौद्ध विहार थे यह हीनयान शाखा का केंद्र था। यहां लगभग 6000 हीनयानी बौद्ध भिक्षु रहते थे। इसकी परिधि लगभग 6 मिल के घेरे में थी। वल्लभी उच्च शिक्षा केंद्र था यहां पर दो या तीन वर्षों में पढ कर भिक्षु प्रकांड विद्वान बन जाते थे। यहां देश के विभिन्न भागों से छात्र अध्ययन हेतु आते थे। इत्सिंग के अनुसार यहां के स्नातकों का बड़ा सम्मान था और उन्हें प्रशासनिक पद पर नियुक्त किया जाता था। यद्यपि यह बौद्ध धर्म के हीन यान संप्रदाय की शिक्षा का प्रमुख केंद्र था। तथापि अपनी यह स्वतंत्रता के लिए प्रसिद्ध था ।यहां बौद्ध संप्रदाय के साथ–साथ ब्राह्मण शिक्षा और अलौकिक विषयों की भी शिक्षा दी जाती थी। यहां के आचार्य में स्थिरमति और गुनमती के नाम मिलते हैं। वाल्लभी में रहते हुए इन दोनों आचार्य ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की थी। बाद में यह दोनों नालंदा विश्वविद्यालय गए। अरबों ने अपने आक्रमण से वल्लभी नगर और विश्वविद्यालय को भीषण क्षति पहुंचाई जिससे यह उबर नहीं पाया। यदपि यह शिक्षा केंद्र 12वीं शताब्दी तक चलता रहा ,परंतु इसका गौरव जाता रहा ।

पुष्पगिरी विश्वविद्यालय या (महाविहार)

उड़ीसा राज्य में स्थित पुष्पगिरी विश्वविद्यालय भारत के सबसे प्राचीनतम विश्वविद्यालय में से एक है ।इसका निर्माण लगभग तीसरी शताब्दी के आसपास किया गया था। उस समय यह विश्वविद्यालय उड़ीसा की पहाड़ियों के बीचो–बीच बनवाया गया था ।इसके निर्माण के बारे में कहा जाता है कि इसे कालिंग सम्राट अशोक ने बनवाया था ।

इसविश्वविद्यालय के बारे में यह भी कहा जाता है कि लगभग 700 से 800 सालों तक भारत में शिक्षा का यह प्रमुख केंद्र था। यहां पर विश्व के कई देशों के छात्र शिक्षा ग्रहण करने आते थे ।पुष्प गिरी प्राचीन भारत के सबसे बड़े शिक्षा केन्द्रों में से एक था ।जिसे नालंदा ,विक्रमशिला और तक्षशिला के बराबर माना जाता था। पुष्पगिरी विश्वविद्यालय का उल्लेख सातवीं शताब्दी के प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग के दस्तावेजों में मिलता है ।ऐसा माना जाता है कि शिक्षा का प्रमुख केंद्र पुष्पगिरी दूसरी सदी ईसा पूर्व से लेकर दसवीं सदी तक खूब फला फूला था ।कुछ विद्वानों की राय और खुदाई के परिणामों से अनुमान लगाया गया है कि यह स्थान उड़ीसा में लांगुडी पहाड़ियों पर रहा होगा। आज यह विश्वविद्यालय अनगिनत रहस्यों से घिरा हुआ है। ह्वेनसांग के अनुसार यहां के छात्र मेहनतीथे । मठ के विषय में लिखा है मठ की पत्थर की चोटी अलौकिक रोशनी और अन्य चमत्कारों को प्रदर्शित करती है। गुंबद और आमलक के बीच उपासकों ने धूप से बचने के लिए छतरियां लगाई हैं। इन्हें देखकर लगता है मानो वे छतरियां सुई की तरह एक चुंबक से चिपकी हुई है ।इस स्थान पर 200 से अधिक बौद्ध स्थल हैं। तीसरी सदी ईसा पूर्व में मौर्य सम्राट अशोक की कलिंग विजय के साथ बौद्ध धर्म, इसकी विचारधाराए, और शिक्षा के साथ–साथ कला और वास्तुकला को यहां प्रोत्साहन मिला ।पुष्पगिरी विश्वविद्यालय की खोज करने में ललित गिरी रत्नागिरी और उदयगिरि के बौद्ध परिसर बहुत महत्वपूर्ण साबित हुए हैं ।

उदयगिरी बौद्धविहार

उदयगिरि ऐतिहासिक स्थलों में से विशालतम स्थल विरूपा नदी के किनारे स्थित है ।विरूपा नदी अब लगभग विलुप्त हो चुकी है ।इस स्थल की खुदाई 1958 एवं 1997 में की गई थी।तब यहां कई स्तूप ,मठ ,संकुल तथा बौद्ध विहार उत्खनित किए गए। उदयगिरि बौद्ध विहार का मूल नाम माधवपुर महाविहार था ।उदयगिरि एक पर्वत के नाम से उत्पन्न है जिसका अर्थ है उगते सूर्य का पर्वत। उदयगिरि का बौद्ध विहार आरंभिक ई से 13वीं ई तक सक्रिय था। निश्चित यहां एक लंबे समय तक बौद्ध धर्म फलफूल रहा था। उदयगिरि का महास्तूप कई तलों का बौद्ध विहार है सिलाओं से बनी बावड़ी ,देवी मंदिर आदि आज भी दर्शनीय स्थल है ।बहुत से दार्शनिक और बौद्ध धर्म के अनुयाई इसको देखने आज भी आते हैं।

रत्नागिरी बौद्ध विहार

रत्नागिरी जिसका अर्थ है रतन की पहाड़ी। एक खंडहर महाविहार का स्थल है। जो कभी आधुनिक उड़ीसा, भारत में प्रमुख बौद्ध धर्म था ।यह जाजपुर जिले में ब्राह्मणी और विरूपा नदी के मध्य एक पहाड़ी है ।रत्नागिरी की स्थापना संभवत छठी शताब्दी के पूर्वाद में गुप्त राजा नरसिंहगढ़ बालाजी के शासनकाल में हुई थी और 12वीं शताब्दी में तक यह बौद्ध बिहार फलता फूलता रहा, किंतु उसके बाद यह धीरे–धीरे विलुप्त हो गया ।आज भी इसके अवशेष रत्नागिरी पहाड़ी पर स्थित है।

ललित गिरी बौद्ध विहार

ललित गिरी जिसे नलती गिरी के रूप में भी जाना जाता है। भारतीय राज्य उड़ीसा में एक प्रमुख बौद्ध परिसर है। जिसमें प्रमुख स्तूप गूढ,बुद्ध चित्र और विहार शामिल है ।जो इस क्षेत्र के सबसे पुराने स्थलों में से एक है ।इस परिसर की महत्वपूर्ण खोज में बुद्ध के अवशेष शामिल हैं। इस स्थल पर तांत्रिक बौद्ध धर्म का अभ्यास किया जाता था। रत्नागिरी और उदयगिरि स्थलों के साथ ललित गिरी बहुत दूर नहीं है। ऐसा माना जाता है इनमें से एक सूची प्राचीन अभिलेख से ज्ञात हुआ कि यह बड़े पुष्पगिरी विहार से अलग स्थित है। ललित गिरी में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की खुदाई में पहाड़ी पर एक बड़े स्तूप के अवशेष प्राप्त हुए हैं। स्तूप के अंदर बुद्ध के अवशेषों के साथ दो दुर्लभ पत्थर के ताबूत पाए गए हैं ।पूर्वी भारत में इस तरह की यह पहली खोज है ।ललित गिरी के अवशेष एक छोटे सुनहरे डिब्बे में रखे हुए थे, इस डिब्बे को अनेक डिब्बों में बंद किया गया था। मौर्य काल के बाद शिलालेखों के साथ आठवी एवं नौवीं शताब्दी ईस्वी तक के शिलालेख भी पाए गए हैं, जो इंगित करते हैं कि हीनयान और महायान संप्रदायों से संबंधित बौद्ध यहां रहते थे।

जगतद्दल बौद्ध विहार

उत्तर पूर्वी भारत में पाल शासको की चार शताब्दियों(756 से 1174)के दौरान प्राचीन बंगाल और मगध में बड़ी संख्या में मठऔर विहार स्थापित किए गए थे। कहा जाता है कि धर्मपाल ने स्वयं 50 विहारों की स्थापना की थी ।जिसमें विक्रमशिला भी सम्मिलित है ।जगतदल की स्थापना पाल वंश के अंत में हुई संभवत रामपाल(277 से 1120)द्वारा इसकी स्थापना की गई। तिब्बती स्रोतों के अनुसार पांच महान विहार उस समय थे ।विक्रमशिला, नालंदा अपने चरम पर है लेकिन अब भी गौरवशाली है सोमपुरा ,आनंदपुर और जगतद्दल।

जगतद्दल वज्रयान और शाक्य का विशेष केंद्र था ।बड़ी संख्या में ग्रंथ जो बाद में कागुर और तेगुर में दिखाई देते हैं, ज्ञात हुआ कि उनकी रचना जगतद्दल में की गई थीस शुभसीता रत्नकोश 11वीं शताब्दी के अंत या 12वीं शताब्दी के आरंभ में जगतद्दल में विद्यालंकर द्वारा संकलित किया गया था। मुस्लिम घुसपैठ के कारण 1204 में यहां के मठाधीश शाक्य श्रीभद्र जो एक कश्मीरी विद्वान थे ।जो नालंदा के अंतिम मठाधीश भी थे तिब्बत चले गए थे ।

इतिहासकार सुकुमार दत्त ने स्थाई रूप से जगतद्दल के अंतिम विनाश को 1207 बताया है ।यह अंतिम महाविहार था जिसे उखाड़ फेंका गया था ।1999 में जगतद्दल को यूनेस्को विश्व धरोहर की सूची में सम्मिलित किया गया था। यूनेस्को की रिपोर्ट है कि 105 मीटर ऊंचा और 85 मीटर लंबा एक विशाल टीला है। जो एक बौद्ध मठ के पुरातात्विक अवशेषों का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें टेराकोटा पट्टिकाए ,सजावटी ईंटें ,नाखून ,एक सोने की सिल्ली और तीन देवताओं की पत्थर पर छबियां शामिल हैं।

नदिया नवद्वीप बौद्ध शिक्षा केन्द्र

नदिया सन 273 ई को के लगभग बंगाल प्रांत के सेन राजाओं द्वारा बसाया गया था । यह स्थान भागीरथी व जलंगी के संगम पर बसा है। नालंदा व विक्रमशिला के नष्ट भ्रष्ट होने के पश्चात नदिया भारतवर्ष का सर्वोच्च शिक्षा केंद्र माना जाता था। इसमें प्राचीन भगनावशेष अब तक नदिया की प्राचीन गौरव गाथा के प्रहरी के रूप में विद्यमान है। अनेक प्रसिद्ध विद्वानों की जन्मस्थली यही थी ।लक्ष्मण सेन यहां के प्रसिद्ध विद्वान प्रधानमंत्री थे। स्मृति सर्वस्व मीमांसा, सर्वस्व ,ब्राह्मण सर्वस्व आदि ग्रंथ के रचयिता यही के थे।

न्याय के साथ स्मृति की शिक्षा भी यहां दी जाती थी।

विश्वविद्यालय में शिक्षक की नियुक्ति उसकी विद्वता के साथ–साथ वाद विवाद में दक्षता पर आधारित थी। यहां पर ''टोल पद्धति ''से शिक्षा दी जाती थी प्रत्येक टोल में 25 विद्यार्थी रहते थे।

नागार्जुन कोंडा बौद्ध शिक्षा केंद्र नागार्जुन कोंडा जिसका अर्थ है नागार्जुन हिल ।इस शहर का नाम ''विजयपुरा ''से नागार्जुनकोंडा के नाम पर रखा गया, जो महान बौद्ध धर्म के एक दक्षिण भारतीय गुरु थे । यह स्थल कभी एक बड़े बौद्ध मठ (विश्वविद्यालय) परिसर का स्थान था ।जो चीन, गंधार ,बंगाल और श्रीलंका तक से छात्रों को आकर्षित करता था ।यहां कई महायान बौद्ध और हिंदू तीर्थ स्थलों के खंडहर हैं। आज से लगभग 50 साल पहले यहां उत्खनन में बौद्ध स्तूप की खोज की गई थी। इन अवशेषों में स्तूप चौत्य और विहार सम्मिलित हैं ।बुद्ध के जीवन से जुड़े हुए अवशेष भी पाए गए। हाल नमक सातवाहन राजा ने जो प्रसिद्ध काव्य गाथा ''सप्तशती'' के रचयिता माने जाते हैं ।नागार्जुन के लिए श्री पर्वत शिखा पर एक विहार बनवा दिया था ।यहां के रसविद आचार्य अपने जीवन काल तक रहे। उनके यहां रहने से यह स्थान महायान बौद्ध धर्म का केंद्र बन गया ।जिसमें भारत तथा भारत बृहत्तर में महायान प्रचार में योगदान दिया। उस समय यहां एक बौद्ध महाविद्यालय स्थापित हो गया था।नागार्जुन का नाम तिब्बत तथा चीनी बौद्ध साहित्य में भी प्रसिद्ध है। इक्ष्वाकु नरेश हिंदू मतावलंबी होते हुए भी बौद्ध धर्म के संरक्षक थे ।यहां तक की कई राजाओं की रानियां बौद्ध धर्म की

अनुयाई थी और इस मत के प्रचार में क्रियात्मक रूप से भाग लेती थी विश्व इतिहास में धार्मिक सहिष्णुता का यह अपूर्व उदाहरण है।सात वाहनों के पश्चात नागार्जुनकोंडा में इक्ष्वाकु नरेशों ने राज्य किया था।

शारदा पीठ बौद्ध विहार

शारदा पीठ की शुरुआत अनिश्चित है और उत्पत्ति का प्रश्न भी कठिन है। क्योंकि शारदा पीठ एक मंदिर और एक शैक्षणिक संस्थान दोनों रही होगी। इस संभवतह ललितादित्य मुक्तपिड (724 ईसा पूर्व से 760 ईसा पूर्व) द्वारा बनवाया गया था ।यह अनुमान है इसका कोई निश्चित प्रमाण नहीं है ।

यह भी अनुमान लगाया जाता है की शारदा पीठ तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालय से भी पहले 273 ईसा पूर्व में नील घाटी में स्थापित किया शिक्षा का एक केंद्र था। इसका नाम ज्ञान की देवी सरस्वती के नाम पर रखा गया था। इसकी स्थापना सम्राट अशोक के शासनकाल में हुई थी।

मंदिर के निर्माण के एक विवरण के अनुसार इसका निर्माण कुशनो के शासनकाल (पहली शताब्दी की शुरुआत) के दौरान किया गया था ।ईरानी इतिहासकार अलबरूनी ने एक तीर्थ स्थल के रूप में शारदा पीठ के बारे में लिखा है उनके अनुसार आठवीं सदी तक शारदा मंदिर प्रमुख तीर्थ स्थल बन चुका था ।11वीं शताब्दी में कश्मीरी कवि बिल्हड़ ने शारदा पीठ के विषय में लिखा है ,उन्होंने कश्मीर को शिक्षा का संरक्षक बताया और उसकी ख्यातिके पीछे शारदा पीठ को माना है। कल्हण ने महाकाव्य'' राजतरंगिणी'' में भी शारदा पीठ की उपासना के प्रमुख स्थल के रूप में जिक्र किया है । कल्हण ने शारदा पीठ के राजनीतिक महत्व के विषय में भी लिखा है । 16वीं सादी में अकबर के नवरत्नों में से एक अबुल फजल ने शारदा शक्तिपीठ को महान पूजा स्थल बताया था। फजल ने लिखा है'' शुक्ल पक्ष की हर आठवीं को मंदिर हिलने लगता है और सबसे अधिक असाधारण प्रभाव पैदा करता है ''।

शारदा पीठ मात्र एक धार्मिक स्थल नहीं था, अध्यात्म और शिक्षा का केंद्र था। जैसा पूरा कश्मीर हुआ करता था। शारदा पीठ विश्वविद्यालय था ,वहां पढ़ने के लिए विदेश से भी लोग आते थे ।यहां एक शारदा नमक लिपि का भी आविष्कार किया गया था ।शारदा शक्तिपीठ में 5000 छात्र पढ़ते थे ।नालंदा से पहले यहां विश्वविद्यालय की सबसे बड़ा पुस्तकालय था। इसकी महिमा तक्षशिला और नालंदा से कम नहीं थी। 1947 में जब बटवारा हुआ तो शारदा शक्तिपीठ पाकिस्तान में चली गई, इसके बाद भारतीय तीर्थ यात्रियों के जाने में पाबंदी लग गई ।2007 तक मंदिर को पाकिस्तान तोड़ते रहे 2005 में आए भूकंप से मंदिर और भी जर्जर हो गया था। कश्मीरी पंडित काफी वक्त से शारदा पीठ के लिए करतारपुर जैसे कॉरिडोर की मांग कर रहे हैं।

श्रावस्ती बौद्ध शिक्षा केंद्र

श्रावस्ती में 2600 साल पुराना बोधि वृक्ष है। कहा जाता है कि श्रावस्ती के जेतवन में गौतम बुद्ध 24 वर्ष तक रहे थे ।श्रावस्ती में मौजूद मठ थाईलैंड ,तिब्बत और कोरिया के मठ जैसा है। भगवान बुद्ध के जीवन काल में ही श्रावस्ती बौद्ध धर्म और शिक्षा का प्रमुख केंद्र बन चुका था ।श्रावस्ती के जेतवन बिहार का निर्माण अनाथ पिंडक ने गौतम बुद्ध के जीवन काल में कराया था। जेतवन विहार का क्षेत्रफल 130 एकड़ में था। इसमें 120 भवन और शालाएं थी। उपदेश देने के लिए ,समाधि लगाने के लिए तथा भोजन करने के लिए अलग–अलग शालाएं थी। श्रावस्ती में बौद्ध ज्ञान और अचार की शिक्षा दी जाती थी ।आग लग जाने से इसका विनाश हो गया था। बुद्ध के समय में ही इसका पुनर्निर्माण हुआ । जेतवन काफी प्रशस्त और विस्तृत था। सम्राट अशोक और हर्ष के समय में श्रावस्ती ज्ञान और दर्शन का प्रमुख केंद्र था ।जहां दूर–दूर से आकर भिक्षु ज्ञान प्राप्त करते थे ।एक बौद्ध ग्रंथ के अनुसार यहां 3,57,000 गृहस्थ बौद्ध धर्म को मानते थे ।भगवान बुद्ध ने नास्तिकों को सही दिशा दिखाने के लिए कई चमत्कार यहां किए थे। अंगुलिमाल का संबंध भी श्रावस्ती से था।

कांची बौद्ध शिक्षा केंद्र

तमिलनाडु का कांची (कांचीपुरम) दक्षिण भारत में बौद्ध शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र था। कांची ने श्रावकायन और महायान तक फैले बौद्ध धर्म के विश्व प्रसिद्ध विद्वानों और गुरुजनों जैसे बोधिधर्म ,दीगनागा ,धर्मपाल, बुद्धघोष आदि को जन्म दिया । वज्रयान बौद्ध शाखा के अनुसार यह डाकिनी के 24 स्थान में से एक है। चीनी यात्री ह्वेनशाग ने जब कांची का दौरा किया था। तब यह अपनी महिमा के चरम पर था ।उन्होंने सैकड़ो महायान विहारों और 10000 भिक्षुओं के बारे में लिखा था। व्हेनशांग ने कांची में अशोक द्वारा बनवाए गए 100 फीट ऊंचे स्तूप का भी उल्लेख किया है ।आचार्य नागार्जुन के प्रसिद्ध शिष्य आर्य देव भी अपने अंतिम समय में कांची में रहे। नालंदा के मठाधीश धर्मपाल कांची से थे ।बिहार के गया के पास कुर्किहार में एक प्रसिद्ध बौद्ध विहार की खुदाई के शिलालेखों के अनुसार वहां कई मूर्तियां कांची के लोगों द्वारा दान की गई थी ।इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि कांची उस काल में भी बौद्ध धर्म में समृद्ध था।

काशी बौद्ध शिक्षा का केंद्र

काशी वैदिक धर्म के साथ–साथ बौद्ध और जैन धर्म एवं दर्शन का प्रधान केंद्र बन गया था ।बौद्ध युग में काशी का शिक्षा केंद्र के रूप में महत्व पहले से भी अधिक हो गया था। वैदिक दर्शन ,ज्ञान, तर्क और शिक्षा में काशी अग्रणी था। इसलिए महात्मा बुद्ध ने धर्म चक्र प्रवर्तन काशी से ही आरंभ किया तथा अपने ज्ञान का प्रसार यही से किया था। ताकि उनका प्रभाव काशी के विद्वानों पर पड सके।

संजीव जातक के अनुसार काशी निवासी बोधिसत्व विद्या अध्ययन के लिए तक्षशिला गया तथा विद्या अध्ययन के बाद काशी लौटकर बटुकों को पढ़ने लगा। बाद में 500 बटुक उसके शिष्य हो गए और वह विश्व प्रसिद्ध आचार्य हो गया ।सम्राट अशोक ने काशी में अनेक बौद्ध विहारों और मठो का निर्माण कराया ।

सातवीं सदी ईस्वी में बौद्ध भिक्षुक ह्वेनशांग ने काशी के विहारों चौत्यों, स्तूपों और भवनो को देखा था । ह्वेनशांग के अनुसार वहां कई मंजिला भवन थे जो अत्यंत आकर्षक और लुभावने थे। काशी वैदिक जैन और बौद्ध तीनों प्रमुख चिंतन धाराओं का प्रमुख स्थल था ।बौद्ध धर्म का ह्रास होने के साथ–साथ काशी पुनः प्राचीन वैदिक सनातन और पौराणिक दर्शन का शिक्षा केंद्र बन गया।

सारनाथ बौद्ध शिक्षा केंद्र

सारनाथ उत्तर प्रदेश में गंगा और वरुण नदियों के संगम के पास वाराणसी से 10 किलोमीटर उत्तर पूर्व स्थित एक स्थान है । सारनाथ में हिरणपार्क है जहां गौतम बुद्ध ने पहली बार धर्म को पढ़ाया था और जहां संघ को कोडन्ना के ज्ञान के माध्यम से अस्तित्व में आया । यह वही स्थान है जहां बौद्ध संघ पहली बार अपने पांच शिष्यों (कोंडिया, आशा जी, भद्दिया,बप्पा और महानमा)के ज्ञान के परिणाम स्वरुप अस्तित्व में आया था। गुप्त काल के दौरान भारत में बौद्ध धर्म का अधिक विस्तार हुआ । फैक्सीयन एक चीनी बौद्ध भिक्षु थे जिन्होंने 400 से 411 ई तक पूरे भारत में बड़े पैमाने पर यात्रा कीथी । सारनाथ के अपने वर्णन में उन्होंने चार बड़े टावरों और विहारों को देखने का उल्लेख किया है । जिसमें भिक्षु रहते थे ।

ह्वेनसांग लिखा है (640 ई के आसपास) की यहां सैकड़ो छोटे मंदिर ,धार्मिक स्तूप, लगभग 61 मीटर ऊंचाई का एक विहार देखा, जिसमें बुद्ध की एक बड़ी मूर्ति थी। लगभग 1500 यहां पुजारी है, स्तूप के पास एक अशोक स्तंभ का उल्लेख भी किया है।

मनी खेत बौद्ध विहार

यह कर्नाटक में था। बौद्ध धर्म के उदय के साथ ही देश के विभिन्न भागों में मटन विहारों और विश्वविद्यालय का निर्माण हुआ ।इस प्रकार आधुनिक विश्वविद्यालय की संकल्पना को जन्म देने का श्रेय बौद्ध धर्म को दिया जाता है।

बौद्ध शिक्षा केंद्र मथुरा

265 ईसा पूर्व सम्राट अशोक ने मथुरा अध्ययन केंद्र (बौद्ध विहार)की स्थापना की। बौद्ध धर्म के मान्य वालों ने के लिए मथुरा बहुत महत्वपूर्ण है। भगवान बुद्ध स्वयं मथुरा दो बार आए थे ।कभी मथुरा में 16 विहार हुआ करते थे ।मथुरा के स्थानीय लोगों को बुद्ध के इतिहास के विषय में भले ही पता नहीं हो, मथुरा पहुंचने वाले अनेक विदेशी सेलानी यहां बुद्ध को ढूंढने जरूर आते हैं। सन 1860 में मथुरा के जमालपुर टीले से बुद्ध की दो आदमकद प्रतिमा मिली हैं।

नागरा बौद्ध शिक्षा केंद्र 260 ईसा पूर्व सम्राट अशोक ने नागरा अध्ययन केंद्र की स्थापना की। नागरा मध्य प्रदेश की और महाराष्ट्र की सीमा पर स्थित है आज के गोदिया जिला से 8 किलोमीटर दूरी पर है ।

दंतपुर बौद्ध शिक्षा केंद्र 264 ईसा पूर्व दंतपुर बौद्ध विहार की स्थापना राजकुमार महेंद्र और राजकुमारी संघमित्रा के बौद्ध धर्म के प्रसार के निर्माता भिक्षु बनने पर अतिशय उल्लास में दंतपुर (कालिंग देश की राजधानी) में बौद्ध विहार की स्थापना की गई । 279 ईसा पूर्व सम्राट अशोक ने गंधार में एक बौद्ध शिक्षा के लिए बौद्ध विहार की स्थापना की थी ।

श्रीनगर बौद्ध शिक्षा केंद्र।

258 ईसा पूर्व श्रीनगर बौद्ध विहार की स्थापना (श्रीनगर का प्राचीन नाम प्रबर पुर था प्रबरपुर का ही अशोक कालीन परिवर्तित नाम श्रीनगर रखा गया) यह स्थान अद्वितीय धन–धान्य से परिपूर्ण था । इस कारण इस महा रमणीक स्थल का नाम सम्राट अशोक ने श्रीनगर रखा था । जम्मू कश्मीर जम्मू का पूरा क्षेत्र बौद्ध मय था ।कश्मीर को सम्राट कनिष्क ने बसाया था और बढ़ाया था। कनिष्क अत्यंत प्रसिद्ध बौद्ध धर्म सम्राट थे, सम्राट कनिष्क के नाम पर इस नगर का नाम कनिष्कपुर था ।जो आज कश्मीर नगर है ।

गिरनार बौद्ध शिक्षा केंद्र

257 ईसा पूर्व गिरनार बौद्ध विहार की स्थापना सम्राट अशोक ने की थी। ह्वेनसंग एवं इत्सिंग के वृतांतों से पता चलता है कि हीनयान और महायान दोनों लगभग 250 वर्षों तक यहां फले –फूले । गिरनार से एक प्रसिद्ध शिलालेख प्राप्त हुआ जो वहां बौद्ध के विहार में ही लगाया गया था ।

एरा गुंडी बौद्ध अध्ययन केंद्र 256 ईसा पूर्व एरा गुंडी बौद्ध विहार की स्थापना सम्राट अशोक ने आंध्र प्रदेश में की थी । यहां भी जन शिक्षा के लिए एक विशाल शिलालेख गढ़वाया गया था ।

गुंटूर बौद्ध शिक्षा केंद्र

255 ईसा पूर्व गुंटूर बौद्ध विहार (मैसूर के पास कॉपबल तहसील में)सम्राट अशोक ने कई सौ गांवों में एक साथ बौद्ध विहार की स्थापना कराई थी । विहारों में सिलाओं का पुस्तकालय बना दिया था । इन्हीं सिलाओं को राज कर्मचारी छगड़ पर लादकर गांव–गांव ले जाकर लोगों को पढ़कर उसे पर अमल करने का निवेदन किया करते थे ।

बोधगया बौद्ध शिक्षा कन्द्र

गया बौद्विघ विहार 250 ईसा पूर्व बोधगया में महाबोधि विहार की स्थापना सम्राट अशोक ने तीसरी बौद्ध संगति की याद में की थी । यहां आज प्राचीनतम बौद्ध मंदिर के नाम से प्रसिद्ध एक प्राचीन इमारत है जहां साल भर देश–विदेश के हजारों भिक्षु एवं श्रद्धालु आते हैं।

अन्य बौद्ध शिक्षा केंद्र (बौद्ध विहार)

उपर्युक्त प्रमुख हिंदू एवं बौद्ध शिक्षा केदो के अतिरिक्त भी देश में अनेक छोटे–बड़े हिंदू ,बौद्ध और जैन आश्रम बिहार एवं मठ विद्यालय एवं शिक्षा केदो के रूप में विकसित हुए ।वैशाली ,नासिक, उज्जैन तथा पाटलिपुत्र प्राचीन काल में ब्राह्मण शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे ,जो बाद में बौद्ध शिक्षा के लिए प्रसिद्ध हुए ।कपिलवस्तु भी विद्या और शिल्प का केंद्र था जहां

गौतम बुद्ध ने शिक्षा प्राप्त की। फाह्यान ने कश्यप बुद्ध संघाराम का उल्लेख किया है, जहां बाद में वह ह्वेनसांग ने चार माह रहकर सर्वास्थितवाद का अध्ययन किया ह्वेनसांग ने कश्मीर स्थित विहार में कोष ,न्याय तथा हेतु की शिक्षा ग्रहण की। यहां देश के विभिन्न विद्वान बौद्ध भिक्षुओं के उपदेश सुनने के लिए आते थे। जालंधर का बौद्ध विहार भी बहुत प्रसिद्ध था ,जिसका उल्लेख ह्वेनसांग ने किया है ।

''श्रुघ्न'' में के मठ में उसने बौद्ध विद्वान जयगुप्त से विद्यार्जन किया ।उसने मतीपुर के विशाल संघाराम में रहकर मित्र सेन से अभीधर्मज्ञान ,प्रस्थान शास्त्र का अध्ययन किया । कान्यकुब्ज के भद्र बौद्ध विहार में रहकर उसने वीर्यसेन से त्रिपिटक का ज्ञान प्राप्त किया। ह्वेनसांग ने वाराणसी के 30 ऐसे विहारों का उल्लेख किया है ।

जो सर्वस्थितिवाद के प्रमुख केंद्र थे । राजग्रह भी बौद्ध शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र था । 641 ईसा पूर्व में हुए ह्वेनसांग ने भीनमाल के बौद्ध मठ की यात्रा की थी, जिसमें 100 बौद्ध भिक्षु थे ।अयोध्या एवं पुष्कर भी प्राचीन काल के प्रसिद्ध हिंदू केंद्र थे, किंतु बाद में वहां बौद्ध विहारों का निर्माण हुआ। पुष्कर में निश्चित अंतराल पर विशाल धर्म सभाओं का आयोजन होता था ,जिसमें देश भर के हिंदू एवं बौद्ध विद्वान सम्मिलित होते थे। कपिलवस्तु का निग्रोधाम विहार राजगृह का जेतवान और पूर्वराम विहार ,वैशाली का अमृत विहार और राजगृह वेणुवन विहार बहुत प्रसिद्ध थे । मठों एवं विहारों के साथ–साथ कुछ संघाराम का भी विकास हुआ, जिनमें आध्यात्मिक चिंतन होता था ।

ह्वेनसांग ने मुंगेर के हिरण्य संघाराम में रहकर वासुबंधु को मित्र संघभद्र द्वारा लिखित न्याय शास्त्र के ग का अध्ययन किया ।

जब 11वीं 12वीं शताब्दी ईस्वी में मुसलमान ने भारत में अपने राज्य का विस्तार किया था तब शिक्षा के अधिकांश प्राचीन केंद्र नष्ट हो गए थे ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गोविंद चंद्र पांडेय : बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास
2. मायकृण्डल :असिएंट इंडिया इज डिस्क्राइब्ज मेगास्थनीज एंड एरियन।
3. विनय पिटक :नालंदा संस्करण।
4. एपीग्राफीया इंडिया
5. बगची : इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली
6. डॉ वासुदेव उपाध्याय: प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मंदिर।
7. फर्गुसन और वर्सेज : दि केव टेंपल्स ऑफ़ इंडिया।
8. कैंब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया।
9. डॉ . पृथ्वी कुमार अग्रवाल :प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु।
10. सिंह, डा अनिल कुमार,:बौद्धकालीन शिक्षा पद्धति 2008, कला प्रकाशन, बी.एच.यू. वाराणस
11. टी. डब्ल्यू. रिजडेविड्स : बुद्धिष्ट इंडिया, कलकत्ता 1950।
12. शर्मा, आर.एस.: मैटेरियल बैकमाउन्ड आॅफ ओरिजिन आॅफ बुद्धिष्ट, सेन एण्ड राव (संस्करण) नई दिल्ली, 1998।
13. पाण्डे, गोविन्द चन्द्र :बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, लखनऊ, 1963।
14. झा द्विजेन्द्रनारायण, श्रीमालीकृष्णमोहन : प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली विश्वविद्यालय।

शिक्षा की वर्तमान समस्याए

मनोज कुमार
सहायक प्राध्यापक

प्रस्तावना

विद्या एक ऐसा धर्म है जिसे न कोई चुरा सकता है और ना कोई छीन सकता है। यह एक एकमात्र साधन है जो बांटने पर कम नही ं होता बल्कि इसके विपरित बढ़ता ही जाता है। हमने दखे ा होगा कि हमारे समाज में जो षिक्षित व्यक्ति होत` हैं उनका एक अलग ही मान सम्मान होता है और लोग हमारे समाज में उन्हीं की इज्जत करते हैं। षिक्षा समाज मे ं अमीर–गरीब, ऊँच–नीच के भेद को मिटा देता है। षिक्षक समाज के सृजन, उत्थान और परिवर्तन का एक माध्यम है! समाजिक उत्थान स्वीकार किया जाता है, समाज में परिवर्तन कब हो सकता है, जब मनुष्य को परिवर्तन की आवष्यकता हो। कोई भी समाज षिक्षा के माध्यम से आवष्यक परिवर्तन ला सकता है। वर्तमान समय मे ं प्रौद्योगिकी का बहुत तेजी से विकास हो रहा है इससे सामाजिक और आर्थिक प्रगति हो रही है जिसके कारण आय में सुधार, रोजगार के नए अवसर और गरीबी उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। षिक्षा के माध्यम से सामाजिक स्तर पर वर्गी भेदभाव, लिंग पूर्वाग्रह को भी दूर किया जा सकता है। समाज में समानता और न्याय को बढ़ावा मिलता है। षिक्षा सामाजिक विकास और आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है। मानव जीवन मे ं षिक्षा के माध्य से अभतू पूर्व परिवर्तन दखे ने को मिलता है।

षिक्षा एक सामाजिकरण का भी माध्यम है। षिक्षा के माध्यम से बच्चों और युवाओं में मूल्यों के प्रति संवेदना बढ़ती है और समाज में परिवर्तन लाने की क्षमता को बढ़ावा मिलता है। समाज में होने वाले विभिन्न परिवर्तन चाहे वह अच्छे हो या बुरे हो षिक्षा उनको प्रभावित करने वाले सदैव एक महत्वपूर्ण कारक रहा है। षिक्षा एक महत्वपूर्ण माध्यम है जो व्यक्ति और समाज दोनो ं में बड़े पैमाने पर सामाजिक परिवर्तन लाता है। व्यक्ति के दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन लाती है। फ्रांसिस जे ब्राउन के अनुसार षिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति को समाज की गतिविधियो ं में प्रभावी रूप से भाग लेने और समाज की प्रगति में सकारात्मक योगदान दने` में सक्षम बनाती है। सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक विकास के एक एजेंट या उपकरण के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह एक राष्ट्रीय निर्माण और विकास का एक प्रमुख घटक है। समाज में तीर्थ सामाजिक परिवर्तन में षिक्षा की भूमिका काफी व्यापक देखने को मिली है।

षिक्षा संस्कृति को संरक्षित करती है और उन तथ्यो ं का रिकॉर्ड रखती है जिनका प्रयोग आने वाली पीढ़ियों द्वारा किया जायेगा यह सोचने बेहतर निर्णय लेने और अपने दृष्टिकोण में नवीन ताला में भी सक्षम बनाती है। समय–समय पर विभिन्न सामाजिक परिवर्तनो ं और कारणो ं और प्रभाव के बारे मे ं जनता को जागरूक करती है। सैमुअल कॉइनिंग निवेदन किया है कि षिक्षा को उस प्रक्रिया के रूप मे ं परिभाषित किया जा सकता है जिसके द्वारा एक समूह की सामाजिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित हो और साथ ही वह प्रक्रिया जिससे बच्चा सामाजिक हो सकता है और समूह के व्यवहार के नियमो ं को सीखता है जिससे वह पैदा हुआ है।

षिक्षा व्यवस्था की समस्याएँ

पाठ्यक्रम में व्यवहारिकता की कमी, स्कूली स्तर के आंकड़ो ं की विष्वसनीयता में कमी, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गो के लिए किए गए प्रावधानो ं का` लागू किया जाना, षिक्षा के अधिकार अधिनियम को जमीनी स्तर पर लागू ना किए जाना, षिक्षा संस्थानो ं की खराब, वैष्वीकरण के प्रदान की गई षिक्षा और उद्योगां` के लिए आवष्यक षिक्षा के बीच में अंतर, महंगी उच्च षिक्षा, लैंगिक अंतर–अभिभावकों की बात करे ं तो वह लड़का लड़कियो ं में अंतर स्वीकार करत` हैं लड़कियो ं को उच्च षिक्षा दने` के पक्षा में नहीं है भारतीय बच्चो ं के लिए आधारभूत सुविधाओ ं की कमी, समावेषी षिक्षा का अभाव। अभिभावक बच्चो ं की इच्छा के विरूद्ध अपनी इच्छा उन पर थोपते है, बच्चो ं की इच्छा और क्षमता का` अनदेखी करना भी एक बड़ी समस्या है षिक्षा व्यवस्था में व्याप्त इन समस्याओ ं को दरू करना वर्तमान समय की महत्वपूर्ण मांग है। षिक्षा की समस्याओ ं का समाधान करन` के लिए निम्न उपाय किए जाने अनिवार्य हैं।

षिक्षा क्षेत्र में प्रौद्योगिकी को बढ़ावा दने ा, षिक्षा के प्रषिक्षण की व्यवस्था करना, सरकारी खर्चा का` बढ़ाना, समावेषी षिक्षा प्रणाली पर जोर दने ा, गुणवत्ता की षिक्षा का` बढ़ावा दने ा। षिक्षा क्षेत्र में ढांचागत विकास हेतु पीपीपी मॉडल को अपनाना। वर्तमान समय में षिक्षा का पूरा तत्रं अब बदल चुका है। अब हम बारहवीं कक्षा के बाद दरू स्थ षिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से नौकरी के साथ पढ़ाई कर सकते हैं। सरकार द्वारा षिक्षा व्यवस्था मे ं सुधार लाने हेतु पीआर सुब्रमण्यम समिति का गठन किया गया था समिति ने षिक्षा क्षेत्र के लिए नए सिविल सर्विसेज कैडर बनान` की सिफारिष की गई। हाल ही मे ं भारतीय नई षिक्षा नीति का` तैयार की गई है 2030 तक लागू करने की बात कही गई है। इस नई षिक्षा नीति में बुनियादी षिक्षा पर अधिक जोर दिया गया है लागू करन` की बात कही गई है।

एक और यदि यह बात सत्य है कि समाज ा़िक्षा का` प्रभावित करता है तो दसू री बात यह भी है सत्य है कि समाज के द्वारा भी षिक्षा प्रभावित होती है। षिक्षा समाज के स्वरूप सुनिष्चित करती है उसकी संस्कृति धार्मिक राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति को प्रभावित करती है। षिक्षा मानव समाज की आधारषिला है षिक्षा के माध्यम से समाज की भौगोलिक स्थिति पर नियंत्रण किया जा सकता है। षिक्षा समाज के स्वरूप में परिवर्तन कर सकती है। षिक्षा समाज की संस्कृति का संरक्षण कर सकती है। षिक्षा समाज की धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति को नियंत्रित कर सकती है। समाज में रहकर

नए–नए अनुभव प्राप्त करना समजा की आवष्यकता एवं समस्याओ ं से परिचित होना इन आवष्यकता की पूर्ति और समस्याओ ं के हल के लिए विचार करना षिक्षा के अभाव मे ं कुछ भी संभव नहीं है। सामाजिक क्रांति के लिए षिक्षा मूलभूत आवष्यकता होती है। षिक्षा को चरित्र और नैतिक विकास का आधार कहा जाता है। षिक्षा के माध्यम से विनम्रता, साहस, सच्चाई, ईमानदारी, षिष्टाचार, स्नेह, सेवा, त्याग की भावना, अच्छे–बुर` में भेद की षक्ति प्राप्त होती है। जा` वास्तव में एक महान और सूक्ष्म रू५ से बच्चो ं में चरित्र का निर्माण करती है। वर्तमान भारतीय षिक्षा मे ं संकट के कारण मूल्यपरक षिक्षा का अभाव है। आज इस बात को नकारा नही ं जा सकता कि भारत में मलू यों की षिक्षा एवं शैक्षणिक मूल्यो ं का पतन हुआ है। मलू य संबंधी प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण में समस्त जीवन मात्र के कल्याण की कामना निहित होती है। जनसंख्या में वृद्धि समस्त समस्याओ ं का एक प्रमुख कारण है। षिक्षा का अधिकार उपलब्ध हान` के बावजूद 1 से 14 वर्ष तक आयु वर्ग के बच्चो ं का`अधिकांष कुपोषण का षिकार है। षिक्षा प्राप्त करन` वाल` आयु वर्ग के बालको ं की संख्या इतनी अधक है कि उनका पालन–पोषण ठीक प्रकार से नही ं हो पा रहा है। वहीं दसू री तरफ उनके लिए पर्याप्त शैक्षणिक सुविधाओ ं का भी अभाव है। आजकल षिक्षा प्रणाली को बढा़वा देने के लिए बहुत सी सरकारी योजनाए ं चलाई जा रही हैं ताकि सभी का` उपयुक्त षिक्षा तक पहुंच संभव हो सके। इन सरकारी योजनाओ ं का प्रचार विज्ञापन शहरी और ग्रामीण क्षेत्रो ं में टीवी और अखबारो ं के द्वारा पहुंचाया जा रहा है। बावजूद उसके यह प्रयास बहुत ही कम है क्योंकि हमारी जनसंख्या बहुत अधिक है।

संकुचित दृष्टिकोण का होना वर्तमान भारतीय षिक्षा की स्थिति का एक प्रमुख कारण है। लोगो ं को अधिकांष अनुषासनहीनता भी वर्तमान षिक्षा की एक बड़ी समस्या है रोजगार पर षिक्षा का न होना। आज के आधुनिक तकनीकी संसार में षिक्षा काफी अहम है। आजकल में समय षिक्षा के स्तर का` बढा़न` के लिए बहुत सार` तरीके अपनाए जा रहे हैं। वर्तमान समय में षिक्षा का पूरा तंत्र अब बदल चुका है। अब हम बारहवीं कक्षा के बाद दरू स्थ षिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से नौकरी के साथ पढ़ाई कर सकत` हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रौद्योगिकी के विकास ओर करानामहामारी के इस काल में डिजिटल षिक्षा डिजिटल षिक्षा का अर्थ है षिक्षा मे ं ऐस` उपकरणो ं और तकनीकों का प्रयोग षामिलना करना यह एक नए और व्यापक तकनीकी क्षेत्र है जो किसी भी छात्र को ज्ञान प्राप्त करन` और दष् ा के किसी भी कोने से जानकारी प्राप्त करने में मदद करता है। न केवल भारत के बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डिजिटल षिक्षा भविश्य इस रिपाट` में उन्होनं` गुणवत्तापूर्वक डिजिटल षिक्षा के बारे मे ं बताया और सरकार द्वारा दूरदराज के क्षेत्रो ं में षिक्षको ं विद्वानो ं और छात्रो ं को आपस मे ं जोड़ने के लिए दीक्षा मचं स्वयंप्रभा टीवी चैनल ऑनलाइन का पाठय् क्रम और नियर षिक्षा वाणी जैसे कई उिजिटल कार्यक्रम की शुरुआत के बार` में बताया। वर्तमान समय में दरू स्थ षिक्षा की सुविधा के लिए नवीन मोबाइल ऐप और पोर्टल लॉन्च किए जा रहे हैं जैसे उत्तराखं डमें संपर्क बैंक ऐप का प्रयोग कर किया जा रहा है जिसके माध्यम से प्राथमिक स्कूल के छात्र ऐनिमेटड वीडिया ऑडियो वर्कषीट पहेली आदि का उपयोग कर रहे हैं। असम में कक्षा 1 से 6 के लिए इसी प्रकार का मोबाइल एप्लीकेषन ए५ लॉन्च किया गया। लगभग सभी राज्यो ं न` इसी तरह के पोर्टल पर ए५ बनाकर छात्रो ं और षिक्षकों के बीच एक कड़ी बनाई। जहाँ डिजीटल षिक्षा के अनके फायद` हैं वहीं इसके कुछ कमियां भी हैं। डिजिटल षिक्षा पूरी तरह तकनीक पर आधारित है। कम्प्यूटर लैपटॉप मोबाइल और इंटरनेट के अभाव में डिजिटल षिक्षा ग्रहण नहीं की जा सकती। यह व्यवस्था एक खर्चीली व्यवस्था है। इसके अलावा षरीरिक और मानसिक रूप से विद्यार्थियो ं के लिए हानिकारक भी साबित हुई है। आर्थिक रू५ से कमजोर माता–पिता अपने बच्चो ं को इस प्रकार की व्यवस्था उपलब्ध नही ं करा सकते। जिन क्षेत्रो ं में इंटरनेट की कमी है वहाँ डिजिटल षिक्षा प्रदान नही ं की जा सकती इसके अलावा जो सबसे ंगंभीर समस्या सामने आयी है वह है कि बच्च` ना केवल इंटरनेट के माध्यम से षिक्षा प्राप्त कर रहे हैं बल्कि वह कुछ आपत्तिजनक सामग्री तक उनकी पहुँच बन गई है इससे बच्चो ं का नैतिक पतन हो रहा है। इसके आवा ऑनलाइन गेमिंग से बच्चे शारीरिक रू५ से स्थलू हो रहे हैं और आर्थिक नुकसान भी कर लते` हैं। वर्तमान समय में षिक्षा बहुत महंगी हो गई है। षिक्षा में अनावष्यक राजनीतिक हस्तक्षेप का होना सांस्कृतिक पिछड़पे न का होना छात्रो ं एवं षिक्षकों के पारस्परिक संबंधो ं का न होना। षिक्को ं की कमी एवं अनपु स्थिति की समस्या शैक्षणिक अवसरो ं की समानता का ना होना, आर्थिक स्थिति सुदढ़. ना होना, पाठ्यक्रम की समस्या अवसरो ं में असमानता और कुछ अलग करन` के लिए षिक्षा को सभी के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है यह एक जीवन के कठिन समय मे ं चुनौतियो ं से सामना करन` में सहायता करता है पूरी षिक्षण प्रक्रिया के दौरान प्राप्त किए गए क्या हम सभी ओर प्रत्येक व्यक्ति को अपन` जीवन के प्रति आत्मनिर्भर बनाता है। यह जीवन में बेहतर संभावनाओ ं को प्राप्त करन` के अवसर दिलाता है। ग्रामीण क्षेत्र में षिक्षा के महत्व को बढ़ावा दने` के लिए सरकार द्वारा बहुत से सहयोग किए जा रहे हैं यह समाज में सभी व्यक्तियो ं मे ं समानता की भावना लाने के लिए अनिवार्य है। दष् ा के विकास और उसकी प्रगति के लिए षिक्षा को चुस्त–दुरुस्त होना अनिवार्य है।

सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में षिक्षा का कार्य षिक्षा जीवन के आधुनिक तरीके के पक्ष मे ं लागे ों के दृष्टिकोण का` बदलने में मदद करती है। जिससे कि पूर्वाग्रह अंधविष्वासों और मान्यता जा` समाज के लिए नकारात्मकता लाती है से लड़ने में मदद करती है। यह समाज मे ं व्याप्त कमजोरिया ं अज्ञानता से लागे ां` को अवगत कराती है। यह लोगा ं का` जीवन के सभी क्षेत्र में प्रगति आगे बढ़ने के लिए आवयक ज्ञान और कौषल प्राप्त करने में मदद करती है।

यदि समाज मे ं परिवर्तन लाना है तो षिक्षा सामाजिक परिवर्तन मे ं नेतृत्व पद्र ान करती है। लाके तंत्र के अनुकूल सामाजिक परिवर्तन लाना है ता` हमे ं लोगों का` व्यापक रू५ से साक्षर बनाना होगा और सामाजिक पुनः निर्माण की प्रक्रिया मे ं तेजी लाने के लिए बुनियादी षिक्षा डिजाइन को महत्व देना होगा। संस्कृति का संचार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में राष्ट्रीय संस्कृति के संचार को आसानी से पहचं ाने के माध्यम के रूप में षिक्षा एक महत्वपूर्ण राले अदा करती है। षिक्षा

एक सतत प्रक्रिया है जा` समाज में स्थिरता आरै निरंतरता प्रदान करती है। षिक्षा समाज का` आवष्यक और वाछं निया सामाजिक सुधारो ं का` अपनाने के लिए भी तैयार करती है। समाज निमार्त ा निर्देषक और परिवर्तन के स्राते के रूप में षिक्षा एक मत्वपण्ू ा यंत्र के रूप में कार्य करती है। राष्ट्रीय एकीकरण आरै राष्ट्रीय विकास षिक्षा के माध्यम से समाज के विभिन्न समूह और वर्गों के बीच जा` संघर्ष है उसको समाप्त किया जा सकता है। षिक्षा ही एक माध्यम है जो विभिन्नता में एकता लाता है। स्वतंत्रता सामाजिक न्याय और समान अवसर के मल्ू यों पर आधारिक सामाजिक व्यवस्था प्रदान करती है। आर्थिक विकास, तकनीकी विकास आरै सामाजिक समरसता की स्थापना मे ं षिक्षा एक महत्वपण्ू ा माध्यम है। षिक्षा सोच, विचारधारा, संस्कृति और अंतर–क्रिया में परिवर्तन को प्रभावित करती ह` आरै यही समाज को गतिषील जीवंत और समृद्ध बनाती है। वर्तमान समय में आर्थिक सामाजिक अन्य क्षत्रे ा ं में ढाचं ागत आरै नीतिगत परिवर्तन और प्रगति काफी तेज गति से हुई है। फलस्वरूप इस बढ़ते विकास दर ने सभी क्षत्रे ों में षिक्षा के महतव का` दर्षाया है। लेकिन इन परिवर्तनों ने हमारी षिक्षा व्यवस्था में व्याप्त कुछ समस्याओं का` भी चिह्नित किया है और षिक्षा व्यवस्था में व्याप्त कुछ समस्याओं का` दूर करना वर्तमान समय की महत्वपूर्ण मांग है। हाल के वैष्विक अध्ययन जिसमें मल्ू यों के पीइडब्ल्यू रिसर्च सेटं र द्वारा विष्व के 90 से अधिक देषां` में स्कूली षिक्षा मांगों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। यह अध्ययन विष्व में धर्म एव ं षिक्षा नाम से किया गया। दुनिया के प्रमुख धर्मों के बीच षैक्षिक प्राप्ति पर केंद्रित है इसमें हिन्दुओं में षैक्षिक प्राप्ति का स्तर सबसे कम पाया गया और भारतीय विद्यालय षिक्षण की व्यवस्था का` अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे निम्न स्थान पद्र ान किया गया। पीसा जा` कि यूरोप मे ं अपनाए जाने वाला माप मानक है ने भारतीय स्कूलो ं की गुणवत्ता का अध्ययन किया इसके द्वारा किए गए 110 देषां` के मध्ययन में भारत का` नीचे से दूसरी रैंक प्रदान की गई है, जो कि भारतीय षिक्षा की निराषाजनक स्थिति का` दर्षाता है। वर्ष 2015 के राष्ट्रीय सर्वेक्षण नमूने के परिणामो ं में भी माध्यमिक विद्यालयों के गणित विज्ञान और अंग्रेजी को सीखने की क्षमता मे ं गिरावट देखने का` मिली है परंतु अनेक अध्ययनों से यह साबित हुआ है कि विष्व में सीखने की दृष्टि से भारतीय बच्च` किसी अन्य देष से आग` है उदाहरण स्वरूप अमेरिका में भारतीय अमेरिकी सबसे ज्यादा षिक्षा समुदायों में से एक है।

संदर्भः–

1. www.historyjournal.net
2. https://www.drishtiias.com/hindi/dailyupdates /dailynews-editorials/problem-of-current-education-system-in-india
3. https://www.hindivibhag.com
4. http://ignited.in/1/a/305394
5. https://hindi.carreerindia.com
6. https://shikshaniti.com

Assessing the Efficacy of Bilingual Education Programs in Multicultural Classrooms

Prof. M. Afaque Hashmi
Dr. Zakir Hussain Teachers' Training College
Laheriasarai, Darbhanga, Bihar

Abstract

This comprehensive study evaluates the effectiveness of bilingual education programs in multicultural classrooms, with specific focus on the integration of regional languages including Hindi, Bhojpuri, Maithili, Magahi, Urdu, and other vernacular languages prevalent in Bihar, India. The research employs a mixed-methods approach to assess both academic achievement and socio-cultural integration outcomes among students from diverse linguistic backgrounds. Through systematic analysis of 200 students across six educational institutions in Darbhanga and surrounding districts, this study provides empirical evidence for the efficacy of bilingual pedagogical approaches in linguistically heterogeneous classroom environments.

Keywords: Bilingual education, multicultural classrooms, regional languages, academic performance, cultural integration, Bihar education system

1. Introduction

The linguistic landscape of Bihar presents a complex educational challenge, with students speaking Hindi, Bhojpuri, Maithili, Magahi, Urdu, and numerous other regional languages entering classrooms where instruction often occurs in a single medium. This multilingual reality necessitates innovative pedagogical approaches that can accommodate diverse linguistic backgrounds while ensuring equitable educational outcomes.

Bilingual education programs have emerged as a promising solution to address the needs of linguistically diverse student populations. These programs aim to maintain and develop students' heritage languages while simultaneously fostering proficiency in the language of wider communication. In the context of Bihar's multicultural classrooms, such programs must navigate the intricate relationships between regional languages and standard Hindi or English as instructional media.

The significance of this research lies in its potential to inform educational policy and practice in one of India's most linguistically diverse states. With over 104 million speakers of various languages and dialects, Bihar presents an ideal case study for understanding how bilingual education can promote both academic excellence and cultural preservation in multicultural educational settings.

2. Literature Review

Previous research on bilingual education has demonstrated mixed results, with outcomes often dependent on program design, implementation quality, and socio-cultural context. Cummins' (2000) interdependence hypothesis suggests that skills developed in one language can transfer to another, supporting the theoretical foundation for bilingual instruction. Similarly, research by García and Wei (2014) on translanguaging practices highlights the cognitive benefits of multilingual education approaches.

In the Indian context, studies by Mohanty (2006) and Panda and Mohanty (2009) have shown positive effects of mother tongue-based multilingual education on tribal students' academic

performance. However, limited research exists specifically examining the efficacy of bilingual programs in Bihar's unique linguistic environment, where multiple regional languages coexist with Hindi and English.

3. Research Objectives

Objective 1: To evaluate the impact of bilingual education programs incorporating Hindi, Bhojpuri, Maithili, Magahi, and Urdu languages on students' academic performance in core subjects (mathematics, science, and language arts) compared to monolingual instruction methods.

Objective 2: To assess the effectiveness of bilingual education programs in promoting cross-cultural understanding, social integration, and heritage language maintenance among students from diverse linguistic communities in multicultural classroom settings.

4. Research Hypotheses

Hypothesis 1 (H_1): Students enrolled in bilingual education programs that incorporate their heritage languages (Hindi, Bhojpuri, Maithili, Magahi, Urdu, and others) will demonstrate significantly higher academic achievement scores in mathematics, science, and language arts compared to students in monolingual instructional programs.

Null ypothesis 1 (H_0): There is no significant difference in academic achievement between students in bilingual education programs and those in monolingual instructional programs.

Hypothesis 2 (H_2): Students participating in bilingual education programs will exhibit significantly greater levels of cross-cultural competence, peer acceptance across linguistic groups, and heritage language retention compared to students in monolingual classroom environments.

Null Hypothesis 2 (H_0): There is no significant difference in cross-cultural competence, peer acceptance, and heritage language retention between students in bilingual and monolingual educational programs.

5. Methodology

5.1 Research Design

This study employs a mixed-methods quasi-experimental design, incorporating both quantitative and qualitative data collection methods. The research compares bilingual education programs with traditional monolingual instruction across multiple linguistic communities in Bihar.

5.2 Participants

The study involves 200 students aged 8-16 years from six schools in Darbhanga, Madhubani, and Sitamarhi districts. Participants represent speakers of Hindi (n=56), Bhojpuri (n=49), Maithili (n=45), Magahi (n=31), Urdu (n=13), and other regional languages (n=6). Schools were stratified by urban/rural location and socioeconomic demographics.

5.3 Sampling Method

Purposive sampling was employed to select schools with existing bilingual programs and comparable monolingual programs. Six schools were matched on variables including student demographics, teacher qualifications, and infrastructure resources.

5.4 Data Collection Instruments

Quantitative Measures:

- Standardized achievement tests in mathematics, science, and language arts
- Language proficiency assessments in heritage and instructional languages

- Cross-cultural competence scale adapted for regional context
- Peer acceptance and social integration questionnaire

Qualitative Measures:

- Semi-structured interviews with students, teachers, and parents
- Classroom observation protocols
- Focus group discussions with community leaders
- Heritage language use documentation

5.5 Data Collection Procedures

Data collection occurred over two academic years (2023-2025) with pre-test, mid-program, and post-program assessments. Classroom observations were conducted monthly, while interviews and focus groups occurred at six-month intervals.

5.6 Ethical Considerations

The study received approval from the Institutional Ethics Committee. Informed consent was obtained from all participants and guardians. Confidentiality and anonymity were maintained throughout the research process.

7. Data Analysis Plan

7.1 Quantitative Analysis

Statistical analyses included:

- Descriptive statistics for all variables
- Independent samples t-tests comparing bilingual and monolingual groups
- ANOVA for comparing outcomes across different language groups
- Multiple regression analysis controlling for demographic variables
- Effect size calculations using Cohen's d

7.2 Qualitative Analysis

Qualitative data were analyzed using:

- Thematic analysis of interview transcripts
- Content analysis of classroom observations
- Narrative analysis of student experiences
- Triangulation of multiple data sources

6. Results

6.1 Academic Performance Outcomes

The quantitative analysis revealed significant differences between bilingual and monolingual education groups across all measured academic domains.

Table 1: Academic Performance Comparison Between Bilingual and Monolingual Programs

Subject Area	**Bilingual Program**		**Monolingual Program**		**Statistical Analysis**	
	Mean (SD)	n	Mean (SD)	n	t-value	Cohen's d
Mathematics	78.4 (12.3)	100	69.2 (14.1)	100	4.87***	0.69
Science	76.8 (11.9)	100	68.5 (13.7)	100	4.32***	0.64
Language Arts	82.1 (10.5)	100	70.3 (15.2)	100	6.11***	0.89
Overall Academic Score	79.1 (9.8)	100	69.3 (12.4)	100	6.02***	0.87

Graph 1: Academic Performance Comparison Between Bilingual and Monolingual Programs

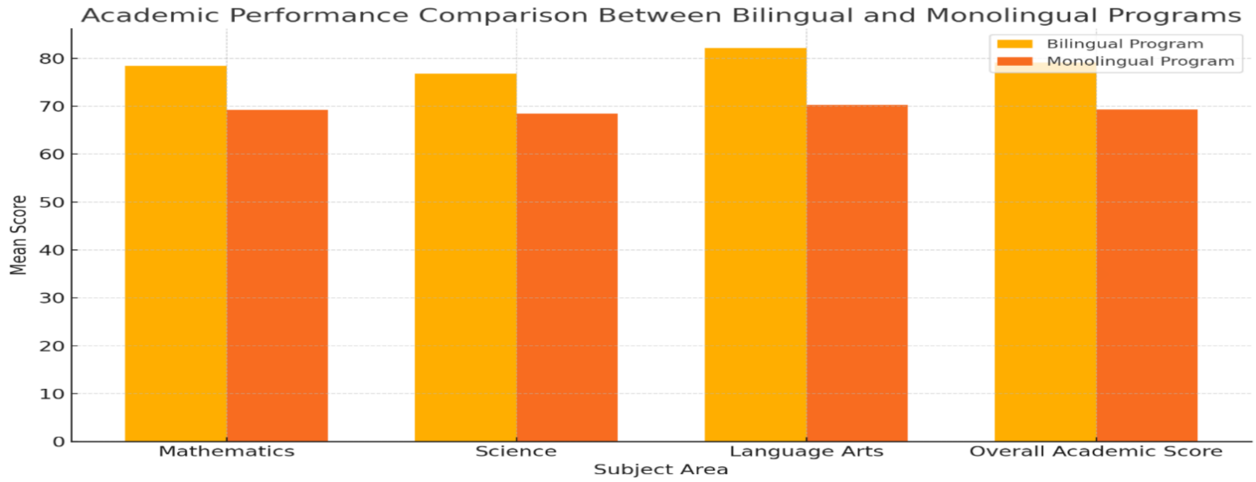

Table 2: Academic Performance by Language Background

Language Group	n	Bilingual Program Mean	Monolingual Program Mean	Improvement (%)	Effect Size
Hindi	56	77.8	65.9	18%	0.72
Bhojpuri	49	79.6	65.2	22%	0.81
Maithili	45	78.9	66.3	19%	0.75
Magahi	31	80.2	66.3	21%	0.78
Urdu	13	81.1	65.4	24%	0.89
Others	6	78.5	67.2	17%	0.68

Graph 2: Academic Performance by Language Background

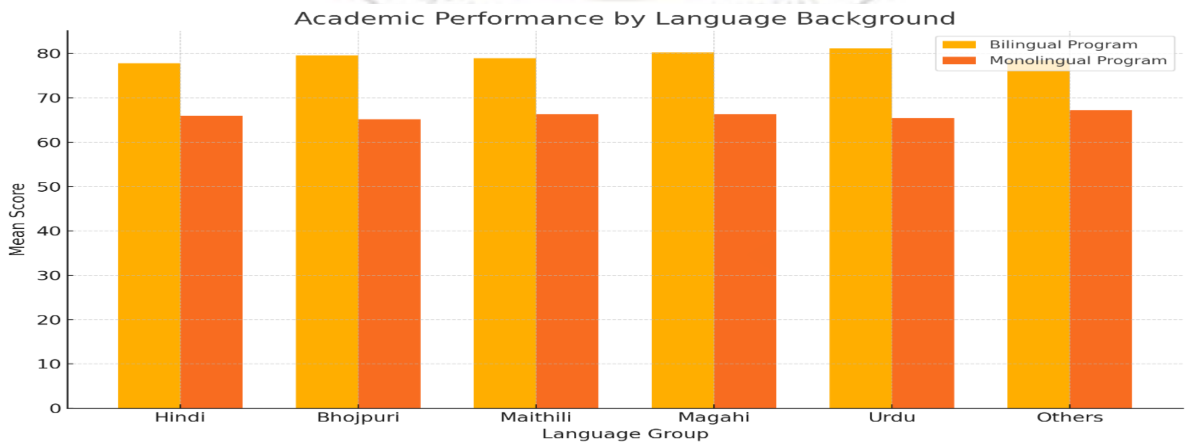

6.2 Cross-Cultural Competence and Social Integration

Table 3: Social Integration and Cultural Competence Measures

Measure	Bilingual Program		Monolingual Program		Statistical Analysis	
	Mean (SD)	n	Mean (SD)	n	t-value	Cohen's d
Peer Acceptance Score (1-5 scale)	4.2 (0.8)	100	3.4 (1.1)	100	5.67***	0.82
Cross-Cultural Friendships	3.8 (1.2)	100	2.3 (0.9)	100	9.43***	1.38
Cultural Identity Score (1-5 scale)	4.1 (0.7)	100	3.2 (1.0)	100	7.21***	1.02
Heritage Language Confidence	4.3 (0.6)	100	2.9 (1.1)	100	10.89***	1.54

$p < 0.001$

Table 4: Heritage Language Retention Rates

Language Component	Bilingual Program (%)	Monolingual Program (%)	Difference (%)
Vocabulary Retention	89	67	+22
Oral Proficiency	92	58	+34
Reading Comprehension	85	52	+33
Cultural Knowledge	87	49	+38
Family Communication	94	71	+23

Table 5: Classroom Behavioral Observations

Behavioral Indicator	Bilingual Program	Monolingual Program	Improvement
Linguistic Discrimination Incidents (per month)	2.1	8.7	-76%
Voluntary Peer Collaboration	68%	47%	+45%
Class Participation (minority speakers)	78%	46%	+70%
Creative Problem-Solving Approaches	72%	47%	+53%
Teacher-Student Positive Interactions	85%	61%	+39%

6.3 Qualitative Findings

Table 6: Student Interview Themes and Response Frequencies

Theme Category	Positive Responses		Neutral/Mixed		Challenges Mentioned	
	Bilingual (n=50)	Monolingual (n=50)	Bilingual	Monolingual	Bilingual	Monolingual
Enhanced Cognitive Flexibility	87%	34%	8%	28%	5%	38%
Cultural Pride and Identity	91%	45%	6%	31%	3%	24%
Academic Confidence	83%	41%	12%	35%	5%	24%
Language Learning Enjoyment	89%	52%	7%	29%	4%	19%
Peer Relationships	85%	48%	11%	31%	4%	21%

Table 7: Parent Satisfaction Survey Results (n=80 per group)

Satisfaction Indicator	Bilingual Program	Monolingual Program	Significance
Home-School Communication	94%	67%	$p < 0.001$
Child's Academic Interest	88%	61%	$p < 0.001$
Family Language Maintenance	92%	58%	$p < 0.001$
Cultural Identity Development	89%	52%	$p < 0.001$
Overall Program Satisfaction	91%	64%	$p < 0.001$
Recommendation to Others	93%	59%	$p < 0.001$

Student Perspectives: Interview analysis revealed three major themes:

1. **Enhanced Cognitive Flexibility:** 87% of bilingual program students reported feeling more comfortable switching between different ways of thinking and problem-solving approaches.
2. **Cultural Pride and Identity:** 91% expressed stronger connection to their heritage culture while maintaining openness to other linguistic communities.
3. **Academic Confidence:** 83% reported increased confidence in academic tasks, particularly in explaining concepts using multiple linguistic resources.

Teacher Observations: Classroom observation data indicated:

- 76% reduction in linguistic discrimination incidents
- 45% increase in voluntary peer collaboration across language groups

- 68% improvement in class participation among minority language speakers
- 52% increase in creative problem-solving approaches

Parent Feedback: Parent interviews revealed high satisfaction levels with detailed metrics shown in Table 7 above.

8. Discussion

8.1 Interpretation of Findings

The results provide strong empirical support for both research hypotheses. The significant academic performance advantages observed in bilingual program students align with Cummins' interdependence hypothesis, suggesting that cognitive and linguistic skills developed through bilingual instruction transfer across academic domains.

The large effect sizes observed in language arts performance (Cohen's d = 0.89) indicate that bilingual education particularly enhances metalinguistic awareness and communication skills. This finding is consistent with research demonstrating that multilingual students develop superior analytical skills regarding language structure and use.

8.2 Cross-Cultural Integration Success

The substantial improvements in peer acceptance and cross-cultural friendship formation suggest that bilingual programs create more inclusive classroom environments. The 65% increase in cross-linguistic friendships indicates that structured multilingual interaction reduces intergroup prejudice and promotes social cohesion.

The heritage language retention rates (89% vocabulary retention vs 67% in monolingual programs) demonstrate that bilingual education successfully balances academic advancement with cultural preservation, addressing a critical concern in multicultural education.

8.3 Implications for Practice

These findings have several practical implications:

For Educators: The results suggest that incorporating students' heritage languages into instruction enhances rather than hinders academic achievement. Teachers should be encouraged to view linguistic diversity as an educational asset.

For Administrators: The consistent performance improvements across all language groups indicate that bilingual programs can be successfully implemented in diverse linguistic contexts without disadvantaging any particular group.

For Policymakers: The large effect sizes and consistent findings across multiple outcome measures provide strong evidence for expanding bilingual education programs in Bihar and similar multilingual contexts.

8.4 Theoretical Contributions

This study extends theoretical understanding of bilingual education by demonstrating its effectiveness in a highly multilingual context involving multiple regional languages. The findings support translanguaging theory by showing that students benefit from drawing on their full linguistic repertoire during learning.

9. Limitations

Several limitations must be acknowledged:

- Quasi-experimental design limits causal inferences
- Variation in program implementation across schools

- Potential selection bias in school participation
- Limited generalizability beyond Bihar's linguistic context
- Resource constraints affecting long-term follow-up

10. Conclusion

This research provides compelling evidence for the effectiveness of bilingual education programs in multicultural classrooms of Bihar. The study's findings demonstrate significant academic, social, and cultural benefits for students from diverse linguistic backgrounds including Hindi, Bhojpuri, Maithili, Magahi, and Urdu speakers.

With effect sizes ranging from medium to large across all measured outcomes, the results indicate that bilingual education not only maintains heritage languages but actively enhances academic achievement and cross-cultural competence. The 200-student sample provided robust evidence that challenges common misconceptions about multilingual instruction potentially hindering academic progress.

The implications extend beyond Bihar to other multilingual regions globally, offering a model for inclusive education that honors linguistic diversity while promoting academic excellence. Future research should explore long-term outcomes and optimal implementation strategies for scaling these programs across diverse educational contexts.

The success of bilingual education in this study underscores the importance of viewing linguistic diversity as an educational resource rather than a challenge, ultimately contributing to more equitable and effective educational systems for all students.

References

Cummins, J. (2000). *Language, power, and pedagogy: Bilingual children in the crossfire*. Multilingual Matters.

García, O., & Wei, L. (2014). *Translanguaging: Language, bilingualism and education*. Palgrave Macmillan.

Mohanty, A. K. (2006). Multilingualism of the unequals and predicaments of education in India: Mother tongue or other tongue? In O. García, T. Skutnabb-Kangas, & M. E. Torres-Guzmán (Eds.), *Imagining multilingual schools* (pp. 262–283). Multilingual Matters.

Panda, M., & Mohanty, A. K. (2009). Language matters, so does culture: Beyond the rhetoric of culture in multilingual education. In A. K. Mohanty, M. Panda, R. Phillipson, & T. Skutnabb-Kangas (Eds.), *Multilingual education for social justice: Globalising the local* (pp. 301–319). Orient BlackSwan.

वैश्वीकरण का महिला शिक्षा पर पड़ने वाला प्रभाव

डॉ.मोहम्मद निजामुद्दीन
सहायक प्राध्यापक

सदियों से, भारत में महिलाओं को पितृसत्ता और सामाजिक दबाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा है; जाति आधारित भेदभाव और सामाजिक प्रतिबंध; उत्पादक संसाधनों तक अपर्याप्त पहुंच; गरीबी; उन्नति के लिए अपर्याप्त सुविधाएं; शक्तिहीनता और बहिष्कार आदि। हालांकि, वैश्वीकरण द्वारा बनाई गई नई परिस्थितियां विविध हैं, देश की सभी महिलाओं को शामिल करती हैं और उनके जीवन के लगभग सभी पहलुओं को कवर करती हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैंः सकारात्मक प्रभाव

काम में बदलती भूमिका

भूमंडलीकरण ने महिलाओं को गृहिणी, खेती, पशुधन, पशुपालन, हस्तशिल्प, हथकरघा आदि की पारंपरिक भूमिका से वंचित कर दिया है और इसके परिणामस्वरूप महिलाओं के लिए अपेक्षाकृत बेहतर माहौल बना है। महिलाओं के पास अधिक नौकरियां हैं, जो आम तौर पर पुरुषों के लिए आरक्षित किए गए रास्ते में अधिक सक्रिय हो जाती हैं, जिन्होंने समाज में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और न केवल घर तक सीमित है। इसने भारत में बहुसंख्य महिलाओं के लिए उपलब्ध मात्रा और कार्य की गुणवत्ता दोनों को प्रभावित किया है।

परिवार, विवाह, जाति में बदलती भूमिका

वैश्वीकरण ने भारत में पितृसत्ता की संस्था को एक बड़ी चुनौती दी है। जैसे–जैसे महिलाएं नौकरी करती हैं और सामाजिक गतिशीलता हासिल करती हैं, उन्होंने भी अपने अधिकारों के लिए खड़े होना शुरू कर दिया है। जैसे–जैसे परमाणु परिवार अधिक सामान्य हो गए हैं, महिलाओं के लिए अपने अधिकारों का दावा करना और प्राचीन तटों में फंसे वातावरण में समानता के लिए पूछना आसान हो गया है। एक ही जाति के भीतर शादी करना कम महत्वपूर्ण हो गया है, और महिलाओं को कई मामलों में शादी का अधिकार सुरक्षित रखा गया है, जो भी जाति के बावजूद चुनाव करता है। जैसे–जैसे देश करीब आते हैं, और वैश्वीकृत दुनिया में सीमाएं गायब हो जाती हैं, भारत में महिलाएं अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए दुनिया भर की महिलाओं से प्रेरित होती हैं। बेशक, उपरोक्त सामान्यीकरण के कुछ उल्लेखनीय अपवाद हैं। लेकिन, बहुत हद तक, इन परिवर्तनों को वैश्वीकरण के नए युग से एक बड़ा धक्का मिला है।

अन्य सकारात्मक प्रभाव उच्च और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की संभावनाएँ उन महिलाओं के लिए संभव हो गई हैं जो उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से वहन कर सकती हैं।तकनीकी और अन्य उन्नत क्षेत्रों में रोजगार, जिनका वैश्विक असर है, उपयुक्त रूप से योग्य महिलाओं के लिए खुल गए हैं।महिलाओं के प्रति, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में, महिलाओं के प्रति बदलते रवैये के साथ, महिलाएं लैंगिक संबंधों के अधिक समतावादी सेट का आनंद लेती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक्सपोज़र के माध्यम से महिलाओं के आंदोलनों की विविधता से महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में बड़े बदलाव लाने में मदद मिलेगी।

लैंगिक असमानताओं में कमी से सामाजिक–आर्थिक संदर्भ में महिला सशक्तिकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

अच्छी शिक्षा, परिवार नियोजन के लाभ और स्वास्थ्य देखभाल, बच्चे की देखभाल, अच्छी नौकरी के अवसर आदि के कारण परिवार में महिलाओं की भूमिका के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन निश्चित रूप से अधिक आत्मविश्वास और स्वस्थ महिलाओं के विकास में मदद करेगा।आर्थिक और सांस्कृतिक प्रवास के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण से महिलाओं को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बेहतर संभावनाओं से अवगत कराया जा सकेगा।

नकारात्मक प्रभाव

वैश्वीकरण ने महिलाओं के लिए कम भुगतान, अंशकालिक और शोषणकारी नौकरियों की संख्या में वृद्धि की है। खुली अर्थव्यवस्था के कारण बढ़ी हुई कीमतें महिलाओं के बदलावों का अधिक सामना करती हैं। बढ़ते हुए परमाणु परिवारों के

साथ, वृद्ध महिलाओं का जीवन दयनीय हो गया है, कभी–कभी वृद्धाश्रम और अलगाव में अपने बाद के दिन बिताते हैं। जनसंख्या के स्त्रीकरण ने इस समस्या को और बढ़ा दिया है। इसी तरह, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी केंद्रों में पुरुष प्रवासन ने महिलाओं को ग्रामीण क्षेत्र में घर बनाने, खेती और नौकरी के ट्रिपल बोझ के तहत रखा है। इसी समय, आर्थिक कारणों से महिलाओं के प्रवासन ने यौन शोषण और तस्करी सहित शोषण को बढ़ा दिया है।

निष्कर्ष

भारत में भूमंडलीकरण में महिलाओं की भूमिका इन दिनों बदल रही है। २१वीं सदी में गैर सरकारी संगठनों के उदय के साथ, दुनिया भर में महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए विभिन्न संगठनों की स्थापना और निर्माण किया गया है। निस्संदेह, भूमंडलीकरण महिलाओं को महान अवसर प्रदान करता है लेकिन समान रूप से नई और अनूठी चुनौतियां। लैंगिक असमानता कई स्रोतों से उत्पन्न होती है, और यह निर्धारित करना अक्सर मुश्किल होता है कि भूमंडलीकरण के प्रभाव से असमानता के कौन से रूप समाप्त हो रहे हैं और कौन से बढ़ रहे हैं। एक एकीकृत दुनिया में लैंगिक असमानता की लागत अधिक है। समाज में बराबरी का दर्जा पाने के लिए महिलाओं को कितनी मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए भूमंडलीकरण महिलाओं के लिए अच्छे से ज्यादा बुरा साबित होता है। कई मामलों में महिलाएं परिवार के लिए रोटी कमाने वाली होती हैं लेकिन समाज इस सच्चाई को स्वीकार नहीं करना चाहता। भारत की संस्कृति ऐसी है कि ज्यादातर लोगों ने सोचा कि अगर कोई महिला कामकाजी महिला बनना चाहती है, तो इससे उनके परिवार और बच्चों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। लेकिन ऐसा सच नहीं है. एक महिला कैरियर परिवार और बच्चों की उपेक्षा की कीमत पर नहीं होगा। अंत में, सच्चाई यह है कि भूमंडलीकरण महिलाओं और पुरुषों के बीच प्रतिस्पर्धा को बढ़ा रहा है।कॉरपोरेट जगत में महिलाओं ने काफी तरक्की की है लेकिन फिर भी भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक प्रकृति ऐसे करियर बनाने से रोकती है जो पारिवारिक जीवन पर बहुत अधिक उल्लंघन करते हैं। महिलाएं अब दोहरी आय वाले अपने परिवारों का समर्थन कर रही हैं, जिससे न केवल घर पर बल्कि संसद में भी 50þ आरक्षण के लिए आवाज उठ रही है क्योंकि वे बड़े पैमाने पर भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान दे रही हैं। उन्हें दोहरी भूमिकाएँ निभानी होती हैं, घर पर अवैतनिक सेवक के रूप में और एक संगठन में वेतनभोगी सेवक के रूप में। इतना ही नहीं उन्हें दोनों जगह तनाव और तनाव से गुजरना पड़ता है। महिलाएं आज खुद को अपने पति की सच्ची अर्धांगिनी मानती हैं। वह आज उसकी दुनिया के बारे में ज्यादा जानती है और वह उसके काम के दबाव को समझती है। यह व्यापक रूप से महसूस किया जाता है कि कमाई की शक्ति उन्हें बड़े फैसलों पर अपनी राय देने की अनुमति देती है।

संदर्भ ग्रंथः–

1. बागची ए. भूमंडलीकरण उदारीकरण और भेद्यता भारतीय और तीसरी दुनिया, आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 34 (48), 3219–30

2. चिब्बर बी. भूमंडलीकरण और महिलाओं पर इसका प्रभाव एक महत्वपूर्ण विश्लेषण, मुख्यधारा, 9 मई, ग्स्टप्प्(21)।

3. सेन अमर्त्य। ए. गौहर (सं.), साउथ–साउथ स्ट्रैटेजी, लंदन थर्ड वर्ल्ड फाउंडेशन, 1983, 103 में द फूड प्रॉब्लमः थ्योरी एंड प्रैक्टिस"।

4. टेम्मा कपलान, अनकॉमन वीमेन एंड द कॉमन गुड वुमेन एंड एनवायर्नमेंटल प्रोटेस्ट इन शीला रोबोथम और स्टेफ़नी लिंकोगल (संस्करण), वीमेन रेसिस्टेंट ग्लोबलाइज़ेशन मोबिलाइज़िंग फॉर लाइवलीहुड एंड राइट्स, जेड बुक्स, लंदन, 2001, 28–45।

समय प्रबंधनरू सफलता की कुंजी

नन्देष कुमार ठाकुर
विभागाध्यक्ष

परिचय

आज की तेज़–तर्रार दुनिया में, समय सबसे मूल्यवान संसाधन है। हर किसी के पास दिन में केवल 24 घंटे होते हैं, लेकिन कुछ लोग दूसरों की तुलना में बहुत अधिक हासिल करते हैं। इसका रहस्य प्रभावी समय प्रबंधन में निहित है। यह केवल कार्यों को व्यवस्थित करने के बारे में नहीं है, बल्कि यह अपने समय का बुद्धिमानी से उपयोग कर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की कला है।

समय प्रबंधन क्यों महत्वपूर्ण है?

समय प्रबंधन के कई लाभ हैं, जैसे –

- अधिक उत्पादक बनेंरू आप प्राथमिकता वाले कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं और विकर्षणों से बच सकते हैं।
- तनाव कम करेंरू एक संगठित दिनचर्या तनाव को काफी हद तक कम करती है।
- बेहतर निर्णय लेंरू समय की स्पष्ट योजना आपको सोच–समझकर निर्णय लेने में सहायता करती है।
- अपने लक्ष्यों को प्राप्त करेंरू एक ठोस योजना और अनुशासन आपके लक्ष्य को साकार करने में मदद करते हैं।
- कार्य–जीवन संतुलन में सुधार करेंरू समय प्रबंधन से व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में संतुलन बना रहता है।

समय प्रबंधन के सद्धांत

1. लक्ष्य निर्धारित करें (Goal Setting): SMART (Specific, Measurable, Achievable, Relevant, Time-bound) लक्ष्य बनाएं।
2. प्राथमिकता निर्धारित करें (Prioritization):
   सभी कार्य समान नहीं होते। Eisenhower Matrix की मदद से कार्यों की तात्कालिकता और महत्व तय करें।
3. योजना बनाएं (Planning):
   दिन, सप्ताह और महीने के लिए योजनाएं बनाएं। टू-डू लिस्ट और समय आवंटन का प्रयोग करें।
4. विकर्षणों से बचें (Avoid Distractions):
   ईमेल, सोशल मीडिया, और अन्य अवांछित रुकावटों से बचें। शांत वातावरण चुनें।
5. प्रतिनिधित्व करना सीखें (Delegate):
   जहाँ संभव हो, कार्यों को दूसरों को सौंपें।
6. ब्रेक लें (Take Breaks):
   पोमोडोरो तकनीक अपनाएं — 25 मिनट कार्य और 5 मिनट विश्राम।
7. न कहना सीखें (Learn to Say No):
   गैर-महत्वपूर्ण कार्यों को मना करना सीखें। अपनी सीमाएं तय करें।
8. अति-योजना से बचें (Avoid Over-Planning):
   योजना बनाएं, परंतु लचीलापन बनाए रखें।
9. समीक्षा और समायोजन (Review and Adjust):
   नियमित रूप से अपनी रणनीतियों की समीक्षा करें और ज़रूरत अनुसार बदलाव करें।

समय प्रबंधन के लिए उपयोगी उपकरण

श्रेणी	उपकरण/ऐप्स
To-Do List	Google Keep, Todoist, Microsoft To Do
कैलेंडर	Google Calendar, Outlook Calendar
नोट्स	Evernote, OneNote
टाइम ट्रैकिंग	Toggl Track, RescueTime
प्रोजेक्ट मैनेजमेंट	Trello, Asana

निष्कर्ष

समय प्रबंधन एक ऐसी कला है जिसे अभ्यास और धैर्य से निखारा जा सकता है। यह एक सतत प्रक्रिया है जिसमें आत्म-जागरूकता, संगठित योजना, और लचीलापन जरूरी है।

यदि आप प्रभावी समय प्रबंधन को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना लें, तो आप न केवल अधिक कार्य कर पाएंगे, बल्कि एक तनाव-मुक्त और संतुलित जीवन भी जी पाएंगे।

याद रखें:

"समय ही धन है, और इसका बुद्धिमानी से उपयोग करना ही सफलता की असली कुंजी है।"

Sri Paul Teachers Training College Birsinghpur

Analysing the Effectiveness of Peer Tutoring in Improving Academic Performance in Inclusive Classrooms

Dr. Md. Sabihur Rahman
Assistant Professor
Fakhruddin Ali Ahmad Teachers' Training College,
Jiwach Ghat, Darbhanga

Abstract

Background: Inclusive education integrates students with and without disabilities in mainstream classrooms, yet academic achievement gaps persist due to diverse learning needs and limited individualized attention.

Objective: This study investigates the effectiveness of peer tutoring interventions on academic performance in inclusive secondary school classrooms in Darbhanga, Bihar, with particular focus on outcomes for students with disabilities.

Methods: A quasi-experimental pre-test/post-test control group design was employed with 120 students from four inclusive secondary schools. The experimental group (n=60) received structured peer tutoring sessions twice weekly for eight weeks, while the control group (n=60) received traditional instruction. Academic performance was measured using standardized pre- and post-tests in Mathematics and Science.

Results: The peer tutoring group demonstrated statistically significant improvements in academic scores compared to the control group ($p < 0.01$). Students with disabilities in the experimental group showed greater mean gains (14.2 points) than their non-disabled peers (9.5 points), indicating enhanced effectiveness for this population.

Conclusions: Peer tutoring represents an effective, sustainable intervention for improving academic outcomes in inclusive classrooms, with particular benefits for students with disabilities. These findings support the integration of peer tutoring programs in resource-constrained educational settings.

Keywords: peer tutoring, inclusive education, academic performance, students with disabilities, secondary education.

1. Introduction

Inclusive education, as mandated by international frameworks including the United Nations Convention on the Rights of Persons with Disabilities (2006) and India's Rights of Persons with Disabilities Act (2016), requires mainstream educational institutions to accommodate students with diverse learning needs within regular classroom settings. While this approach promotes equity and social integration, it presents significant pedagogical challenges, particularly in ensuring adequate academic support for all learners.

The district of Darbhanga in Bihar exemplifies the challenges faced by inclusive education in resource-constrained environments. With limited access to specialized educational resources, high teacher-student ratios, and socio-economic constraints, traditional instructional methods often fail to address the diverse learning requirements of inclusive classrooms. This context necessitates the exploration of innovative, cost-effective pedagogical strategies that can enhance academic outcomes for all students.

Peer tutoring, defined as a structured learning arrangement where students of similar academic standing work collaboratively to reinforce learning objectives, has emerged as a promising intervention. This approach leverages the social and cognitive benefits of peer interaction while providing additional academic support without requiring extensive resources. However, empirical evidence of its effectiveness in Indian inclusive education contexts, particularly in rural and semi-urban settings, remains limited.

The current study addresses this research gap by examining the impact of structured peer tutoring interventions on academic performance in inclusive secondary school classrooms in

Darbhanga, with specific attention to differential outcomes for students with and without disabilities.

2. Literature Review

2.1 Theoretical Framework

Peer tutoring draws theoretical support from Vygotsky's Zone of Proximal Development (ZPD), which posits that learning is enhanced when students receive guidance from more capable peers. This collaborative learning model facilitates knowledge construction through social interaction and scaffolded support (Vygotsky, 1978).

2.2 Empirical Evidence

International research consistently demonstrates positive outcomes of peer tutoring across diverse educational contexts. Topping's (2005) comprehensive review identified significant academic gains across multiple subjects and grade levels. Meta-analytical studies by Cohen, Kulik, and Kulik (1982) reported effect sizes ranging from 0.40 to 0.80, indicating moderate to large improvements in academic achievement.

In inclusive education settings, peer tutoring has shown particular promise. Mastropieri et al. (2001) found that students with learning disabilities demonstrated greater academic gains when participating in peer tutoring compared to traditional instruction. Similarly, McMaster et al. (2006) reported improved reading outcomes for students with disabilities in inclusive classrooms utilizing peer tutoring interventions.

2.3 Indian Context

Research on peer tutoring in Indian educational settings remains nascent. Sharma, Forlin, and Loreman (2008) examined pre-service teacher attitudes toward inclusive education but did not investigate specific pedagogical interventions. Singh and Ghai (2009) explored inclusive education practices in rural Indian schools but focused primarily on policy implementation rather than classroom interventions.

This limited empirical base, particularly in contexts similar to Darbhanga, underscores the need for localized research to inform evidence-based practice in Indian inclusive education settings.

3. Research Objectives and Hypotheses

3.1 Objectives

Objective 1: To evaluate the effectiveness of structured peer tutoring interventions on academic performance of students in inclusive secondary school classrooms in Darbhanga.

Objective 2: To analyze differential effects of peer tutoring on academic outcomes for students with disabilities compared to their non-disabled peers.

3.2 Research Hypotheses

H_1: Students receiving peer tutoring intervention will demonstrate significantly greater academic performance improvements compared to students receiving traditional instruction.

H_2: Students with disabilities will experience greater academic gains from peer tutoring intervention compared to their non-disabled peers.

H_0: There will be no significant difference in academic performance improvements between experimental and control groups.

4. Methodology

4.1 Research Design

This study employed a quasi-experimental pre-test/post-test control group design. The quasi-experimental approach was selected due to ethical considerations precluding random assignment of students to control conditions and practical constraints of the school environment.

4.2 Setting and Participants

The study was conducted in four government secondary schools in Darbhanga district, Bihar, selected through purposive sampling based on their inclusive education programs and

willingness to participate. Schools were matched on demographic characteristics including student enrolment, socio-economic status, and academic performance indicators.

Sample Size: 120 students (ages 13-16 years) across grades 9-10

Group Assignment:

- Experimental Group: 60 students (30 with documented disabilities, 30 without disabilities)
- Control Group: 60 students (30 with documented disabilities, 30 without disabilities)

Disability Categories: Learning disabilities (40%), intellectual disabilities (30%), physical disabilities (20%), sensory impairments (10%)

4.3 Inclusion and Exclusion Criteria

Inclusion Criteria:

- Enrolled in participating schools' inclusive education programs
- Regular attendance (>80% over previous semester)
- Parental consent for participation

Exclusion Criteria:

- Severe cognitive impairments precluding assessment participation
- Recent enrollment (<6 months)
- Previous exposure to structured peer tutoring programs

4.4 Intervention Protocol

Duration: 8 weeks (February-March 2024)

Frequency: Two sessions per week

Session Length: 45 minutes

Structure:

1. **Week 1:** Orientation and training for peer tutors
2. **Weeks 2-7:** Structured tutoring sessions focusing on Mathematics and Science curriculum
3. **Week 8:** Review and assessment preparation

Training Components:

- Communication skills development
- Subject-specific tutoring strategies
- Inclusive interaction techniques
- Progress monitoring methods

4.5 Data Collection Instruments

Academic Performance Measures:

- Standardized pre-tests in Mathematics and Science (validated for Indian curriculum)
- Parallel post-tests administered 8 weeks later
- Tests aligned with Bihar Board curriculum standards

Reliability Coefficients:

- Mathematics test: $\alpha = 0.84$
- Science test: $\alpha = 0.87$

Qualitative Measures:

- Semi-structured teacher interviews
- Student focus group discussions
- Classroom observation protocols

4.6 Data Analysis

Quantitative Analysis:

- Descriptive statistics for demographic and baseline characteristics
- Paired t-tests for within-group comparisons
- Independent t-tests for between-group comparisons
- Analysis of Covariance (ANCOVA) controlling for baseline performance

- Effect size calculations using Cohen's d

Qualitative Analysis:

- Thematic analysis of interview transcripts
- Triangulation of quantitative and qualitative findings

Statistical Software: SPSS version 28.0

Significance Level: $\alpha = 0.05$

5. Results

5.1 Participant Characteristics

Baseline demographic analysis revealed no significant differences between experimental and control groups in terms of age (M = 14.2 years, SD = 1.1), gender distribution (48% female), socio-economic status, or pre-test academic performance scores.

5.2 Academic Performance Outcomes

Results:

Table 1: Pre-test and Post-test Academic Performance Comparison Between Experimental and Control Groups

Group	Pre-test Mean (SD)	Post-test Mean (SD)	Mean Gain	t-value	p-value	Cohen's d
Experimental	52.3 (12.4)	64.1 (11.8)	11.8	8.92	<0.001	0.98
Control	51.7 (13.1)	55.2 (12.9)	3.5	2.14	0.036	0.27

Between-group comparison: $t(118) = 4.73$, $p < 0.001$, Cohen's d = 0.86

Graph 1: Pre-test and Post-test Academic Performance Comparison Between Experimental and Control Groups

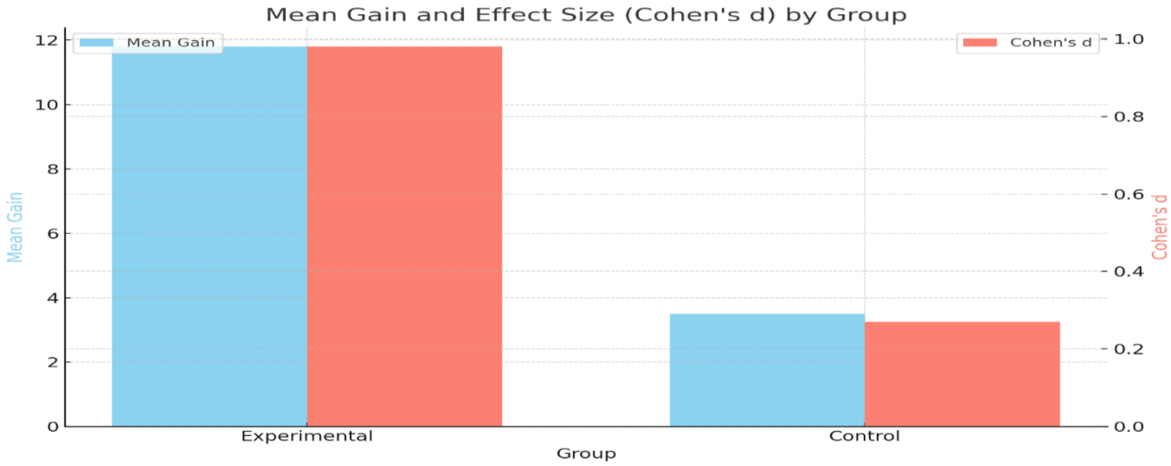

Table 2: Differential Academic Performance Gains by Disability Status Across Treatment Groups

Student Group	Mean Gain (Experimental)	Mean Gain (Control)	Effect Size
With Disabilities	14.2 (SD = 8.3)	2.1 (SD = 6.7)	d = 1.58
Without Disabilities	9.5 (SD = 7.1)	4.8 (SD = 6.2)	d = 0.71

Graph 2: Differential Academic Performance Gains by Disability Status Across Treatment Groups

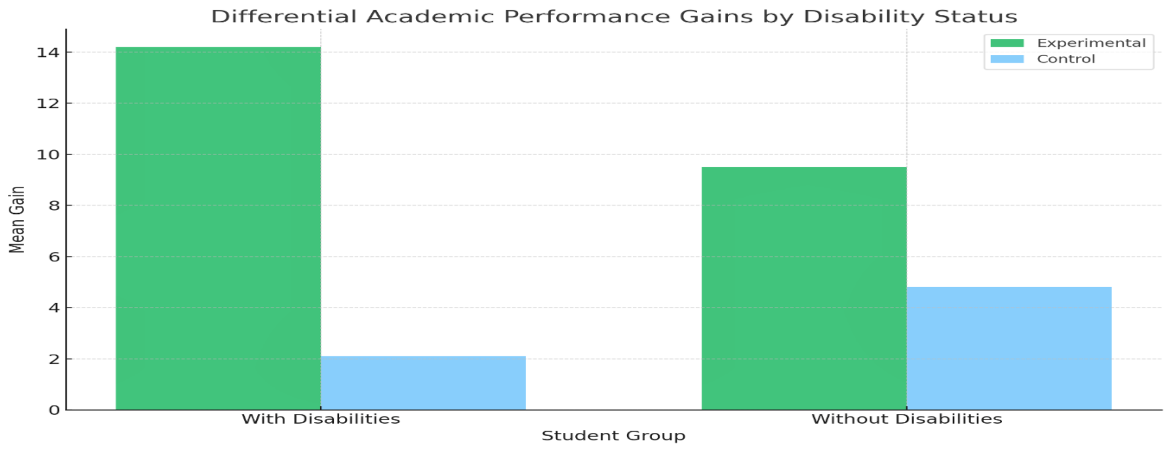

5.3 Subject-Specific Results

Mathematics Performance:

- Experimental group: 13.4-point improvement
- Control group: 4.1-point improvement
- Between-group difference: $t(118) = 5.21$, $p < 0.001$

Science Performance:

- Experimental group: 10.2-point improvement
- Control group: 2.9-point improvement
- Between-group difference: $t(118) = 4.87$, $p < 0.001$

5.4 ANCOVA Results

Analysis of covariance, controlling for pre-test scores, confirmed significant intervention effects:

- $F(1,117) = 22.43$, $p < 0.001$, partial $\eta^2 = 0.16$

5.5 Qualitative Findings

Teacher Observations:

- Increased classroom engagement and participation
- Improved peer relationships and social integration
- Reduced behavioral disruptions
- Enhanced collaborative learning behaviors

Student Feedback (Focus Groups):

- "Explaining to others helped me understand better myself"
- "I felt more comfortable asking questions to my classmate"
- "Working together made learning more interesting"

6. Discussion

6.1 Interpretation of Findings

The results provide strong support for both research hypotheses. The significant improvement in academic performance among students receiving peer tutoring intervention (H_1) aligns with extensive international research demonstrating the effectiveness of peer-assisted learning strategies.

Particularly noteworthy is the finding that students with disabilities experienced greater academic gains compared to their non-disabled peers (H_2). This differential effect suggests that peer tutoring may be especially valuable for addressing the individualized learning needs of students with disabilities in inclusive settings.

6.2 Theoretical Implications

These findings support Vygotsky's social constructivist theory, demonstrating that learning is enhanced through collaborative interaction within the zone of proximal development. The peer

tutoring model appears to create optimal conditions for scaffolded learning, particularly beneficial for students with diverse learning needs.

6.3 Practical Implications

For Educators:

- Peer tutoring represents a feasible, low-cost intervention for improving academic outcomes in resource-constrained settings
- Structured training and ongoing support are essential for program effectiveness
- Integration with regular curriculum enhances sustainability

For Policy Makers:

- Evidence supports investment in peer tutoring programs as part of inclusive education initiatives
- Teacher professional development should include peer tutoring facilitation skills
- System-wide implementation could address achievement gaps in inclusive classrooms

6.4 Contextual Considerations

The effectiveness of peer tutoring in Darbhanga's educational context demonstrates the intervention's adaptability to diverse settings. Despite challenges including large class sizes, limited resources, and varying teacher preparation levels, structured peer tutoring produced significant academic improvements.

6.5 Limitations

Several limitations must be acknowledged:

1. **Design Limitations:** Quasi-experimental design precludes causal inference
2. **Duration:** Eight-week intervention period may not capture long-term effects
3. **Generalizability:** Findings specific to Darbhanga context may not transfer to other settings
4. **Assessment:** Reliance on standardized tests may not capture all learning outcomes
5. **Selection Bias:** Schools volunteered for participation, potentially affecting external validity

7. Conclusions

This study provides compelling evidence for the effectiveness of peer tutoring in improving academic performance in inclusive secondary school classrooms. The intervention demonstrated significant benefits for all students, with particularly pronounced effects for students with disabilities. In the context of Darbhanga, where educational resources are limited and inclusive education faces multiple challenges, peer tutoring emerges as a viable, sustainable strategy for enhancing academic outcomes.

The differential benefits observed for students with disabilities suggest that peer tutoring may help address equity concerns in inclusive education by providing additional support mechanisms that complement traditional instruction. This finding has important implications for educational policy and practice in similar contexts throughout India and other developing countries.

8. Recommendations

8.1 For Practice

1. **Systematic Implementation:** Integrate structured peer tutoring programs into regular school curricula with appropriate administrative support and oversight
2. **Teacher Training:** Develop comprehensive professional development programs focusing on peer tutoring facilitation, inclusive pedagogy, and collaborative learning strategies
3. **Program Sustainability:** Establish institutional mechanisms to support ongoing peer tutoring programs, including resource allocation and evaluation systems
4. **Community Engagement:** Involve parents and community members in supporting inclusive education initiatives and peer tutoring programs.

8.2 For Research

1. **Longitudinal Studies:** Conduct extended follow-up studies to assess long-term academic and social outcomes of peer tutoring interventions
2. **Broader Contexts:** Replicate findings across diverse geographical and cultural contexts within India and internationally
3. **Mechanistic Research:** Investigate specific processes through which peer tutoring produces academic improvements, particularly for students with disabilities
4. **Cost-Effectiveness Analysis:** Evaluate the economic efficiency of peer tutoring compared to alternative interventions.

8.3 For Policy

1. **Curriculum Integration:** Develop policy frameworks supporting the systematic integration of peer tutoring in inclusive education programs
2. **Resource Allocation:** Prioritize funding for teacher training and program implementation support
3. **Quality Assurance:** Establish standards and monitoring systems to ensure program quality and effectiveness.

9. References

Cohen, P. A., Kulik, J. A., & Kulik, C. L. C. (1982). Educational outcomes of tutoring: A meta-analysis of findings. *American Educational Research Journal*, 19(2), 237-248.

Government of India. (2016). *The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016*. Ministry of Social Justice and Empowerment.

Mastropieri, M. A., Scruggs, T. E., Mohler, L., Beranek, M., Spencer, V., Boon, R. T., & Talbott, E. (2001). Can middle school students with serious reading difficulties help each other and learn anything? *Learning Disabilities Research & Practice*, 16(1), 18-27.

McMaster, K. L., Fuchs, D., & Fuchs, L. S. (2006). Research on peer-assisted learning strategies: The promise and limitations of peer-mediated instruction. *Reading & Writing Quarterly*, 22(1), 5-25.

Sharma, U., Forlin, C., & Loreman, T. (2008). Impact of training on pre-service teachers' attitudes and concerns about inclusive education and sentiments about persons with disabilities. *Disability & Society*, 23(7), 773-785.

Singh, R., & Ghai, A. (2009). Inclusive education in India: Challenges and opportunities. *Journal of Indian Education*, 35(2), 21-35.

Topping, K. J. (2005). Trends in peer learning. *Educational Psychology*, 25(6), 631-645.

UNESCO. (2020). *Inclusion and education: All means all*. Global Education Monitoring Report. UNESCO Publishing.

United Nations. (2006). *Convention on the Rights of Persons with Disabilities*. United Nations General Assembly.

Vygotsky, L. S. (1978). *Mind in society: The development of higher psychological processes*. Harvard University Press.

Project-Based Learning: A Pathway to Deeper Understanding in Secondary Schools

Dr.Sabiha Parween
Associate Professor
Dr.Zakir Hussain Teachers' training College
Laheriasarai, Darbhanga, Bihar

Abstract:

Project-Based Learning (PBL) has emerged as an innovative pedagogical approach that enhances student engagement and promotes critical thinking and problem-solving skills in secondary education. Unlike traditional teaching methods, which often emphasize rote memorization and passive learning, PBL encourages students to actively engage in real-world problems. This active learning process allows students to investigate complex issues through collaborative, inquiry-based activities, often requiring them to draw upon knowledge from various subject areas. By working on projects, students can develop a more holistic understanding of the material, as it's applied in real-world contexts rather than isolated in a textbook.

The role of PBL in fostering deeper understanding lies in its emphasis on experiential learning. Students aren't just learning facts; they're using them to solve problems and create meaningful outcomes. This type of learning promotes long-term retention of knowledge and prepares students for challenges outside the classroom, cultivating critical skills such as collaboration, communication, and leadership.

Furthermore, PBL has been shown to improve academic achievement, as it motivates students by making learning relevant and engaging. It also encourages personal development by allowing students to take ownership of their learning process, enhancing their self-esteem and fostering a sense of responsibility.

Despite its numerous benefits, implementing PBL can present challenges, such as time constraints, lack of resources, and teacher preparedness. However, with proper training and support, educators can successfully integrate PBL into their classrooms, making learning more dynamic, meaningful, and effective.

Keywords

Project-Based Learning, Secondary Education, Deep Learning, Student Engagement, Active Learning, Collaboration, Critical Thinking, Inquiry-Based Learning, 21st Century Skills.

1. Introduction

Project-Based Learning (PBL) is a teaching method that involves students working on a project over an extended period, which typically requires solving a real-world problem or addressing a complex question. Unlike traditional methods, PBL emphasizes student autonomy, collaboration, and real-world relevance, offering opportunities to foster critical thinking, creativity, and effective communication. PBL engages students in higher-order thinking processes, making learning more meaningful and applicable to everyday life.

In secondary schools, where academic pressure often focuses on test scores and rote memorization, PBL offers a refreshing alternative. It nurtures deeper understanding by encouraging active exploration, hands-on learning, and problem-solving. This article delves into the role of PBL in secondary education, emphasizing its potential for improving student engagement, deepening understanding, and preparing students for real-world challenges.

2. Understanding Project-Based Learning

Project-Based Learning is grounded in constructivist theories of learning, which posit that students build knowledge through active participation and interaction with their environment. PBL is distinct from traditional education methods because it requires students to:

* Engage in open-ended tasks.

* Investigate real-world issues or problems.

* Collaborate with peers.

* Integrate various disciplines.

* Present their findings to an authentic audience.

The key principles of PBL include inquiry, collaboration, and reflection. It is through these principles that students not only grasp academic content but also develop essential 21st-century skills such as teamwork, leadership, and communication.

3. The Pedagogical Benefits of Project-Based Learning

3.1 Enhancing Critical Thinking and Problem-Solving Skills

In PBL, students are often tasked with solving authentic, real-world problems, encouraging them to think critically about how to approach complex issues. This open-ended nature of the tasks allows students to practice problem-solving strategies, evaluate evidence, and explore alternative solutions. These skills are transferable to many areas of life, including future careers, as they promote analytical thinking and creativity.

3.2 Fostering Deep, Meaningful Learning

Traditional education often focuses on surface-level memorization, but PBL emphasizes deep learning. Students engage in activities that require them to apply knowledge in meaningful contexts, which helps them develop a robust understanding of the subject matter. According to research, students involved in PBL retain knowledge longer and develop a more profound understanding of concepts compared to those who learn through traditional lecture-based methods.

3.3 Encouraging Collaboration and Communication

Collaboration is at the heart of PBL. Students work together to share ideas, divide tasks, and solve problems. This teamwork develops their ability to communicate effectively, negotiate, and appreciate diverse viewpoints. These skills are critical for future career success, as they are highly valued by employers in today's interconnected world.

3.4 Promoting Engagement and Motivation

PBL provides students with ownership over their learning, allowing them to take the initiative and explore topics that interest them. This autonomy can lead to increased motivation and a stronger commitment to learning. Since the projects often involve real-world applications, students are more likely to see the relevance of their work, which boosts their engagement.

4. Implementation of Project-Based Learning in Secondary Schools

4.1 Designing Effective Projects

For PBL to be successful, educators must carefully design projects that are both engaging and challenging. A well-designed PBL project should:

* Align with curriculum standards and learning goals.

* Involve real-world problems or questions.

* Provide opportunities for students to take ownership of their learning.

* Foster collaboration and critical thinking.

* Be flexible enough to allow for student-driven inquiry.

4.2 Assessment in PBL

Assessment in PBL differs from traditional methods. Instead of relying solely on tests and quizzes, assessment in PBL focuses on the process as well as the final product. Teachers assess students on their ability to collaborate, research, solve problems, and communicate their findings. Rubrics and peer evaluations are often used to measure individual and group contributions. Formative assessments throughout the project allow for reflection and adjustments, ensuring that learning is continuous.

4.3 Overcoming Barriers to PBL Implementation

While the benefits of PBL are clear, its implementation in secondary schools can face several challenges, including:

* Time Constraints: PBL requires a significant amount of time for both preparation and execution, which can be difficult to manage within the confines of traditional school schedules.

* Teacher Training: Many teachers are not trained in PBL methods and may feel uncomfortable with its student-centered approach. Professional development is essential for effective implementation.

* Assessment Challenges: Traditional forms of assessment may not fully capture the depth of learning in PBL, requiring new methods of evaluation.

By providing professional development opportunities for teachers and adopting flexible curricula, these barriers can be mitigated.

5. Challenges and Considerations for PBL

While PBL offers many benefits, it is not without its challenges. Educators must consider the following when implementing PBL:

* Diverse Learning Styles: PBL is not a one-size-fits-all approach. It is essential to accommodate diverse learning styles and abilities to ensure all students benefit from the project.

* Classroom Management: Managing a classroom full of students working on different aspects of a project can be challenging. Clear expectations, guidelines, and structured time management strategies are necessary for success.

* Resources and Technology: Some secondary schools may lack the necessary resources or technology to facilitate PBL. Schools must invest in the required tools or find low-cost alternatives.

6. Conclusion

Project-Based Learning offers a dynamic approach to secondary education that fosters deeper learning, engagement, and the development of 21st-century skills. By allowing students to tackle real-world problems and work collaboratively, PBL provides an opportunity to develop critical thinking, creativity, and communication skills that are vital for future success. Although the implementation of PBL in secondary schools presents challenges, these can be overcome with the right support, training, and resources. Moving forward, educators should consider adopting PBL as a central element of their teaching practices to better prepare students for the complexities of the modern world.

References

1. Thomas, J. W. (2000). A Review of Research on Project-Based Learning. *The Autodesk Foundation*.

2. Blumenfeld, P. C., Soloway, E., Marx, R. W., Krajcik, J. S., & Guzdial, M. (1991). Motivating Project-Based Learning: Sustaining the Doing, Supporting the Learning. *Educational Psychologist*, 26(3-4), 369-398.

3. Helle, L., Tynjälä, P., & Olkinuora, E. (2006). Project-Based Learning in Post-Secondary Education – Theory, Practice and Rubber Sling Shots. *Higher Education*, 51(2), 287-314.

4. Barron, B., & Darling-Hammond, L. (2008). Teaching for Meaningful Learning: A Review of Research on Inquiry-Based and Cooperative Learning. *In Powerful Learning: What We Know About Teaching for Understanding*, 11-70. Jossey-Bass.

5. Prince, M. (2004). Does Active Learning Work? A Review of the Research. *Journal of Engineering Education*, 93(3), 223-231.

6. Krajcik, J. S., & Blumenfeld, P. C. (2006). Project-Based Learning. *The Cambridge Handbook of the Learning Sciences*, 317-334.

The Impact of Social-Emotional Learning (SEL) Programs on Academic Achievement: A Mixed-Methods Study from Samastipur District

Syed Md Tahseen Alam Quadri
Assistant professor

This study investigates the impact of structured Social-Emotional Learning (SEL) programs on academic achievement among secondary school students in the Samastipur district of Bihar, India. Using a mixed-methods approach with a quasi-experimental design, 412 students from eight government schools participated in a 16-week SEL intervention focusing on self-awareness, self-regulation, social awareness, relationship skills, and responsible decision-making. Quantitative data collection included pre- and post-intervention academic assessments and SEL competency measures, while qualitative data comprised teacher interviews, classroom observations, and student focus groups. Results demonstrated statistically significant improvements in academic performance across core subjects (Mathematics, Science, and Language), with the greatest gains observed in previously underperforming students. SEL competency development correlated positively with academic improvement ($r = 0.68$, $p < 0.001$). Qualitative findings revealed improved classroom behaviour, engagement, peer relationships, and student-teacher interactions. The study identifies critical implementation factors including teacher training quality, administrative support, consistent program delivery, and cultural contextualization. These findings contribute to the growing evidence supporting SEL integration in educational curricula, particularly in resource-constrained settings, and offer practical recommendations for sustainable SEL implementation in similar contexts.

Keywords: Social-emotional learning, academic achievement, secondary education, educational intervention, rural education, mixed-methods research, Bihar, India, educational psychology, student well-being

1. Introduction

The landscape of education has evolved significantly in recent decades, with growing recognition that academic success depends not only on cognitive abilities but also on social and emotional competencies. Social-Emotional Learning (SEL) encompasses processes through which individuals develop fundamental skills for life effectiveness, including recognizing and managing emotions, developing care and concern for others, establishing positive relationships, making responsible decisions, and handling challenging situations constructively (Collaborative for Academic, Social, and Emotional Learning [CASEL], 2023).

While substantial research from high-income countries demonstrates SEL's positive impact on academic achievement and overall student development (Durlak et al., 2011; Taylor et al., 2017), there remains a significant gap in understanding how these programs function in resource-constrained settings, particularly in rural India. Bihar, as one of India's most educationally challenged states with literacy rates below the national average, presents a unique context for examining SEL interventions (NITI Aayog, 2023). Samastipur district, characterized by its predominantly agricultural economy and educational challenges including high dropout rates and achievement gaps, offers an important setting for investigating whether SEL programs can effectively address academic underperformance. This study responds to calls from educational policymakers in India seeking evidence-based approaches to improve educational outcomes beyond traditional academic interventions (Ministry of Education, 2023).

The National Education Policy 2020 has emphasized holistic development of learners, highlighting social-emotional aspects as crucial components of education (Ministry of Education, 2020). However, empirical research examining the effectiveness of structured SEL programs in the Indian context remains limited, creating a critical knowledge gap that this study aims to address.

Drawing on Vygotsky's sociocultural theory and Bandura's social cognitive theory, this research investigates the mechanisms through which social-emotional competencies influence academic learning processes. By examining both quantitative measures of academic performance and qualitative insights into implementation dynamics, this study provides a comprehensive understanding of how SEL programs function within the specific sociocultural context of rural Bihar.

1.1 Research Objectives

This study was guided by two primary objectives:

1. To evaluate the impact of a structured 16-week SEL intervention on academic achievement across core subject areas (Mathematics, Science, and Language) among secondary school students in Samastipur district.
2. To identify key implementation factors and processes that influence the effectiveness of SEL programs in resource-constrained educational settings.

1.2 Research Hypotheses

Based on the research objectives and existing literature, the following hypotheses were formulated:

H1: Students participating in the structured SEL intervention will demonstrate statistically significant improvements in academic achievement across core subjects compared to the control group.

H2: The development of social-emotional competencies will positively correlate with improvements in academic performance, with higher correlations in language-based subjects compared to mathematics.

2. Literature Review

2.1 Social-Emotional Learning: Theoretical Foundations

The concept of Social-Emotional Learning is grounded in several complementary theoretical frameworks. Vygotsky's (1978) sociocultural theory emphasizes the role of social interactions in cognitive development, positioning SEL as a mediator of effective learning through improved social dynamics. Bandura's (1986) social cognitive theory highlights self-efficacy and self-regulation—core SEL competencies—as critical determinants of academic engagement and achievement. Additionally, Bronfenbrenner's (1979) ecological systems theory provides a framework for understanding how SEL interventions function within broader socio-educational contexts.

The CASEL framework, widely adopted in educational settings globally, identifies five core competencies that form the foundation of effective SEL programs: self-awareness, self-management, social awareness, relationship skills, and responsible decision-making (CASEL, 2023). These competencies have been theorized to support academic learning through multiple pathways, including improved attention, reduced emotional distress, increased motivation, and enhanced classroom relationships (McKown, 2017).

2.2 SEL and Academic Achievement: Empirical Evidence

A substantial body of research demonstrates positive associations between SEL programs and academic outcomes. Meta-analyses by Durlak et al. (2011) and Taylor et al. (2017) found that SEL interventions yielded significant improvements in academic performance, with average effect sizes of 0.27 and 0.33 standard deviations, respectively. Longitudinal studies further suggest that these benefits persist over time, with early SEL competencies predicting academic success years later (Jones et al., 2015).

Several mechanisms have been proposed to explain this relationship. SEL may improve academic performance by enhancing executive functioning skills such as working memory, attention control, and cognitive flexibility (Diamond & Lee, 2011). Additionally, SEL programs often reduce problem behaviors and psychological distress that can interfere with learning processes (Greenberg et al., 2017). However, research also indicates significant variability in outcomes based on implementation quality, program characteristics, and contextual factors (Domitrovich et al., 2017). This underscores the importance of examining both if and how SEL programs work in specific contexts.

2.3 SEL in the Indian Educational Context

While SEL research has flourished internationally, studies specific to the Indian context remain limited. Existing research has primarily focused on urban settings or private schools, with few rigorous evaluations in rural or resource-constrained environments (Sharma, 2022). This represents a significant gap, as socio-cultural factors strongly influence both the implementation and effectiveness of SEL programs.

The traditional Indian educational system has historically emphasized academic achievement over social-emotional development, though this paradigm is gradually shifting with the introduction of the National Education Policy 2020, which explicitly acknowledges the importance of social-emotional competencies (Ministry of Education, 2020). Small-scale studies in various Indian states have reported promising results from SEL interventions, including improved attendance, reduced behavioral problems, and enhanced academic engagement (Bhattacharjee, 2021; Singh & Kumar, 2022). However, these studies often lack methodological rigor or focus exclusively on short-term outcomes without examining implementation processes.

2.4 Contextual Challenges in Bihar

Bihar presents unique challenges for educational interventions. With approximately 46% of its population below the age of 18 and a literacy rate of 63.82% (Census of India, 2022), the state faces significant pressure on its educational infrastructure. Teacher shortages, high student-teacher ratios, inadequate facilities, and irregular attendance patterns create barriers to implementing novel educational approaches (NITI Aayog, 2023). Research by Kingdon (2020) identified social and emotional factors as significant contributors to educational underperformance in Bihar, including lack of self-confidence, limited aspiration, poor self-regulation, and inadequate social support. These findings suggest potential benefits from targeted SEL interventions but highlight the need for contextually adapted approaches.

2.5 Research Gap

This literature review reveals several important gaps that the present study addresses:

1. Limited empirical evidence on SEL effectiveness in rural Indian contexts, particularly in resource-constrained settings like Bihar
2. Insufficient understanding of implementation factors that influence SEL program outcomes in non-Western cultural contexts
3. Need for mixed-methods approaches that examine both quantitative outcomes and qualitative implementation processes
4. Lack of research on how SEL competencies mediate academic improvement in the Indian educational context

By addressing these gaps, this study contributes to both theoretical understanding and practical applications of SEL in diverse educational settings.

3. Methodology

3.1 Research Design

This study employed a mixed-methods approach with a quasi-experimental design to investigate the impact of SEL interventions on academic achievement. Eight government secondary schools in Samastipur district were selected and randomly assigned to either the intervention group (4 schools) or the control group (4 schools). The intervention was conducted over 16 weeks during the 2023-2024 academic year. A convergent parallel mixed-methods design was utilized, wherein quantitative and qualitative data were collected concurrently, analysed separately, and then integrated during interpretation (Creswell & Plano Clark, 2018). This approach enabled robust triangulation and provided comprehensive insights into both outcomes and implementation processes.

3.2 Participants

The study included 412 students (214 in intervention group, 198 in control group) from grades 8 and 9 (ages 13-15 years). Demographic characteristics of participants are presented in Table 1.

Table 1: Demographic Characteristics of Participants

Characteristic	Intervention Group (n = 214)	Control Group (n = 198)	Statistical Comparison
Gender			$\chi^2 = 0.83, p = 0.36$
Female	116 (54.2%)	99 (50.0%)	
Male	98 (45.8%)	99 (50.0%)	
Grade			$\chi^2 = 0.49, p = 0.48$
Grade 8	109 (50.9%)	107 (54.0%)	
Grade 9	105 (49.1%)	91 (46.0%)	
Age (years)			$t = 0.77, p = 0.44$
Mean (SD)	14.2 (0.8)	14.1 (0.7)	
Family Background			$\chi^2 = 1.21, p = 0.75$
Agricultural	127 (59.3%)	121 (61.1%)	
Wage labor	53 (24.8%)	48 (24.2%)	
Small business	26 (12.1%)	18 (9.1%)	
Other	8 (3.7%)	11 (5.6%)	

Additionally, 32 teachers (18 from intervention schools, 14 from control schools) participated in the study. All teachers from intervention schools received specialized training in SEL implementation.

3.3 Sampling Procedure

A multi-stage sampling approach was employed. First, Samastipur district was purposively selected due to its representation of typical rural educational challenges in Bihar. Next, schools were randomly selected from a list of government secondary schools in the district, stratified by geographical location (north, south, east, west) to ensure representativeness. Within selected schools, all students from grades 8 and 9 were invited to participate, with informed consent obtained from both students and their parents/guardians. The final sample size was determined based on power analysis (G*Power 3.1), which indicated that 180 students per group would provide 85% power to detect medium effect sizes ($d = 0.3$) at $\alpha = 0.05$. The actual sample exceeded this minimum requirement, accounting for potential attrition.

3.4 Intervention Description

The SEL intervention was adapted from the CASEL framework but contextually modified for rural Indian settings through a collaborative process involving local educators, SEL experts, and cultural consultants. The program consisted of 32 structured sessions (twice weekly, 45 minutes each) implemented over 16 weeks.

The intervention addressed five core competencies:

1. **Self-awareness**: Activities focused on recognizing emotions, strengths, limitations, and developing a growth mindset
2. **Self-management**: Techniques for emotional regulation, stress management, goal-setting, and study skills
3. **Social awareness**: Exercises to develop empathy, perspective-taking, and cultural sensitivity
4. **Relationship skills**: Communication strategies, conflict resolution, and collaborative learning approaches
5. **Responsible decision-making**: Problem-solving frameworks, ethical considerations, and academic decision-making

Teachers from intervention schools received five days of intensive training before implementation and participated in bi-weekly reflection and support sessions throughout the intervention period. The program utilized culturally relevant narratives, activities, and examples, with materials presented in both Hindi and English. Control schools continued with their regular academic curriculum and extracurricular activities without specific SEL components.

3.5 Data Collection Instruments

3.5.1 Quantitative Measures

Academic Achievement: Standardized subject tests in Mathematics, Science, and Language (Hindi) were administered pre- and post-intervention. These assessments were developed based on the Bihar state curriculum with input from subject specialists and educational measurement experts. Cronbach's alpha reliability coefficients ranged from 0.82 to 0.88 across subjects. Scores were converted to standardized z-scores to facilitate cross-subject comparisons.

SEL Competencies: The Social-Emotional Competency Assessment (SECA), adapted and translated for the Indian context, measured students' self-reported SEL competencies. This 40-item instrument used a 5-point Likert scale to assess the five core competencies. Confirmatory factor analysis supported the five-factor structure (CFI = 0.92, RMSEA = 0.06), and Cronbach's alpha reliability coefficients ranged from 0.78 to 0.85 across subscales.

Classroom Climate: The Classroom Environment Survey, completed by both teachers and students, assessed changes in classroom dynamics. This 25-item measure evaluated student engagement, behavioural management, social relationships, and learning atmosphere. Cronbach's alpha was 0.87 for the overall scale.

3.5.2 Qualitative Methods

Classroom Observations: Trained research assistants conducted 64 structured observations (8 per school) using the Classroom Observation Protocol, which documented student engagement, teacher-student interactions, and implementation fidelity.

Semi-structured Interviews: Individual interviews were conducted with all 18 teachers from intervention schools, focusing on implementation experiences, perceived impacts, challenges, and adaptations.

Focus Group Discussions: Eight focus groups (one per school) with 6-8 students each explored student experiences, perceived changes in themselves and classmates, and program feedback.

Implementation Logs: Teachers maintained weekly logs documenting implementation activities, adaptations, challenges, and notable observations.

3.6 Data Collection Procedures

Baseline data collection occurred two weeks before intervention commencement (August 2023), and post-intervention assessment was conducted two weeks after program completion (January 2024). Research assistants who were blind to group assignment administered all quantitative assessments to minimize potential bias.

Qualitative data collection was ongoing throughout the intervention period, with classroom observations conducted monthly and implementation logs completed weekly. Teacher interviews and student focus groups were conducted after intervention completion. All research procedures received ethical approval from the Institutional Review Board of the associated research institution, and the study adhered to ethical guidelines for research with minors, including informed consent, confidentiality, and right to withdraw.

3.7 Data Analysis

3.7.1 Quantitative Analysis

Data were analyzed using SPSS (version 28.0). After preliminary screening for outliers and normality, the following analyses were conducted:

1. Analysis of covariance (ANCOVA) comparing post-intervention academic scores between intervention and control groups, controlling for pre-intervention scores
2. Paired t-tests examining pre-post changes within each group
3. Pearson correlation analyses between SEL competency development and academic improvement
4. Multiple regression analysis to identify predictors of academic improvement
5. Subgroup analyses examining differential effects by gender, prior achievement level, and grade

3.7.2 Qualitative Analysis

Qualitative data were analyzed using thematic analysis following Braun and Clarke's (2006) six-phase approach:

1. Familiarization with data through multiple readings
2. Initial coding of meaningful segments
3. Searching for themes across codes
4. Reviewing themes for coherence and distinctiveness
5. Defining and naming themes
6. Producing the analysis with illustrative extracts

NVivo 12 software facilitated the organization and analysis of qualitative data. To ensure trustworthiness, member checking, peer debriefing, and researcher triangulation techniques were employed.

3.7.3 Integration of Findings

Following separate analyses, quantitative and qualitative findings were integrated through a joint display approach (Guetterman et al., 2015), which systematically compared and connected results from both methods. This integration enabled comprehensive understanding of both outcomes and processes, identifying convergent findings, complementary insights, and potential contradictions.

4. Results

4.1 Impact on Academic Achievement

4.1.1 Overall Academic Performance

Analysis of covariance (ANCOVA) revealed statistically significant differences in post-intervention academic performance between the intervention and control groups across all three subject areas, controlling for pre-intervention scores. Table 2 presents these findings

Table 2: Comparison of Post-Intervention Academic Scores (ANCOVA Results)

Subject	Intervention (n=214)	Control (n=198)	F-value	p-value	Effect Size (partial η²)
	Adjusted Mean (SE)	Adjusted Mean (SE)			
Mathematics	68.42 (0.67)	62.18 (0.69)	42.78	<0.001	0.095
Science	71.36 (0.65)	65.94 (0.67)	33.14	<0.001	0.075
Language	74.87 (0.60)	70.52 (0.62)	25.21	<0.001	0.058
Overall	71.55 (0.53)	66.21 (0.55)	47.36	<0.001	0.104

Note: Adjusted means control for pre-intervention scores. SE = Standard Error.

The intervention group demonstrated significantly higher post-intervention scores across all subjects, with the largest effect observed in Mathematics (partial $\eta^2 = 0.095$), followed by Science (partial $\eta^2 = 0.075$) and Language (partial $\eta^2 = 0.058$). The overall academic performance showed a moderate effect size (partial $\eta^2 = 0.104$).

4.1.2 Pre-Post Changes Within Groups

Paired t-tests examined changes from pre- to post-intervention within each group, revealing significant improvements in all subjects for the intervention group but mixed results for the control group (Table 3).

Table 3: Pre-Post Changes in Academic Scores Within Groups

Subject	Intervention Group (n=214)			Control Group (n=198)		
	Pre Mean (SD)	Post Mean (SD)	p-value	Pre Mean (SD)	Post Mean (SD)	p-value
Mathematics	58.76 (12.41)	68.32 (11.85)	<0.001	59.12 (11.98)	62.28 (12.36)	0.003
Science	62.17 (11.74)	71.26 (10.93)	<0.001	61.85 (12.08)	66.04 (11.75)	<0.001
Language	67.93 (10.58)	74.79 (9.82)	<0.001	68.25 (10.16)	70.61 (10.47)	0.012
Overall	62.95 (10.21)	71.46 (9.78)	<0.001	63.07 (10.48)	66.31 (10.27)	<0.001

While both groups showed some improvement, the magnitude of change was substantially larger for the intervention group across all subjects. The control group's improvements likely reflect normal academic progression over the semester.

4.1.3 Differential Effects by Prior Achievement

Subgroup analysis revealed that the SEL intervention had differential effects based on students' prior achievement levels. Table 4 presents academic gains stratified by pre-intervention performance tertiles.

Table 4: Academic Gains by Prior Achievement Level (Intervention Group)

Prior Achievement Level	n	Mathematics	Science	Language	Overall
		Mean Gain (SD)	Mean Gain (SD)	Mean Gain (SD)	Mean Gain (SD)
Low Tertile	72	12.86 (6.32)	11.75 (5.84)	9.42 (5.18)	11.34 (4.78)
Middle Tertile	71	9.18 (4.87)	8.64 (4.93)	6.31 (4.25)	8.04 (3.97)
High Tertile	71	6.37 (4.12)	7.11 (4.06)	4.87 (3.89)	6.12 (3.42)
F-value		28.76	17.93	19.28	31.47
p-value		<0.001	<0.001	<0.001	<0.001

Students in the lowest tertile of prior achievement demonstrated the largest gains across all subjects, suggesting that the SEL intervention was particularly beneficial for academically vulnerable students.

4.2 Development of SEL Competencies

Pre-post comparisons of SEL competencies showed significant improvements in the intervention group across all five domains, while the control group showed no significant changes (Table 5).

Table 5: Changes in SEL Competencies

SEL Competency	Intervention Group (n=214)			Control Group (n=198)		
	Pre Mean (SD)	Post Mean (SD)	p-value	Pre Mean (SD)	Post Mean (SD)	p-value
Self-awareness	3.12 (0.68)	3.87 (0.72)	<0.001	3.15 (0.71)	3.21 (0.69)	0.278
Self-management	2.98 (0.74)	3.76 (0.68)	<0.001	3.01 (0.72)	3.08 (0.74)	0.182
Social awareness	3.27 (0.65)	3.92 (0.63)	<0.001	3.24 (0.67)	3.31 (0.68)	0.105
Relationship skills	3.18 (0.71)	3.84 (0.65)	<0.001	3.14 (0.69)	3.19 (0.71)	0.337
Responsible decision-making	3.06 (0.73)	3.79 (0.67)	<0.001	3.03 (0.70)	3.11 (0.72)	0.142
Overall SEL	3.12 (0.59)	3.84 (0.54)	<0.001	3.11 (0.58)	3.18 (0.60)	0.086

Note: SEL competencies were measured on a 5-point scale (1=Not at all characteristic, 5=Very characteristic).

4.3 Relationship Between SEL Development and Academic Improvement

Pearson correlation analyses revealed significant positive associations between SEL competency development and academic improvement. Table 6 presents correlation coefficients between changes in SEL domains and academic gains.

Table 6: Correlations Between SEL Development and Academic Gains (Intervention Group)

SEL Competency Change	Mathematics Gain	Science Gain	Language Gain	Overall Academic Gain
Self-awareness	0.41***	0.45***	0.52***	0.51***
Self-management	0.56***	0.49***	0.50***	0.58***
Social awareness	0.33***	0.38***	0.47***	0.43***
Relationship skills	0.37***	0.42***	0.51***	0.48***
Responsible decision-making	0.47***	0.44***	0.46***	0.50***
Overall SEL change	0.55***	0.56***	0.63***	0.68***

Note: *** $p < 0.001$

Self-management showed the strongest correlation with Mathematics gains ($r = 0.56$), while Self-awareness and Relationship skills demonstrated stronger associations with Language gains ($r = 0.52$ and $r = 0.51$, respectively). Overall SEL development strongly correlated with overall academic improvement ($r = 0.68$).

Multiple regression analysis identified self-management ($\beta = 0.31$, $p < 0.001$) and self-awareness ($\beta = 0.24$, $p < 0.001$) as the strongest predictors of academic gains, collectively explaining 46% of variance in overall academic improvement.

4.4 Qualitative Findings

Thematic analysis of qualitative data yielded four major themes related to the impact and implementation of the SEL program.

4.4.1 Enhanced Classroom Environment

Both teachers and students reported significant improvements in classroom climate following the SEL intervention. Observations confirmed reduced disruptions and increased student engagement.

"The classroom feels completely different now. Students listen better, participate more, and show respect for each other's opinions. The noise level has decreased, but the engagement has increased." (Teacher 7, Intervention School 2)

Focus group discussions revealed that students felt safer expressing themselves:

"Earlier I was afraid to ask questions because others would laugh. Now I feel comfortable asking when I don't understand something because we learned to respect each other." (Female Student, Grade 9, Intervention School 3)

Classroom observation data indicated a 47% reduction in behavioral disruptions and a 38% increase in active participation compared to baseline measures.

4.4.2 Improved Learning Strategies

The development of self-management skills translated into better learning approaches. Students reported adopting more effective study strategies:

"I used to get frustrated when I couldn't solve math problems and would give up. Now I use the calming techniques we learned and break difficult problems into smaller parts. My marks have improved because I don't give up so easily." (Male Student, Grade 8, Intervention School 1) Teachers noticed improvements in students' ability to organize work, maintain focus, and persist through challenges:

"Students are showing remarkable improvement in completing assignments on time. They're using the goal-setting and planning strategies we practiced, and I can see they're developing better study habits." (Teacher 12, Intervention School 4)

4.4.3 Strengthened Relationships and Communication

The development of social awareness and relationship skills fostered a more collaborative learning environment:

"Group work has become much more productive. Before, the same few students would dominate while others barely participated. Now they have learned to listen to each other and build on each other's ideas." (Teacher 3, Intervention School 1)

Students highlighted improved peer relationships as contributing to their learning:"We formed study groups after school where we help each other understand difficult concepts. This started after we did the SEL activities on teamwork. It helps me understand subjects better when my friends explain things in their own words." (Female Student, Grade 9, Intervention School 2)

4.4.4 Implementation Challenges and Adaptations

Despite positive outcomes, teachers identified several implementation challenges:

3. **Time constraints**: Balancing SEL instruction with academic curriculum requirements
4. **Language barriers**: Some concepts required contextual translation beyond literal language conversion

1. **Initial resistance**: Both from students unfamiliar with participatory learning and from some parents concerned about academic time allocation
2. **Resource limitations**: Inadequate materials and physical space for certain activities

Teachers developed various adaptations to address these challenges:

"I integrated SEL concepts into regular subject teaching rather than treating them as separate lessons. For example, while teaching literature, we would practice perspective-taking and empathy by discussing characters' emotions and motivations." (Teacher 9, Intervention School 3)

The most successful implementations occurred when teachers received consistent support from school leadership and had opportunities for collaborative planning with colleagues.

4.5 Integration of Quantitative and Qualitative Findings

Integration of quantitative and qualitative results revealed several complementary findings:

1.The stronger correlation between SEL development and Language gains compared to Mathematics was explained by qualitative data indicating that improved classroom communication and confidence in expression particularly benefited language learning

2. The greater academic gains among previously low-achieving students aligned with teacher observations that these students benefited most from improved self-confidence and emotional regulation.

3.Qualitative data provided explanatory mechanisms for the quantitative correlations, suggesting that SEL competencies influenced academic performance through multiple pathways:

Enhanced attention and concentration through improved self-regulation

Increased academic engagement through greater self-confidence

More effective collaboration through improved social skills

4 Implementation quality emerged as a critical moderating factor, with stronger outcomes observed in classrooms where teachers demonstrated higher fidelity to the program while making culturally appropriate adaptations.

5. Discussion

5.1 Impact on Academic Achievement

The findings demonstrate that the SEL intervention had a significant positive impact on academic achievement across all measured subject areas, supporting the first hypothesis. The observed effect sizes (partial η^2 ranging from 0.058 to 0.104) are comparable to those reported in meta-analyses of SEL interventions in other contexts (Durlak et al., 2011; Taylor et al., 2017), suggesting that properly implemented SEL programs can be similarly effective in resource-constrained rural Indian settings.

The differential impact across achievement levels, with the largest gains observed among previously low-achieving students, aligns with findings from Bierman et al. (2010) and Jones et al. (2015), who reported that SEL interventions often have the most substantial benefits for academically vulnerable students. This pattern may reflect the particular importance of self-regulation and social support for students facing academic challenges.

The significant impacts across subject areas indicate that SEL competencies have broad relevance for academic learning, though the mechanisms may differ by subject. The stronger effects in Mathematics compared to Language partially contradict the second hypothesis, which anticipated larger gains in language-based subjects. This unexpected finding may reflect the particular importance of self-management skills (e.g., persistence, organized approach) for mathematical learning in this context, where rote memorization often predominates over conceptual understanding.

5.2 Mechanisms of Impact

The strong positive correlations between SEL competency development and academic gains support the mediational role of social-emotional skills in academic achievement. The finding that self-management emerged as the strongest predictor of academic improvement aligns with research by Duckworth and Seligman (2005), who identified self-discipline as a stronger predictor of academic

1. **Cognitive pathway**: Improved self-regulation enhanced students' ability to maintain attention, manage distractions, and engage in deliberate practice
2. **Motivational pathway**: Greater self-awareness and goal-setting skills increased academic motivation and persistence
3. **Interpersonal pathway**: Enhanced relationship skills and social awareness facilitated more effective peer collaboration and teacher-student interactions
4. **Emotional pathway**: Improved emotional regulation reduced stress and negative emotions that typically interfere with learning processes

These pathways align with McKown's (2017) integrated model of SEL impact, which proposes that social-emotional competencies influence academic outcomes through multiple interconnected processes. The present findings extend this model by highlighting the cultural specificity of certain pathways, particularly the heightened importance of the interpersonal pathway in the collectivist cultural context of rural Bihar.

5.3 Implementation Factors

The qualitative findings identified several critical factors that influenced implementation effectiveness, consistent with the implementation science literature on educational interventions (Durlak & DuPre, 2008; Domitrovich et al., 2017).

Teacher training quality emerged as a particularly salient factor, with teachers reporting that ongoing support and opportunities for collaborative reflection were more valuable than initial training alone. This aligns with findings from Jennings and Greenberg's (2009) research emphasizing the importance of teacher social-emotional competence and continuous professional development for effective SEL implementation.

Cultural adaptation was essential for program success, extending beyond mere translation to include contextual modification of activities, examples, and metaphors. This finding supports Hecht and Shin's (2015) argument that SEL programs must be culturally responsive to be effective, particularly when implemented in non-Western contexts. The adaptations developed by teachers in this study—such as incorporating local narratives and addressing context-specific challenges—provide valuable insights for future SEL implementation in similar settings.

The challenges identified, including time constraints and resource limitations, are consistent with barriers reported in other resource-constrained educational settings (Sharma, 2022). However, the successful adaptations documented in this study demonstrate that these barriers can be overcome through flexible implementation approaches that integrate SEL concepts into existing curricular activities rather than treating them as separate add-ons.

5.4 Theoretical Implications

This study contributes to SEL theory in several ways. First, it provides empirical support for the cross-cultural applicability of the CASEL framework, demonstrating that the five core competencies are relevant in the Indian educational context when appropriately adapted. Second, it extends understanding of the mechanisms linking SEL development to academic achievement, particularly in collectivist cultural contexts where interpersonal dimensions may have heightened importance.

The findings also highlight the need for more nuanced theoretical models that account for cultural and contextual variations in SEL processes. While the core competencies appear universally relevant, the specific manifestations, relative importance, and developmental pathways may vary considerably across cultural contexts. For example, the concept of self-awareness in this study incorporated greater emphasis on awareness of one's responsibilities to the collective than is typically emphasized in Western SEL frameworks.

5 Practical Implications

The findings have several important implications for educational practice in Bihar and similar contexts:

1. **SEL integration**: The results provide empirical support for integrating structured SEL components into educational curricula in rural Indian schools, aligning with the National Education Policy 2020's emphasis on holistic development.
2. **Teacher preparation**: Pre-service and in-service teacher education should incorporate SEL concepts and pedagogical approaches, emphasizing both teachers' own social-emotional competencies and their capacity to foster these skills in students.
3. **Cultural adaptation**: Rather than directly importing SEL programs developed in Western contexts, educational interventions should be collaboratively adapted with local educators to ensure cultural relevance and contextual appropriateness.
4. **Resource efficiency**: In resource-constrained settings, SEL can be effectively implemented through integration into existing subjects rather than requiring extensive additional materials or dedicated time blocks.
5. **Targeting underperforming students**: Given the particularly strong benefits observed for previously low-achieving students, SEL approaches may represent an effective strategy for addressing achievement gaps in rural Indian schools.

5.6 Limitations and Future Research

Several limitations should be considered when interpreting these findings. First, the quasi-experimental design, while robust, cannot completely rule out the influence of unobserved variables. Second, the 16-week intervention period provides limited insight into long-term sustainability of effects. Third, self-report measures of SEL competencies may be subject to social desirability bias, though triangulation with observational data strengthens confidence in these findings.

Future research should address these limitations through longitudinal designs examining the persistence of effects over time, experimental studies with random assignment at the individual level, and development of more objective SEL assessment tools appropriate for the Indian context. Additionally, research should explore the potential of technology-enhanced SEL delivery to address resource constraints and the effectiveness of differentiated SEL approaches for various student subgroups.

Particularly valuable would be studies examining how specific cultural values and practices in different Indian communities influence both the implementation and outcomes of SEL programs. Given India's immense cultural diversity, findings from one region cannot be uncritically generalized to others without careful consideration of contextual factors.

. Conclusion

This study demonstrates that a contextually adapted SEL intervention can significantly improve academic achievement among secondary school students in rural Bihar. The findings support both research hypotheses, showing that (1) students participating in the SEL intervention demonstrated significant improvements in academic achievement across core subjects compared to the control group, and (2) development of social-emotional competencies positively correlated with academic improvement, though with unexpected variations across subject areas.

The mixed-methods approach provided comprehensive insights into both outcomes and processes, identifying critical implementation factors and illuminating the mechanisms through which SEL competencies influenced academic performance. The particularly strong benefits observed for previously low-achieving students suggest that SEL interventions may represent an effective strategy for addressing educational disparities in resource-constrained settings.

These findings contribute to the growing international evidence base supporting SEL while addressing important gaps in understanding how such programs function in non-Western, resource-constrained contexts. For educational policymakers and practitioners in Bihar and similar regions, this research provides empirically grounded guidance for implementing SEL approaches that can enhance both academic outcomes and holistic student development. As India continues to reform its educational system through initiatives like the National Education Policy 2020, the integration of evidence-based SEL approaches represents a promising strategy for addressing persistent challenges in educational quality and equity. By fostering students' social-emotional competencies alongside academic skills, schools can better prepare young people for success not only in academics but in their broader lives and communities.

References

Bandura, A. (1986). Social foundations of thought and action: A social cognitive theory. Prentice-Hall.

Bhattacharjee, S. (2021). Implementation of social-emotional learning programs in urban Indian schools: Challenges and outcomes. Journal of Educational Psychology in India, 15(2), 78–96.

Bierman, K. L., Coie, J. D., Dodge, K. A., Greenberg, M. T., Lochman, J. E., McMahon, R. J., & Pinderhughes, E. (2010). The effects of a multiyear universal social-emotional learning program:

The role of student and school characteristics. *Journal of Consulting and Clinical Psychology, 78*(2), 156–168. https://doi.org/10.1037/a0018607

Braun, V., & Clarke, V. (2006). Using thematic analysis in psychology. *Qualitative Research in Psychology, 3*(2), 77–101. https://doi.org/10.1191/1478088706qp063oa

Bronfenbrenner, U. (1979). *The ecology of human development: Experiments by nature and design*. Harvard University Press.

Census of India. (2022). *Population projections for India and states 2011–2036*. Office of the Registrar General & Census Commissioner. https://censusindia.gov.in/

Collaborative for Academic, Social, and Emotional Learning (CASEL). (2023). *SEL framework*. https://casel.org/sel-framework/

शिक्षण प्रक्रिया के अनिवार्य घटक के रूप में परीक्षा

श्याम किशोर सिंह
सहायक प्राध्यापक

परीक्षा शिक्षण–प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। यह शिक्षण का साधन है। किन्तु दुर्भाग्यवश आज के वातावरण में परीक्षा ही शिक्षण का उद्देश्य बन गयी है। विद्यार्थी परीक्षा उत्तीर्ण करने हेतु अध्ययन करते हैं। शिक्षक भी छात्रों को परीक्षा उत्तीर्ण कराने के उद्देश्य से पढ़ाते हैं । सम्पूर्ण शिक्षण–प्रक्रिया परीक्षोन्मुख बनकर रह गयी है। सही शिक्षण के लिये परीक्षा को शिक्षण का साधन मानकर चलना आवश्यक है। परीक्षा के माध्यम से छात्र द्वारा अर्जित ज्ञान के स्तर का मापन होता है जिससे छात्र को अपनी स्थिति का ज्ञान हो जाता है और तदनुसार वह अपने अध्ययन एवं अभ्यास की गति और पद्धति में सुधार ला सकता है। शिक्षक को भी परीक्षा के माध्यम से अपने छात्रों की स्थिति ज्ञात हो जाती है और वह अपनी शिक्षण–पद्धति में सुधार ला सकता है तथा आवश्यकतानुसार छात्रों की व्यक्तिशरू सहायता भी कर सकता है। अतः परीक्षा का शिक्षण–प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं द्वारा छात्र की विद्वता का, उसकी क्रियाशक्ति का, उसकी सामान्य योग्यता का, उसकी मेधा–शक्ति का, स्मृति का, बुद्धिकौशल का और उसकी वाक्चातुरी का परीक्षण किया जाता है। छात्र की बुद्धि और उपलब्धि का परीक्षण करने के लिये अनेक प्रकार के बाह्य परीक्षण (ऑब्जेक्टिव टेस्ट) प्रचलित हैं, जिनके माध्यम से केवल अध्यापक ही नहीं अपितु छात्र भी अपनी प्रगति, उपलब्धि और अर्जित ज्ञान का उचित परीक्षण कर सकते हैं।

मूल्यांकन का क्षेत्र

मूल्यांकन प्रक्रिया का क्षेत्र व्यापक है। परीक्षा भी मूल्यांकन प्रक्रिया का एक भाग है। वर्तमान शिक्षाशास्त्रियों का शिक्षण में मूल्यांकन प्रक्रिया को अपनाने पर अधिक बल है। यह सभी का अनुभव है कि कागज – पेन्सिल के माध्यम से जो परीक्षण किये जाते हैं, उनके द्वारा छात्रों की शिक्षा–सम्बन्धी उन्नति और व्यवहार के बहुत सीमित भाग का मापन होता है। इसीलिये बाह्य परीक्षण को महत्त्व दिया गया है। किन्तु साथ ही छात्र के सर्वांगीण अभिलेख, व्यक्तिगत अध्ययन, साक्षात्कार, कक्षा–विवरण आदि के माध्यम से उसके व्यवहार एवं प्रगति का मूल्यांकन करने की पद्धति प्रचलित हुई, जो शैक्षिक प्रक्रिया एवं उसके उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हुई है।

मूल्यांकन का प्रमुख लक्ष्य यह देखना है कि पाठ्यक्रमों के निर्धारित उद्देश्यों की किस सीमा तक प्राप्ति हुई है। यह प्रक्रिया स्वभावतः शैक्षिक अनुभवों और शिक्षण की उन विधियों से सम्बद्ध है जो ज्ञानार्जन की प्रक्रिया में प्रयुक्त की गयी हों। मूल्यांकन प्रक्रिया से छात्रों को अध्ययन के लिये मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्राप्त होती है एवं शक्तियों और दुर्बलताओं का ज्ञान होता है।

स्व–मूल्यांकन

शिक्षक शिक्षण–प्रक्रिया के माध्यम से निर्धारित पाठ्यक्रम को अपनाकर शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास करता है। उसे निरन्तर स्व–मूल्यांकन करते रहना चाहिए कि पाठ्यक्रम का जो संयोजन किया गया है वह उचित है या नहीं और उसकी प्रकृति के अनुसार छात्रों की अपेक्षित प्रगति हो रही है या नहीं। यदि नहीं हो रही है तो पाठ्यक्रम के रूप में उसके संयोजन और प्रयोग में क्या परिवर्तन अपेक्षित और वांछनीय हैं? साथ ही शिक्षक को अपने शिक्षण की पद्धति का भी मूल्यांकन करते रहना चाहिए कि वह उचित है या नहीं, तथा आवश्यकतानुसार उसमें भी सुधार या परिवर्तन करना चाहिए। शिक्षक का यह भी कर्तव्य है कि वह इस प्रकार की परिस्थिति उत्पन्न करे और ऐसी व्यवस्था करे कि स्वयं छात्र भी अपनी प्रगति और बौद्धिक विकास की गति का स्वयं मूल्यांकन कर सकें। शिक्षा के क्षेत्र में इस स्वमूल्यांकन की व्यवस्था को अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया जा रहा है। जीवन की प्रत्येक क्रिया का, विशेषतरू ज्ञानार्जन–क्रम का मूल्यांकन करते रहना चाहिए, जिससे एक ओर यह ज्ञात होता चले कि हमारी कितनी प्रगति हो रही है और दूसरी ओर प्रगति और दूसरी ओर प्रगति में बाधक सिद्ध होने वाले तत्त्वों का निराकरण करके तदनुसार पाठ्यक्रम में अथवा – शिक्षण योजना में उचित परिवर्तन किया जा सके।

मूल्यांकन सर्वांगीण एवं सतत प्रक्रिया

1. सर्वांगीण मूल्यांकन

मूल्यांकन की प्रक्रिया ऐसी अपनायी जाये जिससे शिक्षण के सभी उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में हुई प्रगति का ज्ञान हो सके।

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण – अर्थात् शारीरिक, व्यावसायिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास माना गया है। अतः मूल्यांकन की प्रक्रिया ऐसी अपनायी जाय जिससे व्यक्तित्व के इन सभी पक्षों के विकास का मूल्यांकन होता चले। शिक्षक प्रायः मानसिक विकास के मूल्यांकन तक ही अपना प्रयास सीमित कर देते हैं तथा अन्य पक्षों की उपेक्षा कर देते

हैं। इसके परिणामस्वरूप बालक का सर्वांगीण विकास उपेक्षित रहता है। अतः शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षक को सर्वांगीण मूल्यांकन करते रहना चाहिए।

दूसरी बात, जो सर्वांगीण मूल्यांकन के लिये आवश्यक है, वह है पाठ्य विषय के शिक्षण के सभी उद्देश्यों की प्राप्ति हुई है या नहीं, इसका मूल्यांकन करना । पाठ्य विषय के तथ्यों से सम्बन्धित जानकारी छात्र को हुई या नहीं, पाठ्य विषय के मूल सिद्धान्त या तत्त्व को उसने समझा है या नहीं, अपेक्षित कुशलताओं का विकास, ज्ञान का प्रयोग कर पाना उसे आया है या नहीं तथा उसकी अभिवृत्ति का विकास एवं स्वाध्याय के क्षेत्र में छात्र ने क्या उपलब्धि की है, शिक्षण के इन समस्त पदों का मूल्यांकन करना सफल शिक्षण के लिये अपरिहार्य है।

2. सतत मूल्यांकन

मूल्यांकन शिक्षण–प्रक्रिया का अभिन्न अंग है, अतः प्रत्येक क्षेत्र में छात्रों की प्रगति का सतत मूल्यांकन होते रहना चाहिए। छात्रों को ज्ञान–प्राप्ति के बाद यथाशीघ्र ज्ञान का परिणाम मिलना चाहिए। उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि उन्होंने क्या सीखा है और कितना सीखा है तथा कितनी अच्छी तरह सीखा है। अध्यापक को भी अपनी शिक्षण–प्रक्रिया का मूल्यांकन प्रत्येक शिक्षण इकाई समाप्त होने के पश्चात् करना चाहिए, तभी वह अपनी शिक्षण–प्रक्रिया के सम्बन्ध में अपेक्षित विचार कर सकेगा। वार्षिक, अर्थात् केवल नियमित कालावधियों पर अर्धवार्षिक या मासिक मूल्यांकन करने से मूल्यांकन का सही उपयोग नहीं हो सकता। अतः मूल्यांकन शिक्षण के साथ–साथ सतत प्रक्रिया के रूप में चलते रहना चाहिए। अनेक शिक्षाविदों ने शिक्षण के पदों में मूल्यांकन को भी एक पद के रूप में माना है।

मूल्यांकन की पद्धति

सामान्यतः मूल्यांकन की निम्नलिखित पद्धतियाँ प्रचलित हैं–

1. लिखित परीक्षा द्वारा मूल्यांकन करना। इसके लिये निबन्धात्मक, लघु निबन्धात्मक तथा विविध प्रकार के वस्तुनिष्ठ परीक्षण प्रचलित हैं।

2. छात्र द्वारा किये गये सृजनात्मक कार्य या उत्पादक कार्य का विश्लेषण करके मूल्यांकन करना ।

3. कक्षा में प्रश्नावली द्वारा अथवा विचार–मंथन करके मूल्यांकन करना ।
4. छात्र के व्यवहार का निरीक्षण करके मूल्यांकन करना । व्यवहार का निरीक्षण अनौपचारिक ढंग से भी किया जाता है और किसी विशिष्ट व्यवहार के लिये विशेष परिस्थिति का योजनाबद्ध निर्माण करके व्यवस्थित निरीक्षण भी किया जाता है।
5. पारस्परिक विचार–विमर्श द्वारा एवं व्यक्तितरू अथवा समूह में साक्षात्कार के द्वारा मूल्यांकन करना ।

आदर्श मूल्यांकन–पद्धति की विशेषताएँ

मूल्यांकन की पद्धति को उपयोगी बनाने के लिये उसमें निम्नलिखित विशेषताओं का होना आवश्यक है –

1. मूल्यांकन निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के विश्वसनीय और ठोस प्रमाण देने वाला होना चाहिए।
2. उसे क्रमशरू कई उद्देश्यों और फिर सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को अपनी सीमा में लेने वाला होना चाहिए।
3. यह बात महत्त्वपूर्ण है कि विद्यार्थी मूल्यांकन के प्रति गलत दृष्टिकोण अपनाने की अपेक्षा उसे अपनी उपलब्धियों में सुधार का साधन समझकर सही रूप में ग्रहण करे। पाठ्यक्रम के सभी विषयों में एक ही समय उत्तीर्ण होने पर बल देने और अनुत्तीर्ण होने के भय के कारण . बहुत से विद्यार्थी असन्तुलित हो जाते हैं और उनका विकास अवरुद्ध हो जाता है। अतः मूल्यांकन में लचक होनी चाहिए। मूल्यांकन की विधि ऐसी होनी चाहिए कि विद्यार्थी कण्ठस्थ करने की प्रवृत्ति न अपनाये और अपने ज्ञान का उपयोग नवीन परिस्थितियों एवं समस्याओं के समाधान ढूँढने में कर सके। छात्र तब तक आलोचनात्मक चिन्तन, सर्जनात्मकता और मूल्यात्मक निर्णय जैसी ज्ञान की उच्च सीमाओं तक पहुँचने के लिये प्रयास नहीं करेंगे, जब तक कि ज्ञान को उपयुक्त अनुभवों से विकसित करने और उसका उचित मूल्यांकन करने की व्यवस्था नहीं की जायेगी। जहाँ विद्यालयों में केवल शुष्क शैक्षिक अनुभव दिये जाते हैं या मूल्यांकन की विधि रटने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करती है, वहाँ समस्त शैक्षिक उद्देश्य निरर्थक हो जाते हैं।
4. प्राथमिक स्तर पर बालक छोटे और कोमल होते हैं। इस स्तर पर उन पर मूल्यांकन की कोई लचकहीन प्रणाली लागू नहीं की जा सकती। अतरू मूल्यांकन शिक्षण–प्रक्रिया में ही सन्निहित होना चाहिए। प्रत्येक छात्र का लगातार प्रगति का लेखा रखने की प्रणाली का विकास किया जाना चाहिए। इसका आधार निरीक्षण और मौखिक परीक्षाएँ होनी चाहिए । प्रोन्नति का आधार वर्ष के अन्त में ली जाने वाली परीक्षा नहीं होनी चाहिए। सम्पूर्ण सत्र में प्रगति के लेखे के आधार पर ही बालक को अगली कक्षा में चढ़ाना चाहिए। कुछ शिक्षाशास्त्रियों का मत है कि प्राथमिक स्तर पर सामान्यतः सभी छात्रों को अगली कक्षा में चढ़ा देना चाहिए। वर्तमान में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा अनेक राज्य सरकारों ने ऐसी ही

व्यवस्था लागू कर रखी है। फिर भी उन छात्रों पर विशेष ध्यान देने की व्यवस्था करनी चाहिए जो सन्तोषजनक प्रगति नहीं करते।

5. प्रत्येक क्षेत्र में विद्यार्थियों की प्रगति का सतत मूल्यांकन एक नियमित कार्य–पद्धति पर आधारित होना चाहिए। माध्यमिक एवं आगे के स्तर के विद्यार्थियों की विभिन्न विषयों में प्रगति के मूल्यांकन के लिये लिखित परीक्षाएँ भी होनी चाहिए किन्तु परीक्षण की विधि केवल निबन्धात्मक परीक्षाओं की ही नहीं होनी चाहिए। उसके लिए विभिन्न अलग–अलग पद्धतियाँ अपनानी चाहिए। प्रायोगिक परीक्षाएँ होनी चाहिए। निरीक्षण, जाँच सूचियाँ, मौखिक परीक्षाएँ, विद्यार्थियों द्वारा वस्तुओं का मूल्यांकन भी इस परीक्षण के अतिरिक्त साधनों और विधियों के रूप में प्रयोग करने चाहिए। यदि आवश्यक हो तो वार्षिक परीक्षा भी ली जा सकती है, किन्तु वर्ष में किये गये अन्य मूल्यांकनों की तुलना में इस पर अधिक बल नहीं देना चाहिए। वास्तव में किसी भी परीक्षा में कोई उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण नहीं होना चाहिए। उनके स्तर को सूचित करने वाले अक्षरों (क, ख, ग, घ, ङ) का प्रयोग किया जा सकता है। इस मूल्यांकन का आगामी शिक्षा में उपयोग महत्त्वपूर्ण है । विद्यार्थियों को उनकी परीक्षण की गयी उत्तर–पुस्तिकाएँ लौटाकर उनकी अशुद्धियों पर बातचीत करनी चाहिए तथा उन्हें और अच्छे ढंग से कार्य कर सकने के लिये मार्गदर्शन देना चाहिए। यदि कोई विद्यार्थी अपने किसी मूल्यांकन में अपना स्तर सुधारना चाहता है तो उसे उस विषय में पुनः परीक्षा देने का अवसर दिया जाना चाहिए।

6. प्रत्येक विषय में विद्यालय द्वारा किये गये संचयित मूल्यांकन का अभिलेख (रिकार्ड) बनाया जाना चाहिए और इस प्रकार के मूल्यांकन में छात्र की समस्त गतिविधियों की प्रगति का लेखा होना चाहिए तथा विद्यालय छोड़ने के समय यह लेखा विद्यार्थी को प्रमाण–पत्र के रूप में देना चाहिए।

निष्कर्ष

यह अत्यंत दुर्भाग्य का विषय होता है कि कहीं–कहीं मूल्यांकन और परीक्षा की प्रक्रिया में ऐसे लोग , संस्था, व्यक्ति भी जुड़े होते हैं जिनका परीक्षा के प या एग्जामिनेशन के ए से कोई सारोकार नहीं होता ऐसे में उनके द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश फिजूल टाइप के दिए जाते हैं जिनका अनुपालन वास्तविक धरातल पर कर पाना नितांत असंभव होता है। मूल्यांकन का प्रयोग पाठ्यक्रम के विकास के सम्बन्ध में मुख्यतः उपयोगी होता है। किसी एक अवस्था के बालकों को लेकर उनका मूल्यांकन करने पर ही यह निश्चित करना सम्भव हो पाता है कि अमुक अवस्था के बालकों को कौन से विषय, किस सीमा तक, किस पद्धति से सिखाये जायें। अतः मूल्यांकन का शिक्षण–प्रक्रिया में सतत प्रयोग नितान्त आवश्यक है। इसका निरन्तर प्रयोग करते रहने से पाठ्यक्रम में नवीन विषय जोड़ने, पुराने विषय कम करने, घटाने या बढ़ाने का नियोजन भी किया जा सकता है। अतः शिक्षक को निर्धारित पाठ्यक्रम का दास न बनकर उसे इस प्रकार नियोजित करते रहना चाहिए कि व्यापक रूप से छात्रों का हित और उनका सर्वांगीण विकास हो, जिसका अनुभव और मूल्यांकन स्वयं छात्र भी कर सकें और अभिभावक भी।

Assessing Success: The Role of Outcome-Based Learning in Student Development"

Arpana Kumari
Asst. Professor

Abstract -

Outcome-Based Learning (OBL) has emerged as a powerful educational approach that prioritizes what learners are expected to achieve by the end of a learning experience. Unlike traditional models that emphasize content delivery and rote memorization, OBL focuses on clearly defined learning outcomes that align with real-world skills and competencies. This learner-centered model emphasizes measurable goals, active participation, continuous assessment, and reflective learning, thereby ensuring that education is both purposeful and applicable beyond the classroom.

This article explores the vital role OBL plays in shaping student development—academically, professionally, and personally. By outlining specific objectives at the outset of instruction, students are encouraged to take greater responsibility for their learning, set meaningful goals, and track their own progress. Assessments under OBL frameworks are diverse and include formative tools, rubrics, projects, and self-assessments, all designed to gauge not only knowledge acquisition but also skill application and critical thinking.

Furthermore, OBL supports holistic development by integrating emotional intelligence, collaboration, ethical reasoning, and lifelong learning skills into educational experiences. It prepares students to meet global challenges with adaptability, problem-solving capabilities, and responsible citizenship. While implementation requires structural and pedagogical reforms, the long-term benefits of OBL in enhancing education quality and relevance are substantial.

The article concludes that assessing student success through the lens of outcome-based learning is essential in today's dynamic world. It ensures that learners are not just evaluated by test scores but are equipped with the knowledge, skills, and attitudes necessary to thrive in complex and competitive environments.

Keywords: Outcome-Based Learning, Learning Outcomes, Skill-Based Education, Holistic Development, Education Reform, Competency-Based Learning, Academic Success.

Introduction -

In recent decades, the landscape of education has undergone a significant transformation, with a growing emphasis on not just the process of teaching, but more critically, on the outcomes of learning. This shift from traditional teacher-centered models to student-centric approaches has paved the way for the adoption of Outcome-Based Learning (OBL), a pedagogical framework that focuses on clearly defined goals and measurable achievements. The core philosophy of OBL is simple yet profound: what matters most in education is not what is taught, but what the learner is able to demonstrate as a result of the learning experience.

Traditional education systems have long emphasized the accumulation of theoretical knowledge, often assessed through standardized examinations that prioritize memorization over understanding and application. While such systems have produced academic success on paper, they frequently fall short in equipping students with the skills, attitudes, and competencies needed in real-world settings. In contrast, Outcome-Based Learning reorients the entire educational process—from curriculum design to instructional methods and assessment techniques—toward achieving specific learning outcomes that reflect both academic and practical competencies. These outcomes are often aligned with national qualifications frameworks, industry standards, and the holistic development goals of students.

OBL emphasizes transparency and accountability in education. Students are made aware of the intended learning outcomes from the beginning of a course or program, which fosters a sense of direction and purpose. This clarity enhances student engagement and allows for more effective learning strategies, as

learners can actively track their own progress toward well-defined goals. For educators, OBL offers a structured methodology to plan lessons, deliver content, and assess understanding in a manner that is consistent, fair, and oriented toward student growth.

Moreover, Outcome-Based Learning plays a crucial role in fostering essential 21st-century skills such as critical thinking, problem-solving, collaboration, creativity, and communication. These competencies are increasingly valued by employers and are essential for navigating the complexities of modern life. Through OBL, students are encouraged to engage in experiential learning, group projects, real-life simulations, and reflective practices that deepen their understanding and enhance their capacity to apply knowledge in varied contexts. This outcome-driven approach nurtures not only intellectual growth but also emotional intelligence, ethical reasoning, and social responsibility.

Assessment within the OBL framework is also significantly different from conventional models. Instead of relying solely on summative assessments like final exams, OBL incorporates a variety of tools such as formative assessments, rubrics, peer evaluations, project-based assessments, and portfolios. These methods provide continuous feedback and create multiple opportunities for students to demonstrate their mastery of the learning outcomes. As a result, assessment becomes a tool not just for evaluation but also for enhancing learning and guiding improvement.

However, the transition to OBL is not without its challenges. It requires a cultural shift within educational institutions, where teachers must adopt new roles as facilitators of learning rather than mere transmitters of knowledge. It also demands comprehensive planning, teacher training, curriculum alignment, and institutional support. Despite these hurdles, the benefits of Outcome-Based Learning in promoting meaningful, equitable, and effective education are substantial.

This article delves into the multifaceted role of Outcome-Based Learning in student development. It explores how OBL contributes to academic success, skill enhancement, personal growth, and employability. It also examines the strategies used to assess success in an OBL framework and the implications for policy, pedagogy, and educational reform. By focusing on outcomes, we can redefine success in education—making it not just about passing exams, but about preparing students to thrive in an increasingly complex and competitive world.

Main Part

Outcome-Based Learning (OBL) is a transformative educational approach that centers around the achievement of clearly defined learning outcomes. Unlike traditional education models, which often prioritize teaching methods and content coverage, OBL shifts the focus to what students are expected to achieve by the end of a course or program. This learner-centered approach emphasizes not only academic success but also the development of practical skills, critical thinking, and attitudes necessary for lifelong learning and professional competence. In this framework, assessing success becomes more meaningful and multidimensional, reflecting the broader scope of student development.

1. Understanding Outcome-Based Learning (OBL)

At the heart of OBL is the articulation of learning outcomes—specific, measurable statements describing what learners should know, do, or value after a learning experience. These outcomes are designed with the end goal in mind and often align with educational standards, industry expectations, and societal needs. OBL requires that the curriculum, instruction, and assessment practices be systematically aligned with these outcomes, ensuring coherence and purpose throughout the learning process.

This model recognizes that learning is not merely about absorbing information but about being able to apply knowledge in diverse and complex real-life situations. Therefore, OBL prioritizes competencies such as analytical reasoning, communication, teamwork, and ethical judgment—essential skills for thriving in the 21st-century world.

2. OBL and Student-Centered Development

OBL contributes significantly to student development by placing the learner at the center of the educational process. Students are made aware of the expected outcomes from the outset, which fosters a sense of ownership and responsibility toward their learning. They are encouraged to set goals, monitor their own progress, and reflect on their learning strategies.

This active engagement enhances motivation and helps students develop self-directed learning habits. Rather than being passive recipients of information, learners in an OBL environment become co-creators of knowledge. This shift has profound implications for personal growth, academic achievement, and career readiness.

3. Curriculum Design and Instructional Alignment

One of the key components of OBL is backward curriculum design, which begins by identifying the desired learning outcomes and then planning the instructional strategies and assessments to achieve those outcomes. Teachers play the role of facilitators who guide students through activities and experiences that build the necessary skills and knowledge.

Instructional methods in OBL often include project-based learning, collaborative tasks, real-world simulations, and interdisciplinary approaches. These methods ensure that students not only understand theoretical concepts but also apply them in meaningful contexts. Such experiential learning opportunities are crucial for deep understanding and long-term retention.

4. Assessment as a Tool for Success Measurement

Assessment in the OBL model is not limited to high-stakes examinations or summative tests. Instead, it incorporates a variety of tools and techniques to evaluate student progress continuously and comprehensively. Formative assessments—such as quizzes, reflective journals, presentations, peer assessments, and portfolios—are used to provide ongoing feedback that guides learning and improvement.

Rubrics are frequently employed to assess the quality of student work in relation to the defined outcomes. These rubrics offer transparency and clarity, allowing both students and teachers to understand what constitutes successful performance. This kind of structured feedback system helps students refine their skills and gain confidence in their abilities.

Moreover, OBL assessments focus on higher-order thinking skills—analysis, synthesis, and evaluation—rather than mere factual recall. This prepares students to tackle complex problems and make informed decisions in academic and real-world scenarios.

5. Developing Holistic Competencies

OBL supports the holistic development of learners, encompassing cognitive, emotional, social, and ethical dimensions. In an outcome-driven framework, success is not measured solely by academic scores but also by the ability to demonstrate responsible behavior, effective communication, creativity, and leadership.

For instance, group projects and community engagement activities integrated into the curriculum help students cultivate teamwork, empathy, and a sense of social responsibility. Similarly, reflective practices such as self-assessments and learning portfolios encourage students to evaluate their own growth and identify areas for improvement. These experiences foster emotional intelligence and resilience, which are essential for personal and professional success.

6. Enhancing Employability and Career Readiness

One of the significant advantages of OBL is its alignment with industry needs and career competencies. Educational institutions increasingly face the challenge of bridging the gap between academic qualifications and workplace expectations. OBL addresses this challenge by designing learning outcomes that reflect real-world job roles and skills.

Employers today seek graduates who are not only knowledgeable but also adaptable, collaborative, and capable of lifelong learning. OBL prepares students for this reality by emphasizing skills such as problem-solving, digital literacy, adaptability, and ethical decision-making. As a result, students are

better equipped to transition from the classroom to the professional world with confidence and competence.

7. Challenges in Implementation

While the benefits of OBL are substantial, its effective implementation poses several challenges. First, it requires a cultural shift in how educators, administrators, and students view teaching and learning. Many teachers are accustomed to traditional lecture-based models and may need professional development to adapt to the OBL framework.

Second, designing meaningful learning outcomes and aligning them with instruction and assessment can be complex and time-consuming. It demands collaboration among faculty, curriculum designers, and industry experts. Additionally, robust institutional support and policy frameworks are essential to sustain the transition to OBL.

Another challenge lies in ensuring consistency and objectivity in outcome-based assessments, especially when dealing with qualitative skills and behaviors. Training educators in the use of rubrics and performance-based evaluation tools is crucial for maintaining reliability and fairness in assessment.

8. Global Trends and Policy Support

Globally, many educational systems and accreditation bodies have embraced OBL as a strategy to improve learning quality and accountability. Countries such as the United States, Australia, the United Kingdom, and India have integrated outcome-based frameworks in higher education, particularly in engineering, healthcare, and teacher education programs.

National education policies and quality assurance agencies are increasingly requiring institutions to define program learning outcomes, implement outcome-based curricula, and report on student achievement data. These developments indicate a growing recognition of OBL as a means to ensure quality education and to produce graduates who are prepared to meet global challenges.

Conclusion -

Outcome-Based Learning (OBL) presents a meaningful shift in education by focusing on what learners achieve rather than what is merely taught. By emphasizing clearly defined outcomes, active learning, and continuous assessment, OBL empowers students to take ownership of their education, fostering critical thinking, practical skills, and personal growth. It prepares learners not just for academic success but for real-life challenges, promoting holistic development and lifelong learning.

The success of OBL lies in its ability to make education purposeful and relevant. When implemented effectively, it bridges the gap between academic knowledge and practical application, enhancing both employability and personal fulfillment. However, its true potential can only be realized through collaborative efforts, institutional support, and ongoing adaptation by educators. In an increasingly complex world, assessing success through OBL ensures that education remains dynamic, inclusive, and truly centered on the development of capable, reflective, and responsible individuals.

References

1. Biggs, J., & Tang, C. (2011). Teaching for Quality Learning at University (4th ed.). McGraw-Hill Education.

– Discusses constructive alignment and outcome-based education in higher education.

2. Spady, W. G. (1994). Outcome-Based Education: Critical Issues and Answers. American Association of School Administrators.

– Foundational text introducing and explaining the principles of OBE.

3. Harden, R. M. (2007). Outcome-based education: the future is today. Medical Teacher, 29(7), 625–629. https://doi.org/10.1080/01421590701729930

– Highlights the shift from input-based to outcome-based learning in professional education.

Emerging Trends in Education (शिक्षा में उभरते रूझान)

डॉ0 प्रतिभा राय
सहायक प्राध्यापिका

हमारे दैनिक जीवन में अनेक बदलाव आते है, इसी प्रकार हमारे जीवन के दूसरे क्षेत्रों में भी बदलाव देखने को मिलते है। शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत से बदलाव देखने को मिलते है, जो एक रूझान को दर्शाता है, जिस प्रकार से इंसानों का Technology पर निर्भरता बढ़ी है तथा आधुनिक समय में इंटरनेट का उपयोग बढ़ा है, परिणामस्वरूप शिक्षा में भी टेक्नोलॉजी व इंटरनेट का अधिक से अधिक उपयोग हो रहा है। हमारे पाठयचर्या में डिजिटल शिक्षा पर बल दिया जा रहा है, शिक्षा में उपदेशात्मक अथवा निगमनात्मक शिक्षण जो कि शिक्षक केन्द्रित शिक्षण होते है। जहॉ शिक्षक छात्रों को नियम प्रदान करते है तत्पश्चात छात्र अभ्यास करते है जिससे शिक्षा गतिविधि केन्द्रित हो जाती है। इसी प्रकार सहयोगात्मक अधिगम **(Collaborative Learning)**, खेल **(Gaming)** अथवा खेल आधारित शिक्षा, सिमुलेश्म **(Simulation)** इत्यादि के रूप में भी शिक्षा प्रदान की जाती है। यह शिक्षा में उभरते रूझान को दर्शाता है।

शिक्षा के उभरते रूझान के अन्तर्गत शिक्षा को रचनात्मक वातावरण में प्रदान किए जाने पर बल दिया गया है। जहॉ ज्ञान अर्जन तथा अधिगम साथ–साथ होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति **(NEP) 2020** में एक साथ दूसरे विषयों को पढ़ने (मल्टीडिसिप्लिनरी) के पाठयक्रम, शिक्षा को रोजगार से जोड़ने अथवा व्यवसायिक कौशल जैसी बाते कही गई है, जो वर्तमान में शिक्षा के उभरते रूझान को दर्शाता है।

आधुनिक समय में शिक्षा में उभरते रूझान के अन्तर्गत जीवन प्रयत्न शिक्षा **(Life long Education)**, सतत् विकास के लिए ओपने एवं डिस्टेंस लनिंग **(ODL)** समावेशी शिक्षा, सहयोगात्मक अधिगम, (AI) अथवा कृत्रिम बुद्धिमता आधारित शिक्षा, शिक्षा में महिला सशक्तिकरण, वर्ग कक्ष के बाहर शिक्षा, सोशल मिडिया आधारित अधिगम, शिक्षा में **Automation** तथा **Data Management** शिक्षा में खेल, डिजिटल शिक्षा तथा ऑनलाईन शिक्षण पोर्टल, इत्यादि शामिल है जिन में कुछ का वर्णन निम्न है :–

- ✓ **Collaborative Learning (सहयोगात्मक अधिगम)** – शिक्षा में सहयोगात्मक अधिगम की महत्वपूर्ण भूमिका है, जब छात्र एक समूह में किसी प्रोजेक्ट को करते है अथवा समस्या समाधान करते है, यह छात्रों में सहयोग कौशल को विकसित करता है, छात्रों का एक साथ काम करना उन के समझने के कौशल तथा सामूहिकता का बोध कराता है। पहले जहॉ तक शिक्षक 30–40 मिनट वर्ग कक्ष में चर्चा करते थे तथा घण्टी लगते ही कक्षा खाली कर देते थे लेकिन आज डिजिटल समय में तकनीक **(Technology)** ने शिक्षक तथा छात्र के बीच दूरी को कम कर दिया है।
- ✓ **Learning Outside the Classroom Environment (वर्ग कक्ष के बारह शिक्षा)** – शिक्षा में बहुत से तकनीकी रूझान भी है, मोबाईल आधारित डिवाईस ने अधिगम को वर्ग कक्ष के बाहर भी सम्भव किया है। मोबाइल अधिगम **(M-Learning)** और इंटरनेट अधिगम **(E-Learning)** छात्रों में पसंद किए जाते है। छात्र अपने स्थान (घर) पर ही अपने समय से अधिगम कर सकते है।
- ✓ **Social Media In learning (सोशल मीडिया आधारित शिक्षा)** – हर दिन शिक्षा के रूझान में परिवर्तन देखने को मिलते है, वर्तमान समय में हमारे समाज में छात्र भी सोशल मीडिया में अपने प्रोफाईल बना रहे है, इससे शैक्षिक संस्थान भी सोशल मीडिया का उपयोग संचार के माध्यम के रूप में उपयोग करना शुरू कर दिया है। जहॉ छात्र अपने साथियों/सहपाठी तथा शिक्षको से संवाद स्थापित कर सकते है। वर्ग कक्ष में **Technology** आ जाने के कारण वर्ग कक्ष में संवाद स्थापित होने लगे है। जैसे **E-Book** आ जाने से विडियों तथा ऑडियों द्वारा अधिक संवाद सम्भव हो पाया है।
- ✓ **शिक्षा में (Autrmatim) आटोमेशन तथा डाटा मैनेजमेन्ट (Data managment)** – शिक्षा में आटोमेशन तथा डाटामैनेजमेन्ट के कारण छात्र का अब ऑनलाईन माध्यम से मूल्यांकन किया जाना संभव हो पाया है, आटोमेशन की सहायता से गृह कार्य दिया जा सकता है।

✓ **Game (शिक्षा में खेल)** – खेल मानवीय संस्कृति का अभिन्न अंग है, खेल एक ऐसा माध्यम है जो बच्चों को अवसर प्रदान करता है यह समस्या समाधान कौशल के लिए लाभदायक है। खेल संवाद स्थापित करने (बात–चीत करना सीखना), सहभागिता बढ़ाने तथा रचनात्मकता विकसित करने का भी कार्य करता है। खेल का उपयोग वर्ग कक्ष में भी संभव हो पाया है जैसे **Leader Boards** (लीडर बोर्ड), **Reward Points, Stickers** इत्यादि, खेल की सहायता से सहभागिता, संलिप्तता तथा प्रतियोगिता आती है, खेल नैतिकता भी लाती है।

✓ डिजिटल शिक्षा तथा राष्ट्रीय ऑनलाईन शिक्षण पोर्टल – पिछले कुछ वर्षों में भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय तथा **UGC** की सहायता से कुछ पहल की है, जिससे छात्रों, शोधकर्त्ता तथा शिक्षकों के लिए अब बहुत से ऑनलाईन प्लेटफॉर्म उपलब्ध हो पाए है। जहाँ वह एक दूसरे से संवाद स्थापित कर सकते है, भारत सरकार द्वारा कुछ महत्वपूर्ण E-learning प्लेटफॉर्म भी प्रदान किए गए है जिसमें **Swayam (Study wels of Active Learning for Young Aspiring Minds) (2017)** मुख्य है। यहाँ मुफ्त में शिक्षण सामग्री, लेक्चर **(Lecture)**, आदि उपलब्ध है, यहाँ लगभग 1600 कोर्सेस है। बाद में **MOOCs** को विकसित किया गया यहाँ विडियों तथा लिखित दस्तावेज **(Text)** उपलब्ध है।

DIKSHA भी एक **E-Learning** पोर्टल है जो तात्कालीन **MHRD** द्वारा **NCTE** की सहायता से 5 September 2027 को लाया गया था, वर्तमान में यह **NCERT, CBSE** तथा SCERT जैसे विभिनन पाठ्यचर्चा की सहायता करती है।

इसी प्रकार **EPG Pathshala** (ईपीजी पाठशाला) भी एक ऑनलाईन पोर्टल है जो पोस्ट ग्रेजुएट **(PG)** के छात्रों के लिए है। **SWAYAM Prabha** भी **MHRD** द्वारा विकसित **DTH** उच्च गुणवत्ता वाला शैक्षिक चैनल है।

भारत सरकार द्वारा 2018 में एक डिजीटल पुस्तकालय **NDLI (National Digital Library of India)** लाया गया यहाँ पाठशाला, संदर्भ पुस्तक, ऑडियो, विडियो, लेक्चर तथा जर्नल इत्यादि उपलब्ध है।

आधुनिक समय में शिक्षा के डिजिटल माध्यम ने शिक्षा के पारंपरिक माध्यम की जगह ले ली है। इसी तरह छात्र **Simulation** द्वारा काल्पनिक वातावरण में वास्तविक परिस्थिति में शैक्षिक अनुभव प्राप्त करते है। साथ–ही–साथ छात्र शिक्षण प्रक्रिया में भाग ले पाते है। यह शिक्षा के उभरते रूझान को दर्शाता है।

Reference:-

1. www.fren tier in.org
2. https://egyankosh.as.in
3. kitaboo.com
4. Blog.teachmint.com
5. Saha N, Khare PS, "Emerging Trends and Research in Education Technology," ABS Books Delhi.

2047 का भारत और युवाशक्ति : हम करें राष्ट्र आराधन

डॉ• अमित कुमार पाण्डेय
सहायक आचार्य,

सारांश–

एक सामान्य युवा पुरुष व्यक्तिवादी, कल्पनाशील होता हैं। वह केवल मार्गदर्शन चाहता है, जिससे उसकाउत्साह एवं जोश नियंत्रित हो सके। युवाओं को अपना रोष अभिव्यक्त करना सीखना चाहिये। यदि एक व्यक्ति रोष को दबाता है तो उसे एक निकास खोजना पड़ता है, जिससे उसके मन के गुब्बार को निकालने का अवसर मिल सके। आज जनमानस भड़ासअपने व्यूवर्स से अपील कर रहा है कि अपने युवाओं के भावात्मक तनाव को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से मुक्त करने के लिए प्रोत्साहित करे, लेकिन यह भी सच है कि युवा समस्याओं का समाधान युवाओं को साथ लिए बिना नहीं हो सकता हैं। इसलिए अभिभावकों, प्राध्यापकों एवं प्रशासकों को युवाओं का सहयोग प्राप्त करना पड़ेगा। समाज के विभिन्न वर्गों के युवाओं की समस्याओं को समझने एवं उन्हें तर्कसंगत दिशा निर्देश देने में सहयोग करना चाहिए। अब समय आ गया है कि इस विशाल युवाशक्ति को सामाजिक अन्याय को समाप्त करने तथा विकास एवं राष्ट्रीय सामूहिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लगाया जाये, दमन एवं टकराव के वातावरण के स्थान पर आशा विश्वास एवं आस्था के वातावरण की आवश्यकता को समझना चाहिए और युवाओं को संगठित करने को पहल करनी चाहिये।

आज किसी भी देश के लिए जनसंख्या का अधिक होना और उसमें भी युवा जनसंख्या की भागीदारी ज्यादा होना, उस देश विशेष के लिए बहुत लाभकारी स्थिति बन जाती है। वह भी तब, जब विशेष रूप से कई विकसित देशों यथा जापान, जर्मनी, अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, चीन, कनाडा आदि में जन्म दर बहुत कम हो चुकी हो एवं इन देशों में प्रौढ़ नागरिकों की जनसंख्या तेजी से बढ़ती जा रही हो एवं युवा जनसंख्या का अभाव महसूस किया जा रहा हो। इस प्रकार भारत युवा जनसंख्या की दृष्टि से बहुत ही लाभप्रद स्थिति में आ गया है। भारत की कुल 140 करोड़ जनसंख्या में से 50 प्रतिशत जनसंख्या की आयु 25 वर्ष से कम है और 65 प्रतिशत जनसंख्या की आयु 35 वर्ष से कम है। सबसे अधिक युवा, अर्थात 18–35 वर्ष के आयु वर्ग में 60 करोड़ भारतीय नागरिक आते हैं। प्रत्येक भारतीय की औसत आयु मात्र 29 वर्ष है जबकि चीन के नागरिकों की औसत आयु 37 वर्ष एवं जापान के नागरिकों की औसत आयु 48 वर्ष है। इसीलिए भारत को एक युवा देश कहा जा रहा है और पूरे विश्व की निगाहें आज भारत पर टिकी हुई हैं। अब तो यह स्थिति दिखाई देने लगी है कि यदि भारत आर्थिक प्रगति करेगा तो पूरा विश्व ही आर्थिक प्रगति करता हुआ दिखाई देगा, क्योंकि आगे आने वाले समय में भारत में विभिन्न उत्पादों का उपभोग तेजी से बढ़ता हुआ नजर आएगा।

बीज शब्द– युवा, साक्षरता, साक्षरता, राष्ट्र एव युवाओं की समस्याऐं।

प्रस्तावना–

आज भारत में साक्षरता दर 80 प्रतिशत के आसपास पहुंच गई है, जो कि एक बहुत अच्छी दर कही जा सकती है। हालांकि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं में शिक्षा का स्तर अलग अलग दिखाई देता है। इसलिए, भारत के युवाओं में कौशल के अभाव में भारत के आर्थिक विकास में इनका योगदान संतोषप्रद स्तर तक नहीं हो पा रहा है, कौशल के अभाव में इस वर्ग की उत्पादकता भी तुलनात्मक रूप से कम दिखाई देती है। भारत के युवाओं में शिक्षा के स्तर को और अधिक सुधारने के लिए अभी हाल ही के समय में भारत में कई नए शिक्षण संस्थान स्थापित किए गए हैं। जैसे 150 नए विश्वविद्यालय (वर्तमान में कुल 1070 विश्वविद्यालय कार्यरत) एवं 1570 नए महाविद्यालय (वर्तमान में कुल 43000 महाविद्यालय कार्यरत) स्थापित किए गए हैं। साथ ही, 7 नए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (वर्तमान में कुल 23 भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कार्यरत) एवं 7 नए भारतीय प्रबंध संस्थान (वर्तमान में कुल 20 भारतीय प्रबंध संस्थान कार्यरत) स्थापित किए जाने की स्वीकृति प्रदान की गई है। इसी प्रकार, देश के प्रत्येक जिले में कम से कम एक मेडिकल कॉलेज की स्थापना भी की जा

रही है, वर्तमान में भारत में 650 मेडिकल कॉलेज स्थापित किए जा चुके हैं। इस प्रकार के प्रयासों से देश के युवाओं में न केवल शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है बल्कि उनका कौशल भी विकसित हो रहा है। अब तो भारत में शिक्षित युवा कई विकसित देशों में पहुंचकर वहां के प्रौद्योगिकी, मेडिकल एवं प्रबंध के क्षेत्र में कई निजी संस्थानों में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं एवं इन देशों के कई निजी संस्थानों को तो एक तरह से भारतीय ही चला रहे हैं।

युवा शक्ति की वर्तमान दुर्दशा का कारण बहुत कुछ अपनी स्वतंत्रता काल की दोषपूर्ण नीतियों में खोजा था सकता है। आजादी के बाद विकसित देशों के साथ अंधी दौड़ में हमने युवा पीढ़ी के चरित्र निर्माण की आवश्यकता की पूरी तरह अनदेखी की और उपभोक्तावाद के हामी व आधुनिकता के प्रहरी बनने के लालच में उन्हें मानसिक स्तर पर अपसंस्कृति के दुष्प्रभावों एवं इसकी सुलगती हिंसा के सहारे छोड़ दिया। इससे उपजी हताशा ही युवाओं में कभी तोड़ फोड़, हिंसा, बलात्कार, अपहरण और अतिवाद के रूप में, तो कभी भ्रष्टाचार और घोटालों के रूप में हमारे सामने खुला ताँडव करती दिखाई देती है।

उपभोक्तावादी संस्कृति में पली युवा पीढ़ी तात्कालिकता में जीने में विश्वास करती है और भविष्य के प्रति बेखबर है। वह इंतजार करना नहीं चाहती, इसी क्षण सब कुछ पाना चाहती है। इंस्टेंट कॉफी और इंस्टेंट फूड की तरह सुख समृद्धि, धनदौलत, प्यार मोहब्बत सब इंस्टेंट पाना चाहती है। परिणामस्वरूप पतन की खाई में गिरने वालों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। कम से कम नगरीय युवक जो समाजशास्त्रियों के विचार एवं चिंता की परिधि में आते हैं, उनमें तो यह प्रवृत्ति साफ साफ दिख रही है। महानगरीय युवकों में बड़ी तेजी से हिंसा, मूल्यहीनता, आत्मकेंद्रिकता, कुँठा और कल्पनाहीनता बढ़ रही है और उनकी जीवन की समझ बहुत उथली एवं विकृत होती चली गई है।

भगत सिंह ने कभी कहा था, "युवाओं में इतना प्यार होता है कि वह तो पेड़ पौधों, नदी पहाड़ों, झरनों और जंगल तक के इश्क में डूबे रहते हैं।" किंतु आज के दौर में सचाई दूसरी ही है। आज उनके प्रेम की यह उदात्त परिभाषा दैहिक सुख एवं वासना की परिधि में सिमटकर कलुषित हो चुकी है। वह 'वर्चुअल रिएल्टी' पर यकीन रखता है। सब कुछ हकीकत में पाना चाहता है। आधुनिक विज्ञान विशेषज्ञों ने उनके मत को पुष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। जहाँ पूर्व में फ्रायड के आधे अधूरे सिद्धाँत यौन उन्मुक्तता को पुष्ट करते थे, वहीं अमेरिकी रसायनज्ञ एवं एवं मनोशास्त्रीगणों ने कुछ वर्ष पूर्व ही अपनी पुस्तक 'द केमेस्ट्री ऑफ लव' में अपने आधे अधूरे निष्कर्षों से प्रेम की उदात्त भाव की जड़ों पर कुठाराघात किया है। उनके अनुसार प्रेम कोई अहसास जैसी चीज नहीं हैं, जैसा कि सदियों से कवियों एवं दार्शनिकों ने उसे प्रतिपादित किया है। लेबोनिट्ज ने साफ साफ कहा है कि शरीर में विद्यमान एस्ट्रोजन और एंड्रोजन की कुछ निश्चित रासायनिक संक्रियाओं का परिणाम ही प्रेम या रुमानी अहसास जैसी चीज है। वस्तुतः इस विचारधारा में पल बढ़ रही युवा पीढ़ी के लिए प्रेम जैसा पवित्र भाव दैहिक खिलवाड़, यौन उन्मुक्तता एवं स्वच्छंदता का पर्याय बन गया है।

उपभोक्ता संस्कृति के इन हमलों ने युवा पीढ़ी को आदर्शों एवं उच्च्य उद्देश्य के प्रति पंगु बना दिया है। यह मोहपाश इस कदर कसा जा रहा है कि उसे धन एवं भोग के अतिरिक्त ओर कुछ सूझ नहीं रहा है। संयम, सदाचार, त्याग, सेवा, नीति, मर्यादा आदि की बातें दकियानूसी मानी जाती है। तथाकथित विकास के अंतर्गत एक स्वप्नहीन अराजक पीढ़ी बहुत तेजी से बढ़ रही है। जब हर्षद मेहता को करोड़ों की धोखाधड़ी के जुर्म में गिरफ्तार किया गया था और पूरा मीडिया हर्षदमय हो गया था, उस दौरान भारत के चार महानगरों में युवाओं के बीच सर्वेक्षण हुआ था कि उनके पंसदीदा नायक कौन है और स्वयं क्या बनना चाहते हैं। इस सर्वेक्षण के नतीजों ने संवेदनशील समाजशास्त्रियों को झकझोर कर रख दिया। 60 प्रतिशत से अधिक युवकों की संख्या ऐसी थी, जो हर्षद मेहता जैसा बनना चाहते थे। इन युवकों का पसंदीदा नायक हर्षद मेहता था 72 प्रतिशत युवक इससे बेपरवाह थे कि हर्षद ने आखिर क्या किया और उसने जो किया वह देश के अहित में है। इन सर्वेक्षण परिणामों का स्पष्ट निष्कर्ष था कि पैसा और कामयाबी हासिल करने के लिए कुछ भी काय जा सके, बिना किसी हिचक और अपराधबोध के करना चाहिए।

एक समय था जब हाई स्कूल और कॉलेज में प्रवेश करने वाली युवा पीढ़ी सोचती थी कि हम गोखले बनेंगे, तिलक बनेंगे, स्वामी विवेकानंद, गाँधी, जवाहरलाल, सरदार पटेल, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद बनेंगे, लड़कियाँ सोचती थीं कि हम भगिनी निवेदिता, सरोजनी नायडू, कमला देवी चट्टोपाध्याय, अरुणा आसफ अली, हंसा मेहता बनेंगी। आय ये आदर्श एवं सपने धूमिल पड़ गए हैं। आज युवा पीढ़ी के पास सिर्फ फिल्म स्टार या टी.वी. स्टार बनने का सपना है। फिल्मों और टी.वी. की मायावी दुनिया ने उनके सामने एक छद्म स्वर्ग में सभी समस्याओं के इंस्टेंट समाधान मौजूद हैं। बात ही बात में सभी समस्याएँ हल हो जाती हैं। फिल्मी हीरो माफिया गिरोह का अकेले ही सफाया कर सकता है। अदना सी नौकरी के लिए भटकने वाला युवक अचानक किसी जादुई चमत्कार से करोड़ पति हो जाता हैं। एक ईमानदार दिखने वाला फिल्मी अभिनेता भ्रष्ट व्यवस्था को बदल देता है। सचाई से कोसों दूर ये चित्र और बिंब चूँकि हमें इंस्टेंट तृप्ति देते हैं, युवा इन्हीं में खो जाते हैं और भविष्य के प्रति अपनी आँखें बंद कर लेते हैं। 'कौन बनेगा करोड़पति' जैसे धारावाहिक आज की यूवा पीढ़ी को अधिक आकर्षित करते दिखाई देते हैं।

अपनी गहनतम इच्छा, प्रकृति एवं आत्मा के स्वभाव के विपरीत कठपुतली की तरह का यह व्यवहार युवाओं की दिशाधारा पर गंभीर प्रश्न लगा देता है। अपनी इच्छा, अपना संकल्प और अपना ज्ञान, जो मनुष्य जीवन के लक्षण हैं, आज युवा पीढ़ी ही नहीं, प्रौढ़ों और बूढ़ों की पीढ़ी में भी गायब होते जा रहे हैं। साँस्कृतिक और आर्थिक गुलामी में जकड़े देश की यही नियति हो सकती है। लेकिन प्रौढ़ों और बूढ़ों में इनका गायब होना इतना कष्टदायक नहीं है, जितना युवा पीढ़ी में इनका गायब होना। जिनके सामने भविष्य खुला पड़ा है, उनका भविष्य के प्रति उदासीन हो जाना बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है, यह वैसे ही है, जैसे कि हँसते□खेलते, उछलते, कूदते बच्चे को अचानक लकवा मार जाए। नौजवान जो अपने स्वभाव से, प्रकृति से स्वतंत्र इच्छा, अदम्य संकल्प और अनंत जिज्ञासा लिए होता है, यदि अपनी इच्छाशक्ति और संकल्पशक्ति को किसी केस सामने गिरवी रख दे, जो आने वाला है, उसके संबंध में जिज्ञासा करना बंद कर दे और जो उस पर थोपा जा रहा है, उसका विरोध भी न करे, तो यही कहा जाएगा कि जवानी को लकवा मार गया है।

युवा शक्ति उस उद्दाम ऊर्जा का नाम है, जिसने हर युग में व्यवस्था की जड़ता के इन क्षणों में अपनी आवाज के बुलंद किया है। इतिहास के हर मोड़ पर इस वर्ग ने, परिवर्तन के हर चौराहे□चौराहे पर कफ़न बाँधकर दमन और दुर्व्यवस्था का मुकाबला किया है। 1779 की फ्राँस की राज्यक्राँति को भले ही मध्यम वर्ग अथवा बुर्जुआ क्राँति के नाम से जाना जाता है, किंतु उसका असली वाहक वहाँ का नवयुवक ही था। रूस की बोल्शेविक क्राँति के वाहकों में 80 प्रतिशत लोग 18 से 34 वर्ष की आयु के थे। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के गहन तमस के विरुद्ध स्वाधीनता संग्राम के आँदोलन की संपूर्ण ज्योति युवा शक्ति की अदम्य ऊर्जा की आभा से उद्दीप्त थी। 1905 के बंग□भंग से लेकर 1942 के भारत छोड़ो आँदोलन व 1947 की आजादी तक, सभी महत्त्वपूर्ण दौर में युवा शक्ति अग्रिम पंक्ति पर रही। तिलक युग से लेकर गाँधी युग तक इस समुदाय ने सदैव ही बलिदानी एवं क्राँतिकारी परंपरा में अग्रणी भूमिका निभाई। भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु सभी युवा थे। ऐतिहासिक समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखा जाए, तो 20वीं सदी के आरंभिक 50 वर्षों में छात्र आँदोलनों ने भारतीय जनमानस की वैचारिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में निर्णायक योगदान दिया और 1947 में देश के आजाद होने तक इनकी अपनी युगाँतरकारी भूमिका रही।

स्वतंत्रता के पश्चात् युवा शक्ति में बिखराव आया और राष्ट्रीय स्तर पर उसकी रचनात्मक भूमिका धूमिलप्राय रही। 80 के दशक के प्रारंभिक काल में लोकनायक जयप्रकाश के नेतृत्व में इसकी एक आशाजनक झलक मिली थी, किंतु कालक्रम में राजनीति के घातक दंश ने इसे भी पंगु बना दिया। आज राजनीति युवा शक्ति को अपने कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त कर रही है। विभिन्न छात्र संघ, राजनीतिक दलों के विस्तार□विभाग बनकर रह गए है। राजनीति के चक्रव्यूह में उलझी छात्र शक्ति से सृजन की उन्मुक्त भूमिका की आशा नहीं की जा सकती।

आज के युवाओं की समस्याएं, कारण और उनके समाधान–

आज की युवा पीढ़ी को कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, जिनमें सबसे बड़ी समस्या रोजगार के विकल्पों की कमी है।

1. बेरोजगारीः स्वास्थ्य एवं शिक्षा के गैर–लाभकारी संगठन सेंट्रल वाईएमसीए ने यह सूची तैयार की, जिसमें 16 से 25 वर्ष की आयु के 1,600 किशोरों का साक्षात्कार लिया गया। संगठन ने उनसे वर्तमान में उनके सामने आने वाली कठिनाइयों का मूल्यांकन करने के लिए कहा, और सर्वेक्षण में शामिल अधिकांश लोगों ने महसूस किया कि समाज में एक संतोषजनक भूमिका पाने में असमर्थता – चाहे वह पारंपरिक शैक्षिक प्रणाली के माध्यम से हो या नौकरी के माध्यम से – उनकी सबसे बड़ी कठिनाई थी।

कारणः उच्च जनसंख्या वृद्धि.राजनीतिक अस्थिरता.कानून और व्यवस्था की खराब स्थिति. उद्योगों का धीमा विकास.आर्थिक प्रगति की अपर्याप्त दर.सेवानिवृत्ति की उच्च आयु.

2. शिक्षाः शिक्षा एक सर्वोच्च प्राथमिकता, एक मौलिक मानव अधिकार और एक समकालीन आवश्यकता है।दुनिया भर में सभी स्तरों पर शिक्षा में बदलाव लाने के प्रयास जारी हैं, फिर भी युवाओं के विभिन्न समूहों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक असमान पहुंच प्राप्त है।शिक्षा पर विश्व असमानता डेटाबेस का अभी भी अनुमान है कि दुनिया भर में 25ः से अधिक बच्चे कभी प्राथमिक विद्यालय नहीं गए हैं। अतिरिक्त कक्षाओं में दाखिला लेने या निबंध सहायता प्राप्त करने का मौका तो दूर की बात है, जिसकी हर छात्र को स्कूल में अपने समय के दौरान किसी न किसी समय आवश्यकता होती है।

कारणः आर्थिक असमानताएँ. अप्रशिक्षित शिक्षक.सरकार की रुचि का अभाव,राजनीतिक प्रभाव.नीतियों में असंगतता.शिक्षा की गुणवत्ता में अंतर.कम निधि आबंटन.गरीबी।

3. शारीरिक छविः खराब शारीरिक छवि आमतौर पर लड़कियों से संबंधित होती है, लेकिन लड़कों को भी प्रभावित कर सकती है। उन्हें लग सकता है कि वे पर्याप्त लंबे नहीं हैं, उनके पेट या मांसपेशियाँ पर्याप्त नहीं हैं, या दोनों। एक अध्ययन के अनुसार, अधिक वजन वाली लड़कियाँ कम वजन वाले लड़कों की तुलना में अवसाद का अनुभव करने के लिए अधिक संवेदनशील होती हैं।हालिया आंकड़े बताते हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका में मोटे बच्चों और किशोरों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

कारणः इसका मुख्य कारण यह है कि वे व्यायाम करने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की अपेक्षा टीवी देखने या कंप्यूटर पर अधिक समय बिताते हैं।मुद्दा यह है कि एक "परफेक्ट" बॉडी मौजूद नहीं है, खासकर जिस तरह से इसे दर्शाया जाता है। मॉडल के लुक और बॉडी शेप को कभी–कभी फोटो में बढ़ा दिया जाता है या दुबला बना दिया जाता है। इसलिए, "आदर्श" बॉडी के लिए प्रयास करने से केवल निराशा ही हो सकती है – इससे आत्म–सम्मान कम होता है, जो जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

4. पारिवारिक समस्याएंः हर परिवार अनोखा होता है, और पारिवारिक जीवन के उतार–चढ़ाव बच्चों और युवा वयस्कों पर महत्वपूर्ण रूप से प्रभाव डालते हैं। बच्चों को अपने माता–पिता और परिवार के अन्य सदस्यों से प्यार और समर्थन की भावनाएँ उन्हें परिपक्व होने और आगे बढ़ने का साहस देंगी। हालाँकि, कई परिवारों को कठिन दौर का सामना करना पड़ता है, और कुछ बच्चों और किशोरों को अपने माता–पिता या भाई–बहनों के साथ तालमेल बिठाने में मुश्किल हो सकती है। ज़्यादातर माता–पिता अपने बच्चों पर पढ़ाई के हर क्षेत्र में अच्छा करने का दबाव डालते हैं। वे चाहते हैं कि वे काबिल छात्र बनें।बच्चे चिंता का अनुभव करते हैं और अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते। उच्च ग्रेड की चाह ही एकमात्र प्रतिस्पर्धा है।

कारणः पारिवारिक समस्याएँ कई कारणों से हो सकती हैं, जिनमें शामिल हैं:विभिन्न व्यक्तित्वों में टकराव होता है तथा कार्य करने के तरीकों को लेकर उनमें असहमति होती है। भाई–बहनों के बीच ईर्ष्या या लड़ाई.माता–पिता बहस कर रहे हैं। तलाक या अलगाव.नए सौतेले माता–पिता या सौतेले भाई–बहन. माता–पिता या रिश्तेदार को मानसिक स्वास्थ्य समस्या,

विकलांगता या बीमारी हो.माता–पिता या रिश्तेदार को शराब या नशीली दवाओं की समस्या हो.बेरोज़गारी, धन या आवास संबंधी समस्याओं के कारण तनाव.घरेलू हिंसा.सांस्कृतिक या पीढ़ीगत अंतर.दुःख के प्रभाव.दुर्व्यवहार या उपेक्षा.

5. भौतिकवादः युवाओं को सिखाया जाता है कि वे जीवन में अपनी सफलता और खुशी का स्तर इस बात पर निर्भर करें कि उनके पास कितनी वस्तुएं हैं, क्योंकि हमारी संस्कृति सक्रिय रूप से भौतिकवाद को बढ़ावा देती है।जीवन के प्रति सांसारिक दृष्टिकोण किसी व्यक्ति को दुखी कर सकता है, यदि उसके पास पर्याप्त चीजों का अभाव है, तथा यह उसके जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

6. सोशल मीडियाः मीडिया सीधे युवाओं को प्रभावित करता है। इसके कुछ फायदे हैं, जिसमें यह तथ्य भी शामिल है कि हम इससे अपनी पढ़ाई के बारे में कुछ भी सीख सकते हैं। इसके अलावा, हम इसका उपयोग अपने से दूर किसी व्यक्ति से संवाद करने के लिए भी कर सकते हैं। लेकिन आजकल, अधिकांश लोग इसका दुरुपयोग करते हैं। और इसका युवाओं पर बहुत हानिकारक प्रभाव पड़ता है। मीडिया का अत्यधिक उपयोग स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव डाल सकता है।

7. अपसारी अर्थव्यवस्थाः आज के समाज में, खुले बाज़ार और वैश्वीकरण के कारण नौकरियाँ खत्म हो रही हैं और काम कम खर्चीले देशों को आउटसोर्स किया जा रहा है। इसका नतीजा यह है कि युवाओं को रोज़गार पाने में कठिनाई हो रही है, जिससे उनकी पहले से ही मुश्किल स्थिति और भी जटिल हो रही है।

8. राजनीतिक एवं सामाजिक मुद्देः युवाओं के लिए, जिन्हें "अच्छे" और "बुरे" समाचार स्रोतों के बीच अंतर करना तथा आज के परिवेश को समझना कठिन लगता है, दुनिया भर में क्या हो रहा है, यह समझना तथा सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर अपनी राय बनाना एक महत्वपूर्ण कार्य है।

9. समय प्रबंधनः आज के युवाओं के सामने मुख्य समस्याओं में से एक यह है कि वे जीवन के हर पहलू में उत्कृष्टता प्राप्त करने के दबाव को कैसे प्रबंधित करें, तथा साथ ही साथ यह सब करने के लिए समय भी निकाल पाएं।युवा लोगों से सफल होने की अपेक्षा की जाती है, लेकिन बहुत कम लोग समय प्रबंधन तकनीकों के बारे में जानते हैं, जैसे कि पैसे के लिए निबंध लिखने वाली सेवाओं का उपयोग करना, ताकि वे उस समय का उपयोग पढ़ाई के बजाय कार्य परियोजनाओं के लिए कर सकें। अतीत में, युवाओं के खाली समय को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता थाः घूमना, घर पर गतिविधियाँ, और संगठित गतिविधियाँ। आज बहुत से युवा समय प्रबंधन के साथ संघर्ष करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे अपना अधिकांश समय अर्थहीन कामों में बिताते हैं। नतीजतन, छात्र अपने कामों को पूरा करने में देरी करते रहते हैं। एथलेटिक्स के लिए उपलब्ध समय कम होता जा रहा है।

10. अपराध/नशीली दवाओं/शराब का दुरुपयोगः अतीत में, जब धूम्रपान करना फैशन था, तो प्रत्येक अभिनेता या अभिनेत्री के लिए स्क्रीन पर आते समय सिगरेट पकड़ना आम बात थी।आज लगभग 21ः हाई स्कूल के छात्र नशीले पदार्थों का सेवन करने की बात स्वीकार करते हैं, तथा 41ः कहते हैं कि वे शराब पीते हैं।

अवैध नशीली दवाओं का नियमित उपयोग। 25ः युवा प्रभावित हैं। नशीली दवाएं दो प्रकार की होती हैं। युवाओं में नशीली दवाओं की लत के औषधीय और अवकाश संबंधी कारण हैं, जिनमें जिज्ञासा, अवसाद, कम आत्मसम्मान, अस्वीकृति और हिंसा शामिल हैं।

कारणः स्कूल में कम उपस्थिति अपराध में योगदान देने वाला मुख्य कारक है। खराब शैक्षिक मानक.घर में हिंसा.उनके सामाजिक दायरे में हिंसा. साथियों का दबाव. सामाजिक–आर्थिक कारक.मादक द्रव्यों का सेवन.नैतिक मार्गदर्शन का अभाव.

11. बहुत तेजी से बड़ा होनाः बच्चे बचपन में ही खुश रहते थे। आज कुछ बच्चे वयस्कों की तरह ही काम करते हैं, जिसके गंभीर परिणाम छोटी उम्र में ही सामने आते हैं। बच्चे दुनिया के कई हिस्सों में अर्थव्यवस्था में काम करते हैं और अपने परिवारों की देखभाल करते हैं।युवा हमारे भविष्य के नायक हैं और उन्हें काम करने से पहले सीखना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य से, दुनिया के कई हिस्सों में बच्चे कम उम्र में ही काम करना शुरू कर देते हैं।

कारणः बच्चों को श्रम में धकेले जाने के प्रमुख कारण गरीबी और बेरोजगारी हैं।सीमित निःशुल्क स्कूली शिक्षा.पारिवारिक जिम्मेदारी। कुछ बच्चों को खदानों, ईंट भट्ठों, कारखानों और निर्माण स्थलों पर काम करने के लिए मजबूर किया जाता है।

समाधानः– युवा स्वस्थ लोकतंत्र के लिए आवश्यक हैं क्योंकि वे युवा हैं और जीवन से भरपूर हैं। उन्हें राष्ट्र निर्माता और कल के नेता के रूप में भी देखा जाता है। उनसे उम्मीद की जाती है कि वे नई ऊर्जा के साथ प्रौद्योगिकी, शिक्षा, राजनीति और राष्ट्रीय शांति के क्षेत्र में अत्याधुनिक प्रगति करेंगे।

- ☐ शिक्षा के मानकों में किसी भी तरह का अंतर नहीं होना चाहिए।
- ☐ उपयुक्त स्कूल बजटें।
- ☐ उपयुक्त योजना बनाना पहला कदम है।
- ☐ सैद्धांतिक या रटने वाली शिक्षा की तुलना में व्यावहारिक शिक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- ☐ लोगों की बुनियादी आवश्यकताएं पूरी की जानी चाहिए।
- ☐ ऊर्जा समस्या का समाधान करके निर्माता अधिक कुशलतापूर्वक कार्य कर सकते हैं।
- ☐ तकनीकी क्षेत्रों में अनुदेश।
- ☐ मानवीय संबंधों को बढ़ावा दें औरसकारात्मक माहौल को बढ़ावा दें।
- ☐ अधिक सोचने से बचें।
- ☐ सोशल मीडिया के उपयोग के लिए दिन का एक विशिष्ट समय निर्धारित करें।
- ☐ प्रौद्योगिकी का पूर्णतः अच्छे उद्देश्यों के लिए उपयोग करने का प्रयास करें।
- ☐ खुशियाँ पाने के लिए कभी भी सोशल मीडिया पर निर्भर न रहें।
- ☐ दूसरों की तुलना में अपना मूल्यांकन करना बंद करें।
- ☐ अपने लक्ष्य और जीवन के उद्देश्य पर ध्यान दें।

निष्कर्षः मानव हृदय, भावनाओं और संभावनाओं का महासागर होता है और अपने वेग के चरम पर होता है, युवावस्था में। कुछ व्यक्ति इस वेग को अपने अनुसार कृतित्व और रचनात्मकता के लिए प्रयोग में लाते हैं, तो कुछ के मन में भावनाएँ, संभावनाओं पर भारी पड़ जाती है और युवावस्था, एक नकारात्मक और खीझ से भरे हुए कालखंड की भांति प्रतीत होने लगता है।युवा शक्ति किसी राष्ट्र की उज्ज्वल आशा का प्रतीक है। देश एवं समाज का भविष्य इसी पीढ़ी के हाथों में होता है। यह एक सार्वभौम एवं शाश्वत सत्य है, लेकिन आज यह एक मुहावरा बनकर रह गया है, जिसे हर नेता और उपदेशक अपने मुँह से सुनाया करता है। जबकि इस समय देश का भविष्य तय करने में जवान अपनी कोई प्रभावी भूमिका नहीं निभा पा रहे हैं। युवा पीढ़ी आधुनिकता की चकाचौंध में दिग्भ्रमित है। उसके सामने न कोई आदर्श है, न उच्च उद्देश्य। ऐसे में उपभोक्तावादी संस्कृति के निरंकुश भोगवाद का दंश उसे विक्षिप्तता एवं पतन की राह पर धकेल रहा है। परिणामस्वरूप टूटे स्वप्नों, बिखरे अरमानों एवं अतृप्त आकाँक्षाओं की मारी युवा पीढ़ी का जीवन पुष्प खिलने से पूर्व ही मुरझाकर दम तोड़ रहा है। कालचक्र के विषम प्रवाह में युवा शक्ति को रचनात्मक दिशा में मोड़ने एवं उसे अपने जीवन का राष्ट्र☐समाज के सृजन में प्रेरित एवं नियोजित करने की आवश्यकता पहले से अधिक गंभीर हो गई है।

हालाँकि युवाओं को कुछ मुद्दों से निपटना होगा, लेकिन उनके समाधान भी उपलब्ध हैं। उनसे निपटने के लिए हमें बस धीरज और धैर्य की ज़रूरत है। युवाओं को यह तय करना होगा कि इन मुद्दों से कैसे निपटना है, उन्हें कैसे स्वीकार करना है और उनका सामना कैसे करना है।

देख ज़िंदां से परे रंग–ए–चमन जोश–ए–बहार

रक़्स करना है तो फिर पांव की ज़ंजीर न देख

– मजरूह सुल्तानपुरी

नई शिक्षा नीति चुनौतियॉ एवं सम्भावनाए

मिथिलेष कुमार
सहायक प्राध्यापक

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के उत्थान एवं नव निर्माण की दशा एवं दिशा तय करती है। मानव मूल्यो पर आधारित शिक्षा प्रणाली से राष्ट्र का सर्वांगीण विकास हो सकता है। शिक्षा हमे संस्कार स्वावलबंन नैतिकता तर्क विवेक एवं आत्म ज्ञान के साथ ही आत्म विश्वास भी प्रदान करती है। स्वतत्रंता के उपरान्त हमारे दशे के नीति नियंताओ के समक्ष दो विकल्प थे प्रथम अधिनायक तन्त्र की शिक्षा व्यवस्था को चलने दिया जाये अंग्र`ज शासको की शिक्षा व्यवस्था उनके हितो के अनुरूप थी। दसूरा विकल्प शिक्षा म`आमलूचलू परिवर्तन कर स्वाधीन भारत की जन अपेक्षाओ के अनरूप नवीन व्यवस्था लागू की जाये। नई शिक्षा नीति प्रचलित शिक्षा व्यवस्था मे आमलूचलू परिवर्तन लाने हेतु बनायी गई है। वस्तुतः वैश्विक परिदृश्य में ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओ ंकी पूर्ति करने के लिये मौजूदा शिक्षा प्रणाली मे ंपरिवर्तन की आवश्यकता थी।

शब्दकोषरू नई शिक्षा नीति, शिक्षा व्यवस्था, अधिनायक तन्त्र, अर्थव्यवस्था।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के उत्थान एवं नव निर्माण की दशा एवं दिशा तय करती है ।मानव मलू यो पर आधारित शिक्षा प्रणाली से राष्ट्र का सर्वांगीण विकास हो सकता है। इस के विपरीत मानव मूल्यो की उपेक्षा करने वाली शिक्षा व्यवस्था किसी भी राष्ट्र के पतन का कारण भी हो सकती है शिक्षा के संबंध में गांधी जी चिंतन मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास की ओर इंगित करता है। महान शिक्षाविद संत एवं ज्ञान के प्रतिमूर्ति स्वामी विवेकानदं जी का कथन है कि मनुष्य की अंर्तनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। शिक्षा हमे संस्कार स्वावलंबन नैतिकता तर्क विवेक एवं आत्म ज्ञान के साथ ही आत्म विश्वास भी प्रदान करती है। स्वतंत्रता के उपरान्त हमारे दशे ा के नीति नियंताओ के समक्ष दो विकल्प थे प्रथम अधिनायक तन्त्र की शिक्षा व्यवस्था को चलने दिया जाये अंग्र`ज शासको की शिक्षा व्यवस्था उनके हितो के अनुरूप थी। दसू रा विकल्प शिक्षा म` आमूलचूल परिवर्तन कर स्वाधीन भारत की जन अपेक्षाओ के अनुरूप नवीन व्यवस्था लागू की जाय। तत्कालीन नीति नियंताओ ने प्रचलित शिक्षा व्यवस्था को अंगीकार कर लिया। शायद यही सबसे बड़ी भूल थी जिसका खामियाजा हम` अब तक भोगना पड़ रहा है।शिक्षा के क्षेत्र मे अब तक किए गए प्रयोग नाकाफी है।

सर्वप्रथम शिक्षा के क्षेत्र म` सुधार का सूत्रपात 1968 मे हुआ। 1986 से 1992 तक अनेको प्रयास एवं प्रयोग करने के उपरान्त भी हम शिक्षा का कोई मानक स्थापित नही कर सके। वस्तुतः 1986 की शिक्षा नीति में परिलक्षित कमियो को दरू करने के लिये नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लाने की आवश्यकता पड़ी। नई शिक्षा।

नीति प्रचलित शिक्षा व्यवस्था म` आमलू चलू परिवर्तन लान` हेतु बनायी गई है। पूर्व के प्रयास प्रचलित शिक्षा व्यवस्था मे सुधार हेतु किए गये थे किन्तु वर्तमान नई शिक्षा नीति पूर्व प्रचलित व्यवस्था म` सुधार पर आधारित न होकर आमलू चलू परिवर्तन की दिशा तय करने की ओर अग्रसर है। वस्तुतः शिक्षा का शाब्दिक अर्थ सीखने एवं सिखान` की क्रिया है किन्तु व्यापक अर्थ मे शिक्षा किसी भी समाज में अनवरत् चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य की आंतरिक शक्तियो ं का विकास एवं व्यवहार परिष्कृत किया जाता है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा ज्ञान एवं कौशल मे ं वृद्धि कर मनुष्य म` योग्यता व गुणवत्ता का समावेश किया जाता है। नई शिक्षा नीति प्रचलित शिक्षा व्यवस्था म` सुधार की रूपरेखा न प्रस्तुत कर समग्र परिवर्तन की दिशा तय करती है इस श्रंखला म`वर्तमान नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन मत्रं ालय का नाम बदलकर शिक्षा मत्रं ालय कर दिया गया है। इस नीति के माध्यम से स्कूल एवं उच्च शिक्षा मे ं परिवर्तनकारी सुधारो ं की अपेक्षा की गई है। इसके उद्देश्यो ं के तहत वर्ष 2030 तक स्कूली शिक्षा में ड्राप रेंसियो को शून्य कर 100þ ळम्त के साथ–साथ पूर्व–विद्यालय से माध्यमिक स्तर तक शिक्षा के सार्वभौमिकरण का लक्ष्य रखा गया है। इसके पूर्व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में बनाई गई थी जिसमें वर्ष 1992 में संशोधन किया गया था।वर्तमान नीति अंतरिक्ष वैज्ञानिक के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है।नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के तहत वर्ष 2030 तक सकल नामांकन अनुपात (Gro s Eurolment Ratio&GER) को 100þ लाने का लक्ष्य रखा गया है।नई शिक्षा नीति के अंतर्गत के ंद्र व राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा क्षेत्र पर जीडीपी के 6þ हिस्से के सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है। पूर्व प्रचलित शिक्षा नीति 10+2 के स्थान पर नई शिक्षा नीति म` 5 + 3 + 3 + 4 डिज़ाइन वाले शैक्षणिक संरचना का प्रस्तावकिया गया है पूर्व निर्धारित व्यवस्था म` स्कूल म` प्रवेश आयु 6 वर्ष के स्थान पर वर्तमान नीति म` प्रवेश आयु 3 वर्ष कर दी गई है इसमे 3 से 18 वर्ष की आयु वाले बच्चो ं को शामिल किया गया है प्रथम स्तर पर पाँच वर्ष की फाउंडेशनल स्टेज (थ्वनदकंजपवदंस ैजंहम) – 3 साल का प्री –प्राइमरी स्कूल जिसमे बच्चा स्कूल जाकर केवल खेल खेल मे सीखने काप्रयास करगे कोई भी अध्ययन सामग्री उसके पास नही होगी स्कूल का माहौल बच्च` के लिए खुशनुमा बनाने का प्रयास शिक्षको द्वारा किया जाएगा इस स्टेज पर कक्षा 1 एवं 2 म अध्ययन रत छात्र की परीक्षा भी नही होगी, ग्रेड 2 स्टेज प्रीपेट्रर`ी स्टेज (च्तमचंजतंजवतल ैजंहम) तीन वर्ष का मध्य (या उच्च प्राथमिक) मे बच्चा कक्षा तीन चार और पांच तक अध्ययन करगे ा स्टेज तीन पर जिसकी अवधि तीन वर्ष होगी – कक्षा 6, 7, 8 एवं स्टेज चार 4 वर्ष का उच्च (या माध्यमिक चरण मे कक्षा या ग्रेड 9, 10, 11, 12 सम्मिलित होगे । पूर्व

प्रचलित व्यवस्था मे कला विज्ञान व वाणिज्य अलग अलग विधा के रूप मे विद्यमान थे जिसमे से किसी एक विधा को अध्ययन हेतु विद्यार्थी चुन सकता था, किन्तु इस व्यवस्था मे छात्र को किसी भी विधा से कोई भी विषय चुनने की स्वतंत्रता होगी । अर्थात छात्र कला वाणिज्य एवं विज्ञान सभी म` से कोई भी पेपर चुन सकेगा। जैसे इतिहास गणित रसायन विज्ञान एवं लखे ा शास्त्र का चयन कर विद्यार्थी अपना कोर्स पूरा कर सकता है।नई शिक्षा नीति 2020 के तहत भ्म्त्‍ द्वारा बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर एक राष्ट्रीय मिशन (National Mission on Foundational Literacy and Numeracy की स्थापना का प्रस्ताव किया गया है। इसके द्वारा वर्ष 2025 तक कक्षा– 3 स्तर तक के बच्चो ं के लिये आधारभूत कौशल सुनिश्चित किया जाएगा।भाषायी विविधता को संरक्षण प्रदान करने के लिये नई शिक्षा नीति –2020 मे ं कक्षा–5 तक की शिक्षा मे ं मातृ भाषा स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को अध्ययन के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया गया है। साथ ही इस नीति में मातृभाषा को कक्षा–8 और आगे की शिक्षा के लिये प्राथमिकता दने` का सुझाव दिया गया है।स्कूली और उच्च शिक्षा में छात्रो ं के लिये संस्कृ त और अन्य प्राचीन भारतीय भाषाओ ं का विकल्प उपलब्ध होगा परंतु किसी भी छात्र पर भाषा के चुनाव की कोई बाध्यता नहीं होगी। विद्यालयो ं में सभी स्तरो ं पर छात्रो ं को बागवानी नियमित रूप से खेल–कूद योग नृत्य मार्शल आर्ट को स्थानीय उपलब्धता के अनुसार प्रदान करने की कोशिश की जाएगी ताकि बच्च` शारीरिक गतिविधियो ं एवं व्यायाम वगैरह में भाग ले सके। पाठ्यक्रम औरमूल्यांकन संबंधी सुधारो के अन्तर्गत प्रस्तावित कला और विज्ञान व्यावसायिक तथा शैक्षणिक विषयो ं एवं पाठ्यक्रम व पाठ्येतर गतिविधियो ं के बीच बहुत अधिक अंतर नहीं होगा।कक्षा 6 से ही शैक्षिक पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को शामिल कर दिया जाएगा और इसमे ं इंटर्नशिप (Internship) की व्यवस्था भी की जाएगी। 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनसु ंधान और प्रशिक्षण परिषद (National Council of Educational Research and Training& NCERT) द्वारा 'स्कूली शिक्षा के लिये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा' (National Curricular Framework for School Education) तैयार की जाएगी। छात्रो ं के समग्र विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखत` हुए कक्षा 10 और कक्षा 12 की परीक्षाओ ं में बदलाव किया जाएगा। इसमे ं भविष्य में समेस्टर या बहुविकल्पीय प्रश्न आदि जैसे सुधारो ं को शामिल किया जा सकता है।छात्रो ं की प्रगति के मल्ू यांकन के लिये मानक–निर्धारक निकाय के रूप मे ं 'परख' (च्।त्।ज्ञभ्) नामक एक नए 'राष्ट्रीय आकलन केद्रं (National Assessment Centre) की स्थापना की जाएगी।छात्रो ं की प्रगति के मल्ू यांकन तथा छात्रो ं को अपन` भविष्य से जुड़` निर्णय लने` मे ं सहायता प्रदान करने के लिये 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' (Artificial Intelligence& AI) आधारित सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया जा सकेगा। शिक्षण व्यवस्था से संबंधित सुधारो के अन्तर्गत शिक्षको ं की नियुक्ति में प्रभावी और पारदर्शी प्रक्रिया का पालन तथा समय ≤ पर किये गएकार्य प्रदर्शन आकलन के आधार पर पदोन्नति की व्यवस्था प्रस्तावित है। अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा वर्ष 2022 तक शिक्षको ं के लिये राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक' (National Professional Standards for Teachers & NPST) का विकास किया जाएगा।राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा छब्म्त्ज के परामर्श के आधार पर अध्यापक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरखे ा (छंजपवदंस ब्नततपबनसनउ थ्तंउमूवता वित ज्मंबीमत म्कनबंजपवद – छब्थ्ज्म्) का विकास किया जाएगा। वर्ष 2030 तक अध्यापन के लिये न्यूनतम डिग्री योग्यता 4–वर्षीय एकीकृत बी.एड. डिग्री का होना अनिवार्य किया जाये। नई– शिक्षा 2020 के अन्तर्गत शिक्षण संस्थानो ं में सकल नामांकन अनुपात (ळतवे म्दतवसउमदज त्ंजपव) को 26. 3ः(वर्ष 2018) से का भाव जागृत होगा और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने वाल` संस्थान ही दीर्घकाल मे अपन` अस्तित्व की रक्षा करने म` समर्थ हो सकेगे। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा न प्रदान करने वाले संस्थान बंद हो सकत` है। नई शिक्षा नीति के तहत एम.फिल कार्यक्रम को समाप्त कर दिया गया है। स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करन` के लिए छात्र को एक वर्ष एवं दो वर्ष म` पाठ्यक्रम पूरा करने के विकल्प दिए गये है। अब पी एच डी की उपाधि प्राप्त करन` की समय सीमा चार साल होगी। नई शिक्षा नीति (NEP) के अन्तर्गत दश्े ा भर के उच्च शिक्षा संस्थानो ं के लिये एकल नियामक संस्था भारतीय उच्च शिक्षा परिषद (Higher Education Council of India & HECI) की परिकल्पना की गई है भारतीय उच्च शिक्षा परिषद चिकित्सा एवंकाननू ी शिक्षा को छोड़कर सम्पूर्ण शिक्षा क्षेत्र के लिये एक एकल निकाय (Single Umbrella Body) के रूप में कार्य करगे ा।

भारतीय उच्च शिक्षा परिषद के कार्यों के प्रभावी निष्पादन हेतु चार निकायो की स्थापना भी प्रस्तावित है। राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामकीय परिषद (National Higher Education Regulatroy Council & NHERC) शिक्षक शिक्षा सहित उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिये एक नियामक का कार्य करगे ा। सामान्य शिक्षा परिषद (ळमदमतंस म्कनबंजपवद ब्वनदबपस – ळम्ब्)ः उच्च शिक्षा कार्यक्रमो ं के लिये अपेक्षित सीखने के परिणामो का एक स्वायत्त निकाय के रूप में ''राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मचं '' (National Educational Technological Forum) का गठन कर दश्े ा म` डिजिटल शिक्षा माध्यम का विस्तार किया जाएगा जिसके द्वारा शिक्षण मल्ू यांकन योजना एवं प्रशासन में अभिवृद्धि हेतु विचारो ं का आदान प्रदान किया जा सकेगा। डिजिटल शिक्षा संसाधनो ं को विकसित करने के लिये अलग प्रौद्योगिकी इकाई का विकास किया जाएगा जो डिजिटल बुनियादी अनुसूचित जाति अनुसूचित जन जाति पिछड़` वर्ग एवं सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहो ं से संबंधित मेधावी छात्रो ं को प्रोत्साहन के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 का उद्देश्य 49 असमानताओ ं को दरू करने विशेष रूप से भारतीय महिलाओ ं अनुसूचित जनजातियो ं और अनुसूचित जाति समुदायो ं के लिये शैक्षणिक अवसर की समानता पर विशेष बल दिया गया था। इस नीति के अंतर्गत प्राथमिक स्कूलो ं को बेहतर बनाने के लिये "ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड" लॉन्च किया।साथ ही इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ 'ओपन यूनिवर्सिटी' प्रणाली का विस्तार किया।ग्रामीण भारत में जमीनी स्तर पर आर्थिक और सामाजिक विकास को नई शिक्षा नीति चुनौतियाँ नई शिक्षा नीति 2020 पूर्व प्रचलित शिक्षा नीति म` सुधार से सम्बन्धित न होकर अपितु सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था मे आमलू चलू परिवर्तन से सम्बन्धित है अतः नई शिक्षा नीति के सम्पूर्ण दश्े ा म` क्रियान्वयन हेतु आधार

भूत भौतिक संरचना की आवश्यकता होगी। जिसमे बृहद स्तर के विनियोग की आवश्यकता होगी। गुणवत्ता पूर्ण तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा हेतु प्रशिक्षित मानव संसाधन का विकास भी मानक के अनुरूप करना होगा । कतिपय शिक्षाविदो ं का मानना है कि विदशे ी विश्वविद्यालयो ं में प्रवेश से भारतीय शिक्षण व्यवस्था महँगी हो सकती है। परिणामस्वरूप निर्धन वर्ग के छात्रो ं के लिये उच्च शिक्षा प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। दक्षिण भारतीय राज्यो ं का यह भी आरोप है कि 'त्रि–भाषा' सूत्र से सरकार शिक्षा का संस्कृतिकरण करने का प्रयास कर रही है। कतिपय राज्यो ं में शुल्क संबंधी विनियमन होने के बावजूद मुनाफाखोरी पर अंकुश नही लग सका है इसके साथ ही वित्तपोषण का सुनिश्चित होना इस तथ्य पर निर्भर करेगा कि शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय के रूप में जीडीपी के प्रस्तावित 6þ खर्च करने की सरकार की इच्छाशक्ति कितनी मजबूत है। मानव संसाधन का मानक के अनुरूप न होने के कारण वर्तमान में प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में कुशल शिक्षको ं का अभाव है ऐसी स्थिति मे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन हेतु प्राथमिक विद्यालयो म` नई शिक्षा नीति के अनुरूप प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने हेतु सम्पूर्ण व्यवस्था म` आमूलचूल परिवर्तन करना सहज नही होगा। वर्तमान परिपेक्ष्य म` गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की सर्वाधिक समस्या प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर ही है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र म` भी पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था के स्थान पर रोजगारपरक तकनीकी शिक्षा प्रदान करने हेतु आधारभतू संरचना स्थापित करना सहज नही होगा। वस्तुतः भारत म` प्रचलित एवं व्यवहरित ब्रिटिश शासन कालीन मैकाल` शिक्षा नीति न तो ज्ञानार्जन के लिए ही उपयुक्त थी और न ही इसके माध्यम से रोजगार सृजन की सम्भावनाऐ ही विद्यमान थी। इस नीति का प्रमुख उद्देश्य ब्रिटिश उपनिवेशवाद के हितो का पोषण एवं संरक्षण मात्र था । यह शिक्षा व्यवस्था कतिपय ऐतिहासिक प्रसंगो एवं नीति नियंताओ के महिमामंडन के साथ ही ब्रिटिश अधिनायक तन्त्र हेतु निष्ठावान सैनिक तैयार करने कार्यालयीय कृत्यो के समुचित संचालन हेतु क्लर्क एवं सहायक कार्मिक तैयार करना था । स्वतंत्रता के पश्चात निर्मित संविधान मे शिक्षा को समवर्ती सूची मे डाल कर केन्द्र सरकार ने अपने कर्तव्यो की इति श्री मान ली और स्वनामधन्य नीति नियंताओ ने भारतीय परिवेश के अनुकूल एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति विकसित करने का यत्न ही नही किया ।केन्द्र व राज्य सरकारे शिक्षा जैसे संवेदनशील प्रश्न को एक दूसरे पर टालने का यत्न करते रहे ।यहॉ तक की शिक्षा व्यवस्था के उन्नयन विकास विस्तार एवं गुणात्मक सुधार हेतु बजट का प्रावधान भी दाल मे नमक के बराबर ही किया गया । वस्तुतः स्वतंत्रता के उपरान्त स्थापित लोकतांत्रिक शासन प्रणाली मे दीर्घकाल तक सत्ता मे बने रहने की लालसा के कारण भारतीय निर्धन अशिक्षित शोषित जनता के शैक्षणिक आर्थिक सामाजिक उन्नयन का यत्न ही नही किया गया। क्यो ंकि जिन राजनेताओ मे आजादी की लड़ाई मे प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप मे कुछ भी योगदान किया था आजादी के बाद वे दीर्घ काल तक सत्ता रूपी मलाई काटने की आकांक्षा पाले हुए थे। वस्तुतः किसी भी देश की शिक्षित एवं जागृत जनता अपने मताधिकार का तर्क एवं विवेक पूर्ण उपयोग करती है और अशिक्षित एवं आर्थिक रूप से विपन्न जनता जाति धर्म सम्प्रदाय भाषा क्षेत्र मजहब आर्थिक प्रलोभन के आधार पर अविवेक पूर्ण निर्णय लेकर अयोग्य वह अक्षम जनप्रतिनिधियो का चयन कर सकती है ।शिक्षा के द्वारा तर्क शक्ति जागृत हो जाने के कारण जनता किसी गु ंडे मवाली को अपना जनप्रतिनिधि नही चुन सकती। वर्तमान समय मे शैक्षणिक एवं आर्थिक पिछड़े पन के कारण राजनीति मे सेवाभाव रखने वालो के स्थान पर राजनीति को व्यवसाय मानने वाले लोग ही चुनाव जीतकर नीति नियंता बन रहे है । कांग्र`स के शासन काल मे जनता को खैरात बांटने व तुष्टीकरण की नीति का पालन किया गया ।किन्तु अधिसंख्य जनता को शिक्षा ग्रहण करने के अधिकार से वंचित रखा गया ।इसी कारण कांग्र`स लगभग पचास वर्षो तक सत्ता मे बनी रही। नई शिक्षा नीति 2020 को भारतीय जनमानस की आवश्यकताओ एवं भारतीय शैक्षणिक पर्यावरण के अनुरूप रखने का यत्न किया गया है शिक्षा व्यवस्था को उपाधि उन्मुख न रखकर ज्ञान परक एवं रोजगार परक बनाने का प्रयास किया गया है पूर्व प्रचलित रटन्त विधा के स्थान पर शिक्षार्थी म` तर्क शक्ति विकसित करने का यत्न नई शिक्षा नीति की विलक्षणता है। शिक्षार्थी म` कार्य कुशलता विकसित करने हेतु प्राथमिक स्तर से ही रोजगार परक शिक्षा का समावशे ा किया गया है किसी कार्य विशेष म` निपुणता व दक्षता प्राप्त करन` के साथ ही विज्ञान कला वाणिज्य इत्यादि विषयो के समेकित अध्ययन को बल दिये जान` के कारण शिक्षार्थी का बहुआयामी विकास सम्भव हो सकेगा। यदि सरकार द्वारा ईमानदारी पूर्वक यत्न किये गये तो इस नीति के सकारात्मक परिणाम 2030 तक दृष्टि गत होने लगेगे ।

निष्कर्ष केद्रीय मन्त्रिमडं ल न` 21वीं सदी के भारत की जरूरतो ं को पूरा करने के लिये भारतीय शिक्षा प्रणाली मे ं बदलाव हेतु जिस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 को मजं ूरी दी है अगर उसका क्रियान्वयन सफल तरीके से होता है तो यह नई प्रणाली भारत को विश्व के अग्रणी दशे ाे ं के समकक्ष ल` आएगी। नई शिक्षा नीति, 2020 के तहत 3 साल से 18 साल तक के बच्चो ं को शिक्षा का अधिकार कानून, 2009 के अंतर्गत रखा गया है। 34 वर्षो पश्चात् आई इस नई शिक्षा नीति का उद्देश्य सभी छात्रो ं को रोजगार परक तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना है जिसका लक्ष्य 2025 तक पूर्व–प्राथमिक शिक्षा (3–6 वर्ष की आयु सीमा) को सार्वभौमिक बनाना है। स्नातक शिक्षा मे ं आर्टिफिशियल इंटेलीजेसं , थ्री–डी मशीन, डेटा–विश्लेषण, जैवप्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रो ं के समावेशन से अत्याधुनिक क्षेत्रो ं में भी कुशल पेशेवर तैयार होगं` और युवाओ ं की रोजगार क्षमता मे ं वृद्धि होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 नई शिक्षा नीति प्रारुप –भारत सरकार।

2 शैक्षणिक निबन्ध – प्रोफेसर राम सकल पान्डेय।

डिजिटल युग में भारतीय भाषाओं का भविष्य

चन्दन कुमार
सहायक प्राध्यापक

हिंदी को डिजिटल जगत में प्रयोग के लिए तकनीकी तौर पर और आसान बनाने पर काम कर रहा है। कंप्यूटरों पर हिंदी के स्थाई उपयोग के लिए कई सॉफ्टवेयर हैं, जिसमें आईलीप सर्वाधिक लोकप्रिय है। हिंदी की टाइपिंग अब भी कई लोगों के लिए एक समस्या है, लोग ज्यादातर अंग्रेजी में टाइप करते हैं। इस समस्या को दूर करने के लिए स्पीच और हैंडराइटिंग रिकग्नीशन तकनीक को अपनाई जा रही है। ये सॉफ्टवेयर प्रयोग में हैं लेकिन इनमें सुधार किया जा रहा है। भविष्य में ऐसी कई अन्य तकनीक देखेंगे जिसमें ऑडियो या हस्तलिखित संदेश का अनुवाद करना आसान हो जाएगा। हिंदी को मोबाइल और टैबलेट जैसी डिवाइसेस पर लाने के लिए प्रयोग किए जा रहे हैं। इन जगहों पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को तकनीकी दिक्कतों का सामना ना करना पड़े। सिर्फ सरकारी क्षेत्र की संस्थाएं ही नहीं बल्कि कई जुनूनी शख्सियतों ने भी हिंदी को डिजिटल बनाने के लिए अपनी रातें खराब कीं। कंप्यूटर पर हिंदी की गैरमौजूदगी किसी हिंदी भाषी के लिए कितनी मुश्किलें पैदा कर सकता है। इंजीनियर जगदीप दांगी ने हिंदी शब्दकोश बनाया जिसमें उन्होंने 40 हजार शब्द डाले। उन्होंने इसके बाद साल 2006 तक कई हिंदी फॉन्ट कनवर्टर, सॉफ्टवेयर बनाए जो आज भी चलन में है। लेकिन वो खुद भाषा को कंप्यूटर के लिए बाधा नहीं मानते। उन्होंने कहा, "कंप्यूटर सिर्फ बाइनरी समझता है यानी 0 और 1। किसी भी भाषा को कंप्यूटर अपने तरीके से समझता है, लिहाजा जो भी अंग्रेजी या दूसरी किसी भाषा में हो सकता है, वो हिंदी में भी हो सकता है। उसे बस हिंदी में प्रोग्राम किए जाने की जरूरत होती है।" इस वक्त हिंदी को जरूरत है तो बस एक वृहद शब्दकोष की। शब्दों का मतलब जितना सटीक होता जाएगा, अनुवाद या टाइपिंग उतना ही अच्छा होगा।" तकनीकी सुधार तो होते रहेंगे, लेकिन महत्वपूर्ण होगा ये देखना कि युवाओं को लिखने–पढ़ने में हिंदी का प्रयोग कितना सहज लगता है।

क्षेत्रीय भाषाओं में अधिक डिजिटल सामग्री का निर्माण भारत को एक अरब डॉलर की डिजिटल अर्थव्यवस्था बनने में बड़ा योगदान देग। 'अगर हम स्थानीय भाषा के तत्वों को विकसित करने के लिए इंटरनेट को अनुमति नहीं देते हैं, तो मुझे लगता है कि कहानी पूरी तरह से गड़बड़ हो सकती है। भारत में 40 करोड़ इंटरनेट यूजर्स हैं, जिनमें से 23।4 करोड़ यूजर्स स्थानीय भाषा के हैं। 2021 तक इनकी संख्या 53।6 करोड़ तक बढ़ने की संभावना है।'

गूगल ने 'तेज' नाम का एप लॉन्च किया। इसके डिजिटल पेमेंट एप को एंड्रॉयड और पै डिवाइसों पर डाउनलोड किया जा सकता है। यह एप भारत के लिए बनाया गया है, जो ज्यादातर स्मार्टफोन पर काम करेगा और यह अंग्रेजी के साथ सात भारतीय भाषाओं (हिंदी, बंगाली, गुजराती, कन्नड़, मराठी, तमिल और तेलुगू) में उपलब्ध है। यह डिजिटल अर्थव्यवस्था 750 अरब से एक खरब के लक्ष्य को छूने में सक्षम होगी। इस समय, डिजिटल इकॉनमी जीडीपी उत्पाद में सात प्रतिशत का योगदान देती है और 2025 तक जीडीपी में इसका योगदान लगभग 17 फीसदी होना चाहिए। गूगल और केपीएमजी की रिपोर्ट के अनुसार, देश में इंटरनेट पर अंग्रेजी भाषा को भारतीय भाषा यूजर्स ने पीछे छोड़ दिया है।

मूल रूप से, भाषा सिर्फ शब्दों से कहीं ज़्यादा है – यह जुड़ाव के बारे में है। जब आप किसी से उनकी मूल भाषा में संवाद करते हैं, तो आप उनकी संस्कृति के प्रति सम्मान दिखाते हैं, विश्वास बनाते हैं और विचारों को साझा करना आसान बनाते हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि 75: उपभोक्ता अपनी मूल भाषा में उत्पाद खरीदना पसंद करते हैं, जो इस बात पर प्रकाश डालता है कि व्यापार में भाषा कितनी महत्वपूर्ण है। ये निम्नलिखित बिन्दुओं से समझा जा सकता है।

- **विश्वास और विश्वसनीयता** :– लोग अपनी भाषा बोलने वाले व्यवसाय पर अधिक विश्वास करते हैं और उससे जुड़ते हैं, जिससे उन्हें मूल्यवान और समझा हुआ महसूस होता है।
- **गहरे संबंध** :– एक ही भाषा बोलने से सांस्कृतिक अंतर को पाटने में मदद मिलती है, तथा आपके श्रोताओं के साथ सार्थक संबंध बनते हैं।

सहभागिता और रूपांतरण में वृद्धि :– बहुभाषी वेबसाइटों में सहभागिता और रूपांतरण दर अधिक होती है, क्योंकि आगंतुक आसानी से नेविगेट कर सकते हैं और सामग्री को समझ सकते हैं।

- **वैश्विक पहुंच को बढ़ावा** :– कई भाषाओं में सामग्री की पेशकश करके, व्यवसाय नए बाजारों में विस्तार कर सकते हैं और व्यापक दर्शकों को आकर्षित कर सकते हैं।

व्यवसायों के लिए, भाषा की शक्ति का उपयोग करने का अर्थ केवल अनुवाद से अधिक है – इसका अर्थ है विभिन्न दर्शकों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करना समझना। यह बताती है कि एक शक्तिशाली उपकरण है जो आपकी वेबसाइट का अनुवाद और स्थानीयकरण करके भाषा की क्षमता को अनलॉक करने में आपकी मदद करता है, यह सुनिश्चित करता है

कि आप दुनिया के सभी कोनों के लोगों से जुड़ सकते हैं। आपके व्यवसाय को बढ़ाने में मदद करने के लिए भाषा की शक्ति का उपयोग कैसे करता है?

भाषा संबंधित बाधाओं को आसानी से तोड़े – नए बाजारों में विस्तार करना चुनौती पूर्ण हो सकता है, लेकिन आपको अपनी वेबसाइट को 100 से ज्यादा भाषाओं में अनुवाद करने में सक्षम बनाकर इसे आसान बनाता है। कुछ ही क्लिक के साथ, आप अपनी सामग्री को लाखों संभावित ग्राहकों तक पहुँचा सकते हैं जो अलग–अलग भाषाएँ बोलते हैं।

- **त्वरित स्वचालित अनुवाद** – आपकी वेबसाइट का त्वरित अनुवाद करने के लिए उन्नत मशीन अनुवाद का उपयोग करता है, जिससे आप तुरंत अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों के साथ संवाद कर सकते हैं।
- गुणवत्ता के लिए मानव अनुवाद – अधिक सूक्ष्म और जटिल सामग्री के लिए, पेशेवर मानव अनुवाद सेवाएं प्रदान करता है, जो सुनिश्चित करता है कि आपका संदेश सटीक और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक है।

सांस्कृतिक प्रासंगिकता के लिए स्थनीयकरण – जबकि अनुवाद आवश्यक है, सच्चा संचार शब्दों से परे है। स्थानीयकरण आपकी सामग्री को आपके लक्षित दर्शकों के विशिष्ट सांस्कृतिक संदर्भ के अनुकूल बनाता है, जिससे यह अधिक आकर्षक और भरोसेमंद बन जाता है। सुनिश्चित करता है कि आपकी वेबसाइट न केवल भाषा बोलती है, बल्कि स्थानीय संस्कृति के साथ भी प्रतिध्वनित होती है।

- **सांस्कृतिक अनुकूलन** – आपको विभिन्न संस्कृतियों की प्राथमिकताओं और अपेक्षाओं से मेल खाने के लिए भाषा, स्वर, कल्पना और अन्य तत्वों को समायोजित करने में मदद करता है।
- स्थानीयकृत एसईओ – आपकी अनुवादित सामग्री विभिन्न क्षेत्रों के खोज इंजनों के लिए अनुकूलित की जाती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि आपकी साइट स्थानीय खोजों में खोज योग्य है।

सीमाओं के पार उपयोगकर्ता अनुभव को बेहतर बनाना – भाषा उपयोगकर्ता अनुभव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उपयोगकर्ता आपकी सामग्री को अपनी मूल भाषा में एक्सेस कर सकते हैं, तो वे आपकी साइट पर अधिक समय तक रहने, आपकी सामग्री से जुड़ने और खरीदारी करने की अधिक संभावना रखते हैं। अनुकूलन योग्य भाषा स्विचर की पेशकश करके उपयोगकर्ता अनुभव को बढ़ाता है, जिससे विजिटर आसानी से अपनी पसंदीदा भाषा चुन सकते हैं।

- **निर्बाध नेविगेशन** – उपयोगकर्ता–अनुकूल भाषा स्विचर साइट की उपयोगिता में सुधार करता है, जिससे आगंतुकों के लिए भाषाओं के बीच टॉगल करना आसान हो जाता है।
- **मोबाइल–अनुकूल डिजाइन** – भाषा स्विचर पूरी तरह से उत्तरदायी है, जो सभी डिवाइसों पर उपयोगकर्ताओं के लिए एक सहज अनुभव सुनिश्चित करता है। दृश्यता बढ़ाने के लिए बहुभाषी वैश्विक स्तर पर विस्तार करते समय भाषा आपकी SEO रणनीति का एक महत्वपूर्ण घटक है। सुनिश्चित करता है कि आपकी अनुवादित सामग्री स्थानीय खोज इंजनों के लिए अनुकूलित है, जिससे आपको विभिन्न क्षेत्रों से अधिक आगंतुकों को आकर्षित करने में मदद मिलती है।
- **स्थानीयकृत यूआरएल** – आपकी साइट के प्रत्येक अनुवादित संस्करण को एक अद्वितीय यूआरएल दिया जाता है, जिससे खोज इंजनों के लिए आपकी सामग्री को अनुक्रमित करना आसान हो जाता है।
- **ह्नाफलैंग टैग** – स्वचालित रूप से ह्नाफलैंग टैग लागू करता है, जिससे खोज इंजन को यह समझने में मदद मिलती है कि विशिष्ट क्षेत्रों में उपयोगकर्ताओं को आपकी साइट का कौन–सा भाषा संस्करण दिखाना है।
- **दर्शकों से गहरे स्तर पर जुड़ें** – भाषा की ताकत लोगों को व्यक्तिगत और भावनात्मक स्तर पर जोड़ने की इसकी क्षमता में निहित है। अपने दर्शकों के साथ उनकी पसंदीदा भाषा में संवाद करके, आप न केवल पहुंच में सुधार करते हैं बल्कि अपने ब्रांड और अपने ग्राहकों के बीच के बंधन को भी मजबूत करते हैं।
- **ग्राहक निष्ठा का निर्माण** – जब ग्राहक यह महसूस करते हैं कि उन्हें समझा गया है और उनका सम्मान किया जा रहा है, तो उनके आपके ब्रांड के प्रति वफादार बनने की अधिक संभावना होती है।
- **स्थाई प्रभाव बनाएं** – एक अच्छी तरह से स्थानीयकृत वेबसाइट एक सकारात्मक उपयोगकर्ता अनुभव बनाती है, जिससे आपको प्रतिस्पर्धी वैश्विक बाजारों में अलग दिखने में मदद मिलती है।

वैश्विक रणनीति – किसी भी सफल अंतर्राष्ट्रीय विस्तार के लिए भाषा की शक्ति का उपयोग करना महत्वपूर्ण है। कैसे आपके व्यवसाय को सीमाओं के पार बढ़ने में सक्षम बनाता है?

- त्वरित और कुशल अनुवाद :– स्वचालित अनुवाद के साथ, आप मिनटों में बहुभाषी वेबसाइट लॉन्च कर सकते हैं, जिससे आप वैश्विक बाजारों तक तेजी से पहुंच सकते हैं।
- अनुकूलन और नियंत्रण :– आप तय करते हैं कि किन भाषाओं को प्राथमिकता देनी है, और आपको अनुवादों को अनुकूलित करने की सुविधा देता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि आपकी सामग्री हमेशा ब्रांड के अनुरूप हो।

➢ किफायती समाधान :– अनुवाद के लिए लागत प्रभावी दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिसमें स्केलेबल विकल्प हैं जो छोटे व्यवसायों और बड़े उद्यमों दोनों के लिए उपयुक्त हैं।

➢ बहुभाषी विश्लेषण :– वास्तविक समय विश्लेषण के साथ अपनी अनुवादित सामग्री के प्रदर्शन को ट्रैक करें, जिससे आपको अपनी बहुभाषी रणनीति को अनुकूलित करने में मदद मिलेगी।

भाषा का वैश्विक प्रभाव – भाषा सिर्फ संचार का एक जरिया नहीं है। यह पहचान को आकार देती है, रिश्तों को बढ़ावा देती है और प्रगति को गति देती है। डिजिटल युग में, भाषा की शक्ति बढ़ जाती है, जिससे व्यवसायों को महाद्वीपों, संस्कृतियों और समुदायों के लोगों तक पहुँचने में मदद मिलती है। भाषा के वैश्विक प्रभाव को पहचानता है और व्यवसायों को इसका लाभ उठाने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करता है। अपनी सामग्री को कई भाषाओं में सुलभ और प्रासंगिक बनाकर, आप नए अवसरों के द्वार खोलते हैं, विविध दर्शकों के साथ विश्वास का निर्माण करते हैं, और अपने ब्रांड को दीर्घकालिक सफलता के लिए तैयार करते हैं। भाषा की शक्ति बाधाओं को तोड़ने, संबंध बनाने और सार्थक जुड़ाव को बढ़ावा देने की इसकी क्षमता में निहित है। तेजी से वैश्वीकृत होती दुनिया में, व्यवसायों को प्रतिस्पर्धी और प्रासंगिक बने रहने के लिए इस शक्ति का उपयोग करना चाहिए। भाषा की पूरी क्षमता को अनलॉक करना आसान बनाता है, जिससे आप अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं और सीमाओं के पार अपने व्यवसाय को बढ़ा सकते हैं।

संयुक्त राष्ट्र के 'भविष्य के शिखर सम्मेलन' में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था, 'जब हम वैश्विक भविष्य के बारे में बात करते हैं, तो मानव केंद्रित दृष्टिकोण सबसे महत्वपूर्ण होना चाहिए।' उनके ये शब्द लोगों को पहले रखने के भारत के दृष्टिकोण को प्रमुखता से दर्शाते हैं। इस दर्शन ने डिजिटल व्यक्तिगत डाटा संरक्षण (डीपीडीपी) नियम, 2025 के मसौदे को आकार देने में हमारे प्रयासों का मार्गदर्शन किया है। इसे अंतिम रूप दिए जाने के बाद डिजिटल व्यक्तिगत डाटा संरक्षण अधिनियम, 2023 लागू हो जायेगा, जो नागरिकों के व्यक्तिगत डाटा सुरक्षा के अधिकार की रक्षा के लिए वस्तुतः हमारी प्रतिबद्धता को ही रेखांकित करेगा। यह सशक्तीकरण का एक नया युग है। भारतीय नागरिक डीपीडीपी नियम, 2025 के केंद्र में हैं। डाटा के बढ़ते वर्चस्व वाली दुनिया में हमारा यह स्पष्ट रूप से मानना है कि व्यक्तियों को शासन की रूपरेखा के केंद्र में रखना अनिवार्य है। ये नियम दरअसल इस देश के नागरिकों को कई अधिकारों से सशक्त करते हैं। उदाहरण के लिए, सूचना आधारित सहमति, डाटा मिटाने की सुविधा और डिजिटल रूप से नामांकित व्यक्ति को नियुक्त करने की क्षमता आदि। यह स्पष्ट है कि इस देश के नागरिक अब उल्लंघनों या अनधिकृत डाटा उपयोग के सामने खुद को असहाय महसूस नहीं करेंगे। इसकी वजह यह है कि अब उनके पास अपनी डिजिटल पहचान को प्रभावी ढंग से सुरक्षित और प्रबंधित करने के लिए आवश्यक उपकरण होंगे। इन नियमों को सरलता और स्पष्टता के साथ तैयार किया गया है, साथ ही, इसमें यह सुनिश्चित किया गया है कि प्रत्येक भारतीय, चाहे उनके पास तकनीकी ज्ञान कुछ भी हो, अपने अधिकारों को बखूबी समझ सकता है और उनका प्रयोग कर सकता है। इसमें सहमति स्पष्ट शब्दों में मांगी जाती है, तथा नागरिकों को अंग्रेजी या संविधान में सूचीबद्ध 22 भारतीय भाषाओं में से किसी में भी जानकारी प्रदान करना अनिवार्य किया गया है। यह रूपरेखा दरअसल समावेशिता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के बारे में बताती है। डिजिटल व्यक्तिगत डाटा संरक्षण अधिनियम में बच्चों की सुरक्षा पर खास ध्यान दिया गया है। दरअसल डिजिटल युग में बच्चों को विशेष देखभाल की आवश्यकता है। इसे मान्यता देते हुए इसके नियम नाबालिगों के व्यक्तिगत डाटा को संसाधित करने के लिए माता–पिता या अभिभावक की सत्यापन योग्य सहमति को अनिवार्य बनाते हैं। ऐसे ही अतिरिक्त सुरक्षा उपाय बच्चों को शोषण, अनधिकृत प्रोफाइल बनाने और अन्य डिजिटल नुकसान से बचाव सुनिश्चित करते हैं। इस अधिनियम के ये प्रावधान भविष्य की पीढ़ी के लिए एक सुरक्षित डिजिटल परिदृश्य बनाने के प्रति हमारे समर्पण को संपूर्णता में दर्शाते हैं। इसमें विनियमन के साथ विकास के संतुलन को साधने की कोशिश की गयी है।

भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था वस्तुतः एक वैश्विक सफलता की गाथा रही है, और हम इस गति को बनाये रखने के प्रति दृढ़ संकल्पित हैं। हमारी रूपरेखा डिजिटल अर्थव्यवस्था में नवाचार को सक्षम करते हुए नागरिकों के लिए व्यक्तिगत डाटा सुरक्षा सुनिश्चित करती है। विनियमन पर बहुत अधिक जोर देने वाले कुछ अंतरराष्ट्रीय प्रारूपों के विपरीत हमारा दृष्टिकोण व्यवहारिक और भविष्योन्मुखी है। यह संतुलन सुनिश्चित करता है कि नागरिकों की सुरक्षा की जाये और नवाचार की उस भावना को किसी भी तरह से दबाया न जाये, जो हमारे स्टार्ट–अप और व्यवसायों को प्रेरित करती है। इससे छोटे व्यवसायों और स्टार्ट–अप के लिए अनुपालन बोझ कम हो जायेगा। हितधारकों की अलग–अलग क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए नियमों को वर्गीकृत जिम्मेदारियों के साथ डिजाइन किया गया है। ऐसे में, डाटा विश्वास के मूल्यांकन के आधार पर बड़ी कंपनियों के पास उच्च दायित्व होंगे,जो विकास को बाधित किए बिना जवाबदेही सुनिश्चित करेंगे। इन नियमों के मूल में 'डिजिटल से दर्शन' है। डाटा सुरक्षा बोर्ड मुख्य रूप से एक डिजिटल कार्यालय के रूप में काम करेगा, जिसे शिकायतों का समाधान करने और अनुपालन लागू करने का काम सौंपा गया है। प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर हम दक्षता, पारदर्शिता और गति सुनिश्चित करते हैं। नागरिक शारीरिक उपस्थिति के बिना भी हम शिकायत दर्ज कर सकते हैं, प्रगति की निगरानी कर सकते हैं, और उचित समाधान प्राप्त कर सकते हैं। यह डिजिटल प्रथम दृष्टिकोण सहमति व्यवस्था और डाटा

प्रबंधन कार्य तक फैला हुआ है। प्रक्रियाओं को सुनिश्चित करके हम बड़ी कंपनियों के लिए अनुपालन करना और नागरिकों के लिए जुड़ना आसान बनाते हैं, जिससे प्रणाली में विश्वास बढ़ता है। इन नियमों की यात्रा उनके अभिप्राय जितनी ही समावेशी रही है। डिजिटल व्यक्तिगत डाटा संरक्षण अधिनियम, 2023 के सिद्धांतों पर आधारित मसौदा विभिन्न हितधारकों से एकत्र किए गये व्यापक इनपुट और वैश्विक सर्वोत्तम तौर–तरीकों के अध्ययन का परिणाम है। नागरिकों, व्यवसायों और नागरिक सुझाव से प्रतिक्रिया और सुझाव आमंत्रित करते हुए हमने सार्वजनिक परामर्श के लिए 45 दिनों की अवधि निर्धारित की है। यह जुड़ाव सामूहिक ज्ञान और भागीदारीपूर्ण नीति निर्माण के महत्व में हमारे विश्वास का प्रमाण है।जबकि यह सुनिश्चित करना है कि यह व्यवस्था न केवल मजबूत हो, बल्कि हमारे सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य की अनूठी चुनौतियों के अनुकूल भी हो। यह सुनिश्चित करने के लिए, कि नागरिक अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूक हैं, नागरिकों को उनके व्यक्तिगत डाटा से जुड़े अधिकारों के बारे में शिक्षित करने के लिए व्यापक जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इन नियमों की शुरुआत के साथ हम न केवल वर्तमान चुनौतियों का समाधान कर रहे हैं, बल्कि एक सुरक्षित और अभिनव डिजिटल भविष्य की आधारशिला भी रख रहे हैं। डिजिटल व्यक्तिगत डाटा संरक्षण नियम, 2025 का मसौदा वैश्विक डाटा शासन मानदंडों को आकार देने में भारत के नेतृत्व को प्रतिबिंबित करता है। देश के नागरिकों को केंद्र में रखते हुए, नवाचार के लिए अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देकर, हम एक मिसाल कायम कर रहे हैं, जिसका दुनिया अनुसरण कर सकती है। इस डिजिटल युग में प्रत्येक भारतीय को सुरक्षित, सशक्त और सक्षम बनाना। मैं प्रत्येक नागरिक, व्यवसाय व नागरिक समाज समूह को परामर्श अवधि के दौरान टिप्पणियां और सुझाव साझा करके इस संवाद में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता हूं। आइए, हम इन नियमों को परिष्कृत करें, ताकि एक ऐसी व्यवस्था तैयार हो सके, जो वास्तव में एक सुरक्षित, समावेशी और संपन्न डिजिटल भारत की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती हो।

हिंदी भाषा विश्व में चीन के बाद सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। भारत और विदेशों में करीब 50 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं तथा इस भाषा को समझने वाले लोगों की संख्या करीब 90 करोड़ है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में हिंदी का प्रचार–प्रसार खूब फलता–फूलता दिख रहा है। इंटरनेट पर हिंदी सामग्री का बाजार हर वर्ष 95 प्रतिशत बढ़ रहा है। 90 करोड़ लोगों तक पहुंचने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियां गांव–कस्बों तथा छोटे शहरों में अपने पैर पसारने लगी हैं। यही कारण है कि आज अंग्रेजी भाषा के साथ–साथ अच्छी हिंदी जानने वाले जानकारों की मांग भी बढ़ रही है। एक अनुमान के मुताबिक वर्ष 2021 तक देश में हिंदी भाषा इंटरनेट उपयोग करने वालों की संख्या अंग्रेजी भाषा प्रयोग करने वालों से अधिक हो जाएगी। इंटरनेट वेबसाइट कंपनियां जैसे अमेजन, वॉल–मार्ट, सर्च इंजन गूगल भी वर्तमान में इंटरनेट पर हिंदी में कंटेंट उपलब्ध करवाने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। आंकड़ों के मुताबिक देश में वर्तमान इंटरनेट पर हिंदी भाषा वाले कंटेंट को ब्राउज करने वालों की संख्या लगभग 39 प्रतिशत हो चुकी है। इससे पता चलता है कि हिंदी प्रयोगकर्ताओं के लिए भविष्य में इंटरनेट की मार्केट अनेक अवसर पैदा करेगी। भारत में गूगल के एमडी राजन आनंदन का मानना है कि इंटरनेट यूजर्स की अगली पीढ़ी ग्रामीण भारत से होगी। इसलिए इंटरनेट कंपनियों को अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं में भी तेजी से कार्य करना होगा। 18–20 अगस्त, 2018 को मॉरीशस में आयोजित 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन' के अवसर पर प्रौद्योगिकी संबंधी सत्रों में इंटरनेट पर बढ़ती हिंदी की गरिमा पर गहन विचार–विमर्श किया गया। निष्कर्ष के तौर पर उम्मीद जताई जा रही है कि मॉरीशस के हिंदी उत्थान सत्रों में की गई अनुशंसाओं द्वारा हिंदी का मार्ग इंटरनेट की दुनिया पर सजगता से प्रशस्त होगा। ध्यातव्य है कि मॉरीशस में 75 फीसदी भारतीय मूल के लोग हैं, इसलिए मॉरीशस को 'लघु भारत' भी कहा जाता है। मॉरीशस में विश्व हिंदी सम्मेलन का केंद्रीय सचिवालय है, जहां से विश्व हिंदी समाचार का प्रकाशन होता है। पिछले कुछ समय से यूनिकोड फॉट की उपलब्धता के कारण हिंदी में चौट, गप–शप, ईमेल, ई–शिक्षण, मल्टीमीडिया की सुलभता के कारण हिंदी की लोकप्रियता बढ़ी है, लेकिन यूनिकोड की उपलब्धता के बावजूद वर्तमान में भी हिंदी सामग्री में स्पेलचेकर, सर्च जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी खलती है। गूगल वॉइस रिकार्डिंग ने जहां टाइपिंग से निजात दिलाई है, वहीं दूसरी ओर वॉइस रिकार्डिंग में अनेक त्रुटियां विद्यमान हैं, जो वाक्य की वास्तविक परिभाषा को ही बदल देती हैं। आवश्यकता है इन आधारभूत त्रुटियों को दूर करने के लिए इंटरनेट टूल्स को अधिक धारीदार बनाया जाए। हमारे देश में हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। महज 1 दिन हिंदी में भाषण, निबंध, नारेबाजी तथा समाचार पत्रों में सुर्खियां देखने को मिलती हैं। उसके बाद 364 दिन हमें अंग्रेजी में ही राग सुनना व पढना पड़ता है। भारत की सबसे बड़ी कमजोरी भी यही है कि हम सिर्फ किसी दिवस को एक दिन तक ही सीमित कर देते हैं। आजादी के सात दशक बाद भी हिंदी को समस्त भारत की सर्वसम्मति से राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने में हम सफल नहीं हो पाए हैं। मातृभाषा के महत्त्व को समझना हो, तो एशिया में ही जापान और चीन की शैक्षणिक गतिविधियों व सरकारी कामकाज को देखा जा सकता है। एशिया महाद्वीप के दोनों देश तेज विकास के लिए जाने जाते हैं। इनके विकास के पीछे मातृभाषा का महत्त्व रीढ़ की हड्डी की भूमिका निभाता है। वर्तमान भारत में डिजिटलाइजेशन के सपने को धरातल तक पहुंचाने के लिए राष्ट्रीय हिंदी दिवस को सूचना प्रौद्योगिकी के साथ जोडकर समृद्ध बनाना होगा। स्मार्टफोन के संचालन में यदि हिंदी भाषा अपनी पकड़ मजबूत कर देती है, तो भारत के हर गांव–कस्बे में हिंदी भाषा की गरिमा व भविष्य में रोजगार की अपार संभावनाओं को पकड़ा जा सकता है। पिछले डेढ़ दशक से मैं सूचना प्रौद्योगिकी का प्रशिक्षु तथा

व्यवसायी हूं, हिंदी की जितनी लोकप्रियता मैंने पिछले दो वर्षों में इंटरनेट पर देखी है, इससे पहले कभी नहीं देखी थी। हमारे देश की एक बहुत बड़ी समस्या यह है कि हमारी शिक्षा प्रणाली दो भागों में बंटी हुई है, एक कान्वेंट स्कूलों में तथा दूसरी सरकारी स्कूलों में। अध्ययनरत विद्यार्थियों की वेशभूषा, अध्ययन प्रक्रिया में अनेक अंतर हैं। कान्वेंट स्कूल का विद्यार्थी हिंदी से कोसों दूर चला गया है, इसके विपरीत हिंदी स्कूल का विद्यार्थी अंग्रेजी से कोसों दूर है। इस बढ़ती खाई को पाटने के लिए कठोर कदम उठाने होंगे। यह आधारभूत सत्य है कि मानव अपनी जन्मभूमि तथा मातृभाषा में ही सहज महसूस करता है। भारत जनसंख्या के आधार पर विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है। इसी जनसंख्या के कारण पूरी दुनिया भारत की मार्केट पर नजरें टिकाए हुए है। भारत में बेरोजगारी तीव्र गति से बढ़ रही है, इस पर लगाम लगाने के लिए मातृभाषा में रोजगार के उभरते नवीन अवसरों में कौशलता पर ध्यान देना अति आवश्यक है। अतः जितना संभव हो सके अपनी भाषा में हिंदी का समावेश सुनिश्चित करें, ताकि हिंदी की बुझती हुई लौ को पुनः जलाया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. साहित्य : विविध संदर्भ, डॉ0 लोठार लुत्से, राजकमल प्रका"ान, नई दिल्ली, संस्कर.ा–2003, पृ0 11
2. समकालीन कहानी : नया परिप्रे{य, पु'पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, दिल्ली, संस्कर.ा–2011, पृ0 31
3. समकालीन कहानी : नया परिप्रे{य, पु'पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, दिल्ली, संस्कर.ा–2011, पृ0 32
4. समकालीन कहानी : नया परिप्रे{य, पु'पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, दिल्ली, संस्कर.ा–2011, पृ0 32
5. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ0 बच्चन सिंह, लोकभारती प्रका"ान, इलाहाबाद, संस्कर.ा–2012, पृ0 27
6. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ0 बच्चन सिंह, लोकभारती प्रका"ान, इलाहाबाद, संस्कर.ा–2012, पृ0 15
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र "ाुक्ल, ना•री प्रचारि.ाी सभा, वारा.ासी, आठवां संस्कर.ा–2012, पृ0 246
8. हजारीप्रसाद f}वेदी x्रंथावली, संपा0 मुकुन्द f}वेदी, राजकमल प्रका"ान, दिल्ली, पहला संस्कर.ा 1981, ख.ड–09, पृ0 362
9. आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ, नरेन्द्र मोहन, राजकमल प्रका"ान, नयी दिल्ली, संस्कर.ा–2003, पृ0 19
10. समकालीन कहानी नया परिप्रे{य, पु'पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, नयी दिल्ली, प्रथम संस्कर.ा–2011, पृ0 36
11. कलाकार का सत्य, वि'.ाु प्रभाकर, राजकमल प्रका"ान, नई दिल्ली, संस्कर.ा–1996, पृ0 99
12. डॉ0 रामधारी सिंह 'दिनकर', रचनावली, ख.ड–6, संपा0 नंदकि"ाोर नवल, तरु.ा कुमार, लोकभारती प्रका"ान, इलाहाबाद, प्रथम संस्कर.ा–2011, पृ0 82–83
13. आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता, ••ाप्रसाद विमल, नयी किताब, दिल्ली, संस्कर.ा–2012, पृ0 15
14. समकालीन कहानी नया परिप्रे{य, पु'पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, नयी दिल्ली, प्रथम संस्कर.ा–2011, पृ0 35
15. समकालीन कहानी नया परिप्रे{य, पु'पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, नयी दिल्ली, प्रथम संस्कर.ा–2011, पृ0 36
16. आधुनिक हिन्दी कविता और आलोचना की }न्}ात्मकता, कमला प्रसाद, साहित्य वा.ाी प्रका"ान, इलाहाबाद, संस्कर. –2006, पृ0 16
17. तद्भव, संपा0 अखिले"ा, अभय कुमार दूबे, अंक–22, जुलाई–2010, लखनऊ, पृ0 75
18. आधुनिकता पर पुनर्विचार, अजय तिवारी, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, प्रथम संस्कर.ा–2012, पृ0 197
19. आधुनिकता पर पुनर्विचार, अजय तिवारी, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, प्रथम संस्कर.ा–2012, पृ0 197
20. हिन्दी का • साहित्य, रामचन्द्र तिवारी, वि"वविद्यालय प्रका"ान, वारा.ासी, संस्कर.ा–2012, पृ0 143

गणित का आधार

उदय कुमार राय
सहायक प्राध्यापक

जब हम अपने स्कूली जीवन को याद करते है, तो बचपन के उस अतीत में लौट जाते हैं। बचपन को याद करते ही किए गए सारे क्रिया कलाप और घटनाएं जीवंत हो उठटी है। कभी – कभी विद्यालय जाकर उन स्थानों को स्पर्श करने का मन करता है जहां अपने मित्र के साथ बैठते थे और शिक्षकों के द्वारा दिए गए ज्ञान को सुनते थे और पाठ्यपुस्तक पढ़कर दुहराते थे। हम सभी मूक रहते थे और शिक्षक ही बोलते थे। कभी – कभी पाठ्यपुस्तक के अंशो को पढ़ने के लिए शिक्षक कहते थे। प्रायः कक्षा में पिन ड्रॉप साइलेंस रहता था और समझा जाता था कि शिक्षण कार्य प्रभावी ढंग से चल रहा है क्योंकि बच्चे ध्यान से शिक्षक की बात सुन रहे होते थे और बच्चे काफी अनुशासित समझे जाते थे ऐसा माना जाता था कि जिस भी विषय की पढ़ाई चलती थी उसे वक्त मेरे मन में विषय वस्तु के बारे में जानने के लिए कहीं खुला प्रश्न मन में उठता था लेकिन हम एक प्रश्न नहीं पूछ अपने की हिम्मत जुटते थे।प्रायः यही हाल सब की थी इसका कारण एक तरफ संवाद था जिसमें शिक्षक पाठ्य पुस्तक से संबंधित प्रश्न केवल हम लोगों से करते थे। विषय वस्तु को समझने में यही महसूस होता था क्योंकि अवधारणा बनाने में काफी दिक्कत होती थी क्योंकि कक्षा में केवल पढ़ाई करना था सोने और सीखने के लिए बहुत कम समय दिया जाता था । सभी विषयों को समझने में यही दिक्कत थी हम सभी मित्र आपस में समझा कर विषय वस्तु को समझने का प्रयास करते थे। जब समझने में दिक्कत होती तो शिक्षक भी अलग समय में बुलाकर बताते थे जो बच्चे जागरुक थे और समझने की पकड़ उसमें होती थी वह कक्षा में मेधावी पहचाने जाते थे । बाकी सभी विमुख और हताश होते थे। वे कमजोर विद्यार्थी माने जाते थे अब यदि गणित विषय की बात करें तो इस विषय का नाम सुनते ही कक्षा में गणित की पढ़ाई से प्राय सभी बच्चों को भय लगता था। पढ़ने को जो सुख–दुख का अतीत अनुभव कराया उसमें सबसे ज्यादा गणित विषय के विषय वस्तु को समझने की समस्या थी। खास करके प्रारंभिक स्तर और माध्यमिक स्तर पर गणित का विषय वस्तु का ढांचा इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है कि विषय वस्तु के सोपान में पहले वाले विषय वस्तु की यदि समझ नहीं बन पाती है तो आगे की विषय वस्तु का हाल हम बच्चे नहीं कर पाएंगे। उच्च कक्षाओं में गणित सीखना समझना तभी आसान होगा जब निम्न कक्षाओं के गणित के विषय वस्तु के सोपान के क्रम की अवधारणात्मक समझ बनते चले जाएंगे ।

यहां पर हम प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर के गणित की बात करते हैं। प्राथमिक स्तर और उच्च प्राथमिक स्तर का गणित विषय मौलिक है जिसे बिना सीखे समझे और बिना अवधारणात्मक समझ बने आगे की विषय वस्तु का हाल बच्चे शायद नहीं कर पाएंगे। गणित सीखने की सबसे बड़ी चुनौती यही है। यही कारण है की गणित के परंपरागत शिक्षण में जो बच्चे समझ बना पा रहे होते हैं वह गणित के सवालों को हल कर लेते हैं और अन्य बच्चे पीछे जाते हैं और यह डर एवं भय बच्चों को विद्यालय से दूर करता है। उदाहरण के लिए प्राथमिक स्तर पर गणित के पाठ्यक्रम में गणितीय संक्रिया के बारे में जोड़ कॉम घटाओ कॉम गुना कमा भाग की बात करें तो आप समझ सकते हैं कि यदि बच्चों को भंग की संख्या करने के लिए कहेंगे तो वह भाग नहीं कर पाएंगे क्योंकि भाग करने की संक्रिया में जोड़ घटाव और गुण संक्रिया शामिल है ।अतः भाग तक पहुंचाने के लिए बच्चों में जोड़ घटाव और गुणा करने का स्वामित्व होना जरूरी है। अतः यह आवश्यक है की सबसे पहले जोड़ करना सीखें तब घटाओ और उसके बाद गुणा करना सीखे। अब आप बताएं कि क्या घटाव करने में जोड़ की संक्रिया शामिल है या नहीं और गुणा करने में अंको का जोड़ शामिल है कि नहीं। क्या गुण जोर का संक्षिप्त रूप है प्रश्न वाचक चिन्ह विश्लेषण कीजिए। गणितीय संक्रिया में जोड़ घटाव गुणा और भाग एक दूसरे से परस्पर जुड़ा हुआ है और गणित के आगे के सवालों को हल करने में इन गणितीय संक्रियाएं आधार स्तंभ है।

बच्चे बच्चे गणितीय संक्रियाएं करने में क्या–क्या भूल करते हैं प्रश्न वाचक चिन्ह आप जरा सोच कर बताएं। जब इस बात पर गौर करना शुरू किया तो पता चला कि बच्चे अंको को जोड़ तो लेते हैं लेकिन स्थानीय मान की अवधारणा और समझ नहीं होने के कारण जोड़ने के बाद संख्या को सही ढंग से निरूपित नहीं कर पाते हैं।

○ एक गणित शिक्षक होने के नाते हमें अपने शिक्षण अभ्यास के क्रम में बच्चों के सीखने के स्तर की जांच करना आवश्यक है कि वह गणित के किन–किन अवयवों में कहां–कहां गलतियां करते हैं। इसके लिए हमें रणनीति के तहत शुरुआत से संख्या से जुड़े मामले यानी बच्चे संख्या की पहचान के लिए छोटी संख्या और बड़ी संख्या को कम बार अंतर कर पाने के लिए स्थानीय मान के लिए कर हासिल वाला जो गुना एवं भाग के लिए बच्चों का नैदानिक जांच करना आवश्यक है। नैदानिक जांच के लिए बच्चों को उपरोक्त अवयवों से संबंधित प्रश्न देकर एक–एक बच्चे का जांच कर रिकॉर्ड रख सकते हैं और बच्चों द्वारा की जाने वाली गलतियों की सुधार हेतु उनके अवधारणात्मक समझ का विकास के लिए कई उपाय तथा टीएम के जरिए कई अप का उदाहरणों के जरिए और गतिविधियों के जरिए आप कर सकते हैं।

बच्चे पाठ पुस्तक के कागज पर उतरे हुए जयमितिक आकृतियां जैसे रेखा त्रिभुज चतुर्भुज घन घनाभ वित्त गोला बेलन शंकु इत्यादि से परिचित होते हैं हम भी सभी बच्चों को श्यामपट्ट पर ज्यामितिक आकृतियां बनाकर संतुष्ट हो जाते हैं कि बच्चों में ज्यामितिक आकृतियों की समझ बन गई होगी उन व्यायाम क्या आपने सोचा है कि जब हम श्यामपट्ट पर वृत्त और गोल दागन घनाभ बेलन शंकु इत्यादि पर चर्चा करते हैं तो बच्चे वृत्त और गोला में फर्क नहीं कर पाए उन ग्राम घन और घनाभ के पीछे के सात को नहीं देख पाते हैं पूर्ण बिना बेलन और शंकु के साथ भी यही बात होती है। क्या ज्यामितिक आकृतियों का चित्र बनाकर और उसे परिभाषित करने पर बच्चों को ज्यामितिक आकृतियों की अवधारणा बनेगी ? । आप इस पर गहन विचार करेंगे पूर्ण बिना हमें तो लगता है कि ज्यामितिक आकृतियों की पहचान करने के लिए बच्चों को आसपास के ज्यामितिक आकृति वाले कई वस्तुएं हैं जिन्हें बच्चों को हाथ में देकर और अवलोकन करने के लिए कहना चाहिए यथा उन्हें अंतर करने के लिए अपना विचार प्रस्तुत करने के लिए कहना चाहिए सहयोग करने के लिए आप तो हैं ही। तभी वह पहचान कर पाएंगे कि वृत्त और गोला में क्या फर्क है और घन में धान में कितनी सत्ता और सिर्फ होते हैं। बच्चे छूकर और देखकर बता पाएंगे। श्यामपट्ट पर ज्यामिति के आकृतियों के साथ चर्चा करते हुए यदि बच्चों को ज्यामितिक आकृतियों से संबंधित टीएम को दिखाकर एवं उनके हाथ में देकर सीखने का मौका देंगे और आप बच्चों को सिखाने में सहयोग करते चले जाएंगे तो बच्चे बाद में श्यामपट्ट पर भी त्रिभुज और चतुर्भुज यथा वर्ग आयात और चतुर्भुज के अन्य प्रकारों के भुजा और को की पहचान कर पाएंगे। को का मैप पर पाएंगे और स्वयं से मापन कर और अवलोकन कर प्रमेय अथवा सिद्धांत को निरूपित कर पाएंगे और जब पाठ पुस्तक में दिए गए प्रमेय सिद्धांत और परिभाषा की सत्यता की जांच स्वयं से मापन और अवलोकन कर अपने द्वारा लिखित निष्कर्ष से मिलान करेंगे तो उसे असीम खुशी मिलेगी और उन्हें तब गणित सीखना रोचक लगेगा। हम भूल कर जाते हैं और ज्यामितिक आकृतियों के परिणीति क्षेत्रफल आयतन इत्यादि का हाल बनी बनाई समीकरण को रत्वाकर बच्चों से हल करवाते हैं ज्यामितिक आकृतियों के परिणीति क्षेत्रफल आयतन के समीकरण के बीच पट्टी कैसे हुआ है इसे टीएम से और कागज के पन्नों को फैलाकर मोड़कर बच्चों को दिखाएं और उन्हें सीखने में व्यस्त करें तो वह आसानी से समीकरण की अवधारणा को समझ सकेंगे और इससे जुड़े सभी प्रकार के प्रश्नों का हल कर पाएंगे और हल करने में उन्हें बड़ा मजा आएगा पूर्ण बिना मेरा अनुभव है कि ज्यामितिक आकृतियों को समझने और उनके परिमाप क्षेत्रफल आयतन इत्यादि को समझने के लिए कागज का पाना बहुत ही टी एल एम के रूप में कारगर है। गणित की अपनी भाषा होती है। गणित की शब्दावलियां और संकेत गणित की भाषा करती है और इससे बच्चे काफी सहमी हुई होते हैं। हम सभी शिक्षक साथी को चाहिए की गणितीय शब्दावलियों और संकेत की अवधारणा को बच्चों में स्पष्ट करने की बच्चों के जुबान पर शब्दावली आते ही और संकेत को देखते ही पहचान में आ जाए तो बच्चे गणितीय

भाषा को आसानी से आम भाषा की तरह समझ लेंगे। उन्हें गणित सीखना तब आसान लगेगा रोचक लगेगा और दर्द एवं समस्या नहीं रहेगा पूर्ण बिना ऐसा होने से भी इमरती सवालों को भी आसानी से हल कर पाएंगे।

गणित गणित का पाठ्य पुस्तक यह ज्ञान की परख उसके उपयोग करने से है। बच्चों का गणित का स्वामित्व प्राप्त करना तभी कह सकेंगे जब वह अपने दैनिक जीवन में गणित के विभिन्न अवयवों और आयाम को व्यवहार कर सकेंगे। तब हम समझेंगे कि उनका गणितीय कारण हो गया है। उदाहरण के लिए बाजार में में सामान खरीदने या बेचते समय रुपए और पैसे का सही लेनदेन कर रहा है अपने घर का या किसी जगह का या किसी चीज का कौन परिमाप क्षेत्रफल एवं आयतन बताइए ऊर्जा का सही उपयोग करना सीख लिया है। हमने यहां जो बच्चों का मौलिक गणित सीखने का उदाहरण दिए हैं यह सब सिखाना सृजनात्मक उपागम से संबंधित है और मेरा बच्चों में सृजन करने की अकूत क्षमता होती है उन विराम उन्हें सृजन और रचना करने का भरपूर मौका देना चाहिए उन ग्राम बस बच्चों को सीखने के लिए उनके ही हाथों में सीखने की सामग्री दिन उनके अपने हाथों से सृजन और रचना करने का मौका दें तब वह सोचना प्रारंभ करेंगे और समस्या का हाल वे स्वयं निकलेंगे जिसमें आपका सतत सहयोग करना जरूरी है और आप सही दिशा में सीखने के लिए बच्चों को उन्मुख करते रहे।

जिस टी एल एम वस्तुओ तथा अन्य चीजों के माध्यम से और गतिविधियों के माध्यम से तथा चित्र के माध्यम से बच्चों को प्राथमिक स्तर और उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित सीखने सिखाने की बात कर रहा हूं इसके पीछे या आधार है कि प्रारंभ में बच्चे स्थूल रूप से ही किसी चीजों को स्पर्श कर और अवलोकन कर पहचानता है संख्या को पहचानता है और गिनता है गणितीय संक्रियाएं करता है और तब धीरे–धीरे गणितीय संक्रियाएं और गणित के सभी अवयवों और आयाम को हाथ की उंगलियों से करते हुए धीरे–धीरे मानसिक रूप से करने का स्वामित्व प्राप्त कर लेता है अर्थात बच्चों का गणित सीखना स्थल से सूक्ष्म की ओर बढ़ता चला जाता है अर्थात गणित का सीखना ज्ञात से अज्ञात की ओर अग्रसर होता है। हमें आशा है कि बच्चों में गणित विषय के प्रति डर है और समस्या को दूर करने के लिए हमें गणित को रोचक और आनंद बनाना आवश्यक है ताकि बच्चे आसानी से गणित के सभी अवयवों और आयाम को बढ़ाते हुए क्रम में सीख पाए और सीखे हुए गणित को जीवन में उतर सके।

" Mathematics is the real philosophy of the life ".

बाल अपराध

डॉ0 सुलेखा रानी
सहायक प्राध्यापिका

भारत में बाल अपराधी आम तौर पर छोटी–मोटी चोरी से ल`कर हमला या यहाँ तक कि हत्या जैसे अधिक गंभीर अपराधों में शामिल होते हैं। इस अपराध के पीछे कइ´ कारण होते हैं, जिनमें गरीबी, पारिवारिक कलह, साथियों का प्रभाव, शिक्षा की कमी, सोशल मीडिया का दुष्प्रभाव तथा मादक द्रव्यों के सेवन के संपर्क में आना आदि शामिल हैं। सामाजिक–आर्थिक स्तर पर गरीबी बाल अपराध का एक महत्वपूर्ण कारण है। कई बाल अपराधी गरीब पृष्ठभूमि से आत` हैं जहाँ उनक` बुनियादी ज़रूरत` पूरी नहीं होती हैं और ऊपर की ओर के प्रभाव को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता है। आज का बालक बहुत सी जानकारी के संपर्क´ में हैं, जिनमें स` कुछ हिंसा या आपराधिक गतिविधियो ं का महिमामंडन भी शामिल हैं, जो उनकी आपराधिक गतिविधियों को आकार देती ह" और संभावित रूप से उनके अपराधीक कार्यों को निर्देशित करती हैं। इस प्रकार बाल अपरारध एक चुनोती बनकर हमारे सामने खड़ा है। अतः बाल अपराध क` समाधान के लिए कानूनी प्रणाली से आगे

शब्द कुंजी : बाल अपराध, चोरी, हत्या, शिक्षा का अभाव, परिवारिक संरचना आदि। **प्रस्तावना**

बाल अपराध हमारे समाज व देश के सामने एक गंभीर चुनोती बनकर खड़ा है। आए दिन आल अपराधी की खबड़े विभिन्न समाचार चैनलों के माध्यम से हमें प्राप्त होती रहती है। बाल अपराध जैसे की नाम से स्पष्ट है कि बच्चों द्वारा किया जाने वाला अपराध। बाल अपराध की समस्या समाज के लिए नई नहीं है। यह सभी समाजो ं में हा`ता है, चाहे वह सरल हो या जटिल। बाल अपराध नाबालिगा` (वयस्कता की वैधानिक आयु से कम आयु के व्यक्ति)द्वारा किए गए आपराधिक कृ त्य या अपराध हैं। ये अपराध वयस्कों की तरह 'अपराध' की श्रेणी में नहीं आते। बल्कि, नाबालिगा` द्वारा किए गए अपराधों को 'अपराधी क ृत्य' कहा जाता है। यह केवल कानूनी समाधान नहीं है, बल्कि इसमें समस्या के मनोवैज्ञानिक और पारिवारिक दोनों पहलुओं पर विचार करना होता है। इसमें दो तरह के व्यवहार शामिल हैं, यानी स्थिति और अपराधी का अपराध। स्थिति अपराध वे हैं जो बच्चों और किशोरा` के लिए अनुपय ुक्त या अस्वस्थ हैं और इसलिए अपराधी की आयु के कारण व्यवहार निषिद्ध है। धूम्रपान, शराब पीना, स्क ूल से भागना और घर से भाग जाना स्थिति अपराधों के कुछ उदाहरण हैं। अपराधी का अपराधों का मतलब है । क़ानूनों का उल्लंघन। उदाहरण के लिए, हत्या, बलात्कार, हमला, उत्पीड़न, पीछा करना, डकैती आदि।1 बाल अपराध के कारण कोई भी व्यक्ति जन्मजात अपराधी नहीं होता। बच्चे के घर के अंदर और बाहर की विभिन्न परिस्थितियाँ उसके जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बालको ं का अपराधों से जुड़ने का सबसे आम कारण हैं गरीबी, बाल शोषण, मानसिक स ंघर्ष, किशोरावस्था म` अस्थिरता, नशीली दवाओं का दुरुपयोग, अपमानजनक माता–पिता, पारिवारिक हिंसा और असामाजिक सहकर्मी समूह आदि।

हालाँकि, जहाँ तक भारत का सवाल है, गरीबी बच्चों के जीवन में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। यह एक प्रमुख कारण है जिसके कारण बच्चे आपराधिक कृत्यों की ओर प्रवृत्त होते हैं। गरीबी बच्चों को आपराधिक कृत्यों में शामिल हा`न` के लिए मजबूर करती है। गरीबी कई तरह से असामाजिक गतिविधियों को जन्म देती है। असंता`षजनक मानवीय संबंधों को अक्सर अभाव और गरीबी से उत्पन्न होते द`खा गया है। च ूंकि गरीब ला`गा` म` कुपोषण और खराब शारीरिक स्वास्थ्य के कारण मानसिक प्रतिरोध कम होता है। वे झुग्गी–झोपड़ियो ं में रहते हैं जहाँ पड़ोस और पर्यावरण पर्याप्त व सुरक्षित नहीं है क्योंकि उनक` पास आवासीय इलाके क` चयन में कोई अन्य विकल्प नहीं है। इससे खराब परिस्थितियाँ पैदा होती हैं क्योंकि बच्चे सड़कों पर अपना मनोरंजन करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। बजट की समस्या पति–पत्नी के बीच झगड़ों को लोगों पर अलग–अलग असर डालती है, जैसे कुछ लोगों के लिए इसका दबाव असामाजिक व्यवहार का कारण बन सकता है। आज सोशल मीडिया किशोर मन पर सकारात्मक से ज़्यादा नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। इस बात पर चिंता बाल अपराध के कई कारण हैं। इनम` घरेलू हिंसा, गरीबी और उच्च अपराध दर वाले क्ष`त्रों में रहना, अपर्याप्त सामाजिक समर्थन और शिक्षा तक पहुँच की कमी शामिल है। कोई भी बाल अपराधी शत्रुता, क्रोध और घृणा के साथ पैदा नहीं होता है, उनक` वातावरण और समाज ने उन्हे ं ऐसा बना दिया है। किशा`रावस्था से पहले और किशोरावस्था के दौरान कई किशोर व्यवहार बच्चों के लिए सामान्य व्यवहार माने जा सकत` हैं। हालाँकि, कुछ संकेत हैं कि बच्चा गलत दिशा में शामिल हा` सकता है। इनमें नियमों का लगातार उल्लंघन, आक्रामक व्यवहार आदि शामिल हैं। किशोर अपराधियों में कुछ जोखिम कारक आम हैं जैसे साथियों की संगति, कम सामाजिक आर्थिक स्थिति, खराब स्कूल प्रदर्शन, साथियों द्वारा अस्वीकृति, मानसिक विकार, अनुमोदक पालन–पोषण और सत्तावादी पालन–पोषण। परिवार में संरचनात्मक टूटन, तनाव, झगड़े आदि शांतिपूर्ण जीवन में व्यवधान पैदा करती है जिसका बच्चों पर दर्दनाक प्रभाव पड़ता है। हालांकि, कुछ परिस्थितियों में पारिवारिक वातावरण माहौल को बेहतर बनाता है। इस तरह क` सुधार के पीछे मुख्य कारण परिवार के सदस्यों के बीच

आपसी संवाद और परिस्थितियाँ हैं। वर्षों से, किशोर अपराध का सबसे आम कारण माता–पिता की बच्चों के पालन–पोषण में उनकी भूमिका को माना जाता है। प्रारंभिक पारिवारिक प्रशिक्षण मूल्यों और मानदंडों को विकसित करने में मदद कर सकता है जो बच्चे को समाज के मूल्यों के बारे में जागरूक बनाता है और उसकी विशेषताएँ प्राप्त करता है। बच्चों को उन कार्यों के बारे में ज्ञान होना चाहिए जो अनुमत हैं, निषिद्ध हैं और उनके पीछे का कारण भी उसे पता होना चाहिए कि दूसरों के साथ कैसे मिलना है, यानी दूसरे बच्चों और वयस्कों के साथ कैसा व्यवहार करना है। बच्चे को किस तरह से संभाला जाता है और परिवार में कौन उसका आदर्श है, इस पर निर्भर करते हुए बच्चा बुनियादी ज़िम्मेदारियाँ सीखना शुरू कर देता है, यानी घर के अंदर और बाहर। माता–पिता की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका यह है कि वे उचित और सुसंगत तरीके से व्यवहार करें ताकि बच्चा असुरक्षित महसूस न करे। जोखिम कारक दो प्रकार के होते हैं, यानी व्यक्तिगत या पारिवारिक वातावरण और साथियों का प्रभाव। बच्चे के जीवन में पालन–पोषण की शैली और साथियों के समूह का जुड़ाव एक प्रमुख भूमिका निभाता है। लगभग सभी शोधकर्ता इस बात पर सहमत हैं कि अपराधी किसी न किसी तरह से कलह, तलाक या दुर्व्यवहार की विशेषता रखते हैं। बच्चे का आस–पास का वातावरण भी बच्चे के दिमाग को प्रभावित कर सकता है क्योंकि वह ऐसी जीवनशैली अपना सकता है जिसमें अपराधी कृत्य शामिल हों। कम बुद्धि, आवेग, आक्रामकता, सहानुभूति की कमी और बेचैनी व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक जोखिम कारकों में शामिल हैं। माता–पिता की देखरेख का स्तर, माता–पिता द्वारा बच्चे को अनुशासित करने का तरीका, माता–पिता का अलगाव, कठोर दंड, माता–पिता की उपेक्षा, माता–पिता द्वारा दुर्व्यवहार, अपराधी माता–पिता, अपराधी भाई–बहन पारिवारिक वातावरण के कुछ जोखिम कारक हैं। वर्ष 2024 में पकड़े गए 75% किशोर 16 वर्ष से अधिक आयु के थे। वर्ष 2024 में 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता के अंतर्गत मामले दर्ज किए गए। वर्ष 2024 में गिरफ्तार किए गए कुल किशोरों में 2,609 बार–बार अपराध करने वाले किशोर शामिल थे। वर्ष 2024 में जितनी हत्याएं हुईं, उनमें से 2.5% किशोरों द्वारा की गईं और बलात्कारों में से 5.4% बलात्कार नाबालिगों द्वारा किए गए। बाल अपराधियों के मुकदमे के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित मजिस्ट्रेटों के साथ विशेष अदालतें स्थापित की जाती हैं। 'मुकदमे' के बजाय, किशोर को 'न्याय–निर्णय' मिलता है, जिसके बाद उसे 'निर्णय' और सजा मिलती है। इसमें अपराधियों के लिए सुधार विद्यालय बनाने का भी प्रावधान है। भारत जैसे विकासशील देश में किशोरों की उपेक्षा और अपराध की समस्या सांख्यिकी के अनुसार काफी नियंत्रण और स्थानीय समुदाय है।

स्वतंत्रता के पश्चात किशोर न्याय अधिनियम, 1986 को अपराधी किशोरों की देखभाल, संरक्षण, पुनर्वास और विकास के लिए अधिनियमित किया गया। किशोर न्याय अधिनियम, 1986 को पूरे देश में किशोर न्याय के क्षेत्र में एक समान प्रणाली और प्रक्रिया के गठन के लिए पेश किया गया था। इस अधिनियम के तहत, किशोर लड़के की आयु सोलह वर्ष और लड़की की आयु अठारह वर्ष रखी गई थी। अधिनियम की धारा 2 (ए) के तहत किशोर की परिभाषा 'लड़का जो 16 वर्ष की आयु प्राप्त नहीं की है और लड़की जो 18 वर्ष की आयु प्राप्त नहीं की है' के रूप में की गई है।

यह कानून यूएनसीआरसी (संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार सम्मेलन), 1989 से पहले पारित किया गया था, जिसे 1992 के बाद भारत द्वारा अनुमोदित किया गया था। 2000 में, पूर्व कानून को निरस्त कर दिया गया और एक नया कानून जो अधिक विस्तृत था, यानी किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2000 अधिनियमित किया गया और बाद में अंतर्राष्ट्रीय अनुमोदित कानूनों का पालन करने के लिए बच्चे की आयु । किशोर न्याय कानून के अधिनियमन के पीछे एक कारण बच्चों की देखभाल और कल्याण के संबंध में भारत के संवैधानिक दृष्टिकोण को प्राप्त करना था। भारत के संविधान के तहत प्रावधान जो बच्चों को विशेष दर्जा देते हैं, वे अनुच्छेद 15(3), 24, 39(ई) और (एफ) और 45 हैं। इसके अलावा बाल निषेध अधिनियम, 1986 को संवैधानिक निर्देशों के माध्यम से अधिनियमित किया गया था। उल्लेखनीय है कि बच्चों के लिए राष्ट्रीय नीति, 1974 और 2013 में घोषणा की गई है कि बच्चे राष्ट्रीय संपत्ति हैं। किशोर न्याय (देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2000 में प्रावधान है कि किशोर अपराधी को 'संरक्षण गृह' में रखा जा सकता है। दूसरी ओर, देखभाल और संरक्षण की आवश्यकता वाले बच्चों को सक्षम प्राधिकारी के समक्ष कार्यवाही लंबित रहने तक 'बाल गृह' में रखा जाना चाहिए। इस अधिनियम के पीछे मुख्य उद्देश्य बच्चे का पुनर्वास करना और उसे समाज की मुख्यधारा में शामिल करना था। इस कदम के पीछे विचारधारा यह है कि उसकी कम उम्र और परिपक्वता की कमी के कारण उसके सुधार की संभावनाएँ हैं। इसलिए, बच्चे की सुरक्षा और सुधार की जिम्मेदारी राज्य पर है।

बाल अपराध के रोकथाम के उपाय

यह व्यापक रूप से माना जाता है कि किशोर अपराध को रोकने के लिए प्रारंभिक चरण में हस्तक्षेप सबसे अच्छा तरीका है। अपराध पर नियंत्रण के लिए किशोर न्याय अधिनियम, 2015 के प्रभावी कार्यान्वयन के साथ–साथ पूर्ण सार्वजनिक जागरूकता और पेशेवरों और कानून प्रवर्तन एजेंसियों को उचित अभिविन्यास और प्रशिक्षण की आवश्यकता है। सरकार को किशोरों के लिए उपयोगी और आकर्षक लाभकारी दीर्घकालिक योजनाओं पर अधिक जोर देना चाहिए ताकि वे समाज की मुख्य धारा में शामिल होने के लिए प्रेरित महसूस करें। इस प्रकार वे अपना आत्मविश्वास पुनः प्राप्त करते हैं, जो

आमतौर पर समाज के उदासीन रवैये के कारण खो जाता है। व्यवस्था में शामिल पुलिस जैसी एजेंसिया ें का दृष्टिकोण शुद्ध दंडात्मक के बजाय सुधारात्मक चरित्र का अधिक हो सकता है। इसका उद्देश्य अपराधियों को दंडित करने के बजाय उन्हें सुधारना हो सकता है। रोकथाम प्रक्रिया में व्यक्तियों के साथ–साथ समूह और संगठनात्मक प्रयासा ें की भागीदारी शामिल है, जिसका उद्देश्य किशोरों को कानून ता ेड़ने से रोकना है। कशोर अपराध एक सामाजिक बीमारी है, बच्चे या किशोर का इस तरह से इलाज किया जाना चाहिए, ताकि वह समाज के साथ फिर से तालमेल बिठा सके। समाज के साथ असंतुलन को बदलना होगा। किशोर अपराध का मूल कारण बुनियादी सुविधाओं से वंचित हा ेना है, जिसे वे असामाजिक तरीकों से पूरा करने की कोशिश करते हैं। इसलिए, हर बच्चे की बुनियादी जरूरतों को सामाजिक रूप से स्वीकृत तरीक े से पूरा करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए, चाहे वह अपराधी हो या गैर–अपराधी। अपराधी बच्चों का अतिरिक्त ध्यान रखा जाना चाहिए। प्रत्येक किशोर अपराधी पर व्यक्तिगत रूप से विचार किया जाना चाहिए। मुख्य ध्यान उसकी शक्ति, प्रतिष्ठा और मान्यता की जरूरतों की पूर्ति पर होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्तिगत मामले को ऐस े अपराधी कृ त्यों को करने के पीछे विशिष्ट समस्याओं और कारणा ें को ध्यान में रखते हुए अलग से इसक े साथ ही बाल अपराध की रोकथाम के लिए अन्य उपाय किए जा सकत े हैं जैसे – कुसमायोजन के लक्षणों पर नजर रखना, बच्चे को विविध अनुभव प्रदान करना, नैतिक और सामाजिक मूल्यों की एक स्थायी प्रणाली बनाने का प्रयास करना, अपराधी को अस्वीकार किए बिना अपराधी व्यवहार को अस्वीकार करना, बच्चे को असामाजिक प्रवृत्तियों के अस्तित्व के बारे म ें बात करना और उस े स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करना, तथा घर, स्क ूल और समुदाय की स्थिति में बदलाव लाना आदि। इस प्रकार इन उपायों पर ध्यान देकर बाल अपराध का े रोका जा सकता है।

नष्कर्ष

सिर्फ किशोर न्याय अधिनियम के उचित कार्यान्वयन और संशोधनों से किशोर अपराध कम नहीं हो सकत े। हमारे समाज में मौज ूद इस बीमारी के बारे में नागरिक समाज को जागरूक करना बहुत जरूरी है। अपराधों में शामिल किशोर न केवल अपराधी हैं, बल्कि इस बीमार समाज के पीड़ित भी हैं। किशोर अपराध को कम उम्र में ही रा ेका जा सकता है, बशर्ते घर और स्क ूल में उचित देखभाल की जाए। माता–पिता और शिक्षक बच्चे के दिमाग को विकसित करने।

संदर्भ :

1 मुकर्जी, रवीन्द्र नाथ एवं अग्रवाल, भगत (2003) सामाजिक समस्याएँ, विव ेक प्रकाशन, दिल्ली, 2003

2 महाजन, संजीव (2011) सामाजिक समस्याएँ, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली

3 आहुजा, राम (1997) सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशन्स, नइ ्रं दिल्ली

4 नाटानी, प्रकाश नारायण एव ं शर्मा, प्रज्ञा (2000) भारत में सामाजिक समस्याएँ, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयप ु

5 पाण्डेय, गणेश (2004) अपराध शास्त्र, राधा पब्लिकेशन्स नइ ्रं दिल्ली

6 शर्मा, नर ेन्द्र कुमार (2011) अपराधशास्त्र, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

शिक्षा और बेरोज़गारी

डॉ. पवन कुमार
सहायक प्राध्यापक

प्रस्तावना

शिक्षा और बेरोज़गारी, ये दोनों शब्द अपने-आप में गहराई और महत्व लिए हुए हैं। शिक्षा किसी भी देश की रीढ़ होती है, वहीं बेरोज़गारी उस देश की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को खोखला कर सकती है। आज के भारत में यह दोनों विषय एक-दूसरे से जुड़े हुए दिखाई देते हैं। शिक्षित होने के बावजूद जब युवाओं को रोजगार नहीं मिलता, तो यह केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चिंता का विषय बन जाता है।

शिक्षा का महत्व

शिक्षा न केवल ज्ञान और जानकारी प्रदान करती है, बल्कि सोचने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित करती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को बेहतर बना सकता है और समाज में सकारात्मक योगदान दे सकता है। एक शिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग होता है और सामाजिक बुराइयों से लड़ने की ताकत रखता है।

बेरोज़गारी की परिभाषा

बेरोज़गारी का अर्थ है—ऐसे लोग जो काम करने के इच्छुक और सक्षम हैं, लेकिन उन्हें उनके योग्य कार्य नहीं मिल रहा है। यह स्थिति किसी भी राष्ट्र के लिए चिंताजनक होती है, क्योंकि यह आर्थिक विकास की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। आज भारत में लाखों युवा स्नातक, स्नातकोत्तर, इंजीनियरिंग, मेडिकल, और अन्य उच्च शिक्षाएं पूरी करने के बावजूद बेरोज़गार हैं।

शिक्षित बेरोज़गारी: एक ज्वलंत समस्या

आज सबसे बड़ी विडंबना यह है कि देश में शिक्षित लोगों की संख्या बढ़ रही है, परंतु रोजगार के अवसर उतनी तेज़ी से नहीं बढ़ रहे। इसके कई कारण हैं:

1. **व्यावसायिक शिक्षा की कमी** – अधिकतर छात्र सिर्फ किताबी ज्ञान प्राप्त करते हैं, लेकिन उन्हें व्यावहारिक प्रशिक्षण या स्किल्स नहीं दिए जाते।
2. **कोर्स और बाज़ार में असंतुलन** – जो पाठ्यक्रम कॉलेजों में पढ़ाए जा रहे हैं, वे बाज़ार की ज़रूरतों से मेल नहीं खाते।

बेरोज़गारी के दुष्परिणाम

बेरोज़गारी के कारण समाज और देश दोनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है:

- **अपराध में वृद्धि** – युवा जब लंबे समय तक बेरोज़गार रहते हैं, तो निराशा उन्हें गलत रास्ते पर ले जा सकती है।
- **आत्महत्या और मानसिक तनाव** – रोज़गार न मिलने से लोग अवसाद में चले जाते हैं और आत्महत्या जैसे कदम उठाने लगते हैं।
- **आर्थिक असमानता** – बेरोज़गारी से आर्थिक विषमता बढ़ती है, जो सामाजिक असंतोष को जन्म देती है।

समाधान के उपाय

इस समस्या का समाधान केवल सरकार पर छोड़ना उचित नहीं। इसके लिए संयुक्त प्रयास की आवश्यकता है।

1. शिक्षा प्रणाली में सुधार

- स्कूली शिक्षा से ही व्यावसायिक शिक्षा को महत्व दिया जाना चाहिए।
- नई तकनीकों और उद्योगों के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार किए जाएं।

2. स्वरोज़गार को बढ़ावा

- युवाओं को स्वरोज़गार हेतु प्रेरित किया जाए। स्टार्टअप, कृषि, कुटीर उद्योग, डिजिटल सेवाओं आदि में अवसर प्रदान किए जाएं।
- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया जैसी योजनाओं का अधिक प्रचार-प्रसार हो।

3. इंटरर्नशिप और ट्रेनिंग

- कॉलेज स्तर पर ही छात्रों को प्रशिक्षण (इंटरर्नशिप) के माध्यम से उद्योग से जोड़ा जाए।

4. कौशल विकास (Skill Development)

- 'Skill India' जैसी योजनाओं के माध्यम से युवाओं को कंप्यूटर, भाषा, तकनीकी, ट्रेड स्किल्स आदि में प्रशिक्षित किया जाए।

5. प्राइवेट सेक्टर में सुधार

- निजी कंपनियों में भी स्थायित्व, उचित वेतन और कार्य-संतुलन हो, जिससे अधिक युवा वहां कार्य करना चाहें।

सरकार की भूमिका

सरकार को चाहिए कि वह शिक्षा और उद्योग के बीच की खाई को पाटे। रोजगार के नए क्षेत्र जैसे – आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा एनालिटिक्स, डिजिटल मार्केटिंग, नवीकरणीय ऊर्जा आदि को बढ़ावा दे। साथ ही, शिक्षा नीति को इस तरह बदले कि छात्र 'नौकरी खोजने वाले' नहीं, बल्कि 'नौकरी देने वाले' बनें।

निष्कर्ष

शिक्षा और बेरोज़गारी दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। केवल डिग्रियाँ प्राप्त करना पर्याप्त नहीं, जब तक उन डिग्रियों से जीविका नहीं चलाई जा सके। इसलिए शिक्षा को इस प्रकार से ढाला जाए कि वह रोजगार उन्मुख हो। साथ ही, युवाओं में आत्मविश्वास, नवाचार और उद्यमिता को प्रोत्साहित किया जाए। तभी एक शिक्षित और आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार हो सकेगा।

मैथिली साहित्य का अध्ययन: एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत

सुरेन्द्र प्रसाद चौधरी
सहायक प्राध्यापक

प्रस्तावना

मैथिली साहित्य भारतीय साहित्य की एक समृद्ध और प्राचीन परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। यह साहित्य मुख्य रूप से बिहार और नेपाल के तराई क्षेत्रों में बोली जाने वाली मैथिली भाषा में रचा गया है। मैथिली साहित्य का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है और इसमें कविता, गद्य, नाटक, लोकसाहित्य आदि विभिन्न विधाओं का विशाल भंडार समाहित है। इस लेख में हम मैथिली साहित्य के ऐतिहासिक विकास, प्रमुख रचनाकारों, विशेषताओं और समकालीन परिदृश्य का विस्तृत अध्ययन करेंगे। मैथिली साहित्य का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

प्रारंभिक काल (12वीं से 15वीं शताब्दी)

मैथिली साहित्य का आरंभ मध्यकालीन युग से माना जाता है। इस काल की सबसे प्रमुख हस्ती थे विद्यापति (1350-1450), जिन्हें मैथिली साहित्य का स्तंभ माना जाता है। विद्यापति ने भक्ति और श्रृंगार रस की अद्भुत कविताएँ रचीं जो 'पदावली' के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनकी रचनाओं में राधा-कृष्ण की प्रेम लीला का मार्मिक चित्रण मिलता है।

मध्यकाल (16वीं से 18वीं शताब्दी)

इस युग में मैथिली साहित्य में विविधता आई। धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों के साथ-साथ सामाजिक जीवन भी साहित्य का विषय बना। गोविन्द दास, लोचन दास और चंडी दास जैसे कवियों ने इस युग में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस काल में मैथिली लोकगीतों और लोककथाओं का भी विकास हुआ।

आधुनिक काल (19वीं शताब्दी से वर्तमान तक)

19वीं शताब्दी में मैथिली साहित्य में नवजागरण की लहर आई। हरिमोहन झा, सुभद्रा झा, यदुनाथ सिंह 'मधुप' जैसे रचनाकारों ने मैथिली साहित्य को नई दिशा दी। 20वीं शताब्दी में डॉ. सुभद्रा झा, जयकांत मिश्र, राजकमल चौधरी जैसे साहित्यकारों ने मैथिली साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाई। 2003 में मैथिली भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया, जिससे इसके विकास को नया बल मिला।

मैथिली साहित्य की प्रमुख विधाएँ काव्य

मैथिली काव्य परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। विद्यापति की पदावली मैथिली काव्य की अमूल्य निधि है। आधुनिक युग में भी मैथिली कविता निरंतर विकसित हो रही है। प्रमुख कवियों में बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', केदारनाथ झा, उमेश मिश्र आदि शामिल हैं।

साहित्य

मैथिली गद्य साहित्य में उपन्यास, कहानी, निबंध, आत्मकथा आदि विधाएँ विकसित हुई। हरिमोहन झा का "कनैलोरि कथा" मैथिली का पहला उपन्यास माना जाता है। राजकमल चौधरी, लक्ष्मण झा, धूमकेतु जैसे लेखकों ने मैथिली गद्य को समृद्ध किया।

नाटक एवं एकांकी

मैथिली नाटक परंपरा भी काफी पुरानी है। प्रारंभ में यह लोकनाट्य के रूप में विकसित हुआ। बाद में सुधाकर झा, रामदेव झा, विजय कुमार मिश्र जैसे नाटककारों ने इसे नया आयाम दिया।

लोकसाहित्य

मैथिली लोकसाहित्य अत्यंत समृद्ध है। लोकगीत, लोककथाएँ, पहेलियाँ, मुहावरे आदि मैथिली संस्कृति के जीवंत दस्तावेज हैं। विवाह, तीज-त्योहारों, मौसम परिवर्तन आदि अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीत मैथिली संस्कृति की धड़कन हैं।

मैथिली साहित्य के प्रमुख रचनाकार विद्यापति

मैथिली साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि विद्यापति को 'मैथिल कोकिल' कहा जाता है। उनकी रचनाओं में भक्ति और श्रृंगार का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। उनके पद बंगाल, असम, उड़ीसा आदि क्षेत्रों में भी लोकप्रिय हुए। **हरिमोहन झा**

आधुनिक मैथिली साहित्य के पितामह माने जाने वाले हरिमोहन झा ने मैथिली गद्य को नई दिशा दी। उनकी रचना "कनैलोरि कथा" मैथिली का पहला उपन्यास माना जाता है। राजकमल चौधरी

राजकमल चौधरी आधुनिक मैथिली साहित्य के सबसे प्रयोगधर्मी लेखक थे। उनके उपन्यास "मैथिली मुस्कान" और "बरुण के बेटी" ने मैथिली साहित्य में नए प्रतिमान स्थापित किए। डॉ. सुभद्रा झा

मैथिली की प्रथम महिला साहित्यकार डॉ. सुभद्रा झा ने मैथिली कविता को नई ऊँचाइयाँ दीं। उनकी कविताओं में नारी संवेदना और सामाजिक यथार्थ का गहरा चित्रण मिलता है।

मैथिली साहित्य की विशेषताएँ

1. भक्ति और श्रृंगार का समन्वय**: मैथिली साहित्य में भक्ति भावना और श्रृंगार रस का अद्भुत संतुलन देखने को मिलता है। विद्यापति के पद इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं।
2. लोकजीवन का चित्रण**: मैथिली साहित्य में मिथिला क्षेत्र के लोकजीवन, रीति-रिवाजों, परंपराओं का सजीव वर्णन मिलता है।
3. भाषा की मधुरता**: मैथिली भाषा की मधुर ध्वनियाँ और लयबद्धता इसके साहित्य को विशिष्ट बनाती हैं।

वर्तमान समय में मैथिली साहित्य निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। नए लेखक और कवि मैथिली साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं। पत्र-पत्रिकाओं, सोशल मीडिया, साहित्यिक संगोष्ठियों के माध्यम से मैथिली साहित्य का प्रसार हो रहा है। मैथिली फिल्मों, नाटकों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने भी इस भाषा और साहित्य को लोकप्रिय बनाने में योगदान दिया है।

हालाँकि, मैथिली साहित्य को अभी भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। प्रकाशन के सीमित साधन, पाठक वर्ग की कमी, अन्य भाषाओं के प्रभुत्व जैसी समस्याएँ मैथिली साहित्य के व्यापक प्रसार में बाधक हैं। फिर भी, मैथिली लेखकों और साहित्यप्रेमियों का समर्पण इस भाषा और साहित्य के भविष्य के प्रति आशान्वित करता है।

निष्कर्ष

मैथिली साहित्य भारतीय साहित्य की एक अत्यंत समृद्ध और जीवंत परंपरा है जिसने एक हजार वर्षों से अधिक की लंबी यात्रा तय की है। विद्यापति से लेकर आधुनिक लेखकों तक, मैथिली साहित्य ने साहित्यिक उत्कृष्टता के नए मानदंड स्थापित किए हैं। यह साहित्य न केवल मिथिला की सांस्कृतिक पहचान का प्रतिनिधित्व करता है बल्कि भारतीय साहित्य के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। आवश्यकता है कि इस अमूल्य साहित्यिक विरासत के संरक्षण और प्रसार के लिए और अधिक प्रयास किए जाएँ ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इसकी समृद्धि से लाभान्वित हो सकें।

Teachers Training College Birsinghpur

Teaching and Learning Process: E-Books

Nitish Kumar Singh
Assis. Professor

INTRODUCTION

At first, e-book is defined as the paper book being converted to the digital format using scanner or typing to make it possible to be displayed on the computer [1]. Electronic books have gained a lot of attention recently [2]. In early 1992, van Dam proposed the phrase “Electronic Book” (also called e- book), which was widely referred to as the media using electronic channels to store and transport various information and multimedia [3]. The Oxford Dictionary of English defines e-books as “an electronic version of printed books”. However, ebooks can and does exist without its printed equivalent form [4,5]. According to Price Water House Coopers as one of the providers of business consulting services in the world, the book market is in a transitional phase in which the reader makes an improved level leaps of e-book use from paper books to e-book and e-Reader, this was based on surveys of experts in the field. Hence, it can be said that they are ready to make significant changes and revolutionize the book industry forever [6]. By using the right technology in the class can be a challenge for 21stcentury teachers. Technology in class can appeal to educators. However, determining the benefits of technology and asking whether these benefits are greater than traditional teaching tools is very challenging [7]. One specific issue of technology educators currently being debated is that whether interactive e-books beneficial for students to learn than from the use of traditional print texts. The developers of the students experience a number of challenges throughout the design and development of e-book. Hence, this activity provides a very significant learning experience [8]. The book is considered the most important tool used to transfer knowledge and assess information and academic education programs since the invention of the printing press. With the development of electronic publishing facilities, global information, and easy access via the internet, e-book becomes a more sophisticated tool to be used to transfer the knowledge [9]. Currently, e-book is becoming more favorable for many readers, from children to adults. This is because e-book offers several advantages over printed books, such as e-book is easier to carry anywhere, can be read anywhere and anytime, e-book prices are relatively cheaper when compared to the printed version. Making interactive e-books has the potential to transform learning far from the acquisition of basic facts (i.e. printed material, didactic lectures, PPT) to actively acquire and apply knowledge and skills because it can include multimedia and interactive learning [10].

The majority of the e-book reading is still the same as traditional paper books. However, it cannot effectively help learners to improve reading comprehension [11]. One major drawback is the difficulty of accessing the e-book and manipulating the digital content [12]. The limitation Digital Rights Management (DRM) is often built on e-books to limit access to titles [13]. One of the obstacles that often hinder teens from using the e-book is the inability to share digital books with their friends. The reason is that many teenagers are social readers who enjoy exchanging books only with their colleagues [14]. This paper aims to complement the previous review of the use of ebooks in learning. Reviews are indeed focused on the e-book, but it links the use of e-books to students and teachers. The purpose is not

merely to discuss e-book in relation to teaching or learning goals, but also to discuss the use of e- books in a general context. This will help researchers and education practitioners to understand the context from e-book, especially in the education field. Therefore, we review the evidence of some weaknesses of e-books that still need to be addressed. Then, this article can help researchers to develop more e-book facilities so that they can be utilized in learning systems in the classroom.

E-BOOK IN CLASSROOM :-

The latest survey of behavior among business school faculty at Brigham Young University shows that 61% prefer books in printed format if they can choose. Ease of reading and portability are two important reasons for choosing printed form [15]. The electronic book actually has been around for more than 40 years, but e-books have a short usage period because there is always technology development. Hence, textbooks still have dominated the class for now. Maintaining affordable, up-to-date and portable textbooks is a challenge. Technological advances occur quickly and accessibility to the latest and relevant textbooks is desired [7,16].

Right now, ICT companies are competing to develop the best and most advanced e-Reader [17]. The facilities of modern e-book can include animation, zoom in and out of the image on the screen, music, sound effects, highlighting the text, dictionaries built-in hotspot where readers can click to interact with characters or objects, translation of the foreign languages, and many others [18]. This is a positive impact for e-book users and a revolution in studies may occur in which a digital technology incorporated into e-books is an extraordinary multimedia tool that can promote the study of students [19]. For the student, e-books have the potential benefit to increase learning motivation, given the unique function such as the various search, copy-paste, and the spotlight that can be adjusted, which contribute to enhancing students' understanding and can remember a variety of information [20].

METHOD

This research uses empirical study method utilizing the knowledge, information, and instructions obtained from technology experts at the University of Indonesia to make the researchers or readers of articles more confident and knowledgeable about e-books in the education field. The e- book has become the mainstream in the world of technology, but it has not yet been fully and universally accepted, especially when it is delivered through platform solutions in the context of online libraries. This also includes identified issues in the literature [9,21]. This study analyzed content in 30 articles published in 2011-2018 regarding e-books. There are several steps that I have taken in selecting the articles, namely: the first stage, the article search is done online by using a free website from
Google using the keyword search e-book. The searching period is done freely without time limitation. The second stage is to search for articles cited from several academic website databases such as ScienceDirect, IEEE, Taylor & Francis Online, IOPScience, and SAGEJournal. Database retrieval is based on trusted sources that already have more than 5 thousand journals.

Data search starts on September 8-14, 2018 with a free search on Google search using 'e-book journal.pdf' as the keywords, the journal will automatically appear on Google search. Based on some of the data that had been obtained, the researchers choose based on trusted sources and titles that correspond to the topic written by the researcher. On September 15, 2018, followed by searching articles on the database mentioned in the previous paragraph, the

total articles submitted were 75 articles. Based on the 75 articles that have been analyzed and qualified by the authors, only 40 that have the closest relation to the topic of literature, 32 of the best articles were taken as citation materials for the author and 15 research articles were discussed in conclusion discussions.

RESULTS

A. E-Book Readers Among College Students

Recently the e-Reader that was introduced has attracted so much attention, sometimes some people don't know that those who are in the market is not the first generation. The first generation was introduced in the 1990s for a bit of fanfare. Devices such as SoftBook readers and Rocket e-books are well documented in the literature, but not successful in the market. The latest wave of e-Readers began with the Sony Reader in 2006 and the Amazon Kindle in 2007 in which they enjoyed far more success. Barnes, Noble, and Borders have entered the market with Nook and Kobo, respectively, and Apple has introduced the iPad, a multifunctional device that functions well as an electronic reader [22]. E-Reader has little influence on word recognition and understanding compared to traditional text. These results can indicate that the e-Reader does not provide additional benefits for student achievement; therefore, printed books are superior in this field [23].

The conclusions from previous studies reveal that there is clearly more e-book readers than the supported marketing. In addition, e-book readers vary in the population of all available readers in the market. Respondents reported that there were certain desired characteristics:

- **Portability of the reader;**
- **Having many reading titles;**
- **Ease of downloading titles;**
- **And having a word definition or available dictionary.**

From the ecological point of view, e-book readers are still new and different species in competition with native species (printed books) and the conversion of continuing habitat types from printed book versions to electronic versions will depend on user preferences [24].

Research by Yin Zhang showed that the studies he did provide unique insights about user choices and preferences when reading books. In addition, e-books and e-Readers are rapidly growing and popular technologies that attract media and publishing companies. The findings of this study provide direction in understanding who adopted the technology and how it was implemented. The results of this study support the idea that e-books have firmly established a place in people's lives because of their convenient usage where they allow them to be able to access their favorite content anywhere and anytime [25].

Despite the fact that students generally have a positive experience in using e-Readers, our research shows that e-book readers are currently loaded with curriculum and article based e-books that cannot, to the fullest, provide an effective learning experience in higher education. Students report unsatisfactory aspects of the e-Reader with respect to active reading. Interaction with texts in the form of comments, highlights, annotations, and non-linear readings is difficult. This technology is still immature for serious study in the academic environment.

The main results of Arthur N. Olsen's research show that student preferences are still in line with what other researchers have found. Students still seem to prefer printing on paper as the main delivery mechanism for text as part of their education. Current technological

infrastructure such as e-Readers and content has not yet functioned like traditional print media. These results are also related to work habits and how familiar the current generation of students is by using e-Readers. Our study reports the subjective point of view of participating students who are relatively inexperienced e-Reader users. In this study, the iPad received a better score than the Kindle DX for recording and highlighting. Students also report that many of them took the iPad to study class. This may indicate that there is potential for this device to function as an effective learning and reading tool in which it must be thoroughly investigated again [15].

The last one is the research by Laura E. Hibbard where students showed excitement by having access to the e-book world because they often visited the site and clicked on the title. Students report to their teachers that access on demand to popular literature is very exciting. However, that attraction soon fades when children become nervous and cannot read from a stationary computer screen. Students, parents, teachers, and administrators agree that portable e-Reader such as tablets will make reading more enjoyable. With the advent of e-book and eReader, the curriculum needs to reflect the novelty of this device. Students and teachers need to work together to navigate the most appropriate way to use this technology both inside and outside the classroom. In addition to being only involved in professional development session, teachers need to hold discussions with their students to understand what works in finding students in reading for pleasure through e-books [26].

B. E-book in Teaching and Learning

In the research by Bjarne Skjødt Worm, it was concluded that elearning with cases provided significant results better than e-learning only with textbook material (at the same level) when learning with complex knowledge and looking at the acquisition of knowledge. Based on these findings, it had been obtained that for Problem-Solving, e-Case groups reached a level of knowledge comparable to classroom teaching, while learning with textbooks was lower than e-Case and teaching in class ($p < 0.01$). The textbook group also spent the least amount of time gaining knowledge (33 minutes, $p < 0.001$), while the e- Case group spent more time on the subject (53 minutes, $p < 0.001$) and significantly more entry into the system (2.8 vs 1.6, $p < 0.001$) [27].

Chih-Cheng Hsiao put forth some research results entitled the use of interactive multimedia e-books to study blood cell morphology in pediatric hematology. The method used was by gathering 51 participants from 3 medical schools in Taiwan. It was then divided into two parts, 25 people who participated in the apprenticeship were allocated to run training with PowerPoint Atlas and 26 people were allocated to run training with interactive multimedia e-books. The findings of the study showed that there was no difference in the pre-test scores between the TPP and IME groups (mean score of 27.0 versus 27.9, $p = 0.807$). However, interns in the interactive multimedia e-book group achieved much better scores in the post-test than those in the PowerPoint group (mean score 103.2 versus 70.6; $p < 0.001$). The overall results of interest, motivation, and effectiveness were very positive in the multimedia e-book groupie [10].

All students enrolled in the first year in a university in Western Australia, Child Development for Educators, were invited by email to complete the online questionnaire. About 1,200 first-year students were sent an invitation via email to complete the online research

questionnaire, the research findings from Genevieve M. Johnson showed only 199 or 16.6% answered and responded to the delivery. Collectively, the results support the conclusion that educational students who receive emerging technologies such as e-books and those who read e-books in their spare time consider themselves to be more capable learners than students who did not accept new technologies such as e-books and those who do not read to spend time on vacation [28].

In a previous study, Eeon Lim conducted a research study that aimed to explore the usefulness of future generation e- books (NG-e-books) with annotation skills and so on focusing on using e-books to promote student learning through reflection and sharing ideas. Thirty-six tertiary level students from 3 diplomas participated in this study. The overall findings showed that NG-e-books promote student learning experiences by enabling student involvement and interaction. The researcher suggested that the direction of future research should be related to the use and utilization of e-books in educational contexts [29].

C. E-book Design

The research by P. I. aimed to implement a Decision Support System (DSS) to assist libraries in choosing the best e- book providers based on their preferences. The way DSS works by comparing the importance of each criterion and condition of each alternative decision. SAW is quite simple, fast, and widely used DSS method. Simple Additive Weighting (SAW) is one of the simplest but most reliable methods and has been widely used in decision support systems. Atmojo et al. This study uses 1 cost criterion: price and 8 profit criteria: digital rights management, content, provider type, business model, license, technical support, resource capabilities, and customer support. An alternative is used to show how SAW works in eighteen alternatives. From the implementation, it can be concluded that SAW manages to rank all alternatives. For further research, they will combine other methods to get the weight of each criterion and work with sub-criteria. The author also concluded that there were several other similar studies conducted by Haswan who used SAW for the selection of members in the Civil Service Patient Unit, while Daniati and Nugroho combined K-Means clustering and SAW in the selection of thesis topics. The implementation of SAW in a multi-criteria decision support system was also found in Jhaa et all and Sinaga and Murnawan [5].

Previous research conducted by Nicholas Vanderschantz, Claire Timpany & Annika Hinze about e-book exploration design used a sample of 60 participants containing 35 men and 25 women. Based on the 60 participants interviewed, 50 participants were between 15-25 years old and 10 participants were 25 years old and older. Twenty-nine participants had completed or were currently registered in the humanities or arts degree (i.e., graphic design, humanities, media arts etc.). This study was designed to get participants' preferences for the visual display of books in pDL and understand how much metadata they like when viewing books in the pDL interface. In particular, studies explored interface design preferences for thorn book display, front cover, back cover, blurbs and combinations of several and/or all of these elements. This research was conducted as a semi-structured interview using a paper prototype. From the study described above, the authors hypothesized that the selection of similar e-books might be influenced by book covers, information related to books, metadata,

and features in books such as a table of contents. The study reported here investigated the preference for presenting e-book information in pDL [30].

Mohhamed Menacer presented the concept and design of authoring systems to create and build application programs for e-book packages or e-book portfolios which will include metadata, meta-content, and other related materials and resources stored in special databases. This system is basically a digitization process of various phases of e-book creation and development, as well as a collection of structures for various types of content and information in the form of hypertext documents, multimedia, and presentations. The aim of the study is to present a systematic approach to authors of e-books by collecting and digitizing the most relevant content and information in an academically structured manner and general purpose books or similar documents for the efficiency of online and offline use, delivery and dissemination. In conclusion, the concept of authoring systems for e-book and e-content will enable efficient advanced search, content manipulation and indexing, Web content distribution, and marketing. In addition, Natural Language Processing techniques will be implemented more reliably and efficiently for text mining, indexing, tagging, online content information retrieval, and document processing. In the initial implementation phase, the meta details of three books have been analyzed and extracted into a special database using the "automatic content builder maker" feature. It took some time to complete the initial phase because the manual validation and validation processes were needed [6].

The ongoing research by Jose Bidarra experimented with the EPUB3 standard began with making e-books about beautiful lagoons with diverse fauna and flora in the middle of Portugal (Obidos). In this project, they tried various widgets and scripts in the Apple iBooks format. The results involved three strategic components, which can be clearly distinguished in their workflows: 1. Establish the potential for technology: the format and the most common authoring tools that enable effective game-book creation in learning; 2. Identify the role of narration and games: what types of narratives and game genres can be recreated as game-books for learning, and what learning activities can be prepared based on this typology;3. Show the application of real education: according to a certain level of education, what pedagogical model can integrate the game- book better, and where the subject area is most effective [31].

The last one is an article written by Dave Hailey & Rebecca Walton who published about digital e-books. They suspect that the Mobi and EPUB frequencies are less than their suitability for the environment of use, duty, and reader devices rather than unfamiliarity with parts of the document manufacturer. EPUB is a standard open file format that is smaller than the .ZIP file containing a website. If you convert the EPUB book extension to .ZIP and double-click it, you will see a collection of HTML, XML, and CSS pages plus an image folder (if the book has images). We try to reduce this unfamiliarity by (1) briefly explaining the weaknesses of PDF and HTML formats that are not shared by Mobi and EPUB formats and by (2) providing various ways to produce documents in the EPUB file format. The instructions for creating an EPUB document also apply to the Mobi format because the Mobi file format can be created from EPUB in one click [32].

CONCLUSION

This article aims to complete the previous review on the use of ebook in the learning process by observing the evidence from several weaknesses of e-book that have to be handled with the aim to summarize various finding and showing the direction of the research in the future. The review that has been done shows that previous empirical study has focused on one or more topics or themes namely: (a) e-book Readers among college students, (b) e-book in Teaching and Learning, (c) e- book Design.

Based on the overall findings that we have discussed, we conclude that e-books give a positive response to the students. It is possible that in the future e-books can be further developed in term of their application, use, design, and the content. This is intended to make the use of e-books completely acceptable to students because there are a small number of studies that concluded that there are still some students who like printed book rather than e-book. This article can help researchers to develop ebook facilities so that they can be utilized in learning systems in the classroom.

REFERENCES

Y. B. Lee, L. S., Ng, G. W., Ooi, J. Z., & Oon, "Merging Graphic Design and Multimedia Features in Digital Interactive e-book for Tourism Purposes," 2015.

[1] M. Czechowski, L., MA, "Problems with e-books : suggestions for publishers," vol. 99, no. July, pp. 181–182, 2011.

[2] C. Lai, "Integrating E-books into Science Teaching by Preservice Elementary School Teachers," vol. 2, no. 1, pp. 57–66, 2016.

[3] J. C. Gonz, "Development of interactive books for Control Education," 2013.

[4] P. I. C. and K. C. Dewi, "Decision support system of e-book provider selection for library using Simple Additive Weighting Decision support system of e-book provider selection for library using Simple Additive Weighting," 2018.

[5] M. Menacer and A. Arbaoui, "Authoring System Concept and design for e-book Digitization process for efficient online eContent documentation, search , and distribution .," pp. 162–165, 2013.

[6] J. M. Bickel, "Electronic Books or Print Books For Increased Reading," no. July, 2017.

[7] J. M. Bickel, "Electronic Books or Print Books For Increased Reading," no. July, 2017.

[8] A. C. Hill, L. M. Nickels, and P. A. Sims, "Student-Led Development of an Interactive and Free Biochemical Methods ebook," 2016.

[9] M. Mohammed and A. Ebied, "The effect of interactive e-book on students' achievement at Najran University in computer in education course," vol. 6, no. 19, pp. 71–83, 2015.

The Future of Secondary Education: Trends and Innovations for 21st Century Learners

Anupam Kumari
Assistant professor
R.P.S Teachers Training College, jhapha, Muzaffarpur

Abstract:

Secondary education is undergoing a paradigm shift as societies adapt to rapid technological advancements, shifting workforce demands, and changing student expectations. The 21st century calls for an educational system that not only delivers knowledge but also nurtures creativity, critical thinking, adaptability, and global citizenship. This article explores the future of secondary education by examining emerging trends and innovations that are transforming the learning landscape for today's students. Key developments include the integration of digital technology, personalized and competency-based learning models, project-based and experiential learning, globalized curricula, and a heightened focus on mental health and well-being.

These innovations are not merely add-ons but represent a structural reimagining of how education is delivered and experienced. The role of the teacher is evolving from knowledge transmitter to facilitator, mentor, and co-learner. Likewise, assessment methods are transitioning from traditional exams to performance-based evaluations and digital portfolios. This paper also discusses barriers to implementation, such as digital inequality, teacher readiness, and systemic inertia, while proposing strategies to overcome these challenges. The article concludes by emphasizing the need for policy frameworks that are flexible, inclusive, and forward-looking to support these innovations. It argues that a truly transformative secondary education system must be learner-centered, equity-driven, and designed for lifelong learning. Through a synthesis of current research, case studies, and policy analysis, this paper provides a roadmap for educators, policymakers, and stakeholders aiming to build future-ready secondary education systems.

Keywords:-Secondary Education, 21st Century Skills**,** Educational Innovation**,** Personalized Learning**,** Digital Transformation**,** Project-Based Learning**,** Equity in Education

1. Introduction

Secondary education plays a pivotal role in shaping the intellectual, social, and emotional development of adolescents. It serves as a bridge between foundational primary education and specialized tertiary learning or vocational training. However, as we progress further into the 21st century, the conventional model of secondary schooling is increasingly seen as outdated and misaligned with contemporary societal and workforce needs.

Historically, secondary education systems were designed to support industrial-age economies, emphasizing uniformity, compliance, and basic literacy and numeracy skills. Today, students live in a world characterized by rapid technological change, global interdependence, environmental urgency, and diverse social challenges. Consequently, there is a growing consensus that secondary education must evolve to cultivate higher-order thinking, digital competencies, collaborative abilities, and adaptability.

Several global drivers are reshaping secondary education. These include the integration of emerging technologies, demographic shifts, changing labor market demands, and the rise of remote and hybrid learning models. Furthermore, international assessments such as PISA have

pushed nations to reevaluate their curricula and pedagogies, highlighting the need for more student-centered, relevant, and equity-oriented practices.

This paper investigates how trends and innovations are redefining secondary education. It places particular focus on six key areas: personalized learning, digital transformation, experiential learning, globalization, mental health and well-being, and future-readiness. The objective is to provide a comprehensive roadmap for stakeholders to build resilient and relevant education systems that serve diverse learners effectively in a rapidly changing world.

2. Emerging Trends in Secondary Education

2.1 Personalized and Competency-Based Learning

The one-size-fits-all approach that has long dominated education is giving way to personalized learning models that center on student agency, interests, and pace. Personalized learning is not merely a buzzword—it represents a fundamental shift toward recognizing that learners have diverse needs, motivations, and ways of understanding the world.

Personalized learning is often facilitated through digital tools, such as adaptive learning platforms that adjust content difficulty based on a student's performance. More significantly, it emphasizes student ownership of learning goals, with teachers acting as facilitators rather than knowledge dispensers.

Competency-Based Education (CBE) complements this approach by focusing on outcomes rather than time. Under CBE, students progress only once they have demonstrated mastery of specific skills or concepts. This approach ensures depth over breadth and allows learners to move at their own pace, making education more inclusive for both high-achievers and students who require more support.

CBE also ties learning to real-world applications. For instance, students might demonstrate competencies in communication through a group presentation or exhibit mathematical thinking through a community project. Schools in places like New Hampshire (USA) and British Columbia (Canada) have adopted competency-based models with promising outcomes in student engagement and retention.

Challenges remain, including aligning CBE with national assessment systems, training educators, and ensuring that personalized learning does not compromise academic rigor. However, as these models mature, they promise a more equitable and meaningful secondary education experience.

3. Digital Transformation and EdTech Integration

Digital transformation in education is no longer a future consideration—it is a present reality. The COVID-19 pandemic catalyzed an unprecedented global experiment in online learning, exposing both the potential and the disparities of digital education. As a result, schools are now rethinking how technology can enhance learning in and beyond the classroom.

At the forefront of this transformation are Learning Management Systems (LMS), intelligent tutoring systems, AI-driven feedback tools, and multimedia learning environments. Platforms like Google Classroom, Canvas, and Moodle have become ubiquitous, enabling teachers to manage assignments, track student progress, and offer feedback in real-time.

Emerging technologies such as Virtual Reality (VR) and Augmented Reality (AR) offer immersive learning experiences that can make abstract concepts tangible. For example, students can explore the inside of a cell or visit historical battlefields without leaving the classroom.

Artificial Intelligence (AI) further enhances personalization by analyzing student data to offer targeted interventions. Tools like Carnegie Learning and Knewton adapt instruction based on user performance, helping struggling students and accelerating advanced learners.

However, digital transformation is not without concerns. The digital divide remains a pressing issue, particularly in low-income and rural communities where students may lack reliable internet access or digital devices. Moreover, the over-reliance on screens and algorithms raises questions about data privacy, screen fatigue, and the diminishing role of human interaction.

Therefore, digital transformation must be guided by pedagogical principles and equity goals. It should enhance—not replace—the core values of education: relationships, inquiry, and critical engagement with knowledge.

4. Project-Based and Experiential Learning

Project-Based Learning (PBL) and experiential education are gaining momentum as powerful pedagogical approaches in secondary education. PBL emphasizes student-led inquiry into complex, real-world problems, fostering a host of 21st-century skills such as critical thinking, collaboration, creativity, and communication.

Unlike traditional lessons segmented by subject and confined to textbooks, PBL is interdisciplinary and contextual. A project on climate change, for instance, could involve science (understanding the greenhouse effect), geography (analyzing vulnerable regions), and civics (debating policy solutions). The emphasis is on process over product—students learn by doing, reflecting, and iterating.

Experiential learning extends this model by incorporating real-world experiences like internships, apprenticeships, service-learning, and entrepreneurship. Students engage directly with community issues or workplace challenges, making learning more authentic and impactful.

The benefits of PBL and experiential learning are well-documented. Studies have shown increased engagement, deeper understanding, and stronger retention of knowledge. Programs like Expeditionary Learning in the U.S. and Big Picture Schools in Australia provide exemplary models of how experiential education can be institutionalized.

However, effective implementation requires careful planning. Teachers must be trained to design open-ended questions, facilitate inquiry, and assess both individual and group work fairly. Additionally, schools need the flexibility to move away from rigid curricula and high-stakes testing.

Overall, PBL and experiential education equip students not only with academic knowledge but also with the practical, ethical, and emotional intelligence needed to navigate an uncertain and complex world.

5. Focus on Mental Health and Well-being

In the 21st century, the scope of education extends beyond academic achievement to encompass emotional, psychological, and social well-being. Mental health is a foundational element of learning; students cannot thrive cognitively if they are unwell emotionally.

Adolescents today face mounting pressures—from academic expectations and digital distractions to social isolation and global crises like climate anxiety. Recognizing this, secondary schools worldwide are embedding mental health into their core educational mandates.

Social-Emotional Learning (SEL) is a leading approach that integrates emotional intelligence, empathy, self-regulation, and relationship-building into the curriculum. Programs like CASEL's framework have been adopted widely, showing positive effects on academic performance and classroom behavior.

Moreover, schools are hiring counselors, creating safe spaces, and implementing mindfulness and resilience training. Digital tools, such as mood-tracking apps and online therapy platforms, are also becoming common.

Government policies are beginning to reflect this shift. For example, the UK has mandated mental health education in all schools, and Australia's "Be You" initiative offers mental health support for educators and students alike.

Nonetheless, challenges persist. There is a shortage of trained professionals, stigma around mental illness, and insufficient resources in underfunded schools. Additionally, online environments can both support and harm mental health—while social media provides connection, it can also lead to cyberbullying and unhealthy comparisons.

Addressing mental health in secondary education requires a multi-tiered approach: integrating SEL into the curriculum, offering individualized support, and fostering a culture of empathy and inclusion.

7. Conclusion

The transformation of secondary education is both an urgent necessity and an unparalleled opportunity. As we move deeper into the 21st century, the skills and competencies required for personal success, societal contribution, and economic participation are evolving rapidly. Traditional models of education—rooted in uniformity, standardization, and compliance—must give way to dynamic, inclusive, and student-centered practices.

The trends discussed in this paper—personalized learning, digital integration, project-based pedagogy, global competencies, and mental well-being—are not isolated innovations. Rather, they represent an interconnected framework for a holistic, future-ready education system. Together, they redefine the purpose of secondary education: from knowledge transmission to the cultivation of adaptable, empathetic, and empowered individuals.

Realizing this vision requires bold leadership, collaborative policymaking, and significant investment in teacher training, infrastructure, and equity measures. It also necessitates a redefinition of success—not just academic achievement, but lifelong learning, civic engagement, and human flourishing.

In summary, the future of secondary education lies not in replicating the past but in designing systems that prepare students to thrive in complexity, embrace diversity, and lead with purpose. This transformation is not merely desirable—it is imperative.

भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence - AI) का योगदान

Suraj Kumar
Office Assistant

प्रस्तावना

कृत्रिम बु द्धमत्ता (Artificial Intelligence - AI) आज के युग का सबसे महत्वपूर्ण तकनीकी वकास है। यह न केवल हमारे दैनिक जीवन को प्रभा वत कर रहा है, बल्कि भ वष्य में इसकी भू मका और भी अ धक व्यापक होने वाली है। AI का उपयोग स्वास्थ्य सेवाओं, शक्षा, उद्योग, कृ ष, सुरक्षा और मनोरंजन जैसे क्षेत्रों में तेजी से बढ़ रहा है। इस लेख में हम AI के भ वष्य, इसके संभा वत लाभ और चुनौतियों पर चर्चा करेंगे।

AI का वर्तमान परिदृश्य

वर्तमान में, AI ने कई क्षेत्रों में क्रांति ला दी है। उदाहरण के लए:

- स्वास्थ्य सेवा: AI आधारित डायग्नोस्टिक टूल्स बीमारियों का पता लगाने में मदद कर रहे हैं।
- शक्षा: AI-चैटबॉट्स और वर्चुअल ट्यूटर्स छात्रों को व्यक्तिगत शक्षा प्रदान कर रहे हैं।
- व्यवसाय: कंपनियां AI का उपयोग ग्राहक सेवा, डेटा वश्लेषण और मार्केटिंग में कर रही हैं।
- ऑटोमोबाइल: सेल्फ-ड्राइ वंग कारें AI तकनीक पर आधारित हैं।

भ वष्य में AI की संभावनाएं

1. स्वास्थ्य सेवाओं में क्रांति

भ वष्य में AI मे डकल रिसर्च, रोग निदान और उपचार में महत्वपूर्ण भू मका निभाएगा। AI-आधारित रोबोट सर्जरी कर सकेंगे, जिससे मानवीय त्रुटियों की संभावना कम होगी। इसके अलावा, AI द्वारा वक सत दवाएं कैंसर और अन्य जटिल बीमारियों का इलाज करने में सक्षम होंगी।

2. शक्षा का डजिटलीकरण

AI शक्षा को और अ धक सुलभ और प्रभावी बनाएगा। वर्चुअल क्लासरूम, AI-ट्यूटर्स और अनुकू लत शक्षण सामग्री छात्रों को उनकी गति से सीखने में मदद करेगी। भाषा अनुवादक टूल्स वदेशी भाषाओं को सीखने में सहायता करेंगे।

3. रोजगार और उद्योग में परिवर्तन

AI और ऑटोमेशन के कारण कई पारंपरिक नौकरियां समाप्त हो सकती हैं, ले कन नए प्रकार के रोजगार भी सृजित होंगे। AI सस्टम्स को मेन्टेन करने, डेटा साइंस और AI ए थक्स जैसे क्षेत्रों में नए अवसर पैदा होंगे।

4. स्मार्ट शहर और AI

भ वष्य में AI स्मार्ट सटीज को वक सत करने में मदद करेगा। ट्रै फक मैनेजमेंट, ऊर्जा बचत, सुरक्षा और अप शष्ट प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में AI का उपयोग होगा। सेंसर और IoT डवाइसेस के साथ मलकर AI शहरों को अ धक कुशल बनाएगा।

5. कृ ष में AI का प्रभाव

AI कसानों को फसल उत्पादन बढ़ाने, मौसम पूर्वानुमान और कीट नियंत्रण में मदद करेगा। ड्रोन और सेंसर द्वारा खेतों की निगरानी की जाएगी, जिससे पानी और उर्वरकों का उपयोग कम होगा।

6. मनोरंजन और रचनात्मकता

AI फल्म निर्माण, संगीत और कला में भी योगदान दे रहा है। भ वष्य में AI द्वारा लखी गई कहानियाँ, बनाए गए चत्र और संगीत मनोरंजन जगत को नई दिशा देंगे।

AI से जुड़ी चुनौतियाँ

1. नौकरियों पर खतरा

AI और रोबोटिक्स के कारण कई नौकरियां खत्म हो सकती हैं। इस लए, लोगों को नए कौशल सीखने की आवश्यकता होगी।

2. डेटा गोपनीयता और सुरक्षा

AI सस्टम बड़ी मात्रा में डेटा का उपयोग करते हैं, जिससे गोपनीयता का खतरा बढ़ सकता है। साइबर हमलों और डेटा लीक की संभावना भी बढ़ेगी।

3. AI ए थक्स और नियंत्रण

AI के दुरुपयोग की संभावना है। स्वायत्त ह थयारों और डीपफेक जैसी तकनीकों से समाज को खतरा हो सकता है। इस लए, AI के नैतिक उपयोग पर नियम बनाने की आवश्यकता है।

4. तकनीकी असमानता

वक सत देशों के पास AI तकनीक पर अ धक नियंत्रण होगा, जिससे वकासशील देशों के साथ तकनीकी अंतर बढ़ सकता है।

निष्कर्ष

AI का भ वष्य अत्यंत उज्ज्वल है, ले कन इसके साथ कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। यदि हम AI का सही दिशा में उपयोग करें, तो यह मानवता के लए वरदान साबित हो सकता है। सरकारों, वैज्ञानिकों और समाज को मलकर AI के नैतिक और सुर क्षत उपयोग को सुनिश्चित करना होगा। भ वष्य में AI मानव जीवन को सरल, सुर क्षत और समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भू मका निभाएगा।

"इस लेख में हमने AI के भ वष्य, उसके संभा वत लाभ और चुनौतियों पर वस्तार से चर्चा की है।

AI एक शक्तिशाली तकनीक है, जिसका सही उपयोग करके हम एक बेहतर कल का निर्माण कर सकते हैं।"

इलेक्ट्रॉनिक शिक्षा

Nitu Kumari
Assistant Librarian

ई–शिक्षा से क्या तात्पर्य है?

- ई–शिक्षा से तात्पर्य अपने स्थान पर ही इंटरनेट व अन्य संचार उपकरणों की सहायता से प्राप्त की जाने वाली शिक्षा से है।
- ई–शिक्षा के विभिन्न रूप हैं, जिसमें वेब आधारित लर्निंग, मोबाइल आधारित लर्निंग या कंप्यूटर आधारित लर्निंग और वर्चुअल क्लासरूम इत्यादि शामिल हैं। आज से जब कई वर्ष पहले ई–शिक्षा की अवधारणा आई थी, तो दुनिया इसके प्रति उतनी सहज नहीं थी, परंतु समय के साथ ही ई–शिक्षा ने संपूर्ण शैक्षिक व्यवस्था में अपना स्थान बना लिया है।

भारत में ई–शिक्षा की स्थिति

- ई–शिक्षा, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा शैक्षणिक उपकरणों और संचार माध्यमों का उपयोग करते हुए शिक्षा प्रदान करने के लिये पहचाने जाने वाले प्रमुख क्षेत्रों में से एक है। वस्तुतः अभी भारत में ई–शिक्षा अपने शैशवावस्था में है।
- ई–शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये सरकार ने विभिन्न ई–लर्निंग कार्यक्रमों का समर्थन किया है। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय इसे बढ़ावा देने के लिये सक्रिय रूप से उपकरण और तकनीक विकसित करने पर बल दे रहा है।
- इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में ई–शिक्षा पर केंद्रित शोध एवं अनुसंधान परियोजनाओं को प्रोत्साहित कर रहा है। इनमें दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से साक्षरता में सुधार के लिये पाठ्य सामग्री विकास, शोध एवं अनुसंधान पहल, मानव संसाधन विकास से जुड़ी परियोजनाएँ और संकाय प्रशिक्षण पहल शामिल हैं।
- वर्ष 2025 तक भारत में इंटरनेट उपयोगकर्त्ताओं की संख्या 900 मिलियन तक पहुँचने की उम्मीद है, भारत में ई–शिक्षा के क्षेत्र में एक विशाल बाजार तैयार होने की संभावनाएँ हैं। बड़ी संख्या में नए उपयोगकर्त्ता इंटरनेट व अन्य संचार उपकरणों के माध्यम से ई–शिक्षा तक पहुँच रहे हैं।

ई–शिक्षा बढ़ाने हेतु सरकार के प्रयास

- स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स (AYAM) एक एकीकृत मंच है जो स्कूल (9वीं–12वीं) से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करता है।
- अब तक ॉल।ड पर 2769 बड़े पैमाने के ऑनलाइन कोर्सेज (डेंपअम व्पमद व्दसपदम ब्वनतेमे– डव्ब्) बड़े पैमाने पर ओपन ऑनलाइन पाठ्यक्रम) की पेशकश की गई है, जिसमें लगभग 1.02 करोड़ छात्रों ने विभिन्न पाठ्यक्रमों में दाखिला लिया है।
- ऑनलाइन पाठ्यक्रमों का उपयोग न केवल छात्रों द्वारा बल्कि शिक्षकों और गैर–छात्र शिक्षार्थियों द्वारा भी जीवन में कभी भी सीखने के रूप में किया जा रहा है।
- NCERT d{kk IX&XII तक के लिये 12 विषयों में स्कूल शिक्षा प्रणाली हेतु बड़े पैमाने पर ऑनलाइन पाठ्यक्रमों (डेंपअम व्पमद व्दसपदम ब्वनतेमे– डव्ब्) का मॉड्यूल विकसित कर रहा है।
- स्वयं प्रभा (SWAYAM Prabha)
- यह 24ग7 आधार पर देश में सभी जगह डायरेक्ट टू होम (क्पतमबज जव भ्वउम– क्ज्भ्) के माध्यम से 32 उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक चौनल प्रदान करने की एक पहल है।
- इसमें पाठ्यक्रम आधारित पाठ्य सामग्री होती है जो विविध विषयों को कवर करती है।
- इसका प्राथमिक उद्देश्य गुणवत्ता वाले शिक्षण संसाधनों को दूरदराज के ऐसे क्षेत्रों तक पहुँचाना है जहाँ इंटरनेट की उपलब्धता अभी भी एक चुनौती बनी हुई है।
- राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी (छंजपवदंस क्पहपजंस स्पइतंतल)

- भारत की राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी (छंजपवदंस क्पहपजंस स्पइतंतल व िप्दकपं—छक्स्) एक एकल—खिड़की खोज सुविधा (Single&Window Search Facility½ के तहत सीखने के संसाधनों के आभाषी भंडार का एक ढाँचा विकसित करने की परियोजना है।
- इसके माध्यम से यहाँ 3 करोड़ से अधिक डिजिटल संसाधन उपलब्ध हैं।
- लगभग 20 लाख सक्रिय उपयोगकर्त्ताओं के साथ 50 लाख से अधिक छात्रों ने इसमें अपना पंजीकरण कराया है।

ई—शिक्षा की विशेषताएँ

- ई—शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता ये है कि छात्र अपनी सहूलियत के हिसाब से किसी भी समय और कहीं पर भी अपना शैक्षिक कार्य कर सकते हैं। अर्थात इस शैक्षिक व्यवस्था में समय और स्थान की कोई पाबंदी नहीं है।
- ई—शिक्षा के माध्यम से छात्र वेब आधारित स्टडी मटीरियल को अनिश्चित काल तक एक्सेस कर सकते है और बार—बार देख कर इसके जटिल पहलूओं को समझ सकते हैं।
- ई—शिक्षा के माध्यम से पढ़ाई करना काफी हद तक कम लागत वाली होती है। क्योंकि छात्रों को पुस्तकें या किसी दूसरे स्टडी मटीरियल पर पैसा खर्च नहीं करना पड़ता है।
- ई—शिक्षा पर्यावरण की दृष्टि से भी लाभदायक है, क्योंकि यहाँ जानकारी को किताब के बजाय वेब आधारित एप व पोर्टल पर स्टोर किया जाता है। जिससे कागज के निर्माण हेतु पेड़ों की कटाई पर रोक लगती है और हमारे पर्यावरण को बचाने में मदद मिलती है।
- ई—शिक्षा इंटरनेट और कंप्यूटर कौशल का ज्ञान विकसित करता है जो विद्यार्थियों को अपने जीवन और करियर के क्षेत्र में आगे बढ़ने में मदद करेगा।
- ई—शिक्षा के माध्यम से छात्र नए कौशल सीखने पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

ई—शिक्षा की राह में चुनौतियाँ

- बिना आत्म अनुशासन या अच्छे संगठनात्मक कौशल के अभाव में विद्यार्थी ई—शिक्षा मोड में की जाने वाली पढ़ाई में पिछड़ सकते हैं।
- छात्र बिना किसी शिक्षक और सहपाठियों के अकेला महसूस कर सकते हैं। परिणामस्वरूप वे अवसाद से पीड़ित हो सकते हैं।
- खराब इंटरनेट कनेक्शन या पुराने कंप्यूटर, पाठ्यक्रम एक्सेस करने वाली सामग्री को निराशाजनक बना सकते हैं।
- भारत में बेहतर इंटरनेट कनेक्टिविटी का अभाव व इंटरनेट की कम गति ई—शिक्षा की राह में सबसे बड़ी चुनौती है।
- वर्चुअल क्लासरूम में प्रैक्टिकल या लैब वर्क करना मुश्किल होता है।
- भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की भांति विद्युत व्यवस्था का अभाव है, जो ई—शिक्षा में रुकावट बन सकती है।

IF I WERE A TEACHER, MY DREAM EDUCATION SYSTEM WOULD BE

Sadhna Kumari
B.Ed. Trainee (2024-26)

If I were a teacher, my dream education system would emphasize holistic development, ensuring that students not only excel academically but also grow emotionally, socially, and personally. This education system would place equal value on fostering creativity, critical thinking, and empathy, alongside the mastery of subjects traditionally taught in schools. It would strive to prepare students for a rapidly changing world, equipping them with the skills they need to adapt and thrive. In this system, the focus would shift from standardized testing to nurturing a love of learning and empowering students to be lifelong learners.

1. The Purpose of Education

At the heart of my dream education system would be the belief that education should serve the whole child, not just the mind. It would aim to prepare students for life, not only for tests. Students would be encouraged to think critically, solve real-world problems, and engage meaningfully with their communities. A major goal of education would be to foster self-awareness, emotional intelligence, and resilience, while also imparting academic knowledge. Schools should not just be places where students are taught subjects; they should be communities where students learn how to interact with the world and contribute to it in positive ways.

2. Curriculum Design

The curriculum would be designed to strike a balance between core subjects (like mathematics, science, language arts, and social studies) and essential life skills. A strong foundation in the core subjects would still be crucial, but students would also engage in a broad range of disciplines that promote well-rounded development. Creative subjects such as music, art, drama, and physical education would be integral parts of the curriculum, recognizing that these areas contribute to cognitive development and emotional well-being.

In addition to academic subjects, the curriculum would include components focused on critical thinking, problem-solving, and innovation. Lessons would not simply ask students to memorize facts but would challenge them to think deeply, analyze, and apply their knowledge to new situations. Students would be given opportunities to work on real-world problems through project-based learning and collaboration, preparing them for the demands of the future workforce. Another important part of the curriculum would be social-emotional learning (SEL). This would include teaching student's skills such as self-regulation, empathy, conflict resolution, and mindfulness. SEL would not be an afterthought or an extracurricular activity but a core part of the education experience. After all, social and emotional skills are just as vital as academic knowledge in contributing to a student’s overall success and well-being.

3. Personalized Learning

A key feature of my dream education system would be personalized learning. Each student is unique, with different strengths, challenges, learning styles, and interests. In my ideal system, schools would recognize these differences and tailor their approach to meet the needs of each student. Personalized learning would allow students to work at their own pace, exploring topics that excite them and receive the support they need in areas where they struggle. This would be made possible through a combination of technology and hands-on teaching. Teachers would use data-driven insights to identify where students are in their learning journey and provide targeted interventions when necessary. Technology would enable

students to access materials and resources that suit their individual needs, from interactive lessons and videos to online simulations and collaborative tools.

However, technology would not replace teachers. Teachers would still play a central role in guiding, mentoring, and supporting students. They would act as facilitators of learning, helping students explore and understand new concepts rather than simply delivering information. Teachers would also focus on developing relationships with their students, providing the emotional support and encouragement that is essential for learning.

4. Assessment and Evaluation

Traditional methods of assessment, such as standardized tests, would be largely eliminated in my dream education system. Instead of focusing on rote memorization and isolated exam performance, students would be assessed through a combination of ongoing assessments, projects, and portfolios that demonstrate their understanding and skills over time.Assessments would be designed to encourage deep thinking and reflection. For example, students might be asked to present their work to their peers, engage in discussions about their learning process, and reflect on their personal growth. This approach would provide a more holistic picture of a student's progress and abilities, as well as encourage students to take ownership of their learning. Teachers would also be encouraged to give meaningful feedback rather than just grades. Feedback would focus on helping students understand where they can improve, rather than simply ranking them against their peers. This would create an environment where mistakes are seen as a natural part of the learning process and students feel safe to take risks and experiment.

5. The Role of Teachers

In this ideal education system, teachers would be seen as more than just knowledge deliverers; they would be mentors, guides, and role models. Teachers would have the time and resources they need to build meaningful relationships with their students, which research shows is a key factor in student success. Professional development would be a priority for teachers, and they would be given the opportunity to continuously learn and grow in their profession. Teachers would be supported in exploring new teaching methods, technologies, and strategies to engage their students. They would also have time for collaboration with other teachers, sharing ideas, and learning from one another. A focus on teacher well-being would be central, too. Teachers would have manageable workloads and be given the resources they need to succeed, including access to mental health support and a balanced schedule. When teachers are well-supported, they are better able to create a positive and engaging learning environment for their students.

6. Inclusive Education

Equity and inclusion would be central to my dream education system. Every child, regardless of their background, ability, or identity, would have access to the resources and support they need to succeed. Special education needs would be met in a way that is fully integrated into the classroom, with all students benefiting from inclusive practices that value diversity and promote respect. This inclusivity would extend to various types of learners, including students with disabilities, students from different cultural and linguistic backgrounds, and students with different learning styles. In my dream education system, there would be no one-size-fits-all approach, and each student would be provided with a path that suits their unique needs and aspirations. Beyond that, schools would be places where diversity is celebrated and where students learn about different cultures, histories, and perspectives. Promoting global citizenship and an understanding of social justice would be important aspects of the curriculum, helping students appreciate the interconnectedness of the world and the importance of empathy and cooperation.

7. Building Lifelong Learners

A key goal of my dream education system would be to cultivate a love of learning that lasts a lifetime. This would be done by making learning engaging, relevant, and meaningful. Rather than merely preparing students for exams, the system would prepare them for life by teaching them how to learn

and think critically.Learning would not be limited to the classroom. Students would have access to learning opportunities outside of school, such as internships, apprenticeships, and service-learning projects. This would allow them to apply their knowledge and skills in real-world contexts, gaining practical experience and a sense of purpose. Students would be encouraged to pursue their passions and interests, whether in science, the arts, or anything else. They would learn how to set goals, manage their time, and stay motivated even when faced with challenges. The education system would foster curiosity and a lifelong thirst for knowledge, empowering students to continue learning long after they graduate.

8. Community and Parental Involvement

In my dream education system, schools would not operate in isolation but would be deeply connected to the communities they serve. Parents, guardians, and local organizations would be partners in the educational process. Schools would actively engage families in the learning process through regular communication, parent-teacher conferences, and community events. Teachers would be available for one-on-one conversations with parents to discuss their child's progress and offer support. There would be a recognition that families play an essential role in a child's education, and schools would be designed to foster strong, positive relationships with parents and caregivers. Local communities would also play a role in providing real-world learning experiences for students. For example, students might participate in community service projects, internships, or field trips to local businesses, museums, or non-profits. This would help students build connections between their learning and the world outside the classroom.

10. A teacher who inspired me

Teachers play a significant role in shaping a student's future, and among the many teachers I have had, one who truly inspired me is Mr. Santosh Kumar, my Mathematics teacher from Class 6. His dedication, patience, and unique teaching methods left a lasting impact on me and played a crucial role in shaping my perspective on learning. Mathematics was not always my favourite subject, but Mr. Santosh Kumar had a way of making complex concepts easy to understand. His teaching was not just about solving problems but about developing logical thinking. He encouraged us to ask questions, explore different methods of solving problems , and never be afraid of making mistakes. His enthusiasm for the subject was contagious, and soon, I found myself enjoying Mathematics more than ever before. One of the things I admired most about him was his **patience and kindness**. He never scolded students for not understanding a topic; instead, he would explain it multiple times until everyone grasped it. He believed that every student had the potential to excel, and this belief motivated me to put in more effort and gain confidence in my abilities. Beyond academics, Mr. Santosh Kumar also taught us the importance of **hard work, discipline, and perseverance**. He often shared real-life examples and stories to make learning more relatable and engaging. His words of encouragement and his ability to bring out the best in his students made a significant impact on my academic journey.Even today, as a B. Ed. student, I remember his teachings and the values he instilled in me. His influence has helped me develop a positive attitude toward challenges and a love for continuous learning. I will always be grateful for having such an inspiring teacher in my life.

Conclusion

In sum, my dream education system would be one that nurtures the full potential of every child, focusing on the development of both the mind and the heart. It would value creativity, critical thinking, and emotional intelligence as much as academic knowledge, and it would prioritize inclusivity, well-being, and lifelong learning. Teachers would be supported in their role as guides and mentors, and students would be empowered to take control of their own learning. Above all, this education system would seek to create not just knowledgeable individuals, but compassionate, curious, and resilient people ready to face the challenges of the future with confidence.

CONTINUOUS PROFESSIONAL DEVLOPMENT: WHY TEACHER'S MUST LEARNING

Neha Kumari
B.Ed. Trainee (2024-26)

Introduction- In today's rapidly changing world, education is evolving at an unprecedented pace .New teaching strategies , technological advancements and reasearch based best practices emerge regularly.To keep up , teachers must embrace continuous professional development (cpd) the process of lifelong learning that helps educaters enhance their skills , improve student outcomes , and stay relevant in their field . Teaching is a dynamic profession that requires constant growth and adaptation .The nep 2020 Placed teachers at the centre of reforms。Concerning pedagogy assessment and professional development. It emphasises the need for providing opportunities for teachers to develop competencies that are required to prepare students or learners for the changing world of work and to achieve expected learning outcome 。To bring about these transformations and systemic changes in the existing education system , we need to develop the competencies of the teachers Through continuous professional development (cpd) Programme and prepare them as lifelong learners。Lifelong learning encampasses the continuous self motivated pursuit of knowledge and acquisition of skills for individual and professional interest and reasons . CPD is not just about meeting mandatory training requirements。It is about lifelong learning and professional growth。Effective CPD allows teachers to refine their expertise adopt new educational tools and respond to the changing needs of a students .Likewise ,as rapid developments in technology integrate into our day to day lives,they affect the way students learn and teachers teach.Modern teachers need to be competent in not only basic skills, but new skills sets. Here are 21st century professional development skills ,or as we like to call them "modern skills" that today's teachers should possess .

1. Adaptability - In this modern ,digital age ,teachers need to be flexible and able to adapt to whatever is thrown their way.Likewise, administrators are changing and updating Expectations and learning standards. Whether it's to the way students learn the behavior their classroom exhibits ,or their Lesson plans, being able to adopt is a skill that every modern teachers must have.
2. 2. Confidence -- Every teachers need to have confidence . Not only in themselves but in their students and their colleagues as well.A confident person inspires others to be confident and a teachers confidence can help influence others to be a better person.
3. 3. communication ----Being able to communicate with not only your students but with parents and staff is essential skill .Think about it;almost all of a teacher's day is spent communicating with students and colleagues, So it is crucial to be able to talk clearly and concisely in order to get your points across.
4. 4. Team player - Part of being a teacher is being able to work together as a part of a team or a group .when you work together as a team ,It provides students with a better chance to learn and have fun. Networking with other teachers (even virtually) and

solving problems together will only lead to success。Doing so fosters a sense of community ,not only in your own classroom but school- wide as well .

5. 5. continuous learner --- Teaching is a lifelong learning process. The world is always changing,along with the curriculum and educational technolog. So it's up to you, the teachers , to Keep up with it. A teacher who is always willing to go that extra mile to learn will always be an effective ,successful teacher .
6. 6. Ability to manage online Reputation -This 21 st century , modern teaching skill is definitely a new one. In this digital age, Most, if not all, teachers teachers are online , which means they have an "online reputation " modern teachers need to know how to manage their online reputation and which social networks are okay for them to use . LinkedIn is a professional social network to connect with colleagues,but other social networking site profiles , such as instagram pr facebook , should remain private and separate from students.
7. Understanding of Technology --- Technology is growing at a rapid pace . In the past five years alone we have seen huge advancements , and we will continue to see them grow . While these developments may be hard to keep up with , it is something that all modern teachers need to do . Not only do you need to understand the latest in technology , but you must also know which digital tools are right for your students . It's a process that may take time but will be greatly influential in the success of your students .
8. Ability to Empower - Teachers inspire ; that's justonr of the qualities that come along with the title .modern educaters have the ability to empower students to be critical thinkers , innovative , creative , adaptable , passionate ,and flexible .They empower them to solve problems , self direct ,self - reflect , and lead . They give them the tools to succeed , not only in school but in life .
9. **"Why must teachers keep learning "**
10. 1... Keeping up with Educational Trends and Reforms . Education policies , curricula , and teaching strategies change over time .cpd helps teachers stay informed about;
11. # New pedagogical approaches -- such as inquiry -based learning , flipped classrooms , and project -based learning . *Assessment techniques -- that promote holistic learning and critical thinking.
12. #Inclusion strategies -- to support students with diverse learning needs . For instance , countries worldwide are adopting competency -based education (CBE) , where students are assessed on mastery rather than time spent in class . Without cpd , teachers may struggle to implement such reforms effectively.
13. 2..... Adapting to Technology in Education Technology is transforming the classroom with digital tools , online learning platforms , artificial intelligence, and virtual simulations vcpd allows teachers to . #use interactive tools such as kahoot , quizzes , and padlet for student engagement . # Leverage Ai - powered assistant for personalized learning experiences. Teachers who don't update their skills may find it challenging to engage students in an increasingly digital world .
14. 3 .... Enhancing Teaching Effectiveness-- Professional development helps teachers refine their teaching techniques , improve classroom management ,and adopt evidence - based strategies . This results in ; # more engaging and student- centred lessons . # Better differentiation to support students with varying abilities . # improved

15. behaviour management strategies . For instance , cpd om neuroscience and learning can help teachers understand how students process information , leading to better instructional methods .
16. 4..Improving student learning outcomes when teachers continue to learn their students benefit . Cpd leads to ; # Higher student engagement and motivation . # Improved academic performance . # Better critical thinking and problem - solving skills. Studies show that well - trained teachers contribute significantly to student success . For instance professional development in formative assessment techniques helps teachers provide better feedy , which directly enhances learning outcomes.

Conclusion- By consistently updating their knowledge , refining their teaching strategies , and adapting to new technologies , educators ensure that they remain relevant and effective in their profession . Cpd not only enhances their skills but also boosts student learning outcomes , fosters innovation in the classroom, and prepares teachers for leadership roles . In a world driven by rapid advancements, a teacher who stops learning soon finds themselves outdated . But a teacher who continuously learns , evolves , and grows becomes a source of inspiration for their students . After all, the best teachers are those who never stop being students themselves . In a world where knowledge is constantly expanding teachers must be lifelong learners -- not just for their own success , but for the success of the students they educated ...let us commit to lifelong learning , not just as a professional responsibility , but as passion that fuels excellence in education.

References-

Ball, S. J. (1994). Education reform: A Critical and Post-structural Approach. McGraw-Hill Education (UK).

Ball, S. J. (2012). Global Education Inc: New policy networks and the neo-liberal imaginary. Routledge.

Biesta, G. (2016). Good education and the teacher: Reclaiming educational professionalism. In J. Evers & R.
Kneyber (Eds.), Flip the system: Changing education from the ground up (pp. 79-90). Routledge.

Understanding The Types Of Learning Challenges And Their Characteristics

Amit Kumar
B.Ed. Trainee (2024-2026)

A learning difficulty is a condition that can cause an individual to experience problems in a traditional classroom learning context. There are different types of learning difficulties that may interfere with literacy skills development and math. They can also affect memory, ability to focus and organizational skills. A child or adult with a learning difficulty may require additional time to complete assignments at school and can often benefit from strategy instruction and classroom accommodations, such as material delivered in special fonts or the ability to use a computer to take notes. No two individuals with a learning difficulty are exactly alike and conditions, such as dyslexia, dyscalculia, and dysgraphia, exist on a wide-spectrum. Note, it's not uncommon for learning difficulties and motor-skills difficulties to co-present. Dyspraxia is a motor-skills difficulty that can affect a learner's ability to write by hand, and may impact planning skills as well. The same is true when it comes to attention deficit hyperactivity disorder (ADHD).

Key Takeaways-

- Learning difficulties are neurological differences that affect how the brain processes information. They can impact various areas of learning, such as reading, writing, mathematics, and comprehension.
- Learning difficulties, often identified during the school-age years, can include ADHD, Dyslexia, Dyspraxia, Dyscalculia, and Dysgraphia. These learning difficulties affect the person's ability to acquire certain types of skills and can co-occur with other learning difficulties.
- Signs of learning difficulties can manifest early in school-age children and later in life can affect performance in higher education and work. If not properly identified and addressed, these difficulties can lead to low confidence and mental health challenges.
- Support for people living with learning difficulties includes speech and language therapy, occupational therapy, educational therapy, group/play therapy, and sensory learning programs.
- Leaf Complex Care's in-house therapy team provides tailored care that meets the needs of people living with a learning difficulty or disability, focusing on enhancing their strengths and quality of life.

The differences between difficulties and disabilities-

The most basic difference between learning difficulties and learning disabilities is that a learning difficulty does not impact a person's intellectual abilities. Someone with a learning difficulty, such as dyslexia, has the intellectual potential to understand and engage with words or numbers but their dyslexia creates a barrier to overcome to achieve that potential. Learning disabilities impact a person's intellectual ability, and the barriers between them and their potential may take many forms. Learning difficulties can be overcome through changing learning styles, the presentation of information, or even giving people more time to understand and complete tasks than those without learning difficulties. People with learning disabilities

require support from others and sometimes from equipment to overcome obstacles and communication issues that are between them and their learning

What's in a name?

Learning difficulties are sometimes referred to as learning disabilities. You may also encounter the terms learning differences or specific learning differences. The differences between these labels can seem subtle but may have implications for how an individual with a learning difficulty views him or herself. The word disability implies a person is less able than his or her peers. It can also suggest they are in a permanent state of disadvantage and cause them to lose agency.

On the other hand, a learning difference takes the opposite approach in underscoring that a person simply learns in a different way from others. They are not disabled, it's just that their brains work differently. The term learning difficulty falls somewhere in-between, describing the added challenges an individual might face in a typical school environment, but also suggesting that these challenges are difficulties that can be overcome.

1.Dyslexia

Dyslexia is one of the most common learning difficulties - also known as learning disabilities, in the US. Dyslexia often affects the way people break words down into their component parts. This has consequences for decoding in reading and can also cause spelling and writing difficulties. Because reading and writing are central to most school curriculums, children with undiagnosed dyslexia can quickly fall behind their peers as they experience problems with note-taking, reading, homework, writing assignments and assessments. Dyslexia is not associated with lower intelligence, but language difficulties can cause children to believe they are less intelligent than their peers and result in low-confidence and a poor self-image.

Some common signs of dyslexia include problems reading out loud, inconsistent spelling – they may be able to spell a word one day and not the next - losing one's place on a page, a poor grasp of phonics, letter reversals, halted writing due to trouble with spelling, and a vocabulary that's more limited in scope. Learn about the signs of dyslexia, strategies for students with dyslexia, and how to help adults with dyslexia in these articles.

2.Dysgraphia

Children who struggle with dysgraphia have a hard time with writing and may produce text that is illegible. Writing can be labored, take a long time to complete and cause frustration and stress The spatial orientation and planning aspects of writing can be particularly challenging for people with dysgraphia. This includes planning the white spaces between letters and words, writing in a straight line and/or producing lines of text that are vertically spaced. Staying in the margins, using punctuation and choosing between capital and lowercase letters may also be hard. Letter formation itself might be problematic and typing on the computer is often a recommended accommodation at school. Children with dysgraphia may be eager to avoid handwriting, particularly in front of their peers. They may feel embarrassed when writing on the board, produce less text than is necessary for written assignments, and can generally perform poorly on assessments that require written answers. Learn more about the signs of dysgraphia or read our article on the differences between dyslexia and dysgraphia.

3.Dyscalculia

As opposed to dyslexia and dysgraphia which are both language based learning difficulties, dyscalculia has to do with processing numbers. Children with dyscalculia can have trouble performing simple arithmetic. They may not know how to approach a math problem. Sometimes the spatial aspect of balancing equations is tricky, as well as grouping numbers and performing the right order of operations.

Even counting can be a struggle and it is often recommended that individuals with dyscalculia be allowed to use a calculator to support their learning.
When dyslexia and dyscalculia are present together, reading word problems is made more difficult, and number reversals may be frequent. This can introduce errors into the work and cause a student to get the wrong answer. Dysgraphia and dyscalculia together mean a child often finds showing math work in long form particularly difficult to complete.
Writing math symbols may be near impossible, as can be certain spatial or graph oriented aspects of math. Lastly, in dyspraxia and dyscalculia, getting steps in the right order can be a problem. Learn more in our post on math difficulties in the classroom.

Attention disorders can also affect learning-

Attention deficit disorder (ADD) and attention deficit hyperactivity disorder (ADHD) used to be grouped under the umbrella term of ADD. However, in recent years it is ADHD that has become the general label for attention disorders in the US, and ADD without hyperactivity is referred to as a primarily inattentive presentation of ADHD. Note ADD is still used in the UK. Attention disorders are often characterized by difficulties maintaining focus over extended periods.

Children with ADHD can have poor impulse control, be fidgety, and produce messy written work. They are often easier to pick out in a classroom than a student who has ADD (also referred to as inattentive ADHD), as in the case of the latter a learner may not call any attention to Children with ADHD can have poor impulse control, be fidgety, and produce messy written work. They are often easier to pick out in a classroom than a student who has ADD (also referred to as inattentive ADHD), as in the case of the latter a learner may not call any attention to themselves. In fact, a learner with ADD may appear to be paying attention and thus the attention difficulty can go unnoticed until it results in incomplete assignments and poor performance on tests. In certain cases a child may even be told they are not trying hard enough.

Is dyspraxia a learning difficulty?

While not grouped under the learning difficulties/ learning disabilities header, dyspraxia is a motor skills difficulty that can also affect academic success. That's because it affects the planning and coordination of muscles, including those of the hand.
As gripping the pen or pencil in written language production is painful, writing may contain more spelling errors and less text as a result. In cases of verbal dyspraxia/ apraxia of speech, the muscles of the face, mouth and throat are affected, limiting spoken language production. People with dyspraxia may also walk with a funny gait, have trouble using a paintbrush in art class, and experience difficulties playing a musical instrument, and/or performing coordinated movements in sports. They can be clumsy and might also struggle with organization and tasks that involve planning. Learn more in our articles helping students who have dyspraxia, and dyspraxia in adults.Slow processing, apraxia and expressive and receptive language disorders In addition, some students may present with processing issues. Slow processing can mean a child requires more time to complete school assignments and additional exposures are neededto bring information into working memory.
Expressive and receptive language disorder and apraxia of speech are other language based difficulties that cause issues with comprehension and spoken language production. Learn more in about processing speed, expressive receptive language disorders, and dyspraxia vs. apraxia of speech.

Screening and testing for difficulties/ disabilities-

When a learning difficulty is suspected, it's typically recommended that an individual be screened. This is done using a short and sometimes online assessment tool that can indicate whether or not more testing is recommended. If dyslexia, dysgraphia or dyscalculia are

suspected, comprehensive testing can be performed by an educational psychologist, or in some cases a speech and language therapist.
The reason for this is no two people with a learning difficulty struggle with the same set or severity of symptoms and thus it's important to understand where strengths and problem areas lie in order to provide the best strategy training and accommodations.

Accommodations and technology-

It's often recommended that individuals who struggle with specific learning and motor skills difficulties be allowed to use a computer to complete school work. One reason for this is typing takes care of many of the presentation aspects of writing, from letter formation to spacing and neatness. For individuals who struggle with language-based difficulties, learning to touch-type also helps to encode a word as a series of muscle movements in the fingers, which supports spelling skills. Additionally, writing on a device opens up access to auto-complete, predictive text, and spell-checkers. It is also easier and less painful for students with dysgraphia and dyspraxia to type vs. write by hand.Touch-type Read and Spell (TTRS)
However, learning to type may not be as easy for students with learning difficulties as it is for their peers. Typing programs that emphasize speed over accuracy put pressure on students to perform in timed lessons. They also may not offer accessible displays, which can lead to more frustration and lower confidence.
Touch-type Read and Spell (TTRS) was developed to help individuals with learning difficulties master typing so they can access technology and avoid handwriting at work or at school. At the same time, it was designed to help strengthen literacy skills. The program takes a dyslexia-friendly Orton-Gillingham based approach which is multi-sensory.
Students hear the words, see them on screen and type them out, which helps to reinforce learning in memory. Lessons are broken down into bite-sized modules so they can be repeated as many times as is necessary and every student can learn at his or her own pace. Additionally, the words presented follow a program of English phonics so students enhance decoding, sight reading and spelling skills as they progress.
TTRS is accuracy based, which means students must correct mistakes in order to move on. It's a learning program which builds confidence gradually as learners repeat modules and improve their skills.
Learning typing not only makes it easier for individuals with learning difficulties to access other tools and online programs, but it builds confidence and self-esteem too!

Support for People with Learning Difficulties-

Living with a learning disability or difficulty can be challenging for people and their families. Parents might be worried about their child's education prospects, whilst adults may feel relieved to understand why they've struggled with some aspects of their lives. Regardless of the circumstances, people living with learning disabilities and difficulties benefit from tailored learning strategies to achieve their full potential.
Support workers are trained to assist children and adults with learning difficulties and improve their performance in all aspects of life. They can employ a program with several types of lessons, such as:
Speech therapy – A speech and language therapist supports people with the most common learning difficulties, such as dyslexia, dysgraphia, and auditory processing disorder.
Occupational therapy – treatment focused on improving the motor skills of the child
Educational therapy – help for school-age children with basic subjects (reading, writing, speaking, maths)
Group/play therapy – teaching children skills through friendly interaction with their peers
Sensory learning program – teaching through stimulation of all senses

समाजीकरण के आवश्यक तत्व के रूप में स्वतंत्रता, समानता और न्याय की वर्तमान में स्थिति

आयुष मणि
B.Ed. Trainee (2024-2026)

सामाजिक राजनीतिक दर्शन, समानता, न्याय और स्वतंत्रता एक ऐसा दार्शनिक अध्ययन है,जो समाज और राज्य के बीच के रिश्ते को गहराई से समझने का मौका देता हैं। हमारे जीवन के बहुत सारे पहलू चाहें वह सामाजिक हो या राजनीतिक इसी दर्शन की आस पास घूमते हैं। हर समाज में यह सवाल उठता है कि एक जस्टिस या न्याय युक्त समाज कैसे होना चाहिए। क्या हर मनुष्य को एक जैसी सुविधा मिलना चाहिए, या कुछ लोगों को ज्यादा हक साधन या अवसर मिलनी चाहिए। हम अक्सर देखते हैं कि दुनिया में असमानता है। कोई अमीर है, कोई गरीब है, किसी के पास ज्यादा पावर है, किसी के पास काम। क्या यह सही है? और अगर नहीं तो इसका समाधान क्या हो सकता हैं? हम यह समझने की कोशिश करेंगे की बराबरी यानी इक्वलिटी, न्याय यानी जस्टिस और आजादी यानी लिबर्टी का असली मतलब क्या है? यह अवधारणा सुनने में आसान लगते हैं, लेकिन जब इन्हें समझने की बात आती है तो, कई परत मिलती है। क्या बराबरी का मतलब सिर्फ यह है कि सबको एक जैसी चीज दी जाए। क्या जस्टिस का मतलब सिर्फ कानून के आधार पर फैसले लेना है? और क्या आजादी का मतलब है कि हम जो चाहे वह करें बिना किसी रूकावट के। जब हम समानता,न्याय और स्वतंत्रता जैसी शब्द सुनते हैं। समाज में उपर्युक्त प्रश्न उपज लेती है।
तीनों आदर्श हमारे भारत के संविधान में महत्व संविधान का एक मुख्य उद्देश्य है कि एक ऐसा समाज बनाना जहां समानता, न्याय, और आजादी का पालन हो। यह अवधारणा हमारे प्रस्तावना में लिखे हुए हैं। पर क्या हम इन धारणा को अच्छी तरह से समझते हैं? और सबसे महत्वपूर्ण क्या हम उन्हें अपने जीवन में लागू कर पा रहे हैं? और क्यों यह एक बेहतर समाज बनाने के लिए जरूरी है?

स्वतंत्रता यानि आजादी

आजादी का मतलब सिर्फ यह नहीं है कि हम जो चाहे वह करें। स्वतंत्रता का मतलब है कि हर व्यक्ति को अपनी जिंदगी जीने का अधिकार मिले, बिना किसी रोक रुकावट के। हम सबको अपनी सोच अपनी विचार और अपने निर्णय लेने की आजादी होनी चाहिए। लेकिन यह समझना जरूरी है कि हर आजादी के साथ कुछ सीमा होती है। हमारा कार्य दूसरों के अधिकारों को प्रभावित न करें। यह ध्यान रखना होता है, जैसे आपको अपना विचार देने की आजादी है, लेकिन आपको दूसरों को नुकसान पहुंचाने का अधिकार नहीं है। समाज में रह के स्वतंत्रता का मतलब होता है, खुद को अभिव्यक्त करने की आजादी, लेकिन इस तरह दूसरों की आजादी का भी सम्मान करना होता है। यह तीन मूल अवधारणाएं समानता, न्याय और स्वतंत्रता इन तीनों धारणा को समझना इसलिए जरूरी है क्योंकि यह हर एक लोकतंत्र हर एक गैर समाज की बुनियाद है। जब तक हम बराबरी न्याय और आजादी को समझकर लागू नहीं करते, तब तक हम एक सही लोकतंत्र और आदर्श समाज नहीं बना सकते। समानता न्याय और स्वतंत्रता यह तीनों धरना एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इनका आपस में एक दूसरे का संबंध को समझना जरूरी है। क्योंकि एक लोकतांत्रिक समाज का निर्माण इन तीनों विचार पर टिकता है। अगर एक भी मूल्य अनुपस्थित हो तो समाज में असंतुलन आ जाता है, और एक न्याय संगत तुरंत व्यवस्था बना पाना मुश्किल हो जाता है।
सामानता और न्याय बीच संबंध अगर समाज में समानता नहीं होगी तो न्याय कभी भी पूरी तरह सफल नहीं हो सकता। कल्पना कीजिए कि एक समाज में कुछ लोग ज्यादा पावरफुल है ज्यादा संसाधन या अधिकार रखते हैं, और कुछ लोगों को बेसिक राइट्स तक नहीं मिलते। ऐसे में अगर कानून के आधार पर फैसला भी लिए जाए, तो भी वह न्याय नहीं हो पाएगा। क्योंकि सबको एक ही जगह से शुरुआत नहीं मिली हैं। न्याय तभी हो सकता है जब सबको बराबर मिले और सबको बराबर अवसर दिए जाएं। एक उदाहरण लेते हैं, मान लीजिए वर्ग में दो बच्चे हैं, एक ऐसे घर से हैं जहां उसके पास सारी किताब का साधन और पढ़ाई का माहौल है, जब दूसरा बच्चा ऐसे घर से है, जहां उसके पास जरूर के वास्तु भी नहीं है। अब दोनों बच्चों का एक ही परीक्षा है और दोनों को एक ही मानक पर टेस्ट किया जा रहा है। यह समान सामानता तो हुई, लेकिन क्या यह जस्टिस है? बिल्कुल नहीं! दोनों बच्चों की स्थिति अलग है, उनके समान साधन नहीं मिले। इसलिए न्याय तभी होगा जब पहले दोनों को बरारी का मौका मिले तब उन्हें जज किया जाए।

समानता और स्वतंत्रता के बीच संबंध

अगर एक समाज में बराबराब नहीं होगी, तो आजादी भी पूरा नहीं होगी। स्वतंत्रता का मतलब है अपनी जिंदगी के फैसले लेने की आजादी। लेकिन यह आजादी तभी सार्थक होती है। जब सब लोग बराबर हो अगर किसी एक व्यक्ति को दूसरे से कम मौका या साधन मिल रहे हैं तो वह अपनी आजादी का पूरा फायदा नहीं उठा पाएगा। उदाहरण से देखे तो एक

समाज के पास शिक्षा का बहुत अच्छा साधन है, और कुछ लोग के पास नहीं। अब जो लोग शिक्षित हो रहे हैं उन्हें अपनी जिंदगी में विकल्प मिलेगी वह अपने करियर जीवन शैली और भविष्य के निर्णय ले पाएंगे। लेकिन जो लोग शिक्षित नहीं हो पा रहे हैं वह प्रतिबंधित हो जाएंगे, उन्हें ज्यादा विकल्प नहीं मिलेंगे। ऐसे में उनकी आजादी के आधार पर भी प्रतिबंध आ जाता है। बराबरी बिना आजादी का कोई असली मतलब नहीं होता। सामानता यह सुनिश्चित करता है की स्वतंत्रता सभी के लिए एक जैसी सार्थक रहे।

न्याय और आजादी का कनेक्शन

आजादी का मतलब होता है, फ्रीडम का चॉइस। लेकिन अगर समाज में न्याय नहीं है तो वह आजादी काम की नहीं रहेगी। अगर समाज में कुछ लोग अनफेयर ट्रीटमेंट फेस कर रहे हैं,तो उनका शोषण हो रहा है तो उनकी आजादी सिर्फ नाम की रह जाएगी। जस्टिस का परपस यही है कि सबको गैर ट्रीटमेंट मिले और वह अपनी आजादी को सुरक्षित कर सके। यहां भी एक उदाहरण से देखें तो, जैसी एक समूह के लोगों को उनके धर्म या जाति के आधार पर हर बार क्षति पहुंचा दिया जाता है। अब यह लोग सीधे तो अपनी स्वतंत्रता का आनंद कर रहे हैं। वह कहीं भी जा सकते हैं, अपने निर्णय ले सकते हैं, लेकिन समाज के अनुचित व्यवहार की वजह से अपनी स्वतंत्रता का पूरे आनंद नहीं कर पाते हैं। न्याय का काम यह होता है कि वह उनके लिए एक ऐसा वातावरण बनाएं जहां वह बिना किसी भेदभाव के अपने जीवन जी सके। देखा जाए तो समानता, न्याय और आजादी एक दूसरे से अलग नहीं है।

अगर एक भी अवधारणा में कमी होगी तो समाज में असंतुलन आ जाएगा। सामानता बिना न्याय नहीं हो सकता और बिना स्वतंत्रता का कोई मतलब नहीं। यह तीनों धरना मिलकर एक संतुलन लोकतांत्रिक समाज बनाते हैं। जहां हर इंसान को बरारी का दर्जा आजादी और न्याय मिलता है। यह सब एक दूसरे पर आश्रित करते हैं।

भारत के संविधान का दृष्टिकोण

भारत एक ऐसे समाज का दृष्टि रखता है जहां बराबरी यानी समानता, न्याय और आजादी हर नागरिक को दी जा सके। हमारे संविधान का हर एक हिस्सा इस बात का ध्यान रखना है कि एक संतुलन और सभ्य समाज का निर्माण हो। ये नियम कैसे हमारे संविधान में डाले गए हैं, और कैसे यह मूल्य हर एक नागरिक के हक को सुरक्षित करते हैं। पहला कदम संविधान में इन सिद्धांत को समझने का प्रस्तावना से शुरू होता है। प्रस्तावना एक परिचय जैसा है जो बताता है, कि हमारा संविधान की क्या बुनियादी मूल्य है। सीधी तौर पर उल्लेखित किया गया है कि प्रभुत्व–सम्पन्न, समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य होगा। इन शब्दों का मतलब यह है कि हमें एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जहां समानता,न्याय और आजादी को हर नागरिक के लिए सुनिश्चित किया जा सके।

प्रभुत्व–संम्पन्न–

प्रभुत्व–सम्पन्न का मतलब है कि भारत अपने फैसले खुद लगा। किसी दूसरे देश या पावर का दबाव नहीं होगा।

समाजवादी–समाजवादी का मतलब है साधन और धन का समाज में वितरण ताकि बराबरी हो।

धर्मनिरपेक्ष–सेकुलर का मतलब है हर धर्म के प्रति सम्मान व्यवहार

लोकतांत्रिक गणराज्य का मतलब है, जनता के द्वारा जनता के लिए चलने वाला सिस्टम जहां हर नागरिक का अधिकार सुरक्षित हो।

इसमें कुछ कीवर्ड डायरेक्टली हाइलाइट्स किए गए हैं। न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा। न्याय का मतलब सिर्फ कानून ही न्याय नहीं बल्कि सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक न्याय भी।स्वतंत्रता का मतलब है विचार अभिव्यक्ति धर्म और निर्णय लेने की आजादी।सामानता का मतलब है, कानून के आगे सबको बराबर मान्यता भाईचारा का मतलब है एकता और सम्मान के साथ जीवन प्रस्तावना में यह मूल्य साफ–साफ परिभाषित की गई है, और यह हमारे पूरे संविधान की मुख्य धारा में है।समानता का नियम हमारे संविधान में अलग–अलग जगह पर उल्लेख किया गया है।

लेकिन इसके लिए सबसे विशिष्ट अनुच्छेद 14 से 18 तक है जो मौलिक अधिकार के भाग में आते हैं।

अनुच्छेद 14 समानता का अधिकार, अनुच्छेद 14 कहता है कि कानून के आगे सब बराबर है, इसका मतलब है कि हर नागरिक चाहे वह किसी भी जाति लिंग या बैकग्राउंड का हो उसके बराबर ट्रीटमेंट का अधिकार मिलना चाहिए कोई भी कानून किसी व्यक्ति या ग्रुप के साथ पक्षपात नहीं हो सकता। अगर समाज में किसी भी क्षेत्र को अलग सुविधा दिया जा रहा है, बिना किसी वैलिड रीजन के तो आर्टिकल 14 का उल्लंघन होगा।15 अनुच्छेद भेदभाव का निषेध, आर्टिकल 15 कदम आगे बढ़ःकर यह कहता है कि स्टेट किसी व्यक्ति के साथ उसकी कास्ट रिलिजन जेंडर या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं करेगा।। यह आर्टिकल उसे समस्या को डायरेक्टली टारगेट करता है जो हमारे देश में ऐतिहासिक प्रचलित रही है, जैसे। जातिगत भेदभाव लिंग आधारित भेदभाव प्रचलित रही है। अनुच्छेद 15 का एक एक्सटेंशन यह भी है कि राज्य कुछ विशेष सुविधा देगा।

कुछ स्पेशल प्रोविजंस बन सकता है बैकवर्ड क्लासेस के लिए, जिसे उन्हें बराबरी का मौका मिल सके।

अनुच्छेद 16 सार्वजनिक रोजगार में अवसर की समानता , इस अनुच्छेद के द्वारा सार्वजनिक रोजगार में बराबरी का हक दिया गया है, इसका मतलब है कि सरकारी नौकरियों में किसी व्यक्ति को उसके जाति, श्रेणी या जेंडर के बेस के आधार पर बाहर नहीं किया जा सकता हर व्यक्ति को बराबर का मौका मिलना चाहिए जॉब के लिए अप्लाई करने का।

आर्टिकल–17 अस्पृश्यता का उन्मूलन, यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण अनुच्छेद है जो अस्पृश्यता यानी अछूत प्रथा को समाप्त करता है। अस्पृश्यता एक सामाजिक बुराई थी जो लोगों को अलग–अलग वर्गों में विभाजित करती थी। अनुच्छेद 17 के जरिए यह प्रैक्टिस का कानून की नजर में सिर्फ प्रतिबंध की गई है, बल्कि अगर कोई छुआछूत को पालन करता है उस पर कानूनी कार्रवाई भी हो सकते हैं। अनुच्छेद 18– उपाधियों का उन्मूलन, इस अनुच्छेद के द्वारा वंशानुगत उपाधि को खत्म करने की बात की गई है। पहले के समय में उपाधि जैसे कि राजा नवाब या सर दिए जाते थे, जो इन असमानता

को बढावा देते थे। अनुच्छेद 18 के जरिए यह उपाधि खत्म कर दिए ताकि सबको एक जैसा ओहदा दिया जा सके। न्याय का सिद्धांत संविधान में सिर्फ कानूनी न्याय तक सीमित नहीं है इसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय को महत्व दी गई।

मौलिक अधिकार और राज्य नीति के निर्देशन सिद्धांत, दोनों मिलकर ये ठीक करते हैं कि सामाजिक में न्याय स्थापित हो। अनुच्छेद 21—जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार, अनुच्छेद 21 काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस अनुच्छेद के जरिए जीवन का अधिकार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सुरक्षा दी गई है। इसका मतलब है कि किसी भी व्यक्ति का जीवन और आजादी कानूनी कारण के नहीं छीनी जा सकती। यह अनुच्छेद न्यायिक के माध्यम से काफी विस्तारित भी हो गया है आज अनुच्छेद 21 के अंदर गोपनीयता का अधिकार, जीवन का अधिकार, गरिमा के साथ रहने का अधिकार, स्वास्थ्य का अधिकार जैसे अधिकार सम्मिलित है।
राज्य नीति का निर्देशन सिद्धांत,यानी डीपीएसपी का उद्देश्य है, एक ऐसे समाज का निर्माण करना जहां सामाजिक और आर्थिक न्याय हो। यह सिद्धांत के लिए निर्देश प्रदान करते है, ताकि समाज में कल्याण और विकसित हो सके। इसमें कुछ विशिष्ट सिद्धांत जैसे कि अनुच्छेद 39 जो कहता है कि संसाधन का वितरण इस तरह से होना चाहिए, जिससे सबको समान अवसर मिल सके।अनुच्छेद 41 जो रोजगार और शिक्षा लागू करता है, इन सब में जस्टिस का सिद्धांत साफ—साफ दिखता है। स्वतंत्रता का कॉन्सेप्ट भारत के संविधान में एक अधिकार के द्वारा लागू किया गया है लेकिन इसके साथ—साथ मौलिक कर्तव्य भी दी गई हैं। ताकि स्वतंत्रता एक जिम्मेवार तरीके से लागू हो सके।

मौलिक अधिकारों में स्वतंत्रता हमारे संविधान में स्वतंत्रता का कई फॉर्म्स को प्रोटेक्ट किया गया है।
विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अनुच्छेद 19
धार्मिक स्वतंत्रता अनुच्छेद 25
व्यक्तिगत स्वतंत्रता 21
अनुच्छेद 19 के अंदर हर नागरिक को अपनी सोच को व्यक्त करने की आजादी दी गई है, प्रेस को फ्रीडम दी गई है, और पीसफुल प्रोटेस्ट करने के लिए हक दिया गया है।
लेकिन स्वतंत्रता के साथ उत्तरदायित्वता भी आती है ताकि सामाजिक सद्भावना बनी रहे। इसलिए संविधान में मौलिक कर्तव्य भी उल्लेख की गई है। यह कर्तव्य हर नागरिक को याद दिलाती है, की अपनी आजादी का इस्तेमाल करते हुए दूसरों के अधिकार का भी ध्यान रखना जरूरी है। जैसे अनुच्छेद 51(क) में कहा गया है कि हर नागरिक का कर्तव्य है संविधान का सम्मान करना, प्राकृतिक वातावरण का सुरक्षित करना और एकता और भाईचारा बनाकर रखना। देखा जाए तो भारतीय संविधान हर एक संदर्भ में समानता, न्याय और स्वतंत्रता को सुरक्षित करने का प्रावधान है। प्रस्तावना में इनका नींव रखा गया और अनुच्छेद के द्वारा सिद्धांतों को विशिष्ट अधिकार में बदलाव किया गया है।संविधान का हर भाग इस बात का ध्यान रखना है कि भारत हर नागरिक बराबरी के साथ जी सके, न्याय को पा सके, अपनी आजादी का उपभोग कर सके, लेकिन इसके साथ—साथ अपनी स्वतंत्रता को जिम्मेदारी तरीके से इस्तेमाल करते हुए समाज में एकता और सम्मान को भी बनाए रखना हमें जरूरी है संविधान के अनुच्छेद 15 और अनुच्छेद 17 के जरिए जातिगत भेदभाव को प्रतिबंध किया गया है। लेकिन आज भी यह एक कड़वी सच्चाई है कि हमारे समाज में जातिगत प्रणाली अपने नए रूप में जिंदा है। क्या हर व्यक्ति को बराबरी का हक मिल रहा है जवाब है नहीं, दलित और पिछड़ा जाति के लोग आज भी कई जगहों पर भेदभाव का शिकार होते हैं। चाहे वह एजुकेशन सिस्टम हो या एंप्लॉयमेंट हो या सोशल एक्सेप्लेंस अनटचेबिलिटी जो संविधान अनुच्छेद 17 के माध्यम से अस्पृश्यता की गई थी आज भी ग्रामीण क्षेत्र में जिंदा है। स्टडीज और रिपोर्ट बताती हैं कि कई ग्रामीण क्षेत्र में आज भी दलित समुदाय को सार्वजनिक स्थान जैसे वेल्स,मंदिर, और विद्यालय में प्रवेश नहीं मिलती यह सामाजिक असमानता का एक खुला उल्लंघन है। शहर में भी जातिगत भेदभाव एक छोटे से रूप में दिखता है। जैसे जब मार्केट में यहां पर अपर कास्ट इंडिविजुअल्स को प्राथमिकता दिया जाता है। प्राइवेट सेक्टर में कास्ट वेस्ट भेदभाव काफी निजी है और यह बराबरी का सिद्धांत को सीधे चुनौती करते हैं। लिंग समानता भी एक बड़ा मुद्दा है संविधान की अनुच्छेद 15 में लिंग आधारित भेदभाव को मना किया गया है लेकिन हम देखते हैं कि आज भी महिलाओं और एलजीबीटी क्यू प्लस समुदाय बराबरी का व्यवहार नहीं होता। कार्यस्थल, घरेलू हिंसा का भुगतान और प्रतिनिधित्व की कमी जैसी समस्यागैप घरेलू हिंसा और प्रतिनिधित्व की कमी लैंगिक असमानता को प्रतिबिंबित करते हैं आर्थिक असमानता का मुद्दा भी आज के समय में काफी प्रचलित है, भारत जैसे विकसित देश अमीर और गरीब के बीच के फैसले दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। संविधान में निर्देशात्मक सिद्धांत में संसाधन का निष्पक्ष वितरण का उल्लेख किया गया है, लेकिन जमीनी स्तर पर कुछ और ही है, ऑक्सफैम रिपोर्ट के मुताबिक भारत में रिचेस्ट 1 प्रतिशत के पास देश की धन एक बहुत बड़ा हिस्सा है। जबकि गरीब लोग जरूरत के वास्तु के लिए संघर्ष कर रहे हैं। गरीबी और आर्थिक प्रभाव सीधा शिक्षा और स्वास्थ्य पर पड़ता है, गरीब लोगों के लिए गुणवत्ता शिक्षा और हेल्थ केयर सर्विस काफी दूर की

बात लगती है। जबकि धनी वर्ग के पास यह सुविधाएँ आसानी से उपलब्ध है। यह परिस्थितियां एक अनुचित और असमानता सामाजिक समाज का प्रतिबिंब है।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के बीच में एक बड़ा गैप है, ग्रामीण भारत में लोग आज भी बेसिक इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे पानी सड़क और बिजली के लिए तरसते हैं, जबकि शहरी क्षेत्र में आधुनिकरण हो रहा है इस असमानता का सीधा प्रभाव आर्थिक स्वतंत्रता पर पड़ता है। जहां ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को अवसर तक पहुंचने का मौका कम मिलता है। यहां एक तरफ संविधान में हमें स्वतंत्रता का हक दिया है वहीं दूसरी तरफ इसका मिसयूज भी एक बड़ा चुनौती बनकर सामने आया है।

अनुच्छेद 19 के तहत हमें विचार और अभिव्यक्ति की आजादी मिली है लेकिन आज के आधुनिक उम्र में इस स्वतंत्रता दुर्स्पयोग भी कई तरीके हो रहा है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्विटर जैसे एक्स, फेसबुक, इंस्टाग्राम पर हेट स्पीच फेक न्यूज़ एक सिलसिला चल पड़ा है। यह सिर्फ स्वतंत्रता दुष्प्रभाव नहीं है बल्कि एक लोकतांत्रिक मूल्य को कम करता है। हेट स्पीक से समुदाय के बीच नफरत पड़ती है, और कभी–कभी शारीरिक शोषण तक लीड करती है। सांप्रदायिक अधिकार या धर्म और जातिगत हिंसा के केसेस देखें हैं, जो सोशल मीडिया पर स्पीड हुई फेक न्यूज़ और प्रोपेगेंडा के करण बढ़े। इस स्वतंत्रता कम दुर्स्पयोग करना आसान नहीं है क्योंकि हमें फ्रीडम ऑफ स्पीच और हेट स्पीच के बीच एक फाइन लाइन मेंटेन करनी पड़ती है लेकिन अगर इस समस्या को चिन्हित नहीं किया गया तो, यह सामाजिक सद्भाव एक गंभीर खतरा बन सकती है। यह सारे समस्या ऐसे हैं जिनके कानूनी सुधार की जरूरत है। सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट ने कई महत्वपूर्ण जजमेंट दिए हैं जो इन समस्याओं को चिन्हित करते हैं लेकिन धरातल पर कार्यान्वयन अभी भी एक चुनौती है।

जैसे जाति भेदभाव के केसेस में जाति भेदभाव न्यायतंत्र ने सख्त नियम दिए हैं लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में प्रवर्तन कमजोर है,उसी तरह जेंडर जस्टिस के केसेस में जैसे कार्यस्थल उत्पीड़न हानि इनका कार्यान्वयन कॉर्पोरेट वर्ल्ड में तो बेटर है। लेकिन इनफॉरमल सेक्टर में यह कानून असर नहीं कर हैं। इसके अलावा आर्थिक स्वतंत्रता के मुद्दे पर सरकार ने कुछ वेलफेयर स्कीम लॉन्च किए हैं लेकिन यह स्कीम शॉर्ट टर्म सॉल्यूशन दे रही हैं। लॉन्ग टर्म सॉल्यूशन के लिए स्ट्रक्चरल रिफॉर्म्स जैसे बेटर टैक्सेशन पॉलिसीज ओर वेल्थ डिस्ट्रीब्यूशन की जरूरत है।

आज हम एक कैसे स हमारे पास संवैधानिक अधिकार है, जो हमें सामानता न्याय और आजादी देते हैं लेकिन जमीनी स्तर वास्तविकता में इन विचारों पूरी तरह से लागू करना अभी भी बाकी है। हमारे समाज में आज भी जाति लिंग और आर्थिक असमानताएं हैं, जो एक न्यायपूर्ण समाज को चुनौती करती है। इन समस्याओं को जूझना, कानूनी सुधार, नीति परिवर्तन, और सामाजिक जागरूकता को मिलकर काम करना होगा।

आज हम समानता न्याय और आजादी जैसे अवधारणा को अपने समाज का नींव मानते हैं। इन अवधारणा के जड़ें बहुत पुराने है, इनके पीछे कई बड़े विचारकों और दार्शनिकों का योगदान रहा है। इन विचारकों नहीं हमें सिर्फ यह नहीं बताया कि एक न्याय पूर्ण समाज कैसी होनी चाहिए। बल्कि यह भी समझाया कि कैसे हम अपने व्यक्तिगत अधिकार को आनंद करते हुए सबके लिए फेयरनेस और आजादी का संतुलन बना सकते हैं।

जॉन लॉक

जॉन लॉक एक प्रमुख इंग्लिश दार्शनिक थे या उन विचारकों में से थे, जिन्होंने आजादी के धारणा को गहराई अध्ययन किया लॉक ने कहा था की हर इंसान के पास कुछ प्राकृतिक अधिकार होते हैं जीवन, आजादी और संपत्ति जो उनसे कोई भी नहीं छीन सकता। लॉक के हिसाब से सरकार का असली काम यह होता है कि वह लोगों की आजादी को सुरक्षित करें ना कि उसे नियंत्रण या सीमित करें। लॉक ने यह भी कहा कि अगर कोई सरकार लोगों की आजादी या उनके अधिकार को प्रतिबंध करें तो लोगों के पास उसे सरकार को बदलने का हक होता है यह विचार बाद में लोकतांत्रिक सरकार का एक मजबूत स्तंभ बना।

आज हम देखते हैं कि भारत के संविधान में भी स्वतंत्रता को एक मौलिक अधिकार के रूप में रखा गया है जो लॉक के सिद्धांत को सुदृढ़ करता है।जैसे अनुच्छेद 21 के तहत हमारे पास जीवन जीने का अधिकार, व्यक्तिगत स्वतंत्रता सुरक्षा दिया गया है। जॉन रोल्स

जॉन रोल्स 20वीं सदी के एक और बड़े दार्शनिक थे, इन्होंने न्याय के परिणाम को फिर से परिभाषित किया और अपनी किताब "ए थ्योरी ऑफ़ जस्टिस" में डिस्ट्रीब्यूटर्स का विचार रखा। रोल के अनुसार न्याय का मतलब सिर्फ कानून का सम्मान करना नहीं बल्कि संसाधन और अवसर को इस तरह से वितरण करना है कि सब लोगों को समान अवसर मिल सके, खासकर वे लोग जो ऐतिहासिक नुकसान का सामना कर रहें हैं। रोल्स का कहना था कि अगर हम एक वास्तविक न्यायपूर्ण समाज चाहते हैं, तो समानता और निंदा के बीच एक संतुलन बनाना होगा।

Innovative Teaching Methods: Shaping the Future of Education

RAVI KUMAR
B.Ed. Trainee (2024-2026)

Education is evolving faster than ever, and at the heart of this transformation lies innovation. As we move deeper into the 21st century, traditional chalk-and-talk teaching no longer meets the needs of digitally native students or a fast-changing job market. To bridge this gap, educators are reimagining classrooms, redefining engagement, and rethinking how knowledge is delivered and retained.

Moving Beyond the Lecture Model

Lectures have their place, but innovative teaching methods empower students to become active participants rather than passive recipients. Here are a few approaches making waves:

1. Flipped Classrooms

Instead of using class time for lectures, students learn the basics at home through videos or readings. Class time is then dedicated to interactive discussions, problem-solving, and projects. This method encourages deeper learning and active collaboration.

2. Project-Based Learning (PBL)

Real-world problems, team-based tasks, and cross-disciplinary projects help students build critical thinking and problem-solving skills. PBL aligns well with the skills needed in modern workplaces—collaboration, innovation, and resilience.

3. Gamification

Applying game elements like challenges, points, and leaderboards to education can boost motivation and engagement. Whether it's a math quiz turned into a digital adventure or a history lesson built like a strategy game, gamification makes learning fun and memorable.

4. Experiential & Hands-On Learning

From lab experiments and fieldwork to role-playing and simulations, hands-on experiences help students retain information and see its real-world application. This method works especially well in STEM, medical, and business education.

5. EdTech Integration

AI-powered tutoring, virtual reality simulations, and adaptive learning platforms personalize the learning experience. Tools like Kahoot, Nearpod, or Google Classroom allow teachers to connect with students in dynamic, data-driven ways.

6. Socratic Questioning & Peer Teaching

Asking open-ended questions and encouraging students to teach each other fosters critical thinking, empathy, and communication skills—vital for leadership and teamwork in any field.

Why Innovation in Teaching Matters

Student-Centered Learning: Empowering students builds confidence and lifelong learning habits.

Real-World Relevance: Students are more engaged when learning connects to real life.

Equity & Accessibility: Technology and flexible methods can bridge gaps for diverse learners.

Final Thoughts- Innovative teaching isn't about replacing traditional methods—it's about enhancing them. As educators, leaders, and lifelong learners, we must remain open to experimentation, feedback, and evolution. After all, the goal of education isn’t just to fill minds—but to ignite them.

Are we all ready for these five changes.?

The next 25 to 50 years will redefine what it means to be a teacher. To prepare students for a world of Al, climate shifts, space tech, and fluid careers, we must first reimagine teacher training-not as a formality, but as a futuristic launchpad. Here are five essential areas every educator must be trained in to stay relevant and revolutionary:

1. Al Integration & Digital Fluency - Teachers must go beyond using tech-they must design learning with Al as a co-pilot, from personalized assessments to smart content creation.

2. Neuroscience of Learning - Understanding how brains learn, adapt, and retain information is non-negotiable. Future pedagogy will be deeply rooted in cognitive science.

3. Emotional Intelligence & Mental Wellness -Educators must master EQ, not just IQ. They need tools to create psychologically safe, trauma-informed classrooms.

4.Design Thinking & Problem Solving - Teaching students to think critically begins with teachers trained in iterative, creative, solution-based methods.

5. Sustainability & Global Citizenship - The future demands teachers who nurture empathy, ecological responsibility, and a global mindset in every subject. It's time to upgrade the teacher, not just the tools.

Let's build a global movement where teacher training isn't an afterthought-but the engine of educational transformation. If you're shaping teachers or are one yourself, the future is calling- and it's not waiting.

पर्सनालिटी डिसऑर्डर

अभिषेक राज "सत्या"
B.Ed. Trainee (2024-2026)

पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Personality Disorder) एक मानसिक स्वास्थ्य स्थिति (Mental Health Condition) है, जिसमें व्यक्ति की व्यक्तिगत (Personal) और सामाजिक (Social) जीवनशैली (Lifestyle) में स्थायिता (stability) की कमी होती है। इसमें व्यक्ति की सोचने, अनुभवने (feelings), और व्यवहार में स्थायिता की कमी हो सकती है, जिससे उन्हें स्वयं और अन्यों के साथ संबंध बनाए रखने में कठिनाई हो सकती है। पर्सनालिटी डिसऑर्डर के कई प्रकार और लक्षण हो सकते हैं, जैसे कि अंतिसमाजी (antisocial), उत्साही (impulsive), अव्यक्तिगत (impersonal), और अनुसरणशील डिसऑर्डर (follower-ship disorders) आदि। इनमें से प्रत्येक का अपना विशिष्ट लक्षण (specific symptoms) और प्रभाव होता है। इसमें व्यक्ति की व्यक्तिगतता (individuality), आत्मसमर्पण (dedication), सामाजिक संबंध, और व्यवहार में स्थायिता (stability) की कमी होती है, जिससे उन्हें रोजमर्रा की जीवनशैली में समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। इसका सामान्य इलाज मनोचिकित्सक (Psychiatrist) या मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ (Mental health specialist) के साथ सहायता लेना हो सकता है, जिससे व्यक्ति को सही दिशा में मदद मिल सकती है।

पर्सनालिटी डिसऑर्डर के प्रकार और लक्षण-

पर्सनालिटी डिसऑर्डर कई प्रकार के हो सकते हैं, और इनमें हर एक का अपना विशिष्ट चरित्र (Unique Character)होता है। यहां कुछ प्रमुख प्रकार और उनके लक्षण दिए जा रहे हैं:

1. अंतिसमाजी पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Antisocial Personality Disorder – ASPD): इसमें व्यक्ति का आचरण असामाजिक होता है, और वह किसी की भावनाओं को नहीं समझ पाते हैं । ये व्यक्ति अपने हक में अत्यंत आत्मविश्वासी होते हैं और अनुशासन नहीं मानते।
2. उत्साही पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Histrionic Personality Disorder – HPD): इसमें व्यक्ति ध्यान आकर्षित (attention) करने की कोशिश करता है, और अत्यधिक अभिमानी होता है। उन्हें अनुपयोगी (unhelpful) और अधिराज्यक ढंग से बर्ताव (domineering manner) करने का प्रवृत्ति होता है।
3. अव्यक्तिगत पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Avoidant Personality Disorder – AvPD): इसमें व्यक्ति खुद को अजीब या नकारात्मक (negative) मान सकता है और उन्हें समाज में शामिल होने में कठिनाई होती है।
4. अनुसरणशील पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Dependent Personality Disorder – DPD): इसमें व्यक्ति अन्य लोगों की सहायता और समर्थन की अत्यधिक आवश्यकता महसूस करता है और स्वयं को असमर्थ मान सकता है।
5. शंकात्मक पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Obsessive-Compulsive Personality Disorder – OCPD): इसमें व्यक्ति अत्यधिक क्रमशः और व्यवस्थित होता है, लेकिन उनकी मनःस्थिति और व्यवहार में आत्म-संकट रह सकता है।
6. सीडी (Schizoid Personality Disorder – SPD): इस पर्सनालिटी डिसऑर्डर में व्यक्ति अकेला रहना पसंद करता है और उसे अपने आत्मविकास के लिए व्यक्तिगत जगह देने की आवश्यकता होती है। उन्हें सामाजिक संबंध बनाए रखने में दिक्कत होती है।
7. बोर्डरलाइन पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Borderline Personality Disorder – BPD): इसमें व्यक्ति की आत्म-मूल्यमापन (Self-worth) की कमी होती है, जिससे उन्हें स्थितिगत संबंधों (situational relationships) में अस्थिरता (unstable) होती है, और उनमें अचानक की भावनाएं (sudden emotions) उत्पन्न हो सकती हैं।
8. नार्सिसिस्टिक पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Narcissistic Personality Disorder – NPD): इसमें व्यक्ति को अपने आप में अत्यधिक प्रेम होता है और वह अपनी महत्ता को अनुभव करने में लिपटा रहता है, जिससे वह अन्यों की भावनाओं को अनदेखा कर सकता है।
9. सिक्किट्सोफ्रेनिया पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Schizotypal Personality Disorder – STPD): इसमें व्यक्ति की विचारशीलता, आदर्शवाद, और अनूभूति (perception) में असमानता हो सकती है, जिससे उनका आत्मिक अंदरुनिवार्यता (spiritual insecurity) का अनुभव हो सकता है।
10. डिप्रेशनरी पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Depressive Personality Disorder – DPD): इसमें व्यक्ति की दृष्टिकोण में स्थायिता की कमी होती है और वह अक्सर उदास और निराश हो सकता है, जिससे उनके व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

11. वाचनिक पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Passive-Aggressive Personality Disorder – PAPD): इसमें व्यक्ति अपनी आसन्नता (Dislike) और असहमति (disagreement) को व्यक्त करने के लिए सक्रिय रूप से नहीं, बल्कि अस्पष्ट रूप से व्यक्ति के साथ विरोध करता है।
12. सोमेटाइजेशन डिसऑर्डर (Somatization Disorder): इसमें व्यक्ति अपनी मानसिक स्थिति को शारीरिक रूप से व्यक्त कर सकता है, जैसे कि अनेक स्वास्थ्य समस्याएं होने का आभास करना जो वास्तविक नहीं होतीं।
13. पारनॉयड पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Paranoid Personality Disorder – PPD): इसमें व्यक्ति की भ्रांतियों और संदेहों की कमी होती है, जिससे उन्हें अन्यों पर अधिक आशंकाएं हो सकती हैं।
14. स्वाभाविक पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Organic Personality Disorder): इसमें व्यक्ति की पर्सनालिटी में परिवर्तन उत्पन्न हो सकता है, जो किसी न्यूरोलॉजिकल समस्या या शारीरिक बीमारी के कारण होता है।
15. अवसादी पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Dysthymic Personality Disorder): इसमें व्यक्ति अधिकांश समय तक धूप के आलोक में रहने वाला होता है और उसे आत्म-मूल्यमापन (Self-worth) में कठिनाई होती है, जिससे उसका सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन प्रभावित होता है।
16. स्वास्थ्यनिष्ठ पर्सनालिटी डिसऑर्डर (Health Anxiety Disorder): इसमें व्यक्ति अपने स्वास्थ्य को लेकर अत्यधिक चिंतित होता है, और वह आमतौर पर सामाजिक और पेशेवर जीवन में यह चिंता करता है कि कोई गंभीर बीमारी हो सकती है।

पर्सनालिटी डिसऑर्डर्स के प्रति सही जागरूकता और उपचार-

इन पर्सनालिटी डिसऑर्डर्स के प्रति सही जागरूकता और उपचार की आवश्यकता होती है। यह महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति एक मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ से सहायता लें ताकि वे अपनी स्थिति को समझें और ठीक तरीके से इलाज कराएं।

- जागरूकता बढ़ाएं: सही जागरूकता बढ़ाने के लिए समाज में पर्सनालिटी डिसऑर्डर्स के बारे में शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए। लोगों को इस बारे में जानकारी देना और उन्हें उपचार तक पहुँचाने के लिए सामाजिक जागरूकता बढ़ाना आवश्यक है।
- सही डायग्नोसिस और उपचार: यदि किसी को पर्सनालिटी डिसऑर्डर के संकेत हैं, तो वह शीघ्र मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ से संपर्क करना चाहिए। सही डायग्नोसिस के बाद उपचार की योजना बनाई जा सकती है जो व्यक्ति को सहायता प्रदान करने में मदद कर सकती है।
- मानसिक स्वास्थ्य समर्थन सेवाएं: सामाजिक सेवा संगठन और मानसिक स्वास्थ्य केंद्र जैसी संगठनें व्यक्तियों को उपचार, समर्थन, और सहायता प्रदान करने के लिए हैं। ये सेवाएं व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार डिज़ाइन की जाती हैं।
- समर्थन समृद्धि समूह: व्यक्तियों को अपनी बात साझा करने और समझाने का मौका मिलता है जब वे समर्थन समृद्धि समूहों में शामिल होते हैं। ये समूह आत्म-सहायता और समर्थन प्रदान कर सकते हैं।
- परिवार समर्थन: परिवार का समर्थन बहुत अहम है, और अगर किसी को पर्सनालिटी डिसऑर्डर है, तो परिवार को भी इस बारे में शिक्षित होना चाहिए। सहायता और समर्थन के लिए एक दूसरे का साथ देना महत्वपूर्ण है।

आत्म-प्रबंधन टूल्स और तकनीकें: व्यक्ति को अपनी मानसिक स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के लिए आत्म-प्रबंधन टूल्स और तकनीकों का उपयोग करना चाहिए। इसमें मेडिटेशन, योग, और स्वास्थ्यपूर्ण आदतें शामिल हो सकती हैं जो मानसिक स्वस्थता को बढ़ावा देने में मदद कर सकती हैं।

1. पर्सनल काउंसलिंग और थेरेपी: मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ या मानव-संबंधित विशेषज्ञ से योजना बनाने और समस्याओं का सामना करने के लिए पर्सनल काउंसलिंग और थेरेपी लाभकारी हो सकती है।
2. दवा और मेडिकल समर्थन: कुछ पर्सनालिटी डिसऑर्डर्स के इलाज में दवाओं का सही समय पर उपयोग किया जा सकता है। मेडिकल समर्थन व्यक्ति को उचित दवा या औषधि प्रदान करने के लिए मदद कर सकता है।
3. जीवनशैली परिवर्तन: स्वस्थ जीवनशैली अपनाना भी महत्वपूर्ण है। सही आहार, नियमित व्यायाम, और पर्याप्त आराम मिलने पर मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है।
4. समर्थनीय परिवार और सहयोगी दोस्त: पर्सनालिटी डिसऑर्डर के साथ जीने वाले व्यक्ति के लिए समर्थनीय परिवार और सहयोगी दोस्तों का होना महत्वपूर्ण है। उनसे बातचीत करना और उनका साथ देना उन्हें मानसिक समर्थन प्रदान कर सकता है।

निष्कर्ष- समर्थनीय विशेषज्ञता और सहारा व्यक्ति की मानसिक स्वास्थ्य स्थिति में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। पर्सनालिटी डिसऑर्डर्स को समझना और उनका समवायिक इलाज करना सामाजिक जागरूकता बढ़ाने और लोगों को सही दिशा में मार्गदर्शन करने का सुझाव देता है। यह महत्वपूर्ण है कि हम समझें कि मानसिक स्वास्थ्य भी हमारे सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन का अभिन्न हिस्सा है और उसकी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। पर्सनालिटी डिसऑर्डर्स को सही से पहचानना और उपचार की योजना बनाना व्यक्ति को सही मार्ग पर ले जाने में मदद कर सकता है। आपसी समर्थन, समझदारी, और सहारा देना व्यक्ति को उत्तेजना और समर्थन की ओर बढ़ा सकता है, जिससे उन्हें आत्मविश्वास मिलता है कि वे अपनी समस्याओं का सामना कर सकते हैं और सकारात्मक रूप से जीवन को निर्माण कर सकते हैं। मानव-संबंधों के माध्यम से, हम समृद्धि, समर्थन, और अच्छे स्वास्थ्य की दिशा में साथी बन सकते हैं और इस प्रकार एक समर्थनीय और समर्थ समाज की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।

ट्रोलिंग– एक समसामयिक मुद्दा

आशिष रंजन
B.Ed. Trainee (2024-2026)

समाज में अक्सर ऐसे लोगों से सामना होता है, जिन्हें किसी का अच्छा काम भी अच्छा नहीं लगता। वे न केवल उस कार्य की आलोचना करते हैं, बल्कि कई बार अपनी सीमाएं लांघते हुए गालियाँ देने लगते हैं। यह एक बेहद परेशान करने वाली स्थिति होती है, खासकर तब जब आलोचना करने वाला व्यक्ति न तो सामने वाले को जानता है, न ही उस काम की पृष्ठभूमि को। फिर सवाल यह उठता है कि कोई अनजान व्यक्ति क्यों किसी के लेख, रचना या अभिव्यक्ति में जाकर इतनी नफरत घोल देता है? आखिर ऐसी मानसिकता का मनोवैज्ञानिक कारण क्या हो सकता है?
मानव व्यवहार का मूल उसकी मानसिक स्थिति और सामाजिक परिवेश में छिपा होता है। जो लोग दूसरों के अच्छे काम में बुराई खोजते हैं उनके भीतर अक्सर एक गहरी असंतुष्टि होती है। यह असंतोष कई बार उनके अपने जीवन से जुड़ा होता हैकृशायद वे अपने प्रयासों में असफल हुए हैं, या उन्हें वह मान्यता नहीं मिली जिसकी उन्हें अपेक्षा थी। जब वे किसी अन्य को सराहना प्राप्त करते देखते हैं, तो भीतर की ईर्ष्या उन्हें कचोटने लगती है। उस दर्द को वे शब्दों के ज़हर में बदलकर दूसरों पर उंडेल देते हैं। यह उनका प्रतिरोध नहीं होता, बल्कि एक तरह की असहायता होती है जो नकारात्मकता के रूप में बाहर आती है।
इसके अतिरिक्त, डिजिटल माध्यमों ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तो दी है, परंतु उसके साथ उत्तरदायित्व का बोध कमजोर कर दिया है। जब कोई व्यक्ति नकली नाम और पहचान के पीछे छिपकर कुछ कहता है, तो उसे यह डर नहीं होता कि उसके शब्दों का कोई सामाजिक परिणाम होगा। यही वजह है कि बहुत से लोग सोशल मीडिया पर भड़काऊ भाषा, गाली–गलौज या अपमानजनक टिप्पणियाँ करने लगते हैं। उन्हें यह लगता है कि वे एक ऐसी जगह पर हैं जहाँ उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यह मनोविज्ञान उस बालक जैसा होता है जो दीवार के पीछे छिपकर पत्थर फेंकता हैकृन तो उसका चेहरा दिखता है, न ही उसे कोई सज़ा मिलती है।सोशल मीडिया पर लोग अपनी इच्छा के अनुसार पोस्ट करते रहते हैं। शुरुआत में सोशल मीडिया का उपयोग खुद और परिवार व्यवसाय तक सीमित था, लेकिन वर्तमान में खुद से अलग सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दो से होते हुए सभी प्रकार के मुद्दो में इस्तेमाल किया जाने लगा है। जिसके कारण कई बार उपयोगकर्ताओं को ट्रॉल का शिकार भी होना पड़ता है।
कुछ मामलों में यह व्यवहार उस व्यक्ति की परवरिश और सामाजिक परिवेश का भी परिणाम होता है। जिन लोगों ने जीवन में बार–बार तिरस्कार, अस्वीकार या अपमान का सामना किया होता है, वे कई बार दूसरों के सम्मान को पचा नहीं पाते। उनका मन यह मानने को तैयार नहीं होता कि कोई बिना स्वार्थ के अच्छा भी कर सकता है। इसलिए जब वे किसी अच्छे लेख, विचार या कला को देखते हैं, तो उसमें उन्हें बनावटीपन, दिखावा या छलावा नज़र आता है। यह सोच दरअसल उनकी अपनी टूटी हुई उम्मीदों और अनुभवों से जन्मी होती है।
एक और गहरी वजह हैकृ'ट्रोलिंग' की आधुनिक संस्कृति। आज का इंटरनेट युग केवल जानकारी का नहीं, बल्कि मनोरंजन का भी केंद्र बन चुका है। कुछ लोगों के लिए दूसरों को चिढ़ाना, परेशान करना या उनकी भावनाओं से खेलना एक खेल बन चुका है। यह मनोरंजन की विकृत परिभाषा है, जिसमें दूसरों की पीड़ा को देखकर खुशी महसूस की जाती है। यह प्रवृत्ति धीरे–धीरे मानसिक विकृति में बदल सकती है, अगर इसे रोका न जाए।दुखद सच्चाई यह है कि ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं है। वे हर जगह हैंकृऑनलाइन भी और ऑफलाइन भी। लेकिन यह समझना ज़रूरी है कि ऐसे व्यवहार के पीछे छिपे कारण केवल सामने वाले की गलती नहीं होते, बल्कि अक्सर खुद उस व्यक्ति की भीतरी कमज़ोरी, मानसिक उलझन या सामाजिक असंतुलन होते हैं।इसलिए जब कोई आपके अच्छे काम को भी बुरा कहे, जब कोई बिना कारण गालियाँ दे या नफरत फैलाए, तो उस पर गुस्सा करने की बजाय उसे एक बीमार मानसिकता का शिकार मानकर नज़रअंदाज़ करना ही बेहतर होता है। उसकी भाषा उसकी स्थिति की पहचान कराती है, आपकी नहीं।

ट्रॉल या ट्रोल का अर्थ –

आदिकाल से परियों की कहानी में ट्रॉल शब्द का प्रयोग ऐसे बेढंगे और मतलबी इंसान या जानवर के लिए किया जाता है, जिसकी नाक लंबी, देखने में बदसूरत और विक्षिप्त मानसिकता का होता है। वर्तमान में ट्रॉल का उपयोग किसी को गुस्सा दिलाने या मज़ाक़ उड़ाने के उदेश्य से किये जाने वाले प्रयास को कहा जाने लगा है। ट्रॉल का अर्थ किसी सोशल मीडिया उपयोगकर्ता या किसी अन्य व्यक्ति को उत्तेजित करने, खिंचाई करने या उसकी भावना को ठेस पहुंचाने के उदेश्य से ऐसे कमेंट्स करने से है, जिससे लोगों को उसका मज़ाक़ बनाने का अवसर मिले। इसके अतिरिक्त ऐसा उपयोगकर्ता को चिढ़ाने, गुस्सा दिलाने के प्रयास या उदेश्य से किसी विशिष्ट उपयोगकर्ता पर अभद्र, द्विअर्थी या उसका मज़ाक़ उड़ाने के उदेश्य से कमेंट्स करते है। ट्रॉलिंग में ट्रॉल करने वाला व्यक्ति भड़काऊ, अप्रासंगिक तथा पोस्ट से असम्बंधित कॉमेंट भी करता है। साधारण भाषा में ट्रॉल टांग खिंचाई है। इसके लिए ट्रॉलर (ट्रॉल करने वाले) अवाँछित, अप्रासंगिक, भावनात्मक

खिलवाड़ करने के लिए उकसाने वाले कमेन्ट करते हैं। इसमे व्यक्ति को घुमाना, चक्कर देना, मजाक उड़ाना, चिल्लाकर गाना, और फुसलाना भी सम्मिलित होता है। कई बार ट्रॉल करने वाले ऐसे तरीके से ट्रॉल कर देते हैं जिससे जिसे निशाना बनाया जा रहा है, उसे पता तक नहीं चलता है। सोशल मीडिया के उपयोग के साथ ट्रॉल किए जाने के मामले अधिक बढ़ गए हैं।

सोशल मीडिया पर ट्रोल करने के तरीके –

सोशल मीडिया पर किसी को ट्रोल करने के लिए ट्रोलर कई तरीकों का उपयोग करते है। इनमे से कुछ निम्न है –

- **व्यक्तिगत कमेन्ट** – यह सबसे बुरा तरीका है, किसी को ट्रॉल करने के लिए उसके व्यक्तिगत जीवन से संबंधित मुद्दों को बीच में लाया जाता है। यह ऐसे मुद्दे होते हैं, जिससे उस व्यक्ति को सार्वजनिक शर्मिंदगी का सामना करना पड़ सके। इसके लिए ऐसे पल और घटनाक्रम भी सम्मिलित कर लिए जाते हैं, जो बेहद निजी होती है, जिनका सार्वजनिक रूप से प्रचार कोई नहीं चाहता है।
- **भद्दे कमेन्ट** – कई लोग किसी को ट्रॉल करने के लिए भद्दे कमेन्ट करते हैं। खासतौर से महिलाओं को ट्रोल करने के लिए ऐसे कमेन्ट का सहारा लिया जाता है। ऐसे कमेन्ट सभ्य लोगों की भाषा शैली का हिस्सा नहीं हो सकते हैं, किन्तु सोशल मीडिया के ट्रोलर बिना झिझक के ऐसे कमेन्ट का सहारा ट्रॉल करने के लिए आसानी से ले लेते हैं।
- **भड़काऊ कमेन्ट** – ऐसे कमेन्ट को तब किया जाता है, जब किसी को आवेश, गुस्सा या उत्तेजित करना होता है। ऐसे कमेन्ट का उदेश्य किसी से कुछ उगलवाने या किसी प्रकार की गलती करने के लिए किया जाता है। खासतौर से सेलेब्रिटी और राजनेताओं को ट्रॉल करने के लिए ऐसे कमेन्ट का सहारा लिया जाता है। जब किसी घटना पर किसी नेता या अभिनेता का ब्यान नहीं आता है, तो लोग ऐसे कमेन्ट का सहारा लेने लगते हैं।
- **पोस्ट** – जो लोग सोशल मीडिया या किसी विशिष्ट सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग नहीं करते हैं, उन्हें ट्रॉल करने के लिए कमेन्ट की बजाय पोस्ट का सहारा लिया जाता है। वर्तमान में ट्विटर पर ट्रेंड में लाने के लिए भी पोस्ट का सहारा लिया जाता है। ऐसी पोस्ट में जिसे टार्गेट किया जा रहा है, उनकी निजी जानकारी से लेकर उन्हें उकसाने के लिए अवांछित सामग्री को पोस्ट किया जाता है।
- **मीम** – यह सोशल मीडिया पर ट्रॉल करने का नया तरीका है। इसमे कोई स्क्रीनशॉट या फोटो सम्मिलित किया जाता है। ऐसे फोटो या स्क्रीनशॉट पर कुछ भड़काऊ, मज़ाक़ उड़ाने या चिढ़ाने वाले वाक्य लिखे जाते हैं। मीम ऐसी पोस्ट अधिक आकर्षण दे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचता है, उसके बाद मज़ाक उड़ाने वालों की संख्या में तेजी से इजाफा होने लगता है।

इनके अतिरिक्त भी कोई तरीका अपनाया जा सकता है, जिसमें किसी को बहलाने के उदेश्य से पोस्ट की जाती है, तो कभी द्विअर्थी और घुमाने वाली। आपको याद होगा आलिया भट्ट को एक इंटरव्यू के बाद उसके ज्ञान को लेकर बूरी तरीके से ट्रॉल किया गया।

सोशल मीडिया पर ट्रोल किए जाने के कारण – अब आपके दिमाग में यह प्रश्न अवश्य उठ रहा होगा कि आखिर वो कौन लोग होते हैं, और क्यों किसी को ट्रोल करते हैं?

ट्रॉल किए जाने के कुछ कारण निम्नलिखित हो सकते हैं –

- सोशल मीडिया उपयोगकर्ता द्वारा कोई गलत जानकारी अथवा ब्यान देना।
- उपयोगकर्ता द्वारा किसी ऐसे तथ्य का समर्थन करना, जिसे अधिकांश उपयोगकर्ता नकारते हो।
- अलग प्रकार की विचारधारा का समर्थन किया जाना।
- उपयोगकर्ता द्वारा किसी प्रकार की गलती किया जाना।

सोशल मीडिया पर ट्रॉल किए जाने का कोई विशिष्ट कारण नहीं होता है, ट्रॉलर के ग्रुप बना किसी को भी नीचा दिखाने के लिए भी ट्रॉल कर देते हैं। कुछ लोग ट्रॉल करने वालों का समर्थन इसलिए कर देते हैं, इससे उन्हें कुछ रीच मिल सके।

लाइक, कमेन्ट और रीच सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं के लिए बहुत अधिक मायना रखती है। यह सभी नकारात्मकता से भरे पोस्ट और कमेन्ट पर अधिक मिलती है, ऐसे में लोग किसी को इस कारण से टार्गेट कर ट्रॉल कर देते हैं, इससे उन्हें रीच मिल सके। आखिर में, यह याद रखना ज़रूरी है कि सकारात्मकता को बनाए रखना एक चुनौती है, और जो लोग उस पर टिके रहते हैं, वे ही असल में मानसिक रूप से मज़बूत होते हैं। दुनिया में अंधेरा कितना भी हो, अगर दीपक जलता रहे, तो रोशनी संभव है।

Establishing Peace and Coordination Globally

Govind Kumar Singh
B.Ed. Trainee (2024-2026)

In a world characterized by diversity, cultural richness, and rapid globalization, achieving lasting peace and coordination among nations is both a challenge and a necessity. Conflicts, economic disparities, and geopolitical tensions continue to pose threats to global harmony. However, with collective efforts and strategic approaches, a peaceful and cooperative global society is achievable.

Importance of Global Peace and Coordination

Global peace fosters social stability, economic development, and overall human progress. It ensures that resources are used for constructive purposes rather than conflicts. Coordination among nations enhances trade, scientific advancements, and cultural exchanges, contributing to the well-being of societies worldwide. A peaceful world is a prosperous world, where human potential is maximized, and crises are effectively managed.

Diplomacy and Conflict Resolution

Nations must prioritize diplomacy and dialogue over military action. International organizations like the United Nations (UN), World Trade Organization (WTO), and regional alliances play crucial roles in mediating disputes and fostering cooperation. Diplomatic engagement helps resolve conflicts through negotiations, ensuring mutual benefits rather than destruction.

Economic Cooperation and Fair Trade

Economic disparities often fuel conflicts. Promoting fair trade policies, reducing trade barriers, and encouraging economic collaboration can help bridge inequalities. Initiatives like the European Union (EU) and the African Union (AU) have demonstrated the benefits of economic integration in maintain.

Challenges to Global Peace

Despite various efforts, achieving global peace faces challenges such as political ideologies, economic competition, terrorism, and cyber warfare. Additionally, regional conflicts, ethnic tensions, and historical grievances hinder progress. Addressing these challenge require long-term commitment.

Education and Cultural Exchange

Is understanding between nations often arise due to cultural differences. Promoting educational exchange programs, student scholarships, and cross-border cultural initiatives can bridge the gap between societies. When people understand each other's histories and traditions, they develop empathy, leading to stronger international bonds.Strengthening International Law

A strong legal framework ensures that global disputes are settled peacefully and fairly. International bodies like the International Court of Justice (ICJ) and the International Criminal Court (ICC) hold countries and individuals accountable for actions that violate peace agreements

Strengthening these institutions can prevent future conflicts.

Tackling Global Threats Together

Global issues like climate change, terrorism, pandemics, and cyber threats require unified action. Countries must set aside political differences to create collective strategies for disaster relief, counter-terrorism, and sustainable development. Initiatives such as the Paris Climate Agreement and WHO's global health initiatives are examples of nations working together for the common good.

Importance of peace in education

Education is critical for promoting sustainable development and improving the capacity of the people to address environment and development. While basic education provides for underpinning for any environmental and development education.

Teacher' Role of promoting peace

Educating for peace is concerned with.Helping the students to recognize the many forms and causes of violence and to promote values and skills for living society. Educating for peace is helping students to the awareness of peace and to find ways of keeping peace by conflict resolution.

Student's role in promoting peace

Students play a vital role in promoting peace in society, as they are the future leaders, thinkers, and changemakers. Their energy, enthusiasm, and ability to adapt to new ideas make them essential contributors to building a peaceful world.

Society role in promoting peace

Society plays a crucial role in fostering peace by promoting values of harmony, tolerance, and justice. A peaceful society is built on mutual respect, cooperation, and the active participation of individuals, institutions, and communities.

Conclusion

Building a peaceful and coordinated world is not the responsibility of one nation alone—it requires global collaboration. By investing in diplomacy, economic fairness, education, and legal frameworks, the world can create an environment where conflicts are minimized, and cooperation thrives. A future of unity and shared prosperity is within reach if nations prioritize peace over power and collaboration over competition.

Concern

Through the internet, newspaper,
News channel, social media.

Source of inspiration of the article
is universal war that is
happening Worldwide

Casteism in the context of India and Bihar

Ajay Kumar

B.Ed. Trainee (2024-2026)

INTRODUCTION

Caste , it is a gift of Parents to their Child. The Parents of the child has got their caste from their Parents ,this shows that Casteism is a continuous chain from Parents to their Child. It is beyond the Parent's wish or Control.It is decided by the family in which the child is born. The caste system is not only an ancient social hierarchy, but it also pervades various facets of life in modern India, ranging from politics to education, employment, and social relationships.

Bihar, a state in northern India, provides a significant case study of how casteism manifests in Indian society.

HISTORY OF EMERGENCE OF CASTE SYSTEM :-

Manusmriti, widely regarded to be the most important and authoritative book on Hindulaw and dating back to at least 1,000 years before Christ was born, "acknowledges and justifies the caste system as the basis of order and regularity of society". The caste system divides Hindus into four main categories - Brahmins, Kshatriyas, Vaishyas And the Shudras. Many believe that the groups originated from Brahma, the Hindu God of creation

In ancient times , the Person′s Caste was decided by the WORK or PROFFESSION which they did for the Survival of their livelihood.At the top of the hierarchy were the Brahmins who were mainly teachers and intellectuals and are believed to have come from Brahma's head. The persons who were assigned for the worship of GOD, Categorised as BRAHMIN Caste , PRIESTS.

Then came the Kshatriyas, or the warriors and rulers, supposedly from his arms.

Mainly these Caste Groups were Called as Upper / Forward castes in Society who enjoyed the best position in Society.

The third slot went to the Vaishyas, or the traders, who were created from Brahma's thighs.

At the bottom of the heap were the Shudras, who came from Brahma's feet and did all the menial jobs.

The main castes were further divided into about 3,000 castes and 25,000 sub-castes, each based on their specific occupation.

Outside of this Hindu caste system were the achhoots the Dalits or the untouchables. Dalits were exploited / oppresed by the So called UPPER CASTES in Society.Although they did the Work which were very essential in day to day life but unfortunateltythey did not got respect & identity in Society .These groups were marginalised from the mainstream of the society. The Dalits people Were deprived of even basic essential requirements in Society.The Caste System as it exist today is thought to be the result of developments during the collapse of Mughal era & Rise of British Colonial Governance in India.Government steps towards eradicating Caste discrimination after Independence of India :--

After India gained independence in 1947, the newly established government took steps to eradicate Caste discrimination and promote social equality. The Indian Constitution, adopted in 1950, made provisions for the abolition of untouchability (Article 17) and granted equal rights to all citizens, regardless of their caste. Special provisions were also made for the welfare of the Dalits and other backward communities, including affirmative action policies such as reservations in educational institutions, government jobs, and legislative bodies.

Casteism in Bihar:

Bihar, one of India's most populous and historically significant states, has a complex relationship with caste. The state's social and political landscape is heavily shaped by caste identities. Bihar is home to a large number of marginalized communities,

including Dalits, OBCs (Other Backward Classes), and Muslims.The state's political dynamics have been profoundly influenced by caste-based movements, particularly during the last few decades.

Social Hierarchy in Bihar

The caste system in Bihar is structured in a way that places the upper castes—Brahmins, Rajputs, and Bhumihars—at the top, followed by the middle castes such as Yadavs and Kurmis, and then the Dalits at the bottom of the social hierarchy.In rural areas, caste-based discrimination is more pronounced, with traditional practices Of untouchability still observed in some parts. In these areas, Dalits are often excluded from commosocial spaces, denied access to water sources , and subjected to various forms of humiliation.

Bihar's Agrarian economy has played a significant role in shaping the caste system. Land ownership, which is a critical source of power in rural areas, has been largely concentrated in the hands of upper-caste communities.

The Rise of Caste-Based Politics in Bihar

One of the defining features of casteism in Bihar has been the rise of caste-based politics. Since the 1990s, the political landscape of Bihar has been dominated by parties that mobilize voters along caste lines. Leaders from the lower castes, such as Lalu Prasad Yadav (RJD) and Nitish Kumar (JD(U)), have played a significant role in reshaping the political narrative of Bihar. These leaders have focused on the empowerment of backward classes and Dalits, securing political support from these communities. Political parties often seek to consolidate caste-based votes, resulting in the further diverting of caste as a determining factor in political allegiance.

Economic Disparities and Caste

Caste-based economic disparities are stark in Bihar. The state's economy is predominantly

based on agriculture, with a significant proportion of the population engaged in agriculture. The Dalit and OBC communities, who have historically been doing labour works and lower-status jobs, face challenges in accessing economic opportunities. Despite the presence of affirmative action policies, the economic gap between different castes remains wide, particularly in rural areas. Land ownership remains a key issue in Bihar, where the upper castes have historically controlled large tracts of fertile land. The Dalits and lower castes, who are often landless or own only marginal land, continue to face economic exploitation. Even though land reforms were introduced to solve these inequalities, the implementation has been uneven, and many Dalits remain landless. In addition to land, access to education and employment remains a challenge for many members of marginalized castes. Although reservations in educational institutions and government jobs have provided some relief, there are still barriers to upward mobility. The educational system in Bihar, particularly in rural areas, continues to be substandard,nd many students from lower-caste backgrounds face discrimination within educational institutions. aste-Based Violence in Bihar Caste-based violence remains a significant problem in Bihar. This violence often takes the form of caste-related clashes, anger against Dalits. One of the most notorious forms of caste-based violence is the practice of "honor killings," where individuals from lower castes are murdered for allegedlykipping caste boundaries, such as inter-caste marriage or relationships. This violence is not only perpetrated by individuals but is also sometimes condoned by Local leaders and community members, further perpetuating the cycle of caste-based oppression.

The Role of Social MovementsOver the years, social movements and organizations have played a critical role in challenging caste discrimination and advocating for the rights of marginalized communities in Bihar.Organizations like the Bihar Dalit Vikas Samiti and the All India Backward Classes Federation have been active in raising awareness about the plight of lower castes and pushing for social and political reforms. The emergence of Dalit and backward class movements has provided a platform for these communities to voice their

concerns and demand their rights. These movements have also highlighted the importance of affirmative action policies and the need for more equitable development in the state.

Efforts to Eradicate Casteism India, as a nation, has made several attempts to eradicate caste-based discrimination. The Indian Constitution, as mentioned earlier, abolished untouchability and guaranteed equality before the law. Various social welfare programs and affirmative action policies have been implemented to uplift the lower castes. In addition to reservations in education and government jobs, schemes like the Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA) have provided employment opportunities to marginalized communities. In Bihar, the state government has introduced several welfare schemes aimed at improving the economic and social conditions of Dalits and OBCs. The state's education policy, for instance, has focused on increasing access to schools I rural areas, and there have been efforts to improve the quality of education. However, implementation of these schemes has often been inadequate, and corruption at the local level has hindered their effectiveness. Civil society organizations have also played an essential role in supporting for the rights of Dalits and other marginalized groups. These organizations have been instrumental in raising awareness about caste-based discrimination, providing legal aid, and pushing for social reforms. CONCLUSION:-

A Person's FATE Cannot be decided by his/her CASTE.

Each & Every CITIZEN OF INDIA

Should be treated equal in all sectors , society, everywhere ,following the path of no discrimination on the basis of CASTES. Casteism in India, and particularly in Bihar, remains a challenge to social harmony and economic equality.While legal reforms have been introduced, caste-based discrimination continues to affect millions of people, especially in rural areas. The persistence of caste in politics, economics, and social relations highlights the deep-rooted nature of this issue. Bihar's experience with casteism is a reflection of the broader challenges India faces in addressing this issue at the national level. In order to effectively combat casteism, a more inclusive and comprehensive approach is needed. This includes better enforcement of laws, more rigorous implementation of affirmative action policies, and increased awareness campaigns to combat caste prejudice. dditionally, education and economic empowerment remain central to removing he caste system, and efforts should be made to create a more equitable society that prioritizes merit and equal opportunity over caste identity. Ultimately, the fight against casteism is not just a legal or political struggle but also a social and cultural one. It requires a collective effort from all sections of society—government, civil society, and individuals—to create an India where every citizen is free from the shackles of caste-based discrimination. We should treat each other as only humans and the Caste Should be only as INDIANS.

REFERENCES

1) **Bhimrao Ramji Ambedkar** (Bhīmrāo Rāmjī Āmbēḍkar; 14 April 1891 – 6 December 1956) https://en.wikipedia.org/wiki/B._R._Ambedkar
2) **Viramma with Josiane Racine and jean Luc Racine, *Viramma: Life of an Untouchable***
3) What is India's Caste System ? https://www.bbc.com/news/world-asia-india-35650616
4) https://www.vocabulary.com/dictionary/caste%20system
5) https://en.wikipedia.org/wiki/Caste_system_in_India

Our Teenagers are Struggling with Dilemma and Identity Crisis

Mrs. Minu Pandey (House Wife)
P.G in English & Home Science, (B.Ed.)

One of the most renowned psychologists, Erik Erikson, developed a theory of psychosocial development, stating that human personality evolves through eight distinct stages. These stages, from infancy to old age, each present unique challenges that must be successfully resolved for healthy development. Two of these eight stages stand out due to their profound impact on individuals and those around them—adolescence and middle adulthood. Internal conflicts, self-discovery, and transformation often mark these phases.

Adolescence, commonly known as the teenage years, is a critical stage where individuals start shaping their identity. It is often characterized by emotional turbulence, rebellion, and the desire for independence. Teenagers experience a strong urge to assert their individuality while seeking acceptance from their peers.

During this phase, many young individuals go through what is often called 'teenage syndrome.' This term refers to the various emotional and psychological challenges that teenagers face, including identity crises, peer pressure, and the struggle for independence. For instance, an identity crisis might manifest as a teenager experimenting with different styles or hobbies to find their true self. Peer pressure could lead to risky behaviours like substance abuse or dangerous stunts. The desire for independence might result in conflicts with parents over curfews or responsibilities. They want to be treated as adults, and when they feel misunderstood or restricted, they often react rebelliously.

Peer acceptance becomes crucial during this stage. Teenagers often prioritize their social groups, sometimes even engaging in risky behaviours just to fit in. Their actions may seem impulsive or irrational to adults, but they stem from the intense need to be recognized and valued by their peers. Despite the turmoil, this period is crucial for self-discovery and growth. A supportive environment—whether through family, mentors, or friends—plays a crucial role in helping adolescents navigate these challenges, providing reassurance and reducing anxiety.

Middle Adulthood: The Midlife Crisis and Its Challenges

As people transition into middle adulthood (typically between ages 40 and 60), they may experience what is commonly referred to as a 'midlife crisis.' This period is often marked by deep self-reflection, questioning life choices, and sometimes dissatisfaction with one's achievements. Contrary to popular belief, a midlife crisis is not necessarily a period of reckless behaviour or drastic life changes. It is more about profoundly reassessing one's life and searching for deeper meaning and fulfilment.

A midlife crisis is not a universal experience, but the emotions can be overwhelming for those who go through it. Various factors, including the realization of mortality, unfulfilled dreams, or significant life events, such as the loss of loved ones, can trigger it. The following factors contribute significantly to this crisis:

1. Realization of Mortality

When people are younger, death seems like a distant reality. However, they start noticing physical changes as they reach middle age—reduced stamina, greying hair, or even health issues. Witnessing the ageing or passing of loved ones also brings mortality into sharper focus. This realization often leads to deep reflection about one's purpose and achievements in life.

2. Balancing Responsibilities

Middle-aged adults often find themselves sandwiched between responsibilities—caring for ageing parents while also supporting their growing children. Managing these responsibilities can be emotionally and physically draining, leaving little room for personal growth or relaxation. The constant pressure of being a provider and caretaker can make individuals feel trapped, leading to frustration and restlessness.

3. Unfulfilled Dreams and Missed Opportunities

By middle age, people start assessing their lives, comparing their achievements with the dreams they once had. Some may feel they have accomplished much, while others may regret missed opportunities. Financial constraints, family obligations, or societal pressures may have kept them from pursuing their passions. This realization can create dissatisfaction and the desire to make drastic changes.

Coping with Midlife Challenges

While the midlife crisis is often seen as a time of turmoil, it can also be a period of positive transformation. Instead of being overwhelmed by regrets, individuals can take proactive steps to turn this phase into a time of growth and self-discovery.

1. Practicing Self-Care and Setting Boundaries

People often neglect themselves while fulfilling responsibilities toward their families. However, self-care is not selfish—it is essential. Engaging in enjoyable activities like hobbies, exercise, or travel can help reduce stress and restore balance. Setting boundaries and allowing time for personal well-being is crucial for maintaining mental and emotional health.

2. Setting Realistic Career and Personal Goals

Many individuals face career stagnation during midlife. While ambitious goals often drive younger years, middle adulthood should focus on setting realistic and fulfilling career and personal aspirations. Instead of dwelling on what has not been achieved, focusing on what can still be accomplished brings a sense of purpose.

3. Accepting Change and Moving Forward

While working hard toward achieving dreams is essential, it is equally important to accept life's realities. Some aspirations may not be attainable, and that is okay. Learning to appreciate what has been accomplished and making peace with what remains beyond reach can lead to contentment. Rather than dwelling on the past, midlife should be seen as an opportunity for reinvention and embracing new possibilities.

Seeking Support and Guidance

Navigating midlife changes can be overwhelming, but no one has to go through it alone. Seeking support from family, friends, or professionals can provide valuable guidance and encouragement. Talking to a therapist or counsellor can offer insights and coping strategies to handle emotional turmoil effectively.

Additionally, engaging in social groups or community activities can provide a sense of belonging and fulfilment. Surrounding oneself with positive influences and like-minded individuals helps overcome this phase's challenges with resilience and optimism.

Conclusion: Embracing Change and Growth

Both adolescence and middle adulthood are crucial stages of psychological development, each bringing its own set of challenges. Adolescence is marked by self-discovery and peer influence, while middle adulthood is often defined by self-reflection and the need for purpose. Understanding these phases and their impact allows individuals to navigate them with awareness and resilience.

While the midlife crisis is often viewed negatively, it can be a transformative period that leads to personal growth and renewed purpose. Instead of fearing these life stages, embracing them with a positive mindset and proactive approach can make the journey smoother and more fulfilling. This perspective can instil hope and optimism in the audience, encouraging them to see these stages as opportunities for positive change.

By prioritizing self-care, setting achievable goals, and seeking support when needed, individuals can turn these life stages into opportunities for growth and happiness. Life's challenges are inevitable, but they can become stepping stones toward a more meaningful and contented life with the right mindset and support system.

The Present Stage of Mathematics: Current Trends and Future Directions

Alok Raj
B.Ed. Trainee (2024-2026)

Introduction

Mathematics continues to evolve as a dynamic and multifaceted field, integrating new theories and applications while addressing complex problems across various disciplines. As we progress further into the 21st century, several emerging trends and advancements are shaping the landscape of modern mathematics.

1. Integration of Mathematics and Technology

The integration of mathematics with technology is one of the most significant trends. Advanced computational tools and software, such as MATLAB, Mathematica, and Python libraries, are enabling mathematicians to tackle increasingly complex problems. Machine learning and artificial intelligence (AI) are also profoundly impacting mathematical research, particularly in areas like data analysis, algorithm development, and predictive modeling.

Key Developments:

- Algorithmic Advances: Improved algorithms are enhancing computational efficiency and solving problems previously deemed intractable.
- Big Data: The ability to handle and analyze vast datasets is driving new discoveries in statistics, probability, and applied mathematics.

2. Expanding Frontiers in Pure Mathematics

Pure mathematics remains a vibrant area of research, with significant advancements in various subfields.

Notable Areas of Focus:

- Algebraic Geometry: This field is exploring new connections between geometric properties and algebraic structures, with applications in string theory and cryptography.
- Number Theory: Research continues into properties of prime numbers and the distribution of primes, with connections to cryptography and random matrix theory.
- Topology: The study of spatial properties that are preserved under continuous deformations is revealing insights into complex systems and shapes, with implications for understanding the universe's structure.

3. Interdisciplinary Applications

Mathematics is increasingly applied in interdisciplinary contexts, influencing fields such as biology, economics, and social sciences.

Key Applications:

- Quantitative Biology: Mathematical models are being used to understand biological processes, such as population dynamics and disease spread.
- Financial Mathematics: Advanced mathematical models are critical in risk assessment, portfolio optimization, and economic forecasting.
- Social Network Analysis: Mathematical techniques are applied to understand and optimize social networks, influencing everything from marketing strategies to epidemic control.

4. Emerging Theories and Concepts
Several new theories and concepts are gaining traction in the mathematical community.
Recent Innovations:
- Quantum Computing: The development of quantum algorithms promises to revolutionize problem-solving in areas like cryptography and complex simulations.
- Homotopy Type Theory: This new approach to type theory and logic is providing fresh perspectives on the foundations of mathematics.
- Mathematics of Complex Systems: The study of complex, nonlinear systems is uncovering new patterns and behaviors in everything from climate models to neural networks.
5. Challenges and Open Problems
Despite these advancements, mathematics is confronted with several enduring challenges and open problems.
Key Challenges:
- Unresolved Conjectures: Problems such as the Riemann Hypothesis and the Navier-Stokes Existence and Smoothness problem continue to stimulate research and debate.
- Computational Limitations: As problems grow in complexity, computational limitations and the need for more powerful algorithms remain pressing issues.
6. The Future of Mathematics
Looking ahead, the future of mathematics is likely to be shaped by several factors.
Future Directions:
- Increased Collaboration: Greater interdisciplinary and international collaboration is expected to drive innovation and tackle global challenges.
- Educational Advances: Advances in mathematical education and outreach will play a crucial role in nurturing the next generation of mathematicians.
- Ethical Considerations: As mathematical models influence critical areas like AI and public policy, ethical considerations will become increasingly important.

Conclusion

Mathematics is in a vibrant and transformative stage, with significant advancements shaping its future. The interplay between theory and application, combined with technological innovations and interdisciplinary research, is driving the field forward. As a result, the influence of mathematics on improving human understanding, driving technological progress, and addressing global issues will become increasingly significant, underscoring its fundamental role in shaping the future.

GPS Map Camera
Kalyanpur, Bihar, India
Xq4g+5gh, Kalyanpur, Phulahra, Bihar 848302, India
Lat 25.955605° Long 85.776295°
20/12/24 11:50 AM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
Bankipur, Bihar, भारत
0.5 km from birshinghpur chowk, Bankipur, Bihar 848302, भारत
Lat 25.92971°
Long 85.753918°
30/09/24 12:28 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
Bankipur, Bihar, India
0.5 km from birshinghpur chowk, Bankipur, Bihar 848302, India
Lat 25.929825°
Long 85.753868°
29/08/24 01:32 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
Bankipur, Bihar, India
0.5 km from birshinghpur chowk, Bankipur, Bihar 848302, India
Lat 25.92974°
Long 85.75399°
29/08/24 01:42 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
Darbhanga, Bihar, India
Xq4g+4gq, Rahamganj, Darbhanga, Phulahra, Bihar 848302, India
Lat 25.955412° Long 85.776558°
08/01/25 02:41 PM GMT +05:30
Google

Drip irrigation
AGRICULTURE IRRIGATION
Galaxy A54 5G # suraj
28 February 2025 1:37 pm

GPS

Nukkad Natak
On
Road Safety awareness programme
6th Jan. 2025

ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE BIRSINGHPUR
INVITING ALL THE FRESHERS
FOR THEIR
ORIENTATION
Nov. 2024

ORIENTATION

ST. Paul Teachers' Training College Birsinghpur

AT-Jhahuri, PO-Birsinghpur, Block-Kalyanpur,
Samastipur, Bihar, Pin-848102
Phone: +91 9709871006, 9905610604

Our Magazine

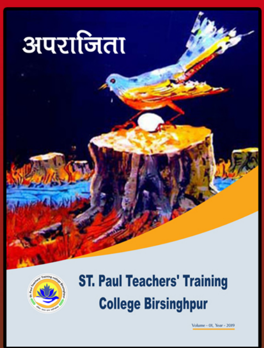

"APRAJITA" Volume-01, Year-2019

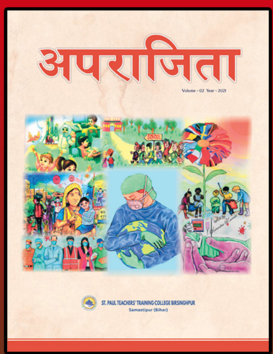

"APRAJITA" Volume-02, Year-2021

"APRAJITA" Volume-03, Year-2022

"APRAJITA" Volume-04, Year-2023

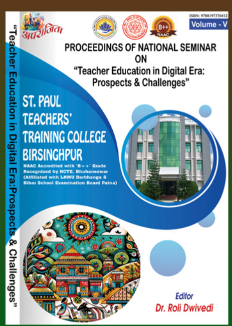

"APRAJITA" Volume-05, Year-2024

ISBN 978-819737645-0